هندي

প্রকাশনায়
স্পেস চ্যানেল ফাউন্ডেশন

الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness

प्रसन्नता के प्रति वार्तालाप

ख़ालिद अबुल फतूह



फضاء القنوات
SPACE CHANNELS

"फतूह" सूचना केन्द्र

الطريق إلى السعادة
The Path to Happiness
प्रसन्नता के प्रति वार्तालाप
ख़ालिद अबुल फतूह

कुछ महत्वपूर्ण मुद्रित

अंतरिक्ष चैनल

"फतूह" सूचना केन्द्र

प्रसन्नता के प्रति वार्तालाप

ख़ालिद अबुल फतूह

بسم الله الرحمن الرحيم

परिचय

हमारी लापरवाही



हमारी लापरवाही

राषिद अपने दोस्त माइकल से निर्धारित समय पर एक केफ पर मिला। जैसे ही वह दोनों बैठे, तो राषिद से पहले माइकल यह बोल पडा ।

आज की रात मै एक ऐसा विषय आपके सामने रखनेवाला हूँ, जिसके प्रति मेरा यह विचार है कि तुम इस विषय में मेरी दृष्टि से सहमत होंगे ।

राषिदः थोडा धैर्य से काम लो ऐ मेरे दोस्त । पहले तो हमें आपके स्वागत में कुछ जल पान तो मंगवाने दो।

माइकलः मेरी हड़बडी पर मै आप से क्षमा चाहता हूँ। आपने सही कहा ।

माइकल ने सेवक (वेटर) को आवाज़ दी... सेवक उनकी ओर देखा, और राषिद से उसने पूछा कि वह क्या लेना चाहता है।

राषिदः चाय

सेवक (आश्चर्य से), चाय? ।

राषिदः नींबू वाली ।

सेवक (आश्चर्यचकित होकर), नींबू वाली ।

माइकल (हँसते हुए), हाँ, निश्चय वह मुस्लिम है, शराब नही पीता है... मेरे लिए भी नींबू वाली चाय लाना, ताकि हम दोनों कि पसंद एक हो जाय, और मेरी हडबडी से क्षमा याचना हो जाय।

सेवक इन दोनों की पसंद लाने के लिए अंदर गया । जबकि राषिद अपने मुँह, मुँह में यह बड बडाने लगा, मुझे समझ नही आ रहा है इसमें आश्चर्यजनक क्या बात है?।

माइकलः ऐ मेरे दोस्त हमारे देश में शराब पीना जल पीने के समान है। हमारे यहाँ विभिन्न स्वाद, अलग-अलग नामों के साथ शराब पीने के कई तरीक़े हैं। सेवक आश्चर्यजनक इसलिए हुआ कि आपकी पसंद इन में से नही थी। साधारण रूप से बालक ही ऐसा करते हैं... क्षमा, क्षमा.

राषिदः लेकिन आश्चर्यजनक बात है ।

माइकलः इस में आश्चर्यजनक बात क्या है? ये कोई नया मामला तो नही है। हमारे देशों मे ही नही, बल्की पूरे पश्चिम में यह सामान्य बात है।

राषिदः निश्चित रूप से यह आश्चर्यजनक विषय है।

माइकलः क्यों?।

राषिदः इसलिए कि तुम में से अधिकतर लोग ईसाई धर्म के अनुयायी हैं। यह माना जाता है कि तुम सब पवित्र पुस्तक पर विश्वास रखते हो। पवित्र पुस्तक तौरात में यह विवरण कर दिया कि शराब पीने से बहुत नष्ट होते हैं। पवित्र पुस्तक में चेतावनी देते हुए यह कहा गया, शराब पीने वालों व अपने शरीर को नष्ट देनेवालों मे से न बनें। (अमसाल, 20-23) पवित्र पुस्तक ने शराब द्वारा नशा करने से रोका हैः सर्वनाश हो उन लोगों का, जो प्रात उठकर नशीली पदार्थों के पीछे दौड़ते हैं। और सर्वनाश हो उन लोगों का जो आधी रात तक शराब में डूबे रहते हैं। (इशइया, 5-11)

पवित्र पुस्तक बाइबल के लावीन नामक भाग (10-9) में यह आया हैः प्रभु ने हारून से यह कहाः तुम और तुम्हारी संतान शराब और नशीली पदार्थों का उपयोग न करो, ताकि तुम्हारा ध्यान न हो। यह भविश्य में आनेवाली सारी संतान के लिए सदा रहनेवाला फर्ज़ (अधिरोपण) है। ख़ुज़ात नामक भाग (13-14) में आया हैः प्रभु के इंजील (फरिशता) ने मनूः ... से यह कहाः शराब के प्याले में रखी हुई कोई चीज़ न खाओ। शराब व नशीली पदार्थ न पियो.... इसके अतिरिक्त बहुत सारी पवित्र वाणियाँ हैं, जो शराब पीने वालों को डाँटती है। नशीली पदार्थों का उपयोग करने वालों के साथ बैठने से रोकती है। बल्कि उनकी ओर देखने वालों को भी डाँटा है...

माइकलः राषिद धैर्य से। तुम यह न समझलो कि केवल तुम्ही पवित्र पुस्तकों के बारे में जानकारी रखते हो। हमारे यहाँ बहुत सारे साधु-सन्त शराब के उपयोग को वैध (हलाल) मानते है। कुछ साधु-संतों ने तो पवित्र पुस्तक तौरात से यह बात वर्णन की, कि कुछ ईशवर के रसूलों ने शराब का उपयोग किया। यहाँ तक कि वे नशे में डूब गये। मैंने कुछ साधु-संतों से यह भी सुना कि केवल नशा ही अवैध (हराम) है। पवित्र पुस्तक बाइबल में लिखा है कि ईसा मसीह ने शराब पी। लूखा नामक भाग (7-33) में लिखा हैः क्योंकि युहन्ना न रोटी खाते थे और न शराब पीते थे, इसलिए तुम लोगों ने उनको दानव कहा। और यह मानव खाता व शराब पीता है, इसलिए तुम लोगों ने उसको खानेवाला और शराब पीने वाला मानव कह दिया।

राषिदः मेरे दोस्त, तुम जो बातें कह रहे हो, यह हमें दो कठिन समस्याओं की ओर ले जाती है। जिनका पश्चीमी मानव व पश्चीमी संस्कृति पर बहुत ज्यादा प्रभाव है

प्रथमः मुझे आपसे यह बात कहते हुए दुख हो रहा है कि तम्हारे पवित्र पुस्तक की वर्तमान स्थिती इस बात का संकेत देती है कि उसमें कई मनघढ़त बातें लोगों के द्वारा शामिल की गयी, और शैतान कि सेवा करनेवाले हाथों के द्वारा उसमें परिवर्तन लाया गया। जिसके कारण इस पवित्र पुस्तक के कई सिद्धांत एक दूसरे से टकराते हैं। उदाहरण के रूप में शराब का वैध (हलाल) होना, और अवैध (हराम) होना। ईसा मसीह का शराब पीने से संबंध जोड़ना, और उसी समय ईसा मसीह को शराब जैसी चीज़ के उपयोग से पवित्र माना। लोख़ा नामक भाग (1-15) में जिब्राईल (देवदूत) के द्वारा ईसा मसीह के चरित्र का विवरण किया गया है। हम इस भाग में यह पढ़ते हैः क्यों कि वह प्रभु के सामने अधिकतर महान है, इसलिए वह शराब व नशीली पदार्थ का उपयोग नही करते हैं.... यहाँ पवित्र पुस्तक के सिद्धांतों में टकराऊ साफ नज़र आ रहा है।

द्वितीयः तुम्हारे धार्मिक महात्मा पवित्र पुस्तक को स्वयं अपनी व्यक्तिगत संपत्ती समझ बैठे हैं। उनमें से कुछ महात्माओं ने तो यह दावा कर दिया कि वह प्रभु का प्रतिनिधी है। और बहुत से साधु-संतों का तो यह विचार है कि उनके हाथ में किसी भी विषय को वैध (हलाल) या अवैध (हराम) ठहराने कि समर्थता है, और तुम लोग हो जो इन बातों में उनका अनुसरण करते हो।

माइकलः तुम्हारी बात सत्य है। इसीलिए मैं तुम से खुलकर यह कहता हूँ, हमारे अधिकतर लोग वास्तविक रूप से पवित्र पुस्तक पर विश्वास नही रखते हैं, और न धार्मिक महात्माओं पर भरोसा करते हैं। निश्चय विकास के प्रारंभ के बाद से हमारी संस्कृति में बडा बदलाव आया है। इसी कारण वास्तविक जीवन में हमारा विश्वास केवल बुद्धि और ज्ञान पर होता है... छोडो यह पवित्र पुस्तकें और धर्म की बातें । हम बुद्धि व ज्ञान की दृष्टि से बात करते हैं।

राषिदः सब से पहले तो आप मुझे यह कहने कि अनुमति दें कि तुम लोग चर्च के द्वारा अत्यचार और ज्ञान के ख़िलाफ लड़ाई से, विशेष रूप से मध्य काल में पीडित हुए हो, इसी कारण धर्म तुम्हारी सब से बडी समस्या है। चिंताजानक बात यह है कि तुम लोगों ने प्रत्येक धर्म को चर्च ही समझ बैठा, और यह ख़याल करने लगे कि हर धर्म ज्ञान का विरोधी है। उसकी भूमिका केवल प्रार्थनागृह की दीवारों तक सीमित है। जहाँ तक इस्लाम धर्म की बात है, हम किसी ऐसी समस्या से पीडित नही हुए । बल्कि हमारा धर्म तो ज्ञान प्राप्त करने पर प्रोत्साहित करता है, और इसमें कोई ऐसे पवित्र रहस्य नही है, जिनका अधिकार केवल धार्मिक महात्माओं को ही प्राप्त हो...

चलिये हम उसी शैली में बात करते हैं, जिससे तुम सहमत हो। लेकिन इसका मतलब यह नही कि इससे मेरे सिद्धांतों का विरोध होता हो। और बहुत जल्द मै इसको साबित करूँगा ।

माइकलः तो फिर साबित करो

राषिदः तुम ने कुछ समय पहले यह कहा कि तुम लोग आज कल बुद्धि और ज्ञान पर विश्वास रखते हो । तो सबसे पहले मैं तुम से यह प्रश्न करूँगाः जब बुद्धि इतनी महत्वपूर्ण चीज़ है, तो क्या शराब से बुद्धि काम करती है या काम करना बंद करदेती है ?

माइकलः बकवास है । यह कोई प्रश्न नही है।

राषिदः निश्चय अल्लाह ने मानव को सम्मान जनक बनाया। बहुत सारे जीव के मुक़ाबले इसको प्रभुत्व दिया, और बुद्धि जैसी अनुग्रह (नेमत) प्रदान किया। इस्लाम धर्म में अल्लाह ने बुद्धि न रखनेवालों को (पागल) धार्मिक आदेशों के पालन का कर्तव्यवान नही बनाया है। अल्लाह ने हमे इस महान अनुग्रह की सुरक्षा करने और उसको बिगाडने वाली चीज़ों से दूर रखने का आदेश दिया है। बल्कि बुद्धि की सुरक्षा करना इस्लाम धर्म की पाँच महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। इसीलिए इस्लाम ने शराब पीने, नशीली पदार्थ का उपयोग करने, या इन जैसी किसी भी ऐसी चीज़ का उपयोग करने को अवैध (हराम) माना है, जिससे बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

माइकलः अभी तुमने जिन पाँच आवश्यकताओं की बात कही है, वे क्या है ?

राषिदः हम इस विषय पर अगर बात करने लगे तो, हमारे बीच होने वाली बात अधूरी रह जायेगी। लेकिन फिर भी सुनलो वह पाँच आवश्यक्ताएँ यह हैः धर्म, प्राण, बुद्धि, मान और धन।

माइकलः बहुत अच्छे। तुम अपनी बात पूरी करो।

राषिदः वैज्ञानिक दृष्टि से यह बात विख्यात है कि अल्कोहाल (जो शराब में सब से ज्यादा प्रभावित वस्तु है) अन्नाश्य और पेट की बारीक नलियों में बहुत जल्द फैल जाता है फिर तुरत ही रक्त कि नलियों तक पहुँच जाता है। इसके बाद सरलता के साथ शरीर के प्रत्येक अंग में, (जिसमें केंद्रिय तंत्रिका तंत्र की कोशिकाआ भी शामिल है) फैल जाता है

अल्कोहाल (चाहे बहुत ही कम प्रतिशत 0.03% ही क्यों न हो) तांत्रिक कोशिका के कार्य पर प्रभावित होता है। उनके बीच तांत्रिक धाराओं की रफतार को कम करता है। ध्यान में कमी और चलने-फिरने में असंतुलन का कारण बनता है। साथ-साथ अच्छे बुरे को पहचान ने की क्षमता भी नही रहती है। इसीलिए हमारे पवित्र क़ुरआन ने शराब को सख्ती के साथ अवैध (हराम) ठहराया है। अल्लाह ने कहा ये शराब और जुआ और देवस्थान और पाँसे तो गंदे शैतानी काम है।

(अल-माइदा, 90)

माइकलः हमारे ख्याल से तो शराब में कुछ लाभ भी है, जैसे चुस्ती पैदा होना और गर्मी का अनुभव होना। विशेष रूप से तो हमारे इन ठंडे देशों में।

राषिदः पवित्र कुरआन ने शराब से कुछ लाभ होने का इनकार नही किया। निश्चय अल्लाह ने कहाः यद्यपि लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं, परन्तु उनका गुनाह उनके फायदे से कहीं बढ़कर है। (अल-बक़रा, 219) शराब से होने वाले इन लाभ कि उससे होनेवाले नष्ट से तुलना नही की जा सकती है, इसलिए पवित्र क़ुरआन ने इसे अवैध ठहराया है। चलो, हम उसी विज्ञान की दृष्टि से बात करते है जिस पर तुम भरोसा करते हो।

व्यवहारिक प्रभाव, मानसिक व सामाजिक नष्ट, दूसरों को तकलीफ़ पहूँचाने और वित्तीय हानि व जागरुकता से ख़ालि पाप की ओर ले जानेवाली हरकतों के अतिरिक्त, निश्चय विज्ञान इस बात की पुष्टि करता है शराब का पीना, विशेष रूप से शराब की लत और नशे की आदत पड़जाना निम्न लिखित स्वास्थिक नष्टों का कारण बनता है।

1. साधारण रूप से शरीर की ग्रंथियों को कमज़ोर बनाता है, और ग्रंथियों व हृदय में विकार का कारण बनता है
2. प्रजनन प्रणाली में जमाऊँ का कारण है।
3. पेट के अल्सर, गैस ट्रबुल व पाचन प्रणाली में संक्रमण का कारण है।
4. प्रत्यक्ष रूप से मुँह, ग्रसनी, पेट, नालियाँ, नसों और ग्रंथियों के संक्रमण का कारण है।
5. जिगर के संक्रमण और टुकडे-टुकडे हो जाने का कारण है। फिर जिगर तंतुमयता से पीडित होते हुए घट बन जाता है, जिससे जिगर सिरोसिस से पीडित हो जाता है। और इस बीमारी का इलाज नही है, व यह बीमारी जिगर के कैंसर का कारण है।
6. श्वसन प्रणाली के अंगों पर शराब से होनेवाले नष्टों कि गिनती करना असंभव है।

तुम ने जो शराब से शरीर को गर्मी पहूँचने की बात की है, इसका कारण शराब में मिले हुए रक्त से चमडी पर होनेवाला असर है, जिससे शिरापरक और धमनियों दोनों प्रकार कि रक्त वाहिकाओ में फैलाव पैदा होता है। इसके कारण हम त्वचा की ऊपरी सतह में शरीर के हर अंग से आनेवाला गर्म ख़ून भर जाता है। यही

कारण है कि शराब पीने वाला झूठी गर्मी महसूस करता है। हम शराब पीने वाले की त्वचा को देखते हैं कि वह लाल पड़ जाती है और वह ठंड का अनुभव नही करता है। और शरीर के सारे अंगों से यह गरम रक्त अपने सामान्य प्रवाह से अधिक त्वचा की ओर लगातार प्रवाहित होते रहता है, जिससे जीवन में महत्वपूर्ण शारीरिक प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक गर्मी आंतरिक तापमान से शरीर हाथ धो बैठता है।

शराब पीने से हटकर गर्मी आने के लिए दूसरे कई साधन है। और यह बात सब जानते है ठंडे देशों में रहनेवाले मुस्लिम अपने आप को गर्मी पहुँचाने के लिए शराब का उपयोग नही करते।

माइकलः लेकिन माननीय राषिद तुम इस ओर तो ध्यान दो कि तुम्हारी बातें उस समय लागू होंगी, जब कि शराब कि लत नशे की आदत तक पहुँच जाये। इस कारण मेरा यह विचार है कि थोडा शराब पीना इतना भी बुरा नहीं है।

राषिदः समस्या यह है कि शराब पीने का जब प्रारंभ किया जाता है, तो स्वास्थ्य में चुस्ती के साथ-साथ एक अच्छा अनुभव पैदा होता है, फिर इसके बाद शरीर ज्यादा से ज़्यादा आल्कोहाल पीना चाहता है, यही कारण है कि शराब पीने वाला अधिक शराब पीने कि इच्छा रखता है। और जैसे जैसे आल्कोहाल का प्रतिशत बढती रहती है तो शरीर में ज़्यादा से ज्यादा शराब पीने कि इच्छा पैदा होती .... इसी प्रकार यह समस्या बड़ती रहती है।

मुझे तुम्हारे सामने न्यूज़िलांड के एक चिकित्सा अध्ययन का सारांश कहने दो। इस अध्ययन में इस बात की ओर संकेत किया गया है कि अल्कोहाल से बने हुए पेय के (चाहे थोडी मात्रा में या मध्यम मात्रा में) उपयोग से होने वाले नष्ट मादक पेय से होनेवाले किसी भी अपेक्षित लाभ से कई ज्यादा है। यह अध्ययन पश्चिम में विस्तरित उस बात कि बिल्कुल विरोध में है, जिसमें यह कहा गया कि हर दिन शराब का एक कप पीने से हृदय रोग से मानव मुक्ति पाता है। न्यूज़िलांड कि आक्लैंड यूनिवर्सिटि के महामारी - विज्ञान के प्रोफेसर डाक्टर रोड जाक्सन ने लैनसेट नामक मैग्जीन में अपने लिखे हुए लेख में यह कहते हैं शराब थोडी या मध्यम मात्रा में पीने के कारण हृदय रोग से बचने का डर बहुत कम है, और वह शराब से होने वाले नष्ट के बराबर नही हो सकता ।

इस स्थान पर रसूल की वाणी में स्थिर नियमित व वैज्ञानिक चमत्कार प्रकट होता हैः हर मादक पदार्थ अवैध (हराम) है। और जिस पदार्थ कि अधिक मात्रा नशे का कारण हो, उसकी थोडी मात्रा का भी उपयोग अवैध है।

माइकलः ओह। यह तो केवल गरम ही नही, बहुत कठिन चर्चा थी। मेरे विचार में अब मुझे एक ठंडे नींबू पानी के कप की आवश्यक्ता है। आज हम यही अपनी बात समाप्त करते हैं।

राषिद (हँसते हुए) - नींबू पानी बिना चाय के?। लेकिन तुम ने तो वह बात ही नही बतायी, जिसके प्रति तुम्हारा यह विचार है कि मै उस बात से सहमत रहूँगा ।

माइकलः हम अगली मुलाक़ात में उसका चर्चा करेंगे ।

राषिदः इनशा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा तो)

एक पत्नी... काफी है क्या? ।



एक पत्नी... काफी है क्या? ।

राषिद हालांकि अपनी समय पर पहुँच चुका था। मगर उसने देखा माइकल उसकी प्रतिक्षा में केफे पर बैठा हुवा था, बल्कि माइकल ने तो उसके लिए जलपान का भी प्रबंध कर दिया था, राषिद ने उसका स्वागत किया और अपनी कुर्सी पर बैठ गया ....

माइकलः मैं ने तो तुम्हारा मन मोहक पेय मंगवा लिया है। नींबू वाली चाय ... मैं ने यह अनुमान कर लिया कि तुम अपना मन मोहक पेय ही सेवन करोगे।

राषिदः अच्छा स्वागत है। निश्चय वास्तविक रूप से यही पेय मेरा मन मोहक है। लेकिन मैं इस में बदलाव पसंद करता हूँ, यहाँ तक कि मै कभी- कभी कम दर्जे की पसंद का भी उपयोग कर लेता हूँ .. मेरा विचार है कि साधारण रूप से मानव का यही स्वभाव है।

माइकलः मै तुम से सहमत हूँ । लेकिन इस विषय को छोडो। हम अपने विषय के प्रति बात करते हैं ... क्षमा चाहता हूँ । क्या मै तुम्हारे लिए कोई दूसरा पेय पदार्थ मंगवाऊँ ?

राषिदः नही नही । आपका शुक्रिया.... ऐसे लगता है कि तुम चर्चा के लिए बहुत ही अधिक उत्तेजित हो ।

माइकलः ऐसी कोई बात नही। लेकिन पिछली बैठक के समान आज भी हमारा समय अन्य विषयों में समाप्त न हो जाय।

राषिदः फिर तो प्रारंभ करो।

माइकलः जैसा कि मैं ने पिछली बैठक में तुम से कहा था कि मैं एक ऐसे विषय में तुमसे चर्चा करना चाहता हूँ, जिसके प्रति मेरा यह विचार है कि तुम मेरी दृष्टि से सहमत रहोगे। हालांकि मुझे यह ज्ञात है कि तुम्हारी संस्कृति में इस दृष्टिकोण के विपरीत सिद्धांत पाये जाते है।

राषिदः बहुत अच्छे। मै तुम्हारा विरोध करना नही चाहता हूँ। तुम्हारे साथ चर्चा करने का लक्ष्य हमारे बीच आपसी अग्रिम, या कम से कम हम में से हर एक कि दृष्टि कोण को सही समझने का प्रयास है... तो बताओ वह विषय क्या है?

माइकलः कम शब्दों में विषय यह है कि वैवाहिक संबंध पती पत्नि दोनों कि ओर से एकत्व हो। अधिकतर विवरण करते हुए मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस्लाम धर्म में अनेक पत्नियों को रखने कि पद्धती में स्त्री पर एक प्रकार का अन्याय है... क्या तुम मेरी इस बात से सहमत नही हो?।

राषिदः तुम किस स्त्री के प्रति बात कर रहे हो।

माइकलः (आश्चर्यजनक होकर) - स्त्री। पत्नी।... क्या वैवाहिक संबंध में कोई और स्त्री भी है?।

राषिदः जैसा कि पहले से ही हम इस बात पर सहमत हैं कि हर विषय में सही चर्चा ऐसे समग्र ढांचे के भीतर हो, जिसमे सारी समस्याएँ जुड़ जाती हों, और हर दिशा से उसमें विचार किया जाता हो।

माइकलः ठीक है। लेकिन इसका हमारे विषय पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

राषिदः प्रभाव यह है कि जब हम इस विषय में चर्चा करें, तो इस बात की आवश्यक्ता है कि हम स्त्री के हितों पर सारी स्त्रियों को सामने रखते हुए विचार करें, सारी संस्कृति के हितों का ध्यान रखे, बल्कि पुरुष के हितों पर भी ध्यान दें, और पुरुष और स्त्री के बीच स्थिर अंतरों को भी ध्यान में रखें ।

माइकल (बात काटते हुए)- यह देखो उसी अन्याय कि जड़ तक हम पहुँच गये, जिसके बारे मे मै बात कर रहा था। वास्तविक रूप से तुम्हारे यहाँ स्त्री पर अन्याय हो रहा है। पुरुष और स्त्री के बीच अंतर। तुम जिस अंतर का दावा कर रहे हो, यह तो केवल स्त्रीयों का शोषण और उनसे आनंदित होने के लिए पूर्वी पितृसत्तात्मक संस्कृति के द्वारा बनाये गये नियम है... यह अंतर क्या है ? स्त्री को एक से ज्यादा पुरुष से विवाह करने का अधिकार क्यों नही है ? क्या यह इस संस्कृति में पुरुषों कि हवस का प्रमाण नही है?।

राषिदः ऐ मेरे मित्र धैर्य से काम लो... तुम ने तो मेरे सामने प्रश्नों का विखंडन बम डाल दिया। इसका उपयोग वाद-विवाद के नियमों के विरुद्ध है। हमारे लिए एक ही समय में इन सारी समस्याओं का सामना करना संभव नही है। हम प्रत्येक समस्या पर अवश्य चर्चा करेंगें। लेकिन पहले हमें इस बम को अलग अलग करने दो। सबसे पहले हम उसी विषय कि बात करेंगे, जिससे तुम्हे क्रोध आगयाः क्या तुम पुरुष और स्त्री के बीच अंतरों को नही मानते?

माइकलः यह कौन से अंतर है?

राषिदः सब से पहले जैविक अंतर। पुरूषों और स्त्रियों के शारीरिक स्वभाव में स्थिर जैविक अंतर

माइकलः निश्चित रूप से जैविक अंतर तो हैं। लेकिन हमारी चर्चा का इन अंतरों से क्या संबंध?।

राषिदः जिस धर्म का अनुसरण करना और उससे संतुष्ट रहना मेरा सिद्धांत है, मेरे उस धर्म कि दृष्टिकोण से मैं तुम्हारे साथ चर्चा नही करूँगा । परन्तु मै उसी बुद्धि और ज्ञान कि दृष्टिकोण से बात करूँगा, जिस के प्रति तुम ने पहले ही यह बता दिया कि तुम उस पर विश्वास रखते हो... सुनो मेरे मित्र ।

कुछ समय पहले किये गये वैज्ञानिक अध्ययन से यह साबित होता है कि पुरुष के भीतर स्थिर प्रेम का रसायन (स्वभाव) स्त्री के भीतर स्थिर रसायन से अलग है। इसी कारण अन्य शोध संस्थाओं ने गंभीर रूप से पुरुष और स्त्री के भीतर स्थिर प्रेम के स्वभाव का अंतर जानने का प्रयास किया। शोध वैज्ञानिकों को अद्भुत

परिणाम प्राप्त हुए कि पुरूष के जीन संबंधों में विविधता उत्पन्न करते है। जब कि स्त्री के जीन संबंधों में स्थिरता और एकत्व पैदा करते हैं। वास्तविक रूप से आधुनिक विज्ञान ने यह साबित कर दिया है कि अन्य स्त्रियों में से किसी भी स्त्री से अपने प्रेम की भावनाओं में बिना किसी कमी के पुरुष अनेक स्त्रियों के साथ प्रेम करने की क्षमता रखता है।

सी.यन.यन. टी.वी. चैनल ने यूटा अमेरिकि राज्य कि विश्वविद्यालय के मनो वैज्ञानिक प्रोफेसर लीज़ा डैमोंड की बातें विवरण करते हुए यह कहा कि कई ऐसे जैविक प्रमाण है, जिससे यह साबित होता है कि पुरुषों में स्थिर यौन संबंधों की विविधता उनके शारीरिक रचनाओं के कारण पैदा होती है।

2007 में किये जाने वाले अपने रिसर्च में इंग्लैंड के आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय कि शोधकर्ता टीम ने इस बात का संकेत किया कि स्त्रियाँ पूर्ण रूप से पुरुषों के विपरीत है। स्त्री का अधिकतर ध्यान अपने शरीर और संतान पर होता है। इसका कारण यह है कि स्त्री में हार्मोन xtosen होता है, जिस से उनका संबंध अपने बच्चों से ज़्यादा हो जाता है।

कुछ नये रिसर्च इस बात का संकेत करते हैं कि स्त्री के मस्तिष्क से पुरुष का मस्तिष्क लगभग दिगुना है। शायद इन दोनों के मस्तिष्कों के बीच पाये जाने वाले इस अंतर का कारण यह है कि स्त्री के भीतर पायी जानी वाली यौन-इच्छा से पुरुष की यौन इच्छा लगभग तिगुना है।

मेरे मित्र, क्या इन अंतरों का वास्तविक रूप में कोई प्रभाव नही होगा ?

माइकलः अगर यह ज्ञात सही हो तो इसका प्रभाव अवश्य होगा ।

राषिदः तो फिर तुमने पुरुष की जिस हवस और उसके वैवाहिक संबंधों में विविधता की बात की है, इसका इस्लाम धर्म से या पूर्वी संस्कृति से कोई संबंध नही है... मै तुम से एक प्रश्न करता हूँ। मुझे आशा है कि तुम अपने स्वभाव अनुसार ईमानदारी से इस प्रश्न का उत्तर दोगे। तुम्हारे कितने ऐसे मित्र और बन्धु हैं, जिनके अनेक स्त्रियों से संबंध नही है ? मै तुम्हारे संबंधों कि बात नही कर रहा हूँ।

माइकलः अगर तुम मेरे संबंधों की बात करो, तो भी कुछ बुरा नही। क्योंकि हमारी संस्कृति में यह एक साधारण बात है... लेकिन यह संबंध ब्याह के नाम पर नही होते हैं ।

राषिदः तो फिर जिस बात का तुम हमारी संस्कृति पर आरोप लगा रहे हो, वही बात एक बडे अंतर के साथ तुम्हारी संस्कृति में उपलब्ध है। मै विस्तार से तुम्हारे सामने इसकी चर्चा करूँगा ।

मै इस से भी आगे बडकर तुम से यह कहता हूँ कि इस्लाम धर्म ने बहु विवाह की रीति कोई नई नही बनाया है। पूर्व काल कि सारी सभ्यताओं में बहु विवाह एक साधारण रीति थी, और पुरुष के लिए पत्नियों कि कोई निर्धारित संख्या नही

थी। इसी प्रकार सारे देवत्व धर्मों में बहु विवाह विख्यात था। ज्यूष (यहूदी) धर्म में मध्यकाल तक बहु विवाह कि अनुमति थी। यहाँ तक कि पोप गुर्शूम इष्किनाज़ी (960-1040 A.C.) ने बहु विवाह के अवैध होने का प्रचार किया। जहाँ तक ईसाई संस्कृति कि बात है, वे 17 वीं शाताब्दी के बाद ही बहु विवाह को अवैध मानने लगे। और आज तक कुछ ईसाई संस्कृतियों, जैसे मोरमोन नामक समुदाय में बहु विवाह की अनुमति है।

माइकलः यह तो पूर्व काल की बात थी। अब तो मानव प्रगति और सभ्यता की ओर पदोन्नत प्राप्त कर लिया है।

राषिदः सभ्यतागत पदोन्नति की प्रगति का अर्थ मानवीय प्रकृति से टकराऊ, उसकी आवश्यकताएँ पूरी न करना, और मानवीय हितों की सीमाओं को पार करना नही है। परन्तु यह नही कहा जा सकता कि पूर्व काल के मनुष्य पशु-पक्षियों का मांस खाया करते थे, या भेड के ऊन का उपयोग करते थे, और आज कल मांस खाना या ऊन का उपयोग करना नीच या निम्न दर्जे का स्वभाव होगा.... लेकिन यह कहना संभव है कि मानवीय सभ्यतागत प्रगति इन व्यवहार में अधिक विकास ला सकती है, ताकि मानवीय आवश्यकताओं को बडी मात्रा में पूरी करे, और मानव कि हितों को अधिक आश्वासन दे.... यही वह संदेश है जो इस्लाम धर्म अपने साथ लाया है।

माइकलः कैसे ?

राषिदः तुम कहते हो कि वैवाहिक संबंध की रूपरेखा के बाहर यौन या प्रेम पूर्ण संबंध रखना तुम्हारी पश्चिमी संस्कृति में एक साधारण बात है। वास्तव में स्त्री के प्रति यही अन्याय है, और संस्कृति के लिए यही नष्ट दायक है। यह संबंध मानसिक स्थिरता के विपरीत है। अधिकारों का आश्वासक नही है, और न स्वस्थ समाज बनाता है। प्राचीन संस्कृतियों में बहु विवाह का कोई नियम नही था, तो इस्लाम ने वह नियम प्रस्तुत किया। स्त्री के साथ न्याय करते हुए उसकी आवश्यकताओं को पूर्ण किया। वैवाहिक संबंध मे उसको क़ानूनी भागीदार ठहराया, और इस सामाजिक समिति (मेरा अर्थ परिवार है) की सफलता के लिए बडी मात्रा में आश्वासन देते हुए इस वैवाहिक संबंध के लिए कई नियम और शर्त रखा ।

इस्लाम ने प्रत्येक स्त्रि के हितों का ख्याल रखा, और पुरुष की हवस को आज़ाद छोडने व बंदी बनाये रखने में संतुलन रखा। यह सब इस्लाम ने सामाजिक समिति के भीतर सीमित किया। जब कि तुम्हारे देशों मे सामाजिक समिति अधिक पराकाष्ठ पर पहुँच गयी है .... मेरा अर्थ परिवार है ....

माइकलः लेकिन जन संख्या से तो यह ज्ञात होता है कि पुरुष जन्मों का अनुपात स्त्री जन्मों के अनुपात के लगभग बराबर है। जब बहु विवाह के नियम को हम लागू करेंगे, तो कुछ पुरुषों के लिए पत्नियाँ नही रहेंगी। यह भी एक बडी गंभीर समस्या है।

राषिदः जब जन संख्या से यह बात ज्ञात होती है, तो निश्चय उससे यह बात भी मालूम होती है कि स्त्रियों के उम्र की दर पुरुषों की दर से ऊँची है। पश्चिमी संसार में पुरुष औसत रूप में स्त्रियों से 7 साल कम जीते हैं। और यह अंतर पिछली शताब्दी से लगातार बड़ रहा है। उदाहरण के रूप में, जर्मनी के अंदर स्त्री की औसत आयु 80 वर्ष है, जब कि पुरुष की औसत आयु 70 वर्ष है। यह अंतर 1900 (A.C.) में केवल 2 वर्षों का था ।

अमेरिका कि मिचिगन यूनिवर्सिटि के प्रोफेसर डानियल क्रोज़र कहते हैं कि संसार के अधिकतर देशों मे स्त्री के मुक़ाबले में पुरुष कम जीते हैं.... प्रोफेसर क्रोज़र यह भी कहते हैं किः इस अंतर का एक कारण यह है कि पुरुष और स्त्री के हार्मोन अलग-अलग हैं, और पुरुष के हार्मोन रक्त प्रवाह व हृदय रोग का कारण बनने वाले जीन को उत्तेजित करते हैं।

इसके साथ-साथ दंगे फसादों से पीडित देशों में होने वाले युद्ध के कारण मृत्यु की आशंका। गंभीर ब संकट पेशे में अपने प्राण को जोखम में डालना। इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक घटनाएँ जैसे सडक दुर्घटनाएँ... इन सब घटनाओं से कई हज़ार लोग पीडित है। इन में से अधिकतर पुरुष ही हैं.....

यानी विभिन्न समुदायों में स्त्री का अनुपात पुरुष से अधिक है। यह एक वास्तविक सच्चाई है, जिसकी अधिकतर देशों कि जन संख्या पुष्टि करती है। साथ-साथ यह बात भी है कि विधवाओं और तलाक़ वाली स्त्रियों की संख्य बढती जा रही है...

तो क्या कन्या लडकियों को मानसिक, सामाजिक और चारित्रिक समस्याओं से पीडित छोड दिया जाये? या समुदाय के स्वस्थ और स्वयं इन कन्याओं पर प्रतिकूल प्रभाव के डर से उन्हें अपनी इच्छाएँ पूरी करने और अपने अधिकारों को मांगते हुए फिरने दिया जाय? या किसी भी दल पर दबाव व अन्याय के बिना न्याय के भीतर आश्वासन देने वाले, और मानवीय परिस्थितियों व क्षमताओं का ध्यान रखने वाले नियमित पद्धतियों के द्वारा ऐसी सामाजिक प्रणाली बनायी जाय, जो प्रत्येक (पुरुष व स्त्री) कि आवश्यकताएँ पूरी करे? ।

फ्रान्स के समाज शास्त्री डाक्टर गोस्ताव लोबोन ने इस बात का उत्तर देते हुए यह कहा कि बहु विवाह की पूर्ति (यानी इस्लामिक) प्रणाली उत्तम है, जो इस प्रणाली के अनुयायियों के बीच नैतिकता को बढाती है, परिवार को संयुक्त बनाती है, और स्त्री को वह सम्मान व प्रसन्नता देती है, जो तुम पश्चिम में नही देखोगे ।

मुझे एक कप नींबू पानी और एक कप चाय पीने दो ।

दुखी गुलाब



दुखी गुलाब

राषिद कुर्सी पर बैठते ही अपनी थैली से ल्यापटाप निकाला, और वह उसको चालू करते हुए माइकल से यह कहने लगाः

आज की रात मै तुम्हे एक अद्‌भुत विडियो क्लिप दिखाऊँगा। इस क्लिप की अवधि आधे मिनट से कुछ ज़्यादा है, लेकिन यह अनोखी है, क्योंकि वह हमारे सामने इतिहास कि एक शताब्दी प्रस्तुत करती है। निश्चय यह एक विडियो दस्तावेज़ है।

माइकल और राषिद दोनों ध्यान के साथ ल्यापटाप से निकट हो गये, और स्क्रीन (पर्दे) की तरफ अपनी निगाहें जमा बैठे ।

माइकलः ओह क्या दिलचस्प। मेरे देश ब्रिटन में लगभग एक शताब्द पहले जीवन के ढंग देखते हुए मुझे कितनी खुशी हो रही है... देखो, सडक पर गुज़रने वाले लोगों के चेहरों से कितनी खुशी झलक रही है... इस बच्चे की खुशी भी देखो।.... जीवन प्रकृति व सहजता के अधिक निकट था... जीवन कितना ही अधिक मन भावित था।

राषिदः मै फिर से इस विडियो क्लिप को दिखाता हूँ, ताकि एक महत्वपूर्ण विषय की ओर तुम्हारा ध्यान जाये।

दुबारा क्लिप को दिखाते हुए माइकल से यह कहता हैः

देखो।.... यह स्त्री... यह दो स्त्रीयाँ... यह पाँच, छः स्त्रियाँ । मेरे साथ-साथ इस ओर ध्यान दो... इन सब स्त्रियों के शरीर का कोई भी भाग नज़र नही आ रहा है। उनके सर टोपी और दुपट्टे से ढके हुए हैं.... उनकी वेश-भूषा ढीली-ढाली है, जिससे उनके शरीर की बनावट छुपी हुई है।

माइकलः बिल्कुल सत्य ।

राषीदः तो फिर हुआ क्या? ।

माइकलः किस विषय में ?

राषिदः तुम्हारी संस्कृतियों में...

माइकलः तुम्हारे कहने का अर्थ नग्नता व बेहयायी है? ।

राषिदः हाँ। लेकिन मैं इस बात की ओर संकेत देता हूँ कि आम तौर पर यह नैतिक नियमों के ढांचे का पतन है।

माइकलः यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता है। हम आज कल ऐसी संस्कृति में रहते हैं, जिसमे स्वतंत्रता का महत्व अधिक है। हर व्यक्ति को इच्छा के अनुसार अपनी जीवन शैली चयन करने का अधिकार है।

राषिदः निश्चित रूप से मै इस बात से सहमत हूँ। यह एक ऐसा विषय है, जिस के प्रति चर्चा करने के लिए एक या अनेक बैठकों की आवश्यकता है। लेकिन आकर्षित बात यह है कि तुम्हारे यहाँ नैतिकता के नियमों में होनेवाले बदलाव से सारी संस्कृति सहमत है। ऐसा लगता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छाओं में एक ही नियम का पालन करता है।

माइकलः तुम्हे यह बात याद रहना चाहिए कि समुदाय की संस्कृति भी कोई चीज़ है, जिसके अनुसार सदस्य परवरिश पाते हैं। यह संस्कृति स्वयं स्वचलित आचरण बन जाती है, और किसी नियम को मन में न रखते हुए, व किसी हैरानी या समुदाय की ओर से किसी खंडन के बिना सदस्य इन आचरण को करने लगता है। इस संस्कृति के भीतर कभी-कभी सदस्यों के चयन के बीच कुछ अंतर हो जाता है।

राषिदः बहुत-अच्छे । अगर हम संस्कृति के इस झुकाव की बात करें, और इसमे सत्य व असत्य का विचार करें, तो हम यह देखते हैं कि तुम्हारी पवित्र पुस्तक में शीलवान रहने और अलंकरण न दिखाने का आदेश है। पॉल के द्वारा टिमोथी को लिखे हुए पहले संदेश (2-9) में आया हैः इसी प्रकार मेरी यह भी इच्छा है कि स्त्रियाँ सभ्य रूप, संपूर्ण पोशाक, शर्म और सादगी से अलंकरित हो। सोना, हीरे और क़ीमती ज़ेवर से अपने शरीर को न सँवारे (10), बल्कि ऐसी चीज़ो से अपने आप को सँवारे, जो स्त्रियों के लिए शोभादायक हो, जिससे उनके प्रति यह साफ ज्ञात होता है कि वे अच्छे कार्य करते हुए धर्मपरायणता में जीवन यापन कर रही है।

माइकलः मेरे मित्र । यह तो उन स्त्रियों के लिए उपयुक्त है जो चर्च से जुडी हुई है। हम तो अपने चर्च के बाहर वाले जीवन में (जैसा कि मै ने तुम से पहले भी कहा कि) हम ने ज्ञानोदय युग के प्रारंभ से धर्म को जीवन में हस्त क्षेप करने से दूर रखा है।

राषिदः लेकिन मेरे दोस्त । जिस विडियो क्लिप को हम ने देखा, उसमें सडक पर स्त्रियाँ सभ्य पोशाक में है न कि चर्च मे। और यह ज्ञानोदय युग के प्रारंभ से कई वर्षों के बाद कि स्थिति थी ... अगर मै तुम्हारा यह कहना मानलूँ कि धर्म तुम्हारे यहाँ नैतिकता की धाराओं से बाहर है, तो मै तुमसे यह प्रश्न करूँगा, फिर यह क्या हो गया?। किस चीज़ ने तुम्हारी स्त्रियों को नग्नता व बेहयायी कि ओर ले गया ?।

माइकलः तुम्हारी दृष्टि से यह नग्नता है। लेकिन मै तो इसको साधारण बात समझता हूँ। मै इस क्लिप मे एक चीज़ की ओर तुम्हारा ध्यान फेरना चाहता हूँ। सर्दी के मौसम में, या कम से कम ठंडे समय में ली गयी इन चित्रो को देखो। इस मे पुरुष व बालक के पोशाक, और उनके गहरे रंगों का रिवाज नज़र आता है... हो सकता है कि लोगों मे पायी जाने वाली शीलता का कारण सर्द मौसम हो। लेकिन

उस वास्तविकता का इन्कार नही किया जा सकता, जिस को हम सब जानते हैं कि उस युग कि स्त्रियाँ, और कुछ वर्षों पहले भी अधिक शीलवान हुवा करती थी। तो फिर यह प्रश्न फिर हुवा क्या है ? इसका साधारण उत्तर यह होगा कि संस्कृति में प्रगति के अनुसार नैतिक नियम और चाल-चलन में बदलाव आया है।

राषिदः यह एक दूसरा विषय है। हम इस पर चर्चा करने के लिए अलग से समय निकालेंगे। इस विषय का संबंध नैतिकता की दर से है। मै ज्ञान साधन और भौतिक प्रगति को स्वीकार करता हूँ। लेकिन मेरे विचार में इस प्रगति के लिए उपयोग मे लाये जाने वाले नैतिक नियम व आचार अलग-अलग होते हैं।

माइकलः चलिए । इस विषय पर फिर कभी चर्चा करेंगें । लेकिन श्री राषिद मुझे यह तो कहने दो कि तुम लोग सदा स्त्री में केवल शरीर ही का रूप क्यों देखते हो? । क्यों यही विषय तुम्हारे दिमाग़ों में घूमते रहता है?

राषिदः इस्लाम धर्म पुरुष व स्त्री प्रत्येक कि ओर मानवता की दृष्टि से देखता है, और मानव एक प्राण है, जो शरीर, आत्मा और बुद्धि से बना हुवा है। हम इन तीन अंगों में से किसी भी अंग की उपेक्षा नही कर सकते। इन मे केवल शरीर की भौतिकता ही नही, बल्कि प्राणवाणी भी है। और यह संभव नही है कि वाचन शक्ति रखनेवाला यह प्राणी नैतिक सभ्यता, आद्यात्मिकता, सामाजिक व नियमित संघठन के बिना मानवता के दर्जे तक पहूँच जाये। जब यह समझ लिया गया कि तुम उन्नति कि ओर अग्रसर कर गये हो, और चर्च को, या सही मानों में धर्म को जीवन से अलग कर लिया गया है, तो तुम लोग इस बात से संतुष्ट हो गये कि आध्यात्मिकता चर्च के भीतर ही सीमित हो गयी, ताकि बुद्धि धर्म के सीमाओं से बाहर चलने लगे, और तुम शरीर के साथ जो चाहे व्यवहार करलो। इसी कारण भौतिक सभ्यता के राक्षसों ने नैतिक व धार्मिक सीमाओं से हटकर शारीरिक हवस को पूरा करने के लिए कोई पाबंदी नही लगायी। अपनी पाश्विकता को पूरा करने के लिए विभिन्न तरीक़ो से, हर स्थिति मे स्त्री को अपने आकर्षक अंग खुला रखने पर प्रोत्साहित किया। और अधिकार व स्वतंत्रता के नाम पर इसको लोगों के मन में बिठाया ।

माइकलः हम तो सुबह शाम स्त्रियों की नग्नता देखते हैं, लेकिन इससे हमारी हवस (जिसका नाम तुम पाश्विकता रखते हो) मे कोई हल चल नही होती है।

राषिदः तुम्हारे विचार से क्या यह सदाचार या उच्च नैतिकता है? निश्चय नग्नता या यौन इच्छा बड़ाने वाले दृश्यों को बार-बार देखने का सब से अधिक परिणाम यह है कि मानव यौन-रोग से पीडित हो जाता है, और फिर इसका दूसरा गंभीर नष्ट भी है, वह यह कि मानव दैनिक साधारण रूप से देखे जानेवाले दृश्यों के अतिरिक्त अन्य अश्लीलता की खोज में लग जाता है, जो समलैंगिक का कारण बनती है।

माइकलः माननीय राषिद तुमने जिन परिणामों का विवरण किया है वह कई

प्रकार के हैं, जिन में से कुछ बहुत ही निकट है और कुछ बहुत दूर।

राषिदः हाँ। इस समस्या के कुछ और भी परिणाम है जो अपराध के भीतर आते हैं। इसलिए कि जो व्यक्ति शारीरिक, सामाजिक या शैक्षिक हालात के कारण यौन-रोग से पीडित न हुवा हो, तो वह यौन उन्माद का शिकार हो जाता है। जिसका परिणाम यह होता है कि बलात्कार की घटनाएँ सामान्य हो जाती है, और बलात्कार की घटनाओं की आंकडे यही बताते हैं। उदाहरण के रूप से मै तुम्हारे सामने एक छोटी सी बात कहता हूँ।

फ्रान्स के गृह मंत्रलाय के आंकडे ये संकेत देते हैं कि वहाँ पर एक वर्ष के बीच (4412) बलात्कार की घटनाएँ हुई है। इसका मतलब यह हुवा कि लगभग हर दो घंटे में एक घटना की दर से बलात्कार हुवा है।

ब्रिटन की राजधानि लंडन की पुलिस ने पुरुषों द्वारा छेड़-छाड़ से पीडित होने के समय आत्मसमर्पण करने के बदले स्त्रियों के लिए सकारात्मक पोजिशन अपनाने और आत्मसुरक्षा करने के विभिन्न तरीक़ों की शिक्षा देते हुए जागरुक अभियान चलाया है। इसका कारण यह है कि लंडन की सडकों पर एक साल के भीतर 11% प्रतिशत बलात्कार व हिंसापराध की दर बड गयी है।

अमेरिका में हिंसापराध से पीडितो के अधिकारों के लिए लड़ने वाली एक राष्ट्र समिती ने यह विवरण किया कि अमेरिका मे प्रत्येक मिनट किशोरी कन्याओं के साथ होनेवाले बलात्कार की दर (1.3%) है। इस समिति ने यह भी कहा कि वर्ष 1991 में हर 8 किशोरी कन्याओं में से एक कन्या बलात्कार से पीडित हुई है।

वर्ष 2009 के आंकडे यह संकेत देते हैं कि 14 वर्ष उम्र कि हर तीन कन्याओं में एक बलात्कार सी पीडित हुई है। अमेरिका में प्रति वर्ष 5,00,000 बलात्कार की घटनाएँ होती हैं, और 61% अमेरिकन लड़कियाँ 12 वर्ष उम्र से पहले ही अपना कौमार्य खो बैठती है।

अन्य और भी अपराध हैं, जिनका नाम अन-कही अपराध रखा जा सकता है। वह यह कि नियोक्ता या निर्देशकों के द्वारा। अपने नियकों या कर्मचारि लड़कियों के साथ छेड़-छाड़ है। साधारण रूप से लड़कियां अपनी नौकरी जाने के भय, या रूपये मिलने की लालच, या साबित करना कठिन होने के कारण यह अपराध पंजीकरण नही करवाते हैं।

वास्तविक रूप से यह आंकडे सच्चाई का प्रति निधित्व नही करते। क्योंकि स्त्रियों के बलात्कार के विरोध में लडने वाली समिति ने यह अनुमान लगाया है कि सूचना दी जानेवाली एक घटना के पीछे 35 घटनाएँ वह है जिस पर ख़मोशी अपनायी जाती है।

माइकलः बलात्कार जैसी समस्या एक जटिल समस्या है, जिसके विभिन्न कारण हैं। मानसिक, शैक्षिक, सामाजिक, बल्कि आर्थिकता भी एक कारण है।

राषिदः तुम ने सच कहा। लेकिन इस बात से इन्कार नही किया जा सकता कि इसका सबसे बडा कारण (निगाहों से ही क्यों न हो) शारीरिक हलचल पैदा करना है। यहाँ इस बात की ओर अवश्य ध्यान दिया जाये कि अमेरिकन अध्यायन ने अवलोकन करते हुए यह कहा कि सर्दी के मौसम में बलात्कार की दर कम हो जाती है। इसका कारण यह हो सकता है कि स्त्रियों के पोशाक में नग्नता कम होती है, या यह भी हो सकता है कि लोग बाहर कम निकलते हैं, जिससे मेल मिलाप के अवसर बहुत थोडे रह जाते हैं। यह दोनों अंतर इस घटना की पुष्टि करते हैं।

माइकलः लेकिन स्त्रियाँ ही तो अपनी इच्छा से इस प्रकार के वस्तुओं का उपयोग करती हैं, और जैसा कि मैने पहले तुम से कहा कि यह उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता है, हम उन्हे नही रोक सकते।

राषिदः लगता तो ऐसा ही है। लेकिन वास्तविक रूप में पश्चिमी संस्कृति के नेता, विशेष रूप से पुरुषों ने नग्नता की सभ्यता को लोकप्रिय बनाया। सुंदरता के साथ प्रधान किया। इस के लिए उपयुक्त पर्यावरण का निर्माण किया, और इस सभ्यता को फैलाने के लिए सरल साधन बनाये। ताकि बिना किसी प्रतिबंध के स्त्री से आनंद लें। बल्कि इन लोगों ने तो स्त्री कि पवित्रता, लज्जा और कमज़ोरी के प्रति अन्यायी क़ानून बनाया। परन्तु पश्चिम में बनाये गये क़ानून बलात्कार से पीडित स्त्री से अधिक बलात्कार करने वाले पुरुष के लिए दयालु है, जो बलात्कार को आम होने के लिए सहायक बनता है। बल्कि कुछ पश्चिमी देशों ने तो बलात्कार को केवल नैतिक उल्लंघन माना है, न कि हिंसापराध।

यह एक व्यवहारिक उदाहरण भी सुनोः फिनलांड (जो स्त्री की ओर अधिक ध्यान देने वाला विकसित देश कहा जाता है) में ग्यारेज के अंदर विकलांगों के लिए बनाये गये शौचालय मे एक पुरुष ने यौन संबंध के लिए स्त्री के साथ जबरदस्ती की। उसका सर दीवार पर मारा और उसके दोनों हाथ पीठ पीछे बांध दिया। सरकारी अभियोजन पक्ष के अनुसार यह बलात्कार नही है, क्योंकि इस पुरुष के द्वारा किया हुवा अपराध मामूली है। इस पुरुष को यौन संबंध के लिए स्त्री के साथ जबरदस्ती करने का अपराधी ठहराया गया और उसको (निलंबित) 7 महीनों की पैरील जेल के दण्ड का आदेश दिया गया।

मेरे मित्र। वर्तमान काल की संस्कृति या पिछली शताब्दी की संस्कृति में से किस संस्कृति मे अधिक नैतिकता के रूप में सुख था ? । क्या तुम दुबारा इस विडियो क्लिप को देखना चाहते हो?।

माइकलः हाँ, मानवीय राषिद । लेकिन इस्लामिक दृष्टि कोण से इस विषय के प्रति तुम्हारे विचार क्या है ?

राषिदः इस विषय पर चर्चा करने के लिए एक नही, बल्कि अनेक बैठकों की आवश्यकता है।

नैतिक बाँध



नैतिक बाँध

राषिद व माइकल निर्धारित समय पर पैरिस जानेवाली मेट्रो रेल के प्लाट फार्म पर मिले.... वे रेल का समय होने तक प्रतिक्षा के लिए मुनासिब कुर्सियाँ तलाश कर रहे थे।

माइकलः मेरे विचार से अभी इतना समय बाक़ि है कि स्त्री के वस्त्रों को लेकर तुम्हारे दृष्टि कोण के प्रति हम बात कर सकें ..... अवश्य तुम मुझ से पर्दे (बुर्खे) के प्रति बात करोगे ... सच है न?।

राषिदः अधिकतर लोगों का यह विचार है कि पर्दा केवल सर पर डाले जानेवाले घूँघट या चादर का नाम है। वे यह नही जानते कि पर्दा वास्तविक रूप में एक सामाजिक प्रणाली और विचार है.... इस बात की आवश्यकता है कि हम इस संदर्भ में भी पर्दे के प्रति विचार करें ।

माइकलः मेरे विचार से तुमने इस विषय को जटिल बना दिया, और उसकी स्थिति से अधिक उसको महत्व दे दिया ।

राषिदः हमारे विचार से शरीर को छुपाने के प्रति लोगों के अलग-अलग दृष्टिकोण है। प्रत्येक गिरोह का यह दावा है कि उनका दृष्टिकोण सभ्यता कि प्रगती है। जब कि दूसरा गिरोह पहले गिरोह को पिछडे हुए और पुराने रीत रिवाज पर चलने वाला समझता है, और यह पहला गिरोह दूसरे गिरोह को नैतिक अधः पतन से पीडित होने के कारण ग़लत समझते हैं.... प्रत्येक गिरोह अपनी विशेष बौद्धिक व नैतिक संदर्भ में दूसरे गिरोह कि ओर देखता है.... इसीलिए शरीर को छुपाने के प्रति सामान्य रूप धाराण के लिए किसी एक विशेष नियम पर सारे लोगों कि सहमती होना आवश्यक है....

जैसा कि मैने तुम से कहा यह विषय समग्र है। अगर मुझे अनुमति दो तो सब से पहले मै वह नियम तुम्हारे सामने रखूँगा, जो हमारी अलग-अलग दृष्टिकोण को एक दूसरे से निकट करते हैं।

माइकलः कहो ।

राषिदः मेरे विचार से मानव कि वास्तविकता व तथ्यता को संपूर्ण रूप से पहचान ने के बाद ही मानव जीवन के मुख्य समस्याओं का समाधान करना संभव है।

माइकलः सत्य है।

राषिदः हम जो अद्भुत वैज्ञानिक प्रगति देख रहे हैं, यह मानव ज्ञान के सीमित होने का प्रमाण है। जो चीज़े कल रहस्य थी, आज मानव उसकी खोज कर रहा है। जिस विषय के प्रति कल तक सही होने का विचार था, आज मानव उसकी समीक्षा कर रहा है, और उसको सुधारने के प्रयास में लगा हुवा है। इसी प्रकार

भविष्य में मानव इस बात की खोज करलेगा कि वह अज्ञानी था, या कम से कम उसका ज्ञान सीमित था... इसी का हमारे पवित्र कुरआन ने वर्णन करते हुए यह कहा किन्तु ज्ञान तुम्हे मिला थोड़ा ही है। (अल-इस्राः85)

माइकलः मै तुम्हारी बात से सहमत हूँ। लेकिन इन सारी बातों का हमारे विषय से क्या संबंध ? ।

राषिदः थोडा धैर्य से काम लो ऐ मेरे मित्र। मैने अभी अपनी बात पूरी नही की... जब हम इस बात पर सहमत हो गये तो स्वतः हम यह मानलेंगे कि इन समस्याओं मे कुछ गुप्त पहलू भी है, जिनकी गहरायी तक हम पहुँच नही सकते, और वह भी उस समय जबकि यह माना जाय कि हम हवस, व्यक्तिगत लगाव, और वातावरण प्रभाव से स्वयं अपने आपको दूर रख सकते हों, निश्चय यह कठिन बात है। जब हम इन समस्याओं का सामना करने के लिए इस प्रकार की कठिनाइयाँ देख रहे हैं, तो अवश्य हम भ्रम का शिकार होंगे, हमारी ओर से इसके लिए किये जानेवाले सारे उपाय अधूरे या असंपूर्ण होंगे, बल्कि हो सकता है कि साधनों के सही मार्ग से यह उपाय बहुत दूर हों ।

माइकलः यह एक तार्किक परिणाम है। लेकिन एक दूसरी ओर से हमारे सामने मस्तिष्क के उपयोग, आधुनिक विज्ञान व विचारों का सही इस्तेमाल, और परीक्षण, सत्य व असत्य के बीच ध्यान केन्द्रित करने के अलावा कोई रास्ता नही है। और यही बेहतर है इस बात से कि मनुष्य के किसी संयम नियम तक पहुँचने के लिए परीक्षा करते हुए इन विषयों को बिना किसी साधन के छोडा जाय ।

राषिदः तो फिर तुम मेरी तरह इस बात से सहमत हो कि यह सारे समाधान अतिरिक्त महत्वता या अतिरिक्त लापरवाही से प्रबंध है। लेकिन तुम्हारा यह विचार है कि हम ऐसा करने पर मजबूर हैं, और हमारे सामने इसके सिवा कोई और विकल्प नही है।

माइकलः हाँ । मेरा यही विचार है।

राषिदः लेकिन हमारे पास एक दूसरा विकल्प भी है, जिस के द्वारा इन नुकसानों से बचा जा सकता है।

माइकलः हमारे पास कहने का अर्थ क्या है? और वह विकल्प क्या है?

राषिदः मेरा मतलब हम मुसलमानों के पास विकल्प है, जिसके प्रति हमारा यह विचार है कि वह मानवता को मुक्ति दिला सकता है। उस विकल्प का सारांश यह है कि जिसने मानव की सृष्टि की है, वही उसका अधिक ज्ञान रखता है। जैसा कि अल्लाह ने पवित्र ख़ुरआन में कहाः क्या वह नही जानेगा जिसने पैदा किया (अल मुल्क, 14) वही एक महान प्रभु है जो मानव कि आवश्यकताएँ, उसके लिए लाभदायक और नष्ट दायक चीज़ों का ज्ञान रखता है। साथ-साथ वह प्रभु मानवीय इच्छाओं, रूचियों, भावनाओं से बहुत दूर है। इसी लिए वही एक शक्तिमान प्रभु

मानवता के लिए उपयुक्त विधि कि संयम व तत्तवदर्शिता के साथ स्थापना करने की क्षमता रखता है। यही वह बात है जो पवित्र ख़ुरआन में प्रकट होती है...

माइकल (बात काटते हुए)- श्रीमान राषिद तुम्हारी बात सत्य है। लेकिन तुम यह न भूलो कि मैं तुम्हारे धर्म पर विश्वास नही रखता हूँ। परन्तु तुम मुझे किसी ऐसी बात को मानने पर मजबूर न करो जिस पर मेरा विश्वास नही है... तुम मुझसे उन विषयों में बात करो जिस पर हम दोनों सहमत है, जैसा कि हम वाद-विवाद कर रहे थे।

राषिदः हालांकि यही नियम प्रत्येक मुस्लिम के अनुयायी बनने के लिए महत्वपूर्ण है, और इसके बारे में मेरा यह विचार है कि प्रत्येक मनुष्य के लिए भी इस नियम का अनुपालन करना उपयुक्त है। लेकिन मुझे इस बात में कोई बाधा नही है कि हम आपसी बात-चीत को तुम्हारी इच्छा के अनुसार पूरी करें, मगर हाँ। मेरी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता की रोशनी में। यानी उस सामाजिक विधि के ढ़ाँचे में, जिसके प्रति मैने तुम्हारे सामने यह विवरण किया कि परदा समाज का एक भाग है।

माइकलः ठीक है।

राषिदः मैने पिछली मुलाकात में कहा कि हम मानवीय शरीर के अन्दर भौतिकता, बल्कि प्राणिवान होने को भुला नही सकते। पुरुष अपने वृत्ति के अनुसार स्त्री की ओर आकर्षित होता है, और सबसे पहले आकर्षित करने वाली चीज़ स्त्रि का शरीर होता है। परन्तु अलंकृत वस्त्र धारण, हवस को उभारने, और पुरुषों को लड़कियों के साथ छेड-छाड करने कि ओर अप्रत्यक्ष रूप से संकेत है।

माइकलः लेकिन मेरे विचार से इस दृष्टि में स्त्री और पुरुष दोनों का अपमान है। स्त्री का अपमान इस प्रकार है कि उसके शरीर को अधिक एकाग्रता दी जा रही है, और उसकी बुद्धि, सभ्यता व नैतिकता की उपेक्षा की जा रही है। साथ-साथ यह भी है कि स्त्रि की ओर इस दृष्टि से देखा जा रहा है कि वह अपूर्ण (अक्ल) बुद्धि रखती है, जो कुछ नही जानती और न स्वयं कि सुरक्षा कर सकती है। पुरुष का अपमान इस प्रकार है कि उसको केवल का पुरुष (नीच पुरुष) समझा जा रहा है, जिसके भीतर यौन इच्छा के अतिरिक्त कोई और रुचि नही है।

राषिदः मेरे मित्र तुम्हारे विचार से स्त्रि जब सजने सँवरने के लिए दर्पण के सामने खडी होकर अलंकृत वस्त्र धारण करती है, तो क्या वह पुरुष की बुद्धिमत्ता व उसकी नैतिकता को प्रसन्न करने के लिए इस तरह करती है? या वह पुरुषों को आकर्षित करने व उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए न भी माना जाये, तो कम से कम वह पुरुषों को प्रभावित करने के लिए इस तरह करती है? तुम्हारे विचार से पुरुष जब किसी सुंदर स्त्री को देखता है, तो क्या वह उसकी बुद्धिमत्ता से मोहित होता है या पहली नज़र में ही उसकी सभ्यता के प्रेम में पागल हो जाता है?

हम सब को इस बात का ज्ञान है कि मानव यौन इच्छाओं, रुचियों और अपने आप पर होने वाले आक्रमण का मुकाबला करने में अलग अलग दर्जे रखता है। इसी प्रकार नैतिकता, उच्च आचार और उत्तम नीति अपनाने में सारे मानव अलग-अलग है। पर्दा इस बात का संकेत देता है कि इस को धारण करने वाली स्त्री पवित्र है, जो पुरुषों को प्रोत्साहित न करने और उनके छेड-छाड से बचने कि आशा रखती है। परन्तु पर्दा नीच व्यक्ति और दुर्व्यवहार से बचने का महत्वपूर्ण कारण होगा। पवित्र ख़ुरआन ने खोल-खोल कर इस बात का विवरण किया है कि परदा स्त्रियों के लिए बुरे लोगों से बचने का साधन है।

माइकलः लेकिन श्रीमान **राषिदः** कुछ परदा करने वाली स्त्रियों के चरित्र मेरे विचार से उच्च नही है। इस से यह मालूम होता है कि परदे के अलावा अन्य दूसरे मुख्य विषय हैं, जो परदे से भी महत्वपूर्ण हैं, जैसे शिक्षा और नैतिक मूल्य।

राषिदः आप की बात कुछ हद तक सही है। कोई यह दावा नही कर सकता कि केवल एक कपडे का टुकडा पहनलेने से स्त्रि चरित्रवान बन जाती है। लेकिन इसका अर्थ यह नही निकलता कि परदा ही न किया जाय। अगर कोई मनुष्य चिकित्सक का रूप अपना ले, या किसी चिकित्सक से ग़लती हो जाय, या कोई अपने हुनर ग़लत उपयोग करे। इसका मतलब यह नही कि दोष इस हुनर का है, बल्कि मतलब यह होगा कि ग़लती करने वाला मनुष्य सुधार कि आवश्यकता रखता है। तो यह डाक्टर या परदा करने वाली स्त्री या इनके अतिरिक्त जो भी हो सब मानव ही तो है, जिनमें मानवीय कमज़ोरी का प्रभाव ज़रूर रहता है।

एक दूसरी ओर से इस्लाम ने बुराई या उसकी ओर ले जानेवाली चोज़ों मे पड़ने से बचने का साधन होने के रूप में जब परदे को धार्मिक नियम बनाया, तो केवल इस्लाम इसी बात पर आधारित नही रहा, बल्कि इसके साथ-साथ नैतिकता और उच्च व्यवहार के संपूर्ण प्रणाली को इसमें शामिल किया। ताकि वास्तव में नैतिकता के उच्च शिखर तक पहुँचना मानव के लिए संभव हो। सारांश के रूप में यह कहना चाहूँगा कि चरित्रवान स्त्री परदा करती है। कदापि इस का अर्थ यह नही कि हर परदा करनेवाली स्त्री चरित्रवान है।

माइकलः क्या इस विचार में स्त्री के शरीर को गंदा समझने कि नकारात्मक दृष्टिकोण नही है? हमे इस बात की आवश्यकता है कि हम स्त्री के शरीर को अछूत समझे?

राषिदः इस्लाम ने परदे को केवल इसलिए फर्ज़ नही माना है कि स्त्री का शरीर शर्मगह है, जिसको छुपाना आवश्यक है। बल्कि परदे को फर्ज़ इसलिए किया गया, ताकि पुरुषों की विशेष तौर पर नीच और दुष्ट पुरुषों कि यौन इच्छाएँ न उभरे। किन्तु पुरुषों कि ओर से बलात्कार और छेड-छाड से स्त्री को बचाने के लिए परदा फर्ज़ किया गया। इसी प्रकार से यौन इच्छाओं को उभरने और बलात्कार कि ओर प्रेरित होने से पुरुषों को दूर रखने के लिए परदा फर्ज़ किया गया ... इसी प्रकार

इस्लाम के धार्मिक नियम मानसिक भावनाओं और यौन इच्छाओं को केवल पति पत्नी के बीच दामपत्य संबंधों कि सीमाओं तक सीमित रखने में अधिक लालायित है, जो सामाजिक संरचना के सामंजस्य का कारण है।

माइकलः श्रीमान राषिद। जब परदा पुरुष के स्त्री कि ओर आत्मीय होने के बीच रुकावट है, तो पुरुष कि ओर स्त्री के आत्मीय होने के बीच भी रुकावट मानते हुए पुरुष क्यों परदा नही करते? क्या स्त्री के अंदर पुरुष की इच्छा नही है?

राषिद (हँसते हुए)- बहुत अच्छा प्रश्न है.... वास्तव में इस्लाम धर्म ने पुरुषों की वेश-भूषा के प्रति स्त्रियों से कुछ कम नियम लागू किये हैं। शायद पुरुष और स्त्रि में से प्रत्येक कि विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त करलेने से इस नियम कि तत्वदर्शिता प्रकट होती है। निस्संदेह डयूक विश्वविद्यालय न्योरोसाइंस के विशेषज्ञ डाक्टर बिनयामिन हैडन के आधुनिक अध्ययन (इस अध्ययन को जर्मन कि पत्रिका बर्लेनर मोरजन पोस्ट ने प्रकाशित किया है) ने इस बात की पुष्टि की है कि पुरुष स्त्री की ओर देखकर आनंदित होता है। इसलिए कि मस्तिष्क के कुछ भाग पुरुषों से सुंदर स्त्रि की ओर देखकर, आनंद होने के लिए प्रयास करने पर उत्तेजित करते हैं। जबकि स्त्री सुंदर पुरुष को देखने के लिए कोई प्रयास नही करती है।

इस अध्ययन के द्वारा उन कारणों को जानने का प्रयत्न किया गया, जो कभी कभी सुंदर स्त्री को देखकर आनंदित होने के लिए महंगे प्रयास करने के ओर पुरुषों को मोहित करते हैं। जब कि स्त्री का मामला बिल्कुल विपरीत है। तो यह मालूम हवा कि पुल्लिंग ओर स्त्रीलिंग के बीच पाये जाने वाला अंतर का कारण मस्तिष्क है। किन्तु पुरुष के मस्तिष्क में कुछ ऐसे भाग हैं, जो सुन्दर स्त्री को देखते समय उत्तेजित (सक्रिय) होते हैं। जिससे पुरुष सुख और आनंद की भावना पाते हैं। लेकिन स्त्री की स्थिति कुछ अलग है, किन्तु वह सुन्दर पुरुष को देखते समय किसी भी प्रकार से प्रभावित नही होती।

इस अध्ययन के कुछ मुख्य परिणाम यह है कि सुंदर स्त्रियों में पुरुषों को अधिक आकर्षित करने वाली सबसे पहली चीज़ चेहरा है, जबकि स्त्री पूरे शरीर की ओर देखती तो है, लेकिन किसी विशेष भाग पर एकाग्रता नही दिखाती ।

एक दूसरा मुद्दा यह है कि पुरुष स्त्री से अधिक धैर्यवान और ज्यादती करने कि क्षमता रखता है। किन्तु विभिन्न अध्ययनों से यह बात मालूम होती है कि पुरुषों के अंदर साधारण रूप से स्त्रियों से पाँच गुणा ज्यादा अत्याचार का अनुपात है। जब स्त्री अपनी ओर उत्तेजित करने का द्वार बंद करदे, और उसकी ओर पहला क़दम भी न उठाये, तो यह पुरुष के अपने सीमाओं को पार करने या स्त्री पर अत्याचार करने के बीच रुकावट बन जाता है।

माइकल (जल्दी करते हुए) - मेरे विचार से अब रेल पकड़ने का समय हो चुका है। चलो जल्दी करो।

महारानी



महारानी

रेल निकलने के एक घंटा बाद ऐसा लगा दो मित्र राषिद व माइकल बात-चीत करने के लिए तैयार हुए, जिससे कि उनका सफर आसानी से कट जाये....

माइकलः निश्चय हमने स्त्रि के अधिकारों से संबंधित दो विषयों में बात की हैः 1. बहु विवाह, 2. परदा । क्या हम इसी संदर्भ में दूसरे विषयों पर भी अपनी बात पूरी करलें ?

राषिदः अच्छा विचार है। शायद कि हम इस तरह स्त्रि से संबंधित रूप रेखा को समाप्त करलेंगे ।

माइकलः इस संदर्भ में सब से पहले मेरे दिमाग़ मे आनेवाली बात स्त्री की भूमिका से संबंधित है। मुसलमान क्यों इस बात पर अटल रहते हैं कि स्त्री जीवन के हर पहलू में पुरुष की भागीदार न बने ?

राषिदः मेरे मित्र। हम मुसलमान जब यह कहते हैं कि मानव में एक पहलू भौतिकता है, इसका अर्थ यह नही निकलता कि इस पहलू की विशेषताएँ, लक्ष्य या फल, पशु-पक्षी में स्थिर विशेषताएँ और लक्ष्य के अनुरूप है। क्यों कि इस मे एक बडा अंतर है। किन्तु हम यह देखते है कि पशु-पक्षियों से कहीं अधिक मानव मे यौन इच्छा पाई जाती है। जब कि यौन इच्छा से बहुत ही कम मानव में संभोग की क्षमता है। और पशु-पक्षियों का मामला बिल्कुल उल्टा है।

जब हम स्वभाव के अनुसार स्त्रि में स्थिर यौन इच्छा और आकर्षित करने कि सहजता के साथ-साथ लज्जा, हया और शीलवान होने की तरफ देखते हैं, तो इससे हमे यह परिणाम मिलता है कि यौन की ओर आकर्षित करने वाली क्षमता का लक्ष्य पति-पत्नी के बीच संबंध को सदा स्थिर रखना है, न कि यौन इच्छा को केवल यौन तक सीमित रखना है। इसी बात का पवित्र खुरआन ने कभी सुख से, और कभी प्रेम व दया से वर्णन किया..... यह तो मानसिक संदर्भ में बात थी.... मुझे आसा है कि मेरी बात साफ-साफ थी ।

माइकलः लगभग साफ थी ।

राषिदः और जैविक संदर्भ से विभिन्न अध्ययन इस बात की पुष्टि करते है कि स्त्री हर विषय यानी बाह्य रूप, अंतरिक अंग, शरीर के परमाणुओं और कोशिकाओं में पुरुष से अलग है, किन्तु स्त्री कि कोशिकायें स्त्रीत्व से भरी हुई है। उसके शरीर की बनावट और शारीरिक प्रणाली पुरुष से विपरीत है। उसके शरीर को इस प्रकार से बनाया गया है कि वह प्रसवित होने और बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए तैयार रहती है, यानी इस प्रकार से उसे बनाया गया है कि वह मातृत्व कि जिम्मेदारी निभा सके। स्त्री यौवन अवस्था में पहुँचते ही रजस्वल होने

लगती है जिससे उसके शरीर के कार्य प्रभावित होते हैं, बल्कि उसके मानसिक और शारीरिक स्थिति में भी परिवर्तन होता है। यहाँ पर गर्भकाल, ज़च्चा और दूध पिलाने कि अवधि की बात कुछ और ही है।

बल्कि स्त्री के हार्मोन्स और स्वभाव पुरुष से अलग है। किन्तु पुरुष के बलवान और शक्तिमान होने के मुकाबले में हम स्त्री को लज्जा और नख़रेवाली पाते हैं।

एक दूसरे संदर्भ से मानवीय शिशु (अन्य पशु पक्षियों के विपरीत) माता-पिता कि ओर से देख भाली और शिक्षक का कुछ वर्षों तक आवश्यकता रखता है। क्यों कि जीवन में आत्म निर्भर होने की क्षमता शिशु में देर से पैदा होती है। यह वह चीज़ है जिसका लक्ष्य यह है कि स्त्री व पुरुष के बीच का संबंध केवल यौन संबंध तक ही सीमित न रहे। बल्कि जीवन में इस संबंध का फल उन्हे आपसी सहयोग और व्यवहार पर आकर्षित करता है। इसीलिए यह बात भी है कि मानव अन्य पशु-पक्षियों से बहुत ज्याद अपने संतान से प्रेम करता है और लगाव रखता है।

माइकलः इस के बाद और क्या है ?

राषिदः सारांश रूप से इस बात की पुष्टि होती है कि परिवार मानव का स्भाविक सामाजिक रूप है। इस रूप या इस इकाई में हम हर व्यक्ति की भूमिका, कर्तव्य को प्रकट कर सकते हैं। यही वह भूमिका है, जो इस इकाई और उसके स्वभाव (सुख, प्रेम, दया) के लक्ष्यों के अनुरूप है। इसी प्रकार समाज के प्रत्येक व्यक्ति कि दक्षता और क्षमता के भी अनुरूप है।

माइकलः मै तुम्हारी बात समझ गया। इस संदर्भ से स्त्रि की भूमिका यह होगी कि वह परिवार में मानसिक सुख और प्रेम की आत्मा फैलाये। पति और अपनी संतान का ध्यान रखें ।

राषिदः तुम ने सही समझा । और पुरुष की भूमिका यह होगी कि वह परिवार के लिए आवश्यक वस्तुओं (रोटी, कपडा, मकान) का प्रबंध करें, और पालन-पोषण में होने वाली कठिनाइयों का सामना करें ।

माइकलः लेकिन इस दृष्टिकोण से हम अपने समाज कि आधी उत्पादन क्षमता खो बैठते हैं।

राषिदः मामला उल्टा है। इस दृष्टिकोण से तो हम सारे समाज पर विजेता प्राप्त करलेते हैं, लेकिन समाज के हर एक व्यक्ति को उसके अपने क्षेत्र और उपयुक्त वातावरण में। किन्तु स्त्री जब अपने स्वभाव से लडेगी और पुरुषों की भीड़ में नौकरी के लिए निकल जायेगी, तो निस्संदेह वह अपने इस नये कार्य से दुर्भाग्य हो गयी, उसका परिवार दुर्भाग्य हो गया, उसका पति, बल्कि सारा समाज दुर्भाग्य हो गया। स्त्री ने कई बार अपनी नौकरी, पारिवारिक ज़िम्मेदारियाँ और बच्चों के पालन-पोषण के बीच संतुलन रखने का प्रयास किया लेकिन वह सफल न हो

सकी क्यों कि उसके लिए यह ज़रूरी है कि वह सुख देने वाली पत्नी, प्यार करने वाली माँ, और हमेशा कार्य में निमग्न रहने वाली स्त्री बनें। तो कैसे स्त्री के लिए नौकरी करना उपयुक्त होगा?। परिणाम यह निकला कि स्त्री ने जिस स्थान को खाली छोडा, उसको पूरा करने के लिए अन्य लोगों ने उसका स्थान ग्रहण किया, और यह लोग अमानतदार या इस स्थान के लिए उपयुक्त नही होते। इसके साथ-साथ घर के बाहर पुरुषों के साथ नौकरी करने से स्त्री का पुरुषों के साथ मुठभेड़ होने लगा, और स्त्री के साथ बलात्कार, अत्याचार बढ़ने लगा। घर के बाहर नौकरी या व्यवसायों में स्त्री का अपमान होने लगा।

माइकलः जब हम जीवन में स्त्री की भूमिका को बंदी के समान मानें, तो यह बात हमें एक दूसरे विषय कि ओर ले जाती है, और मेरे विचार से उस में स्त्री के प्रति भेदभाव है, वह विषय पुरुष का स्त्री पर संरक्षक और निगरान होना है।

राषिदः पुरुष का स्त्री के लिए संरक्षक होने में कोई भेद-भाव नही है। लेकिन यह तो उस सामाजिक समूह का संघटन है, जिसका नाम परिवार है। किसी भी समूह में इस बात की आवश्यकता है कि प्रत्येक सदस्य कि भूमिका, कर्तव्य और ज़िम्मेदारी को निर्धारित करलिया जाय। उसी संभावनाओं और क्षमता की ओर ध्यान दिया जाय। किन्तु निर्देशक अपने पास व्यापक शक्तियाँ रखने के कारण मुनीम या नौकर से मानव होने में कोई अधिक महत्व नही रखता ।

वास्तविक जीवन में हम यह देखते हैं कि कभी-कभी कोई समूह या कंपनी अपने सारे सदस्यों पर किसी कार्य को करने या न करने का प्रतिबंध लगाते हैं। जिसका कारण कंपनी के निर्देशक या प्रबंधक के विचार अनुसार कोई बडा लाभ होता है। उदारहण के रूप में कभी कंपनी कोई विशेष वस्त्र धारण करने का आदेश देती है, या कभी रक्षणात्मक कार्य के लिए विशेष प्रबंध लागू करती है। कभी विशेष प्रशिक्षण की ओर निर्देशित करती है, या अनुमति के बिना नौकरी छोडने, कंपनी से बाहर निकलने, या नौकरी के समय अन्य कार्य न करने का आदेश देती है। बल्कि कभी कभी तो कुछ कंपनियाँ अपने नौकरी अनुबंध में ऐसी प्रतिबंध लगाती है, जो कर्मचारी पर कंपनी छोडने के बाद भी लागू रहती है। यह सब बातें मशहूर हैं, कोई इसका इंकार नही कर सकते। और कोई भी व्यक्ति इन प्रतिबंधों को कंपनी कि ओर से अपने कर्मचारियों के प्रति भेद-भाव या अत्याचार की निगाह से नही देखता। यह सब चीज़े सामान्य प्रणाली के संदर्भ में होती है.... इसी प्रकार से ऐसे निर्देशक के बिना कोई समूह या कंपनी सफल नही होती, जिसके पास अपने कर्तव्य के अनुसार अधिक क्षमता हो और वह कानूनी जवाबदेही का अधिकार रखता हो।

इसी प्रकार से पारिवारिक समूह को सफल होने के लिए एक प्रणाली की आवश्यकता है, जिस पर पूरे लोग चलें। इस प्रणाली में कुछ प्रतिबंध करने या न करने से संबंधित हो.... और पारिवारिक समूह के लिए एक नेता की भी

आवश्यकता है, जिसके पास अपने कर्तव्य के अनुसार शक्ति हो, और विभिन्न दृष्टिकोण के बीच टकराऊ होने के समय उसके भीतर निर्णय लेने की क्षमता हो। लेकिन इस बात की भी आवश्यकता है कि इस प्रणाली को लागू करना, और क्षमता का उपयोग करना पारिवारिक जीवन कि उस नियम के संदर्भ में हो जिसका हमने चर्चा किया है, और वह नियम सुख प्राप्त करने के लक्ष्य को उपलब्ध बनाने वाला दया और सुख है।

माइकलः जब स्थिति यह हो तो फिर संरक्षणा पुरुष के हाथ में ही क्यों? और स्त्रि के हाथ में क्यों नही? क्या इसमें असमानता का संकेत नही है?

राषिदः समानता के शब्द पर संरक्षिता के बावजूद (क्योंकि मैं इस शब्द के बदले न्याय के शब्द को महत्व देता हूँ), फिर भी मै यह कहता हूँ समानता या न्याय अधिकारों में होता है, और हम जिस विषय में बात कर रहे हैं, उसमें तो प्रत्येक व्यक्ति कि क्षमता और दक्षता के अनुसार सामाजिक कर्तव्य और भूमिकाओं का वितरण करना है।

पारिवारिक समूह के प्रति हम ने यह कहा कि पुरुष और स्त्री प्रत्येक अलग-अलग रूप से बनाये गये हैं। उनकी यह बनावट अलग-अलग सामाजिक कर्तव्य के लिए उपयुक्त है। तुम यह न भूलो कि पुरुष को दी गया संरक्षणा के मुकाबले में उस पर कई ज़िम्मेदारियाँ और बोझ भी है, जो स्त्री पर लागू नही किये गये हैं। इस संदर्भ मे संरक्षणा समानता होने से अधिक एक बोझ व ज़िम्मेदारी है। यह बोझ पुरुष को विशेष कर्तव्यवान बनाता है। जो आत्मविश्वास, स्वयं बुद्धि पर निर्भर और निर्णय लेने में जल्दी न करने की आवश्यकता रखता है। इसी प्रकार इसका अर्थ यह नही कि स्त्री के विचारों का तिरस्कार किया जाए, और उसके व्यक्तित्व को महत्व न दिया जाय।

स्त्री सामाजिक कर्तव्य को निभाने कि क्षमता भी नही रखती। इसलिए कि स्त्रियाँ, जैसा कि हमारे रसूल मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि वे निम्न बुद्धि और धर्म को कम पालन करने वाली होती है।

माइकलः निम्न बुद्धि? । यह तो स्त्री कि ओर हीनता का दृष्टिकोण है क्योंकि स्त्री ने वैज्ञानिक रूप से अपनी श्रेष्ठता और क्षमता का प्रमाण प्रस्तुत किया है, निस्संदेह स्त्री बुद्धि परीक्षा में पुरुष से निम्न नही है।

राषिद (हँसते हुए) - मेरे मित्र आश्चर्यजनक बात है। मैने जिन लोगों के सामने भी यह बात कही, उनमे से अधिकतर लोगों ने वही समझा जो तुमने समझा है। मेरे मित्र बुद्धि का अर्थ यहाँ चतुरता नही है। बल्कि सारे मामलात को जाँचने में नियंत्रण रखने कि क्षमता, आत्म नियंत्रण, और भावनाओं का नियंत्रण है। जो मुश्किल परिस्थितियों और दुर्घटनाओं के समय सही निर्णय लेने के लिए सहायकार है। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि नियंत्रण की क्षमता भावना और इच्छाओं के लगाव से विपरीत है। इस बात से कोई इनकार नही कर सकता कि

स्त्रि अपने स्वभाव के अनुसार भावनाओं की ओर बहती है, और पुरुषों से ज्यादा प्रभावित होती है। यह स्त्री का मानसिक स्वभाव है। और स्त्री कि सामाजिक भूमिका का उसके स्वभाव के अनुरूप होना ज़रूरी है। तलाक़ के द्वारा पारिवारिक ढ़ाँचे को समाप्त करने के लिए स्त्रि की क्षमताओं को सीमित रखने में भी शायद यही तत्वदर्शिता है।

माइकलः जब हम स्त्री पर होने वाले अत्याचार, और हीनता की दृष्टिकोण से देखे जाने के प्रति बात कर रहे हैं, तो इस बात की आवस्यकता है कि हम विरासत में उसके अधिकार के प्रति चर्चा करें, क्यों विरासत में स्त्री का अधिकार पुरुष से आधा है?

राषिदः प्रथमः हर स्थिति में विरासत के अंदर स्त्री को मिलने वाला भाग पुरुष से आधा नही है।

द्वितीयः मानवीय सम्मानता इस बात को पसंद नही करती कि किसी एक व्यक्ति को मिलने वाले पूरे अधिकार दुसरे व्यक्ति को भी दिये जायें। क्यों कि न्याय कि दृष्टि से हर स्थिति में समानता करना उपयुक्त नही है। लेकिन जब स्थितियाँ और समस्याएँ एक हो तो उस समय समानता ज़रूरी है। यानी जीवन में स्त्रि के स्वभाव उसकी भूमिका का ध्यान रखा जाय, उसके अधिकार व कर्त्तव्य में संतुलन स्थापित किया जाय।

उदाहरण के रूप से विरासत के मुद्दे में हम यह कह सकते हैं कि स्त्री को मिलने वाला अधिकार तनहा उसीका होता है। जब कि पुरुष अपना अधिकार लेता हैं, अपनी पत्नी, बच्चों, अविवाहित बहनों, और अगर माँ-बाप जीवित हो और उनका कोई संरक्षण न करने वाला हो, तो पुरुष इन पूरे लोगों के साथ विरासत के अपने हिस्से को बाँटता है, क्यों कि इन के पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी पुरुष पर ही है। हालांकि पुरुष स्त्री को महेर (दहेज) उपहार के रूप में देता है। घर और घरेलू सामाग्री लाने कि जिम्मेदारी उसी की है। वही पत्नी और संतान का ख़र्च संभालता है, और उसको यह अधिकार नही कि वह अपनी पत्नी को नौकरी करने पर मजबूर करें.... फिर भी पुरुष को अपनी पत्नी का धन और उसकी सामाग्री में कोई अधिकार प्राप्त नही है। साथ-साथ यह भी है कि स्त्री लेन-देन के पूरे मामलात में स्वयं स्वतंत्रता रखती है। यह वह विकास है, जिसको पश्चिम की औरतें प्राप्त नही कर पायी, जब कि पश्चिम का यह दावा है कि उसने स्त्रियों के साथ इन्साफ किया ।

क्या इस रूप रेखा में कोई और विषय बाक़ी है, जिसके प्रति तुम चर्चा करना चाहते हो?

माइकलः हाँ। तलाक़ का मुद्दा बाक़ी रह जाता है। लेकिन मेरे विचार से अभि हमे कुछ देर आराम करलेना चाहिए।

विरान गृह की समाप्ति



विरान गृह की समाप्ति

कुछ देर आराम के बाद दोनों मित्र पुनः सक्रिय के लिए अपनी-अपनी सीटें बदल लीं। फिर माइकल बात चीत करना शुरू किया ।

यह बात नोट की जाति है इस्लामी संस्कृति में तलाक़ का होना सामान्य बात है, और मेरे विचार से इसका एक कारण इस्लाम की ओर से तलाक़ को जायज़ ठहराना है।

राषिदः प्रथमः इस्लाम ही वह पहला धर्म नही है, जिसने तलाक़ को जायज़ ठहराया। किन्तु इस धार्मिक आदेश के सारे परिणाम का इस्लाम पर ही आरोप नही लगाया जा सकता। इस्लाम से पहले लग-भग सारे संसार मे तलाक़ एक सामान्य बात थी। पति अपनी पत्नी से नाराज़ हो जाता था, फिर उसको अपने घर से बेदख़ल कर देता था चाहे वह सही हो या ग़लत। और पत्नी को अपने पति से किसी अधिकार या बदला मांगने का हक़ नही होता था। जब यूनानी सभ्यता कि उन्नति होने लगी, उसमें भी किसी प्रतिबंध या शर्त के बिना तलाक़ साधारण बात थी। यहूदी धर्म के प्रति यह बात प्रसिद्ध है कि वह तलाक़ को जायज़ ठहराता है, और केवल पुरुष को ही स्वयं अपनी इच्छा से तलाक़ का अधिकार है। इसी प्रकार पुरुष को यह अधिकार प्राप्त है कि वह बिना किसी कारण के अपनी पत्नी को तलाक़ दे। हालांकि वे यह मानते हैं कि किसी कारण के बाद तलाक़ देना अच्छा है। यहूदी धर्म मे तलाक़ के प्रति यह बात नोट की जाती है कि स्त्री जब किसी पुरुष से अपना दूसरा विवाह करलें, तो वह अपने पहले पति के पास कभी वापस नही आ सकती।

द्वितीयः क्या वास्तविक रूप से इस्लामी सभ्यता में तलाक़ साधारण बात है, जिसके कारण हमें यह कहने का अधिकार प्राप्त हो कि इस्लाम धर्म कि ओर से तलाक़ को जायज़ ठहराना ही इसका कारण है? चलो हम इस मुद्दे पर तुलना करते हुए संसार के कुछ अंकडों पर नज़र डालते हैं।

1992 से 1995 के बीच अमेरिका में हर एक हज़ार विवाह के मामले में 502 तलाक़ के मामले है। और इस अनुपात की दर बड़ने की आशंका है। शायद इसी कारण अमेरिकी सरकार ने 1999 से आज तक तलाक़ के मामले कि संख्या को छिपाये रखा है, जबकि वह विवाह के मामले का विवरण करती। 2001 से 2004 के बीच रूस में हर एक हज़ार विवाह के मामले में 750 तलाक़ के मामले है। इन्ही वर्षो के बीच स्वीडन में हर एक हज़ार विवाह के मामले में 539 तलाक़ के मामले हैं। 2000 से 2003 के बीच लंडन में हर एक हज़ार विवाह के मामले में 538 तलाक़ के मामले हैं।

2000-2004 के बीच जापान में हर एक हज़ार विवाह के मामले में तलाक़ के

मामलों की औसत दर 366 है।

जब हम इस्लामी सभ्यता की ओर देखते हैं तो तलाक़ की अधिकतम दर (संख्या) कुवैत में पायी जाती है, 2000 से 2004 के बीच हर एक हज़ार विवाह के मामले में तलाक़ के मामलों की संख्या 347 है। अन्य इस्लामी देशों में यह संख्या बहुत ही कम है। जॉर्डन में 2000 से 2004 के बीच हर एक हज़ार विवाह के मामले में तलाक़ के मामलों की संख्या 184 है। पलेस्टाइन में इन्ही वर्षो के बीच हर एक हज़ार विवाह के मामले में तलाक़ के मामलों की संख्या 142 है।

2000-2003 के बीच ईजिप्ट (मिस्र) में हर एक हज़ार विवाह के मामले में तलाक़ के मामलों की संख्या 134 है। सिरिया में 2000 से 2002 के बीच हर एक हज़ार विवाह के मामले में तलाक़ के मामलों की संख्या 84 है। लिबिया में 2000 से 2004 के बीच हर एक हज़ार विवाह के मामले में तलाक़ के मामलों की संख्या 51 है। 2000 से 2003 के बीच इरान में हर एक हज़ार विवाह के मामले में तलाक़ के मामलों की संख्या 97 है।

इन आंकडों के बाद क्या हम यह कहेंगे कि इस्लामी सभ्यता में तलाक़ एक साधारण बात है और इसका कारण इस्लाम धर्म का तलाक़ को जायज़ ठहराना है ?

माइकलः लेकिन यह बात मशहूर है कि इस्लाम धर्म ने अन्य धर्मो व सामाजिक नियमों के मुक़ाबले तलाक़ को बहुत ज्यादा आसान बना दिया है।

राषिदः यह टिप्पणी कई विषयों पर आधारित है, किन्तु तुम मुझे यह अनुमति दो कि मैं उनका विस्तार से वर्णन करूँ।

माइकलः बोलिए ।

राषिदः पहला विषयः इस्लाम धर्म में सामान्य रूप से तलाक़ देने के मुद्दे को सरल समझना। वास्तविक रूप से कोई ऐसा धार्मिक नियम व सामाजिक प्रणाली नही है, जो तलाक़ कि ओर प्रोत्साहित करती हो... मै तुम्हारी इस बात पर सहमत हूँ कि इस्लामी निर्देशन का पालन न करने वाला, और स्वयं को मिली हुई क्षमताओं का ग़लत उपयोग करनेवाला तलाक़ के मुद्दे को मामूली समझता हैं। लेकिन उसी समय यह बात भी हमें जान लेना चाहिए कि इस्लामी निर्देशन इस जैसे बुरे उपयोग से पवित्र है। इस्लाम ने तलाक़ के मुद्दे में कुछ सीमायें रखी है, और उसके नकारात्मक प्रभाव को कम से कम करने का प्रयास किया है। जो आज कल समाज में हो रहा है, उसका कारण इस्लाम धर्म के नियम व प्रणाली कि वास्तविकता से समाज का दूर होना है।

माइकलः क्या तुम इस विषय को समग्र रूप से बता सकते हो?

राषिदः इस्लाम धर्म में विवाह सदा रहने वाला अनुबंध है। उसको किसी निर्धारित

समय के साथ जोडना अवैध (हराम) है। इसका अर्थ यह निकला कि पति-पत्नी का वैवाहिक जीवन सदा बाक़ी रहे, यहाँ तक कि मृत्यु ही इन दोनों को अलग करे। विवाह के बंधन को दृढ़ समझौता कहा गया, जो इस बात कि ओर निर्देश करता है कि इस अनुबंध को सम्मान दिया जाय, और उसको समाप्त करने के प्रति न सोंचे। इसी प्रकार इस्लाम में तलाक गंभीर स्थितियों के अलावा एक अप्रिय विषय है। तलाक़ कि आवश्यकता के समय इस्लाम ने इस ओर निर्देश किया कि तलाक़ से पहले-पहले पति-पत्नी के बीच आपसी समझौते का प्रयास किया जाय। तलाक़ से दूर रखने के लिए संपूर्ण प्रयत्न किया जाय। तलाक़ दिये जाने कि स्थिति में ऐसे आचार अपनाये जायें जिससे किसी भी दल का अपमान ना हो और परिवार के बचे कुचे सदस्यों की सुरक्षा होती हो।

अगर पति अपनी पत्नी में कोई बुरी चीज़ देखें, और उसको ना पसंद करने लगे, तो इस्लाम ने फिर भी पति को तलाक़ ना देने और पत्नी को अपने पास रखने का आदेश दिया। इस्लाम ने पति को यह सलाह दी कि वह पत्नी कि कुछ और चीज़ो को देखे जो उसमें पायी जाती हो, और उसको अपनी पत्नी रखने पर प्रोत्साहित करती हो। इस्लाम ने वैवाहिक जीवन कि समानता के साथ खिलवाड़ करने से रोका। किन्तु तलाक के शब्दों को हास्य संवाद में लाने से डराया। इसी प्रकार इस्लाम ने पति को यह आदेश दिया कि वह आत्म नियंत्रण रखे, और अपने पत्नी को सही समझने मे धैर्य से काम ले। इस्लाम धर्म को यह पसंद है कि जब पति-पत्नी अपनी समस्या का समाधान ना कर पायें, तो दोनों का भला चाहने वाले अन्य दल उनकी समस्या का समाधान करने के लिए हस्तक्षेप करें। फिर इस्लाम ने पति-पत्नी के बीच मिलाप करलेने और आपसी लडाई झगडे समाप्त करलेने का मौक़ा देते हुए तलाक़ को कई चरणों मे विभजित किया। वैवाहिक जीवन को पति-पत्नी के बीच होने वाले पहले झगडे से समाप्त करने का आदेश नही दिया। बल्कि तीन चरणों में इसको रखा। जिस में से पहली और दूसरी तलाक के बाद पति को अपनी पत्नी से मिलाप करने का अधिकार होता है। यहाँ तक कि तीसरी तलाक के बाद भी इस्लाम ने पति-पत्नी को मिलाप का अधिकार दिया है, लेकिन यह उस स्थिति में, जब पति-पत्नी के साथ अन्याय हुवा हो। जैसे किसी तलाक़ वाली स्त्री का विवाह उसके पति के अलावा किसी और से कर दिया जाय।

माइकलः यह तो पहला विषय है। इसके अलावा और क्या है ?

राषिदः दूसरा मुख्य विषय यह है कि इस्लाम के अलावा अन्य समितियों के प्रति सही दृष्टिकोण से देखा नही जाता है। किन्तु वास्तविक रूप से इन समितियों मे मामूली-मामूली कारणों पर तलाक़ का होना संभव है। निश्चय तुम भी यह बात जानते ही हो। उदाहरण के रूप से अमेरिका में न्यायिक कार्यवाही यह बताते हैं कि जब पति-पत्नी में से कोई कंप्यूटर, टी.वि. कार्यक्रम या मैच देखने को प्रिय

हो तो भी तलाक देना संभव है। केनडा में पति-पत्नी में से कोई एक यह साबित करदे उसका पार्टनर नींद मे खुर्राटे लेता है तो तुरन्त उसको तलाक़ मिल जाती है। इटली मे पति-पत्नी में से कोई एक अगर अपने पार्टनर को घरेलू काम करने पर मजबूर करे, तो भी तलाक का मिलना संभव है। लंडन में पति कि आवश्यकताओं को महत्व न देने कि स्थिति (जैसे पति को मिले हुए उपहार को पत्नी तोड़ देना) तलाक़ को लेने का कारण बन सकता है।

जापान में न्ययालय (कोर्ट) कभी-कभी तलाक का आदेश उस स्थिति में भी देती है, जब पति-पत्नी में से किसी एक को अपने पार्टनर के सोने का अंदाज़ पसंद न हो, और वह तलाक का आवेदन करता हो।

माइकलः श्रीमान राषिद। तुम ने जो कुछ कहा वह सही है। लेकिन यह उन धर्म निरपेक्ष की न्यायिक व्यवस्था रखने वाले देशो में होती है जो धर्म से दूर है। और तलाक के प्रति ईसाई धर्म कि स्थिति मशहूर है कि वह कुछ मुख्य कारणों के अलावा तलाक देने से गंभीरता के साथ रोकता है। वह कारण भी ऐसे होते हैं जिनको कभी-कभी साबित करना कठिन होता है।

राषिदः मेरे विचार से ईसाई धर्म कि यह गंभीरता मानवीय वृत्ति (स्वभाव) और जीवन के लिए उपयुक्त नही है। इस का अंदाज़ा इस बात से लगाया जाता है इसलामी देशों मे रहने वाले ईसाई लोग, जो दो धर्मों के बीच अंतर को समझ लेते हैं, वे इन धार्मिक कठिनाइयों से पीछा छुडाते हुए अपने धर्म को छोड देते हैं, क्यों कि वे अपने सामाजिक जीवन में एक मुख्य मोड पर पहुँच जाते हैं, और जीवन और कठिन समस्याओं के अनुरूप अपनी धर्म कि ओर से कोई उत्तर नही पाते हैं।

यही वह बात है जो इस्लाम को विशेषता प्राप्त कराती है। इस्लाम धर्म वैवाहिक अनुबंधन को शाश्वत बनाता है। इस्लाम यह जानता है कि वह ऐसे लोगों के लिए नियम बना रहा है जो पृथ्वी पर जीवन यापन कर रहे हैं। उनकी कुछ विशेषताएँ है। मानवीय स्वभाव है, और उनकी कुछ स्थितियाँ जो बदलती रहती है। इस्लाम ने इसी समय ग़लतियों के लिए भी एक जगह बनायी है, जिस में ऐसे विकल्प रखे, जिसका अनुभव के बाद ही ज्ञान होता है। इस्लाम ने इस ओर भी ध्यान दिया कि स्थितियों के अंदर परिवर्तन, या ग़लतियाँ हो जाने से विभिन्न नकारात्मक परिणाम सामने आते हैं। जिसका कभी सामना किया जा सकता है, और कभी वह गंभीर होता है, जिसका समाधान सामाजिक, मानसिक, बल्कि वित्तीय नष्ट के बिना संभवित नही है। इसी कारण जब वैवाहिक जीवन कि नैया डग मगाने लगे। पूरे रास्ते बंद हो जाय, और सुधार के विकल्प असफल हो जायें, तो इन ग़लतियों को सुधारने के लिए इस्लाम ने एक विकल्प रखा। इस्लाम अपने इस विकल्प में संपूर्ण रूप से वास्तविकता पर आधारित है, और पुरुष, स्त्री, परिवार में से प्रत्येक के साथ पूरा-पूरा न्याय करने वाला है। पति पत्नी को जुदा करदेना, और एक नया जीवन प्रारंभ करना आपसी लडाई झगडों कि आग से

परिवार के पूरे सदस्यों को जलाने, या विवाह के लक्ष्य को पीठ पीछे डालते हुए झगडों मे पडे रहने से अच्छा है। क्यों कि विवाह का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य प्रेम, दया और सफल परिवार की स्थापना करते हुए आत्मिक सुख की उपलब्धी है ... तलाक़ इस्लाम में ग़लती को सुधारने का साधन है। परिवर्तन का एक विकल्प है और सफलता भरे हुए नये जीवन को प्रारंभ करने का मौक़ा देना है।

मेरे विचार से इस्लाम धर्म में ऊपर लिखित नियमों के अंदर तलाक को जायज़ ठहराना, इस्लाम धर्म कि नम्रता और वास्तविकता है।

माइकलः लेकिन इस्लाम धर्म ने तलाक़ को केवल पुरुष का अधिकार ही क्यों माना? क्या यह स्त्री पर अत्याचार नही ?

राषिदः फिर वही प्रश्न । किसी भी विषय के प्रति पूरे ऐसे संदर्भ से विचार करना ज़रूरी है, जो उसकी चारों दिशाओं कि ओर ध्यान देता हो। मेरे कहने का अर्थ यह है कि हम इस विषय कि ओर पूर्ण सामाजिक व्यवस्था कि दृष्टि से देखें, जो विवाह और उसके लक्ष्य से प्रारंभ होता है। परिवार व उसके प्रत्येक सदस्य के कर्तव्य व जिम्मेदारी और अधिकारों पर समाप्त होता है।

यहाँ हम इस बात का विवरण करेंगे कि वैज्ञानिक रूप से स्त्री अपने स्वभाव के अनुसार पुरुष से कही ज्यादा भावुक, परिवर्तनशील और तुरन्त प्रभावित होती है। इसी कारण पुरुष इस विषय के परिणामों का अंदाज़ा रखने और समझने की दक्षता अधिक रखता है। आत्म नियंत्रण और क्रोध के समय अपनी भावनाओं को नियंत्रण रखने कि क्षमता उसके अंदर अधिक होती है।

इसी प्रकार तलाक़ देने से इस्लाम धर्म में केवल पुरुष पर वित्तीय घाटा लागू किया जाता है, उसपर तलाक़ के बाद धन खर्च करने का बोझ डाला जाता है। निस्संदेह तलाक़ का निर्णय लेने के बाद लागू होने वाली यह वित्तीय ज़िम्मेदारीयाँ भी पुरुष को इस विषय में सोंच विचार से काम लेने और आत्म नियंत्रण रखने का एक कारण है।

इसके साथ-साथ हालांकि इस्लाम ने तलाक़ को केवल पुरुष का अधिकार माना है, फिर भी पति से अलग होने के लिए, जब कोई सही कारण हो, तो स्त्री के लिए भी इस्लाम ने एक साधन निकाल रखा। इस का नाम धार्मिक भाषा मे ख़ुला है, इसके लिए ऐसे नियम बनाये गये, जो प्रत्येक दल के अधिकारों कि सुरक्षा करता है।

मेरे मित्र। क्या तुम इस बात की इच्छा रखते हो कि हम तुम्हारे देशों मे स्त्रि कि स्थिति के प्रति विचार करें ?

माइकलः मेरे विचार से हमे दोपहार का खाना खा लेना चाहिए ।

स्त्री... स्वतंत्रता के बाद



स्त्री... स्वतंत्रता के बाद

राषिद और माइकल खाना खा चुके ... राषिद ऊपर कि ओर देखने लगा, फिर अपने मित्र से कहने लगाः

मेरे मित्र माइकलः तुम ने तो मुझ पर आलोचनाओं कि भरमार कर दी, और मेरी सभ्यता को दोश के पिंजरे में बंद करदिया ।

माइकलः मेरे मित्र। यह कोई दोष नही है। यह तो वाद-विवाद है, जिसका लक्ष्य सत्य तक पहुँचना है। मेरे विचार से इस वाद-विवाद, और इस से संबंधित विवरण करते हुए हमने बहुत कुछ चर्चा कर लिया। फिर यह बात भी है कि मुझे तुम्हारे साथ खुले दिल के साथ बात-चीत करने की आदत हो गयी। क्या तुम्हें मेरी पिछली बात-चीत से कुछ कष्ट हुवा है ?

राषिदः नही नही । मुझे कोई कष्ट नही है। लेकिन मेरी यह इच्छा है कि इस विषय को संपूर्ण करने के लिए उसके तमाम भागों को प्रस्तुत करना आवश्यक है। संपूर्ण करने का एक रूप यह भी है कि हमारी समीती और तुम्हारी समीती के बीच स्त्रि की स्थितियों की तुलना की जाय। मेरे विचार से हमारी पिछली बात-चीत बडी हद तक इसलामी समीती में स्त्री कि परिस्थिति का वर्णन करती है। अब शेष यह रह गया कि हम तुम्हारी समीती कि दृष्टि से इस मद्दे पर विचार करें ।

माइकल (हँसते हुए) - हाँ । यह देखो । मै ही अब आलोचनाओं के लिए अपना सीना और पिंजरे के दरवाज़े खोल रहा हूँ ।

राषिद (मुस्कुराते हुए) - क्यों हम अपने आप को युद्ध के स्थान मे समझें ? जबकि हमारे बीच इस बात की संभावना है कि वाद विवाद का संबंध सत्यता तक पहुँचने के लिए सहयोग संबंध बन जाये, जैसा कि मै ने पहले भी कहा ।

माइकलः मै तुम्हारी बात से संपूर्ण सहमत हूँ। अब बताओ कि तुम कहाँ से वाद-विवाद प्रारंभ करना चाहते हो ?

राषिदः मेरे विचार से सब से पहले किसी भी सभ्यता के स्त्रोतों मे स्त्री के स्थान के प्रति विचार करना चाहिए ।

माइकलः स्त्री कि ओर देखे जानेवाली दृष्टि, और उसके साथ व्यवहार किये जाने कि शैली, प्रत्येक व्यक्ति कि शिक्षा और सभ्यता के अनुसार स्त्री का मूल्यांकन करने पर निर्भर होती है। किन्तु समस्या यहाँ पर इस पुस्तक में, या उस स्त्रोत में पाये जानेवाला स्त्रि का स्थान नही है।

राषिदः यह सत्य है। लेकिन किसी भी सदस्य कि सभ्यता को बनाने वाले, और उसके चरित्र को रूप देने वाले उन स्त्रोतों से हम अपनी आँखें बंद नही रख सकते,

जिससे उसके विचार और दृष्टि प्रभावित होते हैं। जब कभी मै स्त्रोतों की बात करूँ, तो मेरा अर्थ केवल पुस्तक या वैज्ञानिक स्त्रोत नही है। बल्कि वह सारी चीज़े हैं जो सदस्य कि समझबूज और सभ्यता को रूप देने में प्रभावित होती हैं। इन स्त्रोतों में से कुछ लोक कथाएँ और किवदंतियाँ भी है, जो समाज में व्याप्त हो जाती है। इसी प्रकार वह कहावतें और नीति वचन भी है, जो सामूहिक अचेतन से निकलने वाली बातें व्यक्तिगत चेतन में परिवर्तन हो जाते हैं। इस अर्थ के कारण स्त्रोत कि पालन-पोषण और शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

माइकलः मेरे विचार से पवित्र देवत्व पुस्तकों के बीच स्त्री के स्थान और उसकी ओर देखी जानेवाली दृष्टिकोण में कोई अधिक अंतर नही है। किन्तु हमारी पवित्र पुस्तक में जो स्थान स्त्रि का विवरण किया गया है, उसी के समान तुम्हारे पवित्र खुरआन में भी विवरण हुवा है। इस दृष्टिकोण का सारांश यह है कि स्त्रि कि सृष्टि पुरुष से हुई है। स्वर्ग से निकलने और पहला पाप करने का कारण स्त्रि है। स्त्रि के कर्तव्य और उसके सामाजिक स्थान का विवरण भी एक समान हुवा है।

राषिदः तुम्हारे इस विचार में कुछ ऐसे भाग हैं जिससे मै सहमत नही हूँ। किन्तु पहले पाप और आदम व हव्वा के स्वर्ग से निकलने के विषय में पवित्र खुरआन में विवरण की हुई बातें तुम्हारी पवित्र पुस्तक से अलग है। पवित्र खुरआन के अनुसार शैतान द्वारा आदम को भटकाने कि जिम्मेदार हव्वा नही है। परन्तु स्वर्ग से निकलने का दोष स्त्री पर नही होगा ।

स्त्री के स्थान और उसकी ओर देखे जाने वाली दृष्टि के प्रति पवित्र पुस्तक में यह आया है कि लड़कियों का जन्म माँओं की अशुद्धि कई गुणा बडाती है। बाइबल में लिखा हैः ... जब स्त्रि गर्भवती हो और बालक शिशु को जन्म दे, तो वह सात दिन अशुद्ध रहेगी, जिस प्रकार कि वह अपने रजस्वल के दिनों में अशुद्ध होती है, फिर वह 33 दिन अपने खून की सफाई में बितायेगी, ... अगर वह बालिका शिशु को जन्म दे, तो वह 14 दिन अशुद्ध रहेगी, जिस प्रकार कि वह अपने रजस्वल के दिनों में अशुद्ध रहती है, फिर वह अपने खुन की सफाई में 66 दिन बितायेगी ।

ईसाई धर्म कि दृष्टिकोण से समाज में स्त्री के व्यवहार के प्रति यह आदेश है कि स्त्रियाँ गिरजा घर के अंदर अपना मुँह न खोलें । पवित्र पुस्तक बाइबल में कोरनसूस के पहले संदेश में यह आया हैः तुम्हारी स्त्रियाँ गिरजा घरों मे चुप रहें, क्यों कि उन्हें बात करने की अनुमती नही है। वे अनुसरण करें, जैसा कि देवदूत ने भी कहा है। लेकिन वे जब किसी चीज़ का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, तो वे घरों मे अपने पतियों से प्राप्त करलें । क्यों कि स्त्रियों का गिरजा घर मे बात करना अशिष्ट है... इन जैसी बातों के समान पवित्र खुरआन में कोई उदाहरण नही मिलता ।

माइकलः जब कि हम कट्टर धार्मिक सुधार आंदोलन, विकसित काल के विचार, फ्रेंच क्रांति, और औद्योगिक क्रांति के बीच संस्कृतियों मे होने वाले बदलाव के प्रभाव को ध्यान मे ना लायें, तो भी सामान्य रूप से जब तक हमारी संस्कृति में घुल मिल जानेवाली ग्रीक और रोमानि संस्कृति कि जड़ों से संबंध न जोडा जाय, तो हमारी संस्कृति मे होनेवाली उन्नति को समझना संभव नही है।

राषिदः चलो तुम ने ग्रीक और रोमानी संस्कृति कि चर्चा कर दिया। मै तुम्हे बता दूँ कि जिस काल मे या वर्तमान काल की संस्कृति में हम स्त्रि के स्थान के प्रति विचार कर रहे हैं, उस मे स्थिर दृष्टिकोण से देखें तो भ्रम मे पड़ जायेंगे। ग्रीक संस्कृति में स्त्रि के इतिहास के पन्ने पलटेंगे, तो हम यह देखेंगे कि उस संस्कृति में स्त्री को न कोई स्वतंत्रता दी गयी थी, न उसके पास निर्णय लेने का अधिकार था, और न समाज मे उसका कोई स्थान था। ग्रीक के वासि स्त्री का अपमान करते थे। पशु के समान ख़रीदे और बेचे जानेवाली प्राणी समझते थे। स्त्री से निर्णय लेने का अधिकार छीन चुके थे, और क़ानूनी रूप में उसको विरासत से मिलने वाली संपत्ति से दूर रखा। जब ग्रीक कि सभ्यता विकास की ओर बढ़ने लगी, तो तुरन्त ही ग्रीक स्त्री कि स्थिति संपूर्ण रूप से बदल गयी। किन्तु स्त्री क्लब में आने जाने लगी, और पुरुषों से उसका मेलझोल होने लगा। यही वह कारण है जिससे पाप और बलात्कार साधारण हो गये। वेश्याओं के घर को राजनीति और साहित्य का केन्द्र मान लिया गया, साहित्य और कला के नाम पर स्त्रियों कि नग्न मूर्तियाँ बनायी गयी ।

विस्तार के रूप में यहाँ पर कुछ अंतर है। लेकिन वास्तविक रूप से रूमानी संस्कृति कि स्थिति स्त्री के प्रति कुछ ज्यादा अलग नही है। स्त्री को निम्न समझा गया। उसको पुरुष के मुक़ाबले में कम दर्जा दिया गया, जबकि पुरुष को अपनी इच्छा के अनुसार व्यवहार करने का अधिकार था। रूमानी नियम ने स्त्री को जीवन के कई चरणों मे उसके सिविल अधिकारों से वंचित रखा। फिर इसके बाद स्त्री के प्रति रूमानियों के दृष्टिकोण में परिवर्तन होने लगा, आज तक विवाह, तलाक़ और परिवार से संबंधित उनके नियमों व प्रणालियों मे यह परिवर्तन हो रहा है। अब तो स्थिति पूरी बदल गयी। उनके यहाँ वैवाहिक अनुबंध का कोई महत्व नही रहा। स्त्री को विरासत और व्यवहार के पूरे अधिकार दिये गये। फिर स्त्री और पुरुष के बीच नाजायज़ संबंध से होनेवाले रिश्तों कि ओर उनके दृष्टिकोण मे परिवर्तन आ गया।

माइकलः मै तुम्हे यह भी बताना चाहूँगा कि जब पश्चिम के लोग ईसाई धर्म मे प्रवेश करने लगे। तो ग्रीक व रूमानी संस्कृति और गिरजा घर कि दृष्टिकोण के बीच सामान्य रूप से प्रभावित होने और प्रभावित करने कि घटना घटी है। किन्तु साधु-सन्त स्त्री के प्रति अपनी दृष्टिकोण मे अपने काल कि वास्तविकक स्थिति से प्रभावित हुए।

राषिदः हाँ । जब ईसाई धर्म के पूर्व साधु-सन्तों ने यह देखा कि रुमानी संस्कृति में बुराइयाँ और अत्याचार सामान्य है, और समाज अनैतिकता के निम्न दर्जे तक पहुँच गया है... तो वे स्त्री को इसका ज़िम्मेदार ठहराये। उन लोगों ने यह कहा कि स्त्री शैतान का द्वार है, और स्त्री के लिए इस बात की आवश्यकता है कि वह अपनी सुंदरता से शर्म करें। क्योंकि बुराई की ओर मोहित करने में वह शैतान का हथियार है... मध्य काल तक पश्चिम के लोग स्त्री को नीच समझते रहे, और उसको अधिकारों से दूर रखते रहे। यहाँ तक कि अश्वरोही युग (जिसके प्रति यह ख्याल किया जाता है कि स्त्री को इस में सामाजिक स्थान प्राप्त हुवा था) में भी स्त्री को निम्न समझा जाता रहा, इस प्रकार कि उसको पति कि अनुमति के बिना अपना धन ख़र्च करने का अधिकार नही था।

माइकलः लेकिन। मेरे मित्र तुम्हारे विचार से हमारा यह वाद-विवाद क्या इतिहास की ओर पलट नही गया ? निश्चय हम इतिहास के इस भाग को छोडते हुए प्रस्तुत काल में स्थिर परिवर्तनों के प्रारंभ कि ओर पहुँच सकते हैं। प्रस्तुत काल से मेरा मतलब विकसित वर्तमान काल, फ्रेंच क्रांति और उसके बाद होनेवाले परिवर्तन हैं।

राषिदः यह इतिहास नही, बल्कि इस विषय कि जडों तक पहुँचने का प्रयास है। निस्संदेह मै यह बात नोट करता हूँ कि इतिहास मे पाये जाँने वाले विचारों व स्थितियों के बीच, और वर्तमान काल में पश्चिमी सभ्यता में स्त्रि कि स्थिति के बीच (हालांकि इस में बाहय रूप से कुछ अंतर है) एक अटूट संबंध है।

क्या तुम इतिहास कि इस सच्चाई और पश्चिम में स्त्रि के अधिकारों कि इकाई के बीच समानता नही देखते हैं ?।

माइकलः तुम्हारा अर्थ कौन-सी समानता है?

राषिदः जैसे मनोरंजन व आनंद के लिये स्त्री का उपयोग करना। निश्चय जब जीवन के हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ समानता के नियम लागू किये गये, तो स्त्री ने यह अनुमान लगा लिया कि उसने अपने सारे अधिकार प्राप्त कर लिये। फिर एकाएक उसने यह ज्ञान प्राप्त कर लिया कि वह तो अधिकतर समयों मे पुरुषों के हाथ एक कट पुतली बन गयी, जैसे वित्तीय लेन देन और नामांकन मे स्त्री का पुरुष पर निर्भर होना है। किन्तु स्त्री का व्यक्तित्व अपने पति के व्यक्तित्व की आड़ में छुपा हुवा था, और स्त्री से यह आड़ बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक हटाया नही गया।

माइकलः लेकिन अंत में स्त्री ने तो अपने सारे अधिकार प्राप्त कर लिये, और जीवन के हर क्षेत्र में, यहाँ तक कि नौकरियों के लिए नियुक्त होने में भी स्त्री पुरुषों के समान हो गयी।

राषिदः सैद्धांतिक रूप से कुछ नियमों व समझौतों के द्वारा पश्चिम में स्त्री पर होने वाले अत्याचार और अधिकारों के उल्लंघन में किसी हद तक सुधार लाया गया। लेकिन फिर भी वास्तव में व्यापक रूप से स्त्री पर अत्याचार आज तक जारी है। लेकिन अत्याचार के नाम और उसके रूप बदल गये। इस आंदोलन के नाम पर पुरुषों ने स्त्री को धन इकट्ठा करने का, आनंद लेने, और अपनी हवस पूरी करने का फंदा बना लिया। वह मनोरंजन के जगहों पर ग्राहकों को लुभाने के लिये शरीर और सामाग्री बन गयी। विज्ञापन करने वाली कंपनियों के लिए धन इकट्ठा करने का साधन बन गयी। इस में स्त्री कि सम्मानता का बहुत अपमान है। इसी कारण कुछ देशों में स्त्रीयों ने इसके खिलाफ़ आवाज़ उठायी, और वाणिज्यिक विज्ञापन में उसके शोषण पर प्रतिबंध लगाने की मांग की।

स्वीडन कि स्त्री जज़ (ब्रिगेट आफ हाहर) ने स्त्री की स्वतंत्रता, और पुरुषों से उसकी समानता के प्रति टिप्पणी करते हुए यह कहाः निश्चय स्वीडन की स्त्रि ने अब यह ज्ञान प्राप्त कर लिया कि उसने एक कल्पना (स्त्री को मिलने वाली स्वतंत्रता) को बडी भारी क़ीमत (स्त्री की वास्तविक प्रसन्नता) के बदले ख़रीदा है)

पश्चिमी देशों में स्त्री कि स्थिति के प्रति सोंच-विचार करने वाले यूरोपिय आयोग कि एक रिपोर्ट में यह कहा गया कि स्त्री की स्वतंत्रता का आंदोलन, और उसको अपने अधिकार मिल जाने के दावे केवल अफवाह है, जिसका वास्तविकता से कोई संबंध नही है। रिपोर्ट में आया है कि पश्चिम की कंपनियाँ स्त्रियों के उच्च प्रशासनीय नौकरियों पर नियुक्त होने के बीच स्थिर रुकावट को दूर करने में पर्याप्त प्रयास नही कर रही है।

यूरोपिय आयोग के सामाजिक मामलों के सदस्य आन्ना डियामून्ट पोलो ने कहाः व्यापार और नौकरियों की दुनिया में पुरुष और स्त्री के बीच बहुत बडा अंतर दिखाई दे रहा है। बडी बडी सरकारी नौकरियाँ और पब्लिक सेक्टर में पश्चिमी स्त्री को मिलने वाली नौकरियों का प्रतिशत 20 से 30 के बीच है। इसी प्रकार स्त्री को निजी कंपनियों में मिलने वाली नौकरियों का प्रतिशत फ्रांस मे 2%, जर्मनी मे 3% और लंडन में 6.3% है। बैंकों मे स्त्रि को मिलने वाली बडी-बडी नौकरियों का प्रतिशत 5 है।

यूरोपीय आयोग के सदस्य ने पुरुष और स्त्री के वेतन के बीच चले आने वाले अंतर के प्रति, विशेष रूप से प्रशासनीय नौकरियों के प्रति बात की । किन्तु स्त्रियाँ पुरुषों को मिलने वाले वेतन से 16% कम वेतन लेती है...

माइकलः (बात काटते हुए) - मेरे विचार से अब रेल गाडी अंतिम स्टेशन पहुँचने वाली है। हमें अपना सामान अभी से तैयार रख लेना चाहिए ।

सभ्यता के नाम पर होने वाला भेद भाव



सभ्यता के नाम पर होने वाला भेद भाव

सवा दो घंटे सफर के बाद दोनों मित्र पेरिस पहुँच गये। राषिद ने इस से पहले कभी पेरिस नही देखा था। दोनों मित्र स्टेशन के बाहर निकले। ऐसा लग रहा था कि **माइकल** पेरिस की सड़के अच्छी तरह जानता है, उसके और पेरिस के बीच गहरा संबंध है।

माइकलः राषिद। यही पेरिस है, और यही आधुनिकता की राजधानी है। इसी स्थान से संसार ने स्वतंत्रता, भाई चारगी, समानता के नारे जाना और यही से संसार के लिए मानवीय अधिकार के नियम बनाये गये।

राषिदः देखो। देखो ऐ **माइकल** ... इस स्त्री को पुलिस ने रोका है और ऐसा लगता है कि उसने न कोई पाप किया और न किसी नियम का उल्लंघन किया ।

माइकलः ओफ। यह स्त्री तो बुर्खा पहने हुई है। अभी दो दिन पहले फ्रांस के अंदर आम सडकों पर बुर्खा पहनने पर प्रतिबंध लगाया गया। शायद पुलिस स्त्री को इस नियम का उल्लंघन करने के कारण जुर्माना डाल रही है। हो सकता है कि उस स्त्री को जेल भी हो।

राषिदः आम सड़कों पर ?। यानी यह नियम स्त्री को अपने घर में बुर्खा पहनने कि अनुमति देता है... क्या खूब बात। ... यह तो स्त्री और मुसलमानों के लिए स्वतंत्रता का अंत है। मुझे यह नियम याद आ गया। और यह भी याद आ गया कि यह नियम केवल फ्रांस मे ही नही, बल्कि इसी के समान एक नियम बेल्जियम में भी लागू किया गया है। उत्तरी इटली के एक राज्य में भी इस नियम का पालन किया जा रहा है। इसी प्रकार हालैण्ड, स्पेन और अन्य देशों में इस जैसे नियम लागू करने के लिए उन्मत्त प्रयास किये जा रहे हैं। आस्ट्रेलिया में सरकार ने पुलिस को बुर्खा पहनी हुई औरतों का चेहरा खोलने, और उनकी जाँच पडताल करने का अधिकार दे रखा है।

माइकलः व्यक्तिगत रूप से मेरा यह मानना है कि इस तरह का प्रतिबंध स्त्रि कि मनभावित वस्त्र धारण करने की स्वतंत्रता में रुकावट बनता है। फ्रांस में इस नियम का लागू होना स्वतंत्रता के क्षेत्र में पूर्व काल कि ओर लौटने के समान है। निश्चित रूप से फ्रांस जैसे देश (जहाँ पर सौ से अधिक ऐसे क़ानूनी अनुच्छेद हैं, जो दूसरों कि स्वतंत्रता को सम्मान देते हैं।) में व्यक्तिगत स्वतंत्रता का वास्तविक रूप में अपमान है।

लेकिन इस विषय में उनका विचार यह है कि यह प्रतिबंध लौकिक देश के नियमों के अनुकूल है, जो धार्मिक चिह्न के उपयोग से रोकता है। इसी प्रकार फ्रांस के अधिकारी बुर्खे को गुलामी का एक नया रूप समझते है, जिसको फ्रांस कि लोकतंत्र हुकुमत अपने धरती पर कभी स्वीकार नही करेगी।

राषिदः लौकिक नियम सरकार और राज्य संस्थानों पर धार्मिक चिहन के उपयोग का प्रतिबंध लगाते हैं। लेकिन प्रजा पर कोई प्रतिबंध नही है। फिर यह बात भी है कि केवल मुसलमानों पर यह प्रतिबंध क्यों? क्या वे अपने गले में क्राँस लटकाने वाले या नग्न के वस्त्र धारण करनेवालों पर भी इसी प्रकार का प्रतिबंध लगाते है? । इन लोगों के विचार के अनुसार गुलामी का अर्थ कितना ही आश्चर्यजनक है। क्या स्त्रि को नग्नता कि ओर मोहित करना, और हर ओर से पुरुषों का स्त्री से आनंद लेना गुलामी नही है? । क्या स्त्री का अपनी इच्छा और पसंद से शरीर को छिपाना गुलामी है? । हाँ। मेरे मित्र, निश्चय यह गुलामी है, लेकिन उस अल्लाह के लिए जो अत्यंत दयावान है...

अब मुझे फ्रांस की क्रांति के नारों से मिलने वाली स्वतंत्रता का अर्थ समझ में आचुका है... वह तो अल्लाह से संबंधित रहने और उसकी गुलामी करने से मुक्ति पाना है, न कि प्राणियों से मुक्ति दिलाना। यह तो वह स्वतंत्रता है जिसको लौकिक देशों के उन अधिकारों ने लाया, जो अपने आप को ईशवर के स्थान पर समझ लिया, जिस तरह चाहा उसका वितरण किया, और जिसको चाहा उसको अनुमति दि। वे स्वतंत्रता के अर्थ के प्रति यह कहा करते थेः आपकी स्वतंत्रता वहाँ अंत होती है, जहाँ अन्य लोगों कि स्वतंत्रता का प्रारंभ होता है। क्या वे स्त्रियों के शरीर को अन्य लोगों कि ओर से देखे जाने को स्वतंत्रता और अधिकार समझते हैं, जिसके कारण मुस्लिम स्त्रि कि स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाना आवश्यक है? । निस्संदेह मामला परदे का या बुर्खे का नही है, बल्कि यह तो पश्चिमी सभ्यता के भीतर इस्लाम से भय है।

माइकलः प्रिय राषिद। मामले को इतना गंभीर न बनाओ । पश्चिम मे अधिकतर मुस्लिम जीवन बिता रहे हैं, और अन्य लोगों की तरह अपने अधिकार प्राप्त कर रहे हैं। इसी प्रकार उन्हे शिक्षा और नौकरी के कई अवसर मिल रहे हैं, जो उनके अपने देश मे नही मिल पाते।

राषिदः मै मामले को गंभीर नही बना रहा हूँ। मै ने इस्लाम से भय के बारे में जो बात कही है, उसकी पुष्टि करने वाले कई प्रमाण उपलब्ध है।

माइकलः वे क्या है ?

राषिदः मानवीय अधिकारों का रक्षक, तटस्थता और जेनेवा कन्वेंशनों का देश स्विटज़रलैण्ड में मस्जिद के मीनार बनाने पर प्रतिबंध है। एक ऐसे देश में जहाँ मुसलमानों की संख्या 4% से अधिक नही है, वहाँ मीनार बनाने से समाज के लिए क्या नष्ट और कठिनाई हो सकती है, इस देश में केवल चार मीनार है ?। यह खुला संदेश है कि इस प्रकार के प्रतिबंध अपने भीतर इस्लाम के प्रति शत्रुता पूर्ण और भय रखते हैं।

माइकलः व्यक्तिगत रूप से मै इस प्रतिबंध का समर्थन नही करता हूँ। लेकिन

मै समझता हूँ कि उनके विचारों के अनुसार यह मीनार देश की सभ्यता का खंडन करते हैं, और उनका विचार यह भी है कि इससे देश की पहचान को खतरा है।

राषिदः हाँ। जब मै अपने मन में यह बात रखूँ कि कैसे यह प्रतिबंध सारे धार्मिक गृह, जैसे गिरजा घर और यहूदी प्रार्थना स्थल पर लागू नही किये जाते तो, निस्संदेह मै इस चीज़ से उस लौकिक प्रणाली की सीमाओं को समझ जाता हूँ, जिसके अनुसार इन लोगों ने अपने देश की स्थापना करने का दावा किया है। और मै उस समानता की वास्तविकता भी समझ जाता हूँ जिसकी ओर यह लोग बुलाते है ... मामला यहाँ तक ही सीमित नही है। बल्कि इससे बडकर इस्लाम के प्रतीक, यहाँ तक कि इस्लाम के रसूल मुहम्मद को भी इसका निशाना बनाया गया। जैसा कि डेनमार्क और उसका समर्थन करने वाले देशों में हमारे रसूल मुहम्मद के अपमान जनक कार्टून बनाये गये।

माइकलः मेरे मित्र। यह तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। हमारे देश में न कोई विषय पवित्र है, और न किसी विषय में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाया गया है। कई बार स्वयं ईसा मसीह और अन्य धार्मिक प्रतीक को आलोचना या उपहास का शिकार बनाया गया।

राषिदः बल्कि तुम लोगों के पास एक पवित्र चीज़ है, जिसका अपमान, न अभिव्यक्ति कि स्वतंत्रता के नाम पर, और न वैज्ञानिक खोज कि स्वतंत्रता के नाम पर उसका अपमान नही किया जा सकता है। किन्तु जब डेनमार्क की पत्रिकाएँ मुहम्मद (सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम) के मान में अपमान जनक कार्टून छापे, फिर इसके बाद अन्य पश्चिमी देशों में भी अपमान जनक व्यवहार होने लगे। कई पश्चिमी सरकारों ने डेढ़ बिलियन मुसलमानों के पास इस मामले का बचाव किया, और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का दावा करते हुए माफी मांगने से इन्कार कर दिया ... हालैण्ड के न्यायालय ने मुसलमानों के एक समूह पर 2500 यूरो का जुर्माना लगाया। क्योंकि वे ऐसे कार्टून छापे थे, जो इस बात का संकेत देते हैं कि होलोकास्ट (प्रलय) यहूदियों का अपना निर्माण है, और इन्होने वास्तविकता से ज्यादा इसको गंभीर बना दिया है... न्यायालय ने अपने इस निर्णय का यह कारण बताया कि मानवीय अधिकारों का पश्चिमी न्यायालय, जो अभिव्यक्त स्वतंत्रता को अधिक महत्व देता है और गंभीर रूप से इसका बचाव करता है, वह न्यायालय प्रलय का इंकार करने, या उसकी महत्वता को कम करने का बहिष्कृत करता है।

वर्ष 1998 में फ्रांस के एक न्यायालय ने यहूदी प्रलय के होने में संदेह पैदा करने के आरोप में फ्रांस आलोचक जारोदी के विरोध आदेश दिया। इस आदेश का कारण केवल यह था कि इस आलोचक ने नाजियो द्वारा यूरप के यहूदियों का नरसंहार कि संख्या में संदेह बताया था।

वर्ष 2006 में आस्ट्रिया के न्यायालय ने ब्रिटिश इतिहासकार डेविड एरफैंग को तीन साल जेल की सज़ा सुनायी। इसका कारण यह था कि इस इतिहासकार ने यहूदी प्रलय के प्रति फैली हुई साधारण बातों का तिरस्कार किया।

वर्ष 2009 में जर्मन के न्यायालय ने ब्रिटिश कैथलिक बिशप रिचर्ड विलियमसन पर दस हज़ार यूरो का जुर्माना लागू किया। इसलिए कि इसने नाज़ी कैम्पों मे मरने वाले यहूदी पीडितों की संख्या दो लाख से तीन लाख बतायी।

इनके अलावा और भी बहुत से लोग हैं, जिन्हें खोज कि अभिव्यक्ति कि स्वतंत्रता में इस पवित्र चीज़ से कोई बचाव नही मिला ।

माइकलः निश्चित रूप से मुसलमानों और ईसाइयों के बीच आपसी दुश्मनी से तारीख के पन्ने भरे हुए हैं। इसके अलावा अभी कुछ समय पहले इसलामी कट्टर पंथी के कई घटनाएँ हैं। यही वह कारण है कि अधिकतर लोग इस्लाम धर्म से इस तरह भय रखते हैं, जिसकी मिसाल हिन्दु या बौद्ध धर्म के प्रति नही मिलती... क्या तुम इस बात का इंकार कर सकते हो कि कुछ मुसलमानों का व्यवहार ही लोगों के मन में इस्लाम के प्रति भय पैदा करने का मुख्य कारण है ?

राषिदः हम तो अब वास्तविकता के बिल्कुल निकट हो गये। मै इस बात का तिरस्कार नही करता, कि मुसलमानों के कुछ समूह और सदस्य के व्यवहार उनके विपक्ष दल के लिए एक साधन बन गया, जिसका वे इस्लाम और मुसलमानों से भय पैदा करने, और दुश्मनी फैलाने में उपयोग कर रहे हैं... लेकिन हमारे लिए इस बात की आवश्यकता है कि हम मामिलों को उनके वास्तविक रूप में समझें। किन्तु हमें यह नही भुलाना चाहिए कि इस्लाम और मुसलमानों के प्रति फैलाये जानों वाले भय के कुछ अन्य कारण भी है। तुम ने जिन घटनाओं के बारे में कहा, इन घटनाओं को इस्लाम और मुसलमानों के विपक्ष या जातीय समूह के हितों के लिए उनके लक्ष्यों तक पहुँचने का साधन बनाया जाता है... वरना तो जब हम इन घटनाओं को निष्पक्ष रूप से देखें, तो हमे कोई भी ऐसा धार्मिक या जातिय समूह नही मिलेगा, जिस के अनुयायियों के बीच आपसी दुश्मनी या अपराध न होता हो। लेकिन इन घटनाओं को उछालना, या उस पर परदा डालना, या उसकी ओर ध्यान ही न देना, यह ऐसी बातें है जिनसे कुछ घटनायें पुनः स्मरण हो जाते हैं, और कुछ घटनायें गुमनामी के पन्नो में लपेट दी जाती है।

माइकलः यह अन्य कारणों से आपका अर्थ क्या है ?

राषिदः मै तुम्हारे सामने पूरे नही बल्कि कुछ कारणों का विवरण करूँगाः

कुछ वर्षो पहले यूरोप ने मुसलमानों और अरबों (अरब देश के वासी) के लिए अप्रवास के द्वारा खोल दिया। इसके कुछ विशिष्ट लक्ष्य थे। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण लक्ष्य ये हैः पश्चिमी लोगों में प्रसव रोकने की इच्छा और पश्चिमी परिवार में एक जुटता न होने के कारण जन संख्या वृद्धि के असंतुलन की

क्षतिपूर्ति करते हुए पश्चिम के वासियों की संख्या बडाना है। निश्चित रूप से इस्लामी रीति-रिवाज के दृढ़ अनुसरण करने वाले बूढ़े लोगों मे रुचि के कारण यह निर्णय नही लिया गया। बल्कि उस पीढ़ी मे रुचि के कारण लिया गया है, जो भविष्य में पश्चिम के अंदर पैदा होगी। ताकि एक ऐसी सभ्यता का घटना करने में इस पीडि का उपयोग किया जाय, जो पचास साल बाद पश्चिम में सामाजिक, वैज्ञानिक और सभ्यता का ढ़ाँचा तैयार करने मे सहायक हो... पश्चिम कि रण नीति बनाने वाले इसी प्रकार योजना बनाते हैं।

लेकिन इन रण नीति बनाने वालों ने देखा कि इस्लामी जगत में प्रारंभ होने वाला इस्लामी आंदोलन पश्चिमी जगत तक पहुँच गया। मुस्लिम अप्रवासियों और उनकी संतान के पश्चिमी सभ्यता के ढ़ांचे मे घुल मिल जाने के मार्ग मे रुकावट बन गया। इसी कारण इस्लाम धर्म का अनुपालन करने वाले परिवार, या बुर्खा पहनने वाली स्त्री की संतान अधिक पीडित हो गये, क्यों कि वे अपने धर्म के नियमों और विचारों के परंपरा वादी बने रहे। यही वह कारण है जिस को इन पश्चिमी रण नीति बनाने वालों ने संपूर्ण रूप से घुल मिल जाने की राजनीति की सफलता में रुकावट माना।

पश्चिम मे घुल मिल जाने कि योजनायें असफल होने में मुसलमान संतान कि यह पीडि चिंता का कारण बन गयी है। फिर हुवा यह कि पश्चिम अपने आप को एक बडी दुविधा से पीडित देखने लगा। वह दुविधा यह थी कि मानवता की ऐसी पीडि बढ़ने लगी, जो अपने भीतर पश्चिमी पहचान से बिल्कुल अलग अपनी संस्कृति पहचान बनाने लगी।

तो मालूम यह हुवा इस जातिवाद आंदोलन का मुख्य कारण पश्चिम का अपनी पहचान खो बैठने का भय है। इसी कारण वे इस्लाम के हर रूप या हर चिहन से चिंताजनक हो गये। वे यह भय रखते हैं कि अगर इस्लाम धर्म के सामान्य चिहनों को छोड़ दिया जाय, तो इस्लामी संघटन के अन्य चिहन भी उनके देश में फैल जायेंगे। किन्तु वे प्रारंभ ही से उनके मूल खतम करने की ठान ली है । अब इस्लाम के साथ सभ्यताओं की होनेवाली लड़ाई, (जब कि इसमें दूसरी विचार धाराओं ने भी प्रवेश कर लिया) अमेरिकी आलोचक सम्वेल हैंगटोन के अनुसार यह सभ्यताओं की लड़ाई है। इसको अमेरिकी आलोचक ने पश्चिम में राजनीतिक आंदोलन और बौद्धिक वर्तमान का नाम दिया।

माइकलः हम होटल पहुँच गये। जो विषय तुमने प्रारंभ किया, वह कई वाद-विवाद कि आवश्यकता रखता है।

पेरिस के कैफ़े मे फ्रइड़ के साथ मुलाख़ात



पेरिस के कैफ़े मे फ्रइड़ के साथ मुलाक़ात

दोनों मित्र पेरिस पहुँचने के बाद बचा-कुचा दिन एक अच्छी होटल की खोज में गुज़ार दिये। अंत में वे पेरिस के युवा आवास गृह मे ठहर गये। साफ यह लग रहा था कि उन दोनो को आराम की आवश्यकता है। किन्तु वे सारी रात सोने में बिता दिये। दूसरे दिन दोनो मित्र शहर के संदर्शक स्थानों को देखने निकल गये। घूमते हुए वे एक केफे के पास से गुज़रे।

माइकल: प्रिय राषिद । इस केफे मे थोडा समय बैठने और एक कप चाय पीने मे आपका विचार क्या है ?

राषिद: मुझे कोई आपत्ति नही। मै भी कुछ समय विश्राम की आवश्यकता महसूस कर रहा हूँ।

माइकल: प्रसिद्ध मनोचिकित्सक सिग्मोन्ड फ्रइड़ इसी केफे पर बैठा करता था। क्या तुमने उसके बारे में कुछ सुना है ?

राषिद: हाँ। यह वही तो है जिसका नाम मनोविज्ञान में मनोविश्लेषण के विचारों से जोडा जाता है। इसी प्रकार नैतिक नियमों से दूर होने और लैंगिक अश्लीलता कि ओर बुलाने वाले आंदोलन से भी इसका नाम जोडा जाता है।

माइकल: हमारे यहाँ सिग्मोन्ड फ्रइड़ प्रसिद्ध मनो विश्लेषण वादी है। भले ही इसका संबंध उन विषयों से भी है जिसका तुमने चर्चा किया।

राषिद: मेरे विचार से आधुनिक पश्चिमी समितियों कि सभ्यता का घटन करने वालों में डार्विन, कांत, मार्क्स, दुर्खीम, सार्त्र के साथ साथ सिग्मोन्ड फ्रइड़ का नाम भी बहुत इनमें से प्रत्येक ने पश्चिमी विचारों में हलचल पैदा करने, और आधुनिक पश्चिम के पवित्र चीज़ो के अनुसार मनभावित रूप मे पश्चिमी संस्कृति को नया रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी.... और इनमें से प्रत्येक ने धर्म, नैतिकता और संप्रदाय का विनाश करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

डार्विन का विकास वादी दृष्टिकोण ही वह पहली चिंगारी है जिसने दो गंभीर बौद्धिक बम डाले। इसके बाद आनेवाले दूसरे वैज्ञानिकों ने उस समय के बौद्धिक ढ़ांचे की संरचना करने मे इन दो बमों का प्रयोग किया। पहला बमः सदा विकास होते रहने का दृष्टिकोण साधारण बना दिया, जिससे स्थिरता की दृष्टिकोण का अंत हो जाता है, फिर प्रत्येक नैतिक मूल्यों, विचारों और आचारों का अंत हो जाता है। दूसरा बमः मानव के केवल प्राणि, भौतिकवाद और मानव को प्रभावित करने वाले कारक के भौतिकवाद होने कि दृष्टि प्रस्तुत करना, साथ साथ संपूर्ण रूप से आत्मिकता को भुला देना, और मानव के ईश्वर द्वारा बनाये गये प्राणि होने का तिरस्कार करना, चाहे वह सृष्टि के रूप में हो या विकास के रूप मे। निस्संदेह

यह प्रभु, मानव, ब्रह्माण्ड और परिणाम के प्रति उठने वाले दर्शन के प्रमुख प्रश्नों के बारे में स्थापित अवधारणाओं को नष्ट करने मे मजबूत शुरुआत थी।

सिग्मोन्ड फ्रइड़ की भूमिका यह थी कि उसने मानव को लैंगिक इच्छाओं का मिश्रण बनाया। मानव मे बुद्धि को अपने व्यवहार कि ओर मार्गदर्शनी करने की क्षमता होने से इंकार किया। उसने कहा कि दैनिक जीवन में मानव के भीतर हलचल पैदा करनेवाली मुख्य चीज़ रुचि है। इस दृष्टिकोण से नैतिकता की दीवारें टूट गयी, फिर नैतिकता को पिछडापन कहा जाने लगा, और वास्तविकता व विज्ञान से उसको खाली समझा जाने लगा।

माइकल: मै समझता हूँ कि मानवीय विभिन्न सभ्यता के बीच कई संयुक्त कारण है। इसी प्रकार कुछ विशेष कारक भी है, जो एक सभ्यता को दूसरी सभ्यता से विशिष्टता उपलब्ध कराते हैं। यह विचार-प्रभु-मानव-ब्रह्माण्ड सारे धर्मो के बीच संयुक्त है। लेकिन इन विचारों को क्रमानुसार रखने मे प्रत्येक सभ्यता अन्य सभ्यताओं से विपरीत है। किन्तु कोई सभ्यता इनमें से किसी एक विचार को बाकी दो विचारों पर महत्व देता है, और बाक़ी दो विचारों को पहले विचार के संदर्भ मे समझता है।

आधुनिक पश्चिमी सभ्यता में, विशेष रूप से विकसित युग के प्रारंभ के बाद ब्रह्माण्ड के प्रति विचार सामान्य होने लगा। जब वैज्ञानिक खोज बडने लगी तो एक नया विचार पैदा होने लगा, जिसने ईशवर के द्वारा मानव की सृष्टि को ही रद्द कर दिया, और भौतिकवाद दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। इस प्रकार मानव में आध्यात्मिक आयाम की हत्या करदी गयी। वास्तविक रूप से डार्विन उन प्रमुख आलोचकों में से एक है, जिन्होंने इस विचार की स्थापना की है।

राषिद: इस विषय में मै संपूर्ण रूप से तुम्हारी बातों से सहमत हूँ। लेकिन तुम ने जो कुछ कहा है, उसके प्रति मै तुम से कुछ विषयों की ओर ध्यान देने की आशा करता हूँ।

प्रथम: इन विचारों का अपने समय मे क्रांति का रूप धारण करने का मुख्य कारण उस समय की पश्चिमी संस्कृति में पाये जाने वाली आध्यात्मिक और वैज्ञानिक रिक्त कि स्थिति का पाया जाना है। साथ-साथ यह भी कि गिरजा घरों का आधीन, और जीवन व जीव के प्रति अपने ग़लत विचारों पर ज़ोर देना है।

द्वितीय: इस बात का विश्वास करलेना कि पश्चिम की उन्नति का कारण वह विचार और दृष्टिकोण है, जो उसके विकास के प्रारंभ और मध्यकाल मे सामान्य हो गये थे, यह विश्वास बिल्कुल ग़लत है।

तृतीय: वैज्ञानिक क्रांति के बाद इन दार्शनिक व आलोचकों के दृष्टिकोण आपस में टकराने लगे। फिर भी पश्चिम और पूरब में कम ज्ञान रखने वाले बहुत लोग इन विचारों पर आधारित आंदोलन के प्रभाव से पीडित हैं।

जहाँ तक तुम ने विभिन्न सभ्यताओं के बीच विचारों के संयुक्त की बात की है, तुम्हारी इस बात से मुझे सिग्मोन्ड फ्रइड़ और एक मुस्लिम वैज्ञानिक के बीच मानवीय व्यवहार के अर्थ मे कि जाने वाली तुलना याद आ गयी। मुस्लिम वैज्ञानिक ने लगभग 700 साल पहले इस विषय में लिखा था।

माइकलः आश्चर्यजनक बात है कि फ्रइड और प्राचीन काल के मुस्लिम वैज्ञानिक के विचारों के बीच समानता पायी जाती है।

राषिदः विचारों के बीच समानता नही पायी जाती है। बल्कि इसको विचारों के ढाँचे में समानता कह सकते हैं। इस विषय का अधिक विवरण के लिए मै तुम से यह प्रश्न करना चाहूँगा कि क्या तुम फ्रइड़ कि दृष्टिकोण के अनुसार मनोवैज्ञानिक युक्ति विन्यास का ज्ञान रखते हो ?।

माइकलः हाँ। मै अच्छी तरह ज्ञान रखता हूँ। उस दृष्टिकोण का सारांश यह है कि फ्रइड़ का विचार है कि जिस प्रकार से मानव के भीतर जैविक उपकरण (जैसे पाचन और परिसंचरण की प्रणाली वग़ैरह) पाये जाते हैं, जिससे बयोप्रोसेस ठीक ढंग से काम करता है। इसी प्रकार से मानव के भीतर मनोवैज्ञानिक युक्ति भी है, जिसका विन्यास उन भागों से होता है, जो आपस में एक दूसरे से संबंधित है।

इस युक्ति का विन्यास उन भागों से होता है, जिस को फ्रइड़ ने ये नाम दिया हैः (वह), (मै ही अग्र हूँ) और (मैं) ।

(वह) यह विशेष इच्छा, रुचि, छुपे हुए अनुभव, और लगातार उभारने वाले लगाव का स्थान है, जो भावनाओं के क्षेत्र मे रुचि के अनुसार अपनी इच्छाओं को पूरी करने के लिए प्रकट होता है। मनोवैज्ञानिक युक्ति के विन्यास में (वह) सबसे पुराना है। इस का विन्यास उन चीज़ों से होता है, जो मानव अपने भीतर जन्म के समय साथ लाता है, और हर उस चीज़ से होता है, जिसको मानव की विशेष युक्ति भविष्य में निर्धारित करती है। (वह) आनुवंशिकी के प्रभाव का प्रतिनिधित्व है।

(मै ही अग्र हूँ) यह सामाजिक मूल्य, उच्च चरित्र और नियमों का प्रति निधित्व है। यानी मानव को अन्य लोगों द्वारा प्राप्त होनेवाली चीज़ों का प्रभाव है। इस में शिक्षा, और उन नैतिक मूल्यों का भी प्रभाव है, जो बालक पर अपने माता-पिता, स्कूल, और समाज द्वारा होता है। पारिवारिक, जातिय, राष्ट्रवादी और धार्मिक परंपराओं का भी प्रभाव है। इसके अतिरिक्त उस समामाजिक समिति की आवश्यकताओं का प्रभाव है। (मै अग्र हूँ) का क्षेत्र शिशु अभिवृद्धि के समय सहायकों (जैसे शिक्षक और कुछ वह महान व्यक्ति जो समाज में उच्च आचार रखते हों) से भी प्रभावित होता है... (मै आग्र हूँ) के क्षेत्र में वृत्ति या यौन इच्छाओं के कार्य से दूर रहने की आशा होती है। क्यों कि (मैं अग्र हूँ) का क्षेत्र अंतः करण का प्रतिनिधित्व है। वह आदर्श क्षेत्र है जो वास्तविकता से बहुत दूर है। सदा वह

निपुण की ओर पहुँचने की आशा रखता है न कि रुचि और इच्छाओं की ओर। (जैसा कि फ्राइड़ ने कहा)

(मैं) के क्षेत्र के बारे में हम यह कह सकते हैं कि (वह) और (मै समग्र हूँ) के क्षेत्रों के बीच इंटरेक्शन, या समानता या अंतर का परिणाम है। इसी प्रकार रुची, उच्च चरित्र, और आत्म नियंत्रण के नियमों के बीच समानता या अंतर का पिरणाम है। (मैं) का क्षेत्र वह जागृति का स्थान है जो वास्तविकता के साथ होने वाले संकटों का, या इच्छाओं के बीच आपसी संकटों का समाधान करता है, ताके व्यक्तित्व के नियंत्रण की सुरक्षा की जाय। (मैं) का क्षेत्र अंतिम रूप से मानव के उस व्यक्तित्व का परिणाम है जो उसके व्यवहार में प्रकट होता है।

(मैं समग्र हूँ) का क्षेत्र (मैं) के क्षेत्र से बिल्कुल अलग भाग है, जो (मैं) के क्षेत्र पर हवलदार का कार्य करता है। वह (मैं) के क्षेत्र को (वह) के क्षेत्र का पालन करने, और अपनी छिपी हुई इच्छाओं को पूरा करने से चुनौती देता है।

राषिदः माइकल तुमने तो बहुत अच्छा वर्णन किया। ऐसा लग रहा है कि फ्राइड़ इस केफे पर बैठकर चाय पीते हुए बात कर रहा हो...

लेकिन मैं तुम्हारी इस बात को पूरी करूँगा, कि फ्राइड़ मनोवैज्ञानिक युक्ति में (मैं) के क्षेत्र की ज़िम्मेदारी को कठिन मानता है। यह कठिन जिम्मेदारी (अगर हम इसको असंभव न भी कहें) विभिन्न आवश्यकताओं के बीच संतुलन रखने में प्रकट होती है। क्यों कि (मैं) कि ज़िम्मेदारी (वह) की आवश्यकताओं को पूरा करना है, जो कि संपूर्ण रूप से यौनिक इच्छाएँ हैं, इसी प्रकार (मैं) की यह भी ज़िम्मेदारी है कि वह परीधि (मैं समग्र हूँ) का भी ध्यान रखे, जो कि समाजिक और नैतिक आवश्यकताएँ है। इसीलिए इनके बीच संतुलन रखना कठिन लगता है। इसी कारण (मैं) (वह) के साथ समझ और सद्भाव का संबंध बनाने का, और (वह) की इच्छाओं को पूरा करने का प्रयास करता है। परन्तु इसका (मैं समग्र हूँ) के साथ टकराऊ हो जाता है। और वास्तविक जीवन में विशिष्ट मानकों के अनुसार यौनिक संबंधों को नियंत्रित रखने से अधिकतर समय यौनिक इच्छाएँ दब जाती है। जब (मैं) का क्षेत्र (वह), (मैं समग्र हूँ), और वास्तविकता के बीच नियंत्रण रखने में सफल हो जाता है, तो मानव नियंत्रित जीवन यापन करता है लेकिन जब (वह) या (मैं समग्र हूँ) का क्षेत्र मानवीय व्यक्तित्व पर प्रभावित हो जाता है, तो इससे व्यक्तित्व में असंतुलन पैदा हो जाता है। किन्तु इन विभिन्न इच्छाओं के बीच संतुलन रखने में (मैं) के क्षेत्र की असफलता अस्वस्थता की परिस्थितियों तक ले जाती है।

इस विषय में गंभीर बात यह है कि जब हम इस आवधारणा के अनुसार (मैं) के क्षेत्र का (वह) के क्षेत्र (यानी इच्छाएँ और यौनिक हवस) के साथ, और (मैं समग्र हूँ) (यानी नैतिक मूल्य और उच्च चरित्र) के साथ एक समान हो जाना, और (वह)

की इच्छाओं को पूरा न करना उनको दबा देने कि ओर लेजाता है। साथ-साथ यह भी मानना कि हम (वह) के क्षेत्र में परिवर्तन की क्षमता नही रखते है। जब हम इसीको मानसिक स्वास्थ्य कहें, तो हमारे सामने (मैं समग्र हूँ) के क्षेत्र में पिरवर्तन, और ज़रूरत पडने पर उसको नष्ट किये बिना सद्भाव तक पहुँचने का कोई विकल्प नही रह जाता। इसीलिए धर्म व उच्च नैतिकता को हमारे जीवन से निकालने, और इनके बदले मानवीय हवस, यौन इच्छाओं और स्वार्थ का उपयोग करने की आवश्यकता पड़ गयी (यह वह स्वार्थ है, जो (वह) के क्षेत्र से पर्याप्त होता है)... जब धर्म और नैतिकता को दूर कर दिया गया, और नैतिकता पर आधारित प्रतिबंधों से हटकर यौन संबंधों व इच्छाओं का मार्ग खोल दिया गया, तो पश्चिम में यही घटना घटी। इसी पर इन्होंने अपनी सभ्यता की स्थापना की। फिर परिवार टुकडे टुकडे हो गया। बल्कि मानव की मानवता नष्ट हो गयी। क्यों कि वहाँ पर बुद्धि न रखने वाले, और वृत्ति के विपरीत नैतिक नियमों को न जानने वाले पशु-पक्षियों से पश्चिमी समाज में कोई अंतर नही रहा.. मैं देख रहा हूँ कि हम फिर डार्विन ही की तरफ लौट आये हैं, जहाँ से कि हमने अपनी बात प्रारंभ की थी।

माइकलः तुम यह कहना चाहते हो कि गुप्त इच्छाएँ जब प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सदा तृप्त होना चाहती है, तो इससे (जैसा कि तुमने फ्राइड़ और उसके विचारों को समझा) नैतिक मूल्य और उच्च चरित्र पर आधारित सभ्यता को इच्छाओं को दबाने के परिणाम में प्रकट होनेवाली सभ्यता कहने कि आवश्यकता पडेगी ।

राषिदः हाँ। पश्चिमी सभ्यता अपने विचारों में ईशवर के प्रभुत्व को दूर रखते हुए नैतिक मूल्य बनाती है। जब कि मुसलमानों के विचार से मानवीय समितियों मैं नैतिकता का स्त्रोत आकाशीय धर्म (नियम) होना ज़रूरी है न कि मानवीय बुद्धि। इसलिए कि केवल बुद्धि हो सकता है कि भटक जाये। लेकिन जब बुद्धि को देवत्व नियमों के संदर्भ मे रखा जाय, तो उसके द्वारा प्रकट होने वाले चरित्र अधिक उच्च होंगे।

माइकलः लेकिन प्रिय राषिदः। तुम ने अपने उस मुस्लिम वैज्ञानिक की बात मुझ से नही कही जिसके बारे में तुम ने कुछ देर पहले चर्चा किया था। उस मुस्लिम वैज्ञानिक ने जो बातें कही है, क्या वह बातें इन विचारों के समान है या इसके विपरीत है ?

राषिदः उस वैज्ञानिक ने जो कुछ कहा वह सारी बातें नैतिक मूल्य और अवधारणों के संदर्भ में आती है। हमारे द्वारा उसकी बातों का चर्चा करने और इनको यही रूप में प्रस्तुत करने में बहुत लम्बा समय लग जायेगा। मेरे विचार से इन बातों का अपने अगले वाद-विवाद में चर्चा करना ठीक रहेगा।

दो विधियों के बीच लटकती हुई मानवता



दो विधियों के बीच लटकती हुई मानवता

राषिद और माइकल जिस युवा हास्टल में ठहरे हुए थे, वह इन दोनों के लिए बहुत सुन्दर स्थान था। इस हास्टल में रहने का ख़र्च कम होने के साथ-साथ इसमें मैदान, जिम, मनोरंजन और जानकारी के लिए कंप्यूटर सेक्शन, संपर्क और संचार की संभावनाएँ, इन सब से महत्वपूर्ण बात यह थी कि उनके सम वयस्क और सम विज्ञान वाले युवकों की एक बडी संख्या इस हास्टल में रहती थी।

हास्टल के एक हाल में राषिद और माइकल बैठ गये। दोनों ने अपनी पसंद का साफ्ट ड्रिन्क मंगवाया। फिर माइकल कहने लगा।

हम अपनी पिछली बात-चीत में उस मुस्लिम वैज्ञानिक के विचारों के प्रति बात कर रहे थे, जिसका तुम ने चर्चा किया था, क्या वह विचार फ्राइड़ के विचारों के समान है या इस के विपरीत ?

राषिदः समस्या यहाँ पर एक समान होने या एक दूसरे से विपरीत होने की नही है। इस्लाम धर्म तो संपूर्ण रूप से एकीकृत स्वतंत्र और एक अलग प्रणाली है, जो स्पष्ट नियमों पर आधारित है। लेकिन मैं इन नियमों का विवरण करते हुए तुम्हारा ज़्यादा समय नही लूँगा ... इस वैज्ञानिक का नाम इब्ने ख़य्यिम है। इस ने अपनी पुस्तकों मे दिल, आत्मा और बुद्धि के बीच स्थिर संबंध के बारे में चर्चा किया। लेकिन सब से पहले मैं तुम्हें इस बात का संकेत देना चाहता हूँ कि इस वैज्ञानिक की कही हुई बातें उन नैतिक मूल्य और आवधरणाओं के संदर्भ में है, जो इस्लामिक सभ्यता के नियमों के अनुरूप है। इसीलिए मै अपनी पिछली बात को इन नियमों और फ्राइड़ के दृष्टिकोण के बीच स्थिर अंतर के विवरण से जोडना चाहता हूँ, क्यों कि फ्राइड़ के विचार पश्चिमी सभ्यता की वास्तविकता और नैतिकता के संयुक्त का संघटन है।

माइकलः समय का लाभ उठाते हुए कम शब्दों में मुझे तुम्हारी बात के आखरी भाग का विवरण करने दो। अगर तुम्हारे विचारों के विपरीत मेरी बात हो, तो तुम उसे सुधारो।

राषिदः बोलो

माइकलः फ्राइड़ के दृष्टिकोण से व्यक्तित्व के कई मॉडल सामने आते हैं, जो निम्न लिखित चीज़ों में प्रकट होते हैः

जब मानवीय इच्छाएँ और भावनाएँ (यानी वह का क्षेत्र) संपूर्ण रूप से व्यक्तित्व (यानी मैं का क्षेत्र) पर प्रभावित हो जाते हैं, तो हमारे सामने स्वार्थी या अपराधी व्यक्तित्व प्रकट होकर सामने आता है, जो दूसरों के अधिकारों को छीन लेता है, केवल अपनी भावनाएँ और यौन इच्छाओं को तृप्त करने का प्रयास करता है, और इस मार्ग में वह नैतिक मूल्य, रीति-रिवाज और पवित्र चीज़ों (मैं समग्र हूँ) का अपमान करता है।

जब नैतिक मूल्य, रीति-रिवाज और पवित्रता (मैं समग्र हूँ) का क्षेत्र व्यक्तित्व (मैं) के क्षेत्र पर प्रभावित हो जाता है, तो हमारे सामने साधु व वास्तविकता से दूर रहने वाले आदर्श व्यक्तित्व सामने आते हैं, जो इस मार्ग में आदिम इच्छाओं और भावनाओं को कुचल देता है।

जब एक ओर से इच्छाओं व भावनाओं के बीच नियंत्रण हो, और दूसरी ओर से नैतिक मूल्य व सामाजिक प्रतिबंधों का ध्यान हो, तो मानवीय व्यक्तित्व स्वस्थ या संतोषजनक हो जाता है। यह नियंत्रण कुछ स्थितियों में भावनाओं को कुचलने से, या कुछ अन्य स्थित्यों में नैतिक मूल्यों और प्रतिबंधों से निकलने में गुप्त है।

राषिदः बहुत अच्छा । निश्चय सामाजिक रूप धारण करने वाली पश्चिमी सभ्यता व दृष्टिकोण, और इस्लामी संघटन के बीच स्थिर अंतर तक हम पहूँच गये... यह अंतर (वह) का क्षेत्र, और (मैं समग्र हूँ) के क्षेत्र के बीच, इनमें से किसी एक को छोडे बिना, प्रति द्वंदिता और संघर्ष की स्थिति को समाप्त करने में प्रकट होता है, जो जीवन के हर एक क्षेत्र में मानव के सभी आयामों की व्यापक एकीकरण और संपूर्ण नियंत्रण द्वारा होता है। इस का रहस्य उस विषय में गुप्त है जिसका नाम मैं अधिकारों के अत्याचार का निषेध रखता हूँ।

माइकलः पहली बार मैं यह अधिकारों के अत्याचार के प्रति सुन रहा हूँ। मैं तुम से यह भी सुनूँगा कि अधिकार का अत्याचार कैसे होता है। लेकिन तुम मुझे पहले यह कहने दो कि तुम्हारी बात-चीत मनोवैज्ञानिक युक्ति के घटकों के विचार से सहमत लगती है।

राषिदः मनोवैज्ञानिक युक्ति के घटकों के प्रति विचार वही है, जिस की चर्चा पिछले मैं ने किः एक, बल्कि कुछ मुस्लिम वैज्ञानिकों ने कई शताब्दियों पहले इसी जैसी बात कही है। यह देखो (राषिद ने पुस्तक निकाली) इब्ने खय्यिम नामक वैज्ञानिक ने अपनी पुस्तक में यह लिखा है। राषिद उस पुस्तक से यह पढने लगाः समस्याएँ चार हैं - 1) घृणास्पद, जो घृणास्पद की ओर ले जाती है। 2) घृणास्पद जो प्रिय की ओर ले जाती है। 3) प्रिय जो प्रिय की ओर ले जाती है। 4) प्रिय जो घृणास्पद की ओर ले जाती है। प्रिय की ओर ले जाने वाली प्रिय समस्या में दो प्रकार से उसका उपयोग करने का कारण पाया जाता है। और घृणास्पद की ओर ले जाने वाले घृणास्पद में दो प्रकार से उसके न करने का कारण पाया जाता है।

अब रही बाक़ी की दो समस्याएँ, इसमें दोनों कारण (उपयोग करने और न करने का कारण) एक समान पाया जाता है। यही दो समस्याएँ परीक्षा का स्थान है। आत्मा इन दोनों मे स्वयं से निकट रहने वाले (यानी तुरन्त मिलने वाले) परिणाम को महत्व देती है। बुद्धि और विश्वास इन दोनों में लाभदायक और शाश्वत को महत्व देते हैं। दिल इन दोनों के बीच-बीच है (कभी इस तरफ, और कभी उस तरफ) । मुस्लिम वैज्ञानिकों ने पवित्र ख़ुरआन और रसूल की वाणी कि दृष्टि से यह कहा है कि जब बुद्धि (मैं समग्र हूँ) के क्षेत्र को भूल जाती है, तो बिना किसी

हिसाब किताब करने वाले और रक्षक के इच्छाएँ (वह के क्षेत्र) को उभारती है।

क्या तुम फ्राइड़ के दृष्टिकोण के अनुसार (आत्मा) और (वह) के क्षेत्र के बीच, (बुद्धि और विश्वास), (मैं समग्र हूँ), (दिल) और (मैं) के क्षेत्र कि ज़िम्मेदारी के बीच समानता नही देखते हो ?

माइकल: इसका आर्थ यह निकला कि इन दोनों के विचार बडी हद तक एक समान है।

राषिद: इन विचारों और फ्राइड़ के विचारों के बीच एक मुख्य अंतर है, जो दोनों को आपस में एक दूसरे को विशेष बनाता है। यह अंतर मुस्लिम वैज्ञानिक इब्ने खय्यिम के इस वाक्य में गुप्त हैः यह दोनों परीक्षा का स्थान हैं। जब कि फ्राइड़ का विचार यह है कि व्यक्तित्व का स्वस्थ मैं (इब्ने खय्यिम के अनुसार दिल) वह (आत्मा) कि भावनाओं और इच्छाओं को तृप्त करने में गुप्त है। इस्लामी सभ्यता का विचार यह है कि आत्मा में स्थिर भावनाओं और इच्छाओं कि रुची। वास्तविकता में पायी जाने वाले इच्छाओं के कारण अल्लाह के द्वारा परीक्षा और इम्तिहान है। किन्तु वह (आत्मा) को संतुष्ट करने के लिए उसकी प्रत्येक इच्छा को तृप्त करना सही नही होगा। इसी प्रकार (मैं समग्र हूँ), (बुद्धि और विश्वास) के लिए वह (आत्मा) की इच्छाओं को कुचलना भी लक्ष्य नहीं है, जैसा कि मठवासी में हुवा करता है।

यही वह संयम और नियंत्रण है, जो इस्लाम धर्म के अलावा किसी धर्म में नही **मिलता**ः इच्छाओं और भावनाओं को नियंत्रण में रखना, बुद्धि व विश्वास से टकराऊ के बिना, और अधिकारों का अत्याचार किये बिना मानवीय वृत्ति की इच्छाओं को तृप्त करना।

माइकल: तो फिर अधिकारों के अत्याचार का अर्थ क्या है ?

राषिद: अर्थ यह है कि नैतिक मूल्य और उच्च चरित्र के कुछ अधिकार हैं। इसी प्रकार इच्छाओं और भावनाओं के भी कुछ अधिकार हैं। इस्लाम धर्म में किसी एक मूल्य या चरित्र या इच्छा या भावनाओं को अन्य भावना पर, (इस विचार से कि यह उच्च मूल्य है, या यह महत्वपूर्ण आवश्यकता है) महत्व देने से रोक है... मै इस बात का अधिक विवरण करने के लिए इस्लाम धर्म के रसूल की एक वाणी तुम्हारे सामने प्रस्तुत करता हूँ। मुहम्मद (सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम) के घर तीन गिरोह आये। वे आप की प्रार्थना के प्रति प्रश्न कर रहे थे। जब उन्हें आपकी प्रार्थना के बारे में बताया गया, तो वे आपकी प्रार्थना को बहुत कम समझे। फिर इन लोगों ने यह सोंच लिया कि आप (सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम) की विशिष्टता है, और वे आप से अधिक पापी हैं, इसलिए उनके लिए अपनी वृत्ति की आवश्यकताओं से दूर रहते हुए, प्रार्थना में लगे रहना चाहिए। इनमें से एक व्यक्ति ने यह कहाः में तो पूरी उम्र रात भर नमाज पढ़ूँगा और कभी न सोऊँगा। दूसरे ने कहा मैं उपवास (यानी प्रातः समय से सूर्यास्त समय तक खाने-पीने और स्त्रियों से दूर रहूँगा, और तीसरे व्यक्ति ने कहा मैं स्त्रियों से दूर रहूँगा कभी शादी नही करूँगा। अल्लाह के रसूल उनके पास आये और कहाः तुम्ही वह लोग हो जिन्हों ने ऐसी ऐसी बातें कही है। अल्लाह की क़सम जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं तुम लोगों से ज्यादा अल्लाह का भय रखता हूँ, और तुम लोगों से अधिक अल्लाह से डरता हूँ। लेकिन कभी मैं रोज़ा रखता हूँ और कभी नही। नमाज़ पढता हूँ और सोता भी हूँ। स्त्रियों से विवाह भी करता हूँ। जो मेरे पथ (सुन्नत) से दूर रहे, वह मुझ में से नही है ... यह लोग धर्म के एक विषय (मैं समग्र हूँ) के प्रति वृद्धि करने लगे। वास्तविक रूप से उनके द्वारा होनेवाली यह वृद्धि एक विशिष्टता, अधिकार और पसंदीदा चीज़ थी, लेकिन इसमें दूसरे अधिकारों (चाहे वे आत्मा वह के अधिकार ही क्यों न हो) का अत्याचार हो रहा था। रसूल की एक दूसरी वाणी में इसी नियम का अधिक विवरण करते हुए यह कहा गयाः ... निस्संदेह अल्लाह का आप पर अधिकार है। आपकी आत्मा पर आप का अधिकार है, और परिवार का आप पर अधिकार है। किन्तु आप हर एक को उसका अधिकार दो...। पवित्र ख़ुरआन में कई ऐसे वाक्य हैं जो इसी नियम पर आधारित है। इनमें से अल्लाह का यह आदेश हैः जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसमें आख़िरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है (अल-क़सस, 77) और अल्लाह का यह भी आदेश है - और अपना हाथ न तो अपनी गरदन से बाँधे रखो और न उसे बिल्कुल खुला छोड दो कि निन्दित और असहाय होकर बैठ जाओ। (बनी इस्राईल, 29) ... यह सारी बातें मै इसलिए तुम्हें कह रहा हूँ मेरे मित्र, ताकि तुम यह जानलो कि इस्लाम धर्म में मठवासी अवैध है।

इस्लाम धर्म मानव की बुद्धि और अंतः करण को संतुष्ट रखता है। धर्म को संपूर्ण बनाता है और मानवीय वृत्ति की आवश्यकताओं को तृप्त करता है। इसमें न कोई संघर्ष है, न कोई टकराऊ ।

राषिद और **माइकल** दोनों अपनी बात चीत में लगे हुए थे, कि अचानक उनके पास के टेबुल पर बैठा हुवा एक नव युवक उनसे निकट हुवा, और उनके सामने खडे होकर यह कहने लगाः

मुझे तुम्हारे साथ बैठने की अनुमति मिल सकती है ?

माइकल व **राषिद:** बडी ख़ुशी से ... बैठिए ।

नव युवकः तुम लोगों की बात-चीत ने मुझे आकर्षित कर लिया। अगर हमारे बीच परिचय हो जाय, और तुम मुझे अपने वाद-विवाद में शामिल करलो, तो मै तुम्हारा आभारी रहूँगा ।

माइकल: मुझे कोई आपत्ति नही।

राषिद: आपका स्वागत है। मै अपने मित्र **माइकल** का परिचय तुम से कराता हूँ। यह लंडन का वासी है। पेशे से अध्यापक है। और मै राषिद ईजिप्ट का वासी हूँ। लेखक और पत्रकार हूँ।

नव युवकः आप दोनों का स्वागत है। मै तुम्हारी अनुमति पर संतुष्ट हूँ। मै अपना परिचय कराता हूँ। मेरा नाम राजीव है। मैं भारत का वासी हूँ। जर्मनी में इंजीनीरिंग की पढाई कर रहा हूँ। मै यहाँ पर पेरिस में अपने कुछ मित्रों से मिलने के लिए आया हूँ।

माइकल व राषिदः अच्छा समय है कि हमारा तुम से परिचय हो गया प्रिय राजीव ।

राषिदः इसी प्रकार हम यह देखते हैं कि पश्चिम के मनोवैज्ञानिक आत्मा की ओर केवल दोष और रोग की दृष्टि से देखते हैं... लेकिन इस्लाम धर्म में आत्मा अपने भीतर भलाई और बुराई दोनों रखती है। किन्तु यह संभव है कि मानवीय वृत्ति के साथ टकराऊ, या उसकी आवश्यकताओं में कमी किये बिना आत्मा की स्थिति में मौलिक परिवर्तन लाया जाये, और उसको अत्यचार के अंधेरे से नैतिकता के उच्च शिखर पर ले जाया जाये।

राजीवः तुम्हारे वाद-विवाद का सारांश यह हुवा कि फ्राइड़ के आवधारणाओं के अनुसार गुप्त इच्छाएँ जब प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सदा तृप्त होना चाहती है, तो इससे नैतिक मूल्य और उच्च चरित्र पर आधारित सभ्यता को इच्छाओं को दबाने के परिणाम में प्रकट होनेवाली सभ्यता कहने की आवश्यकता पडेगी।

अब पश्चिमी सभ्यता ब्रह्माण्ड के आवधारण को प्रमुख बनाते हुए नैतिक मूल्य की स्थापना करते हैं। इसी प्रकार मानव को इस ब्रह्माण्ड का सरदार मानते हुए महत्व देते हैं। यह सब पश्चिमी सभ्यता में ईशवर के विचार को शामिल न करने के कारण हुवा है। लेकिन इस्लामी सभ्यता में अल्लाह का उदाहरण ही प्रमुख है। और इसका अर्थ यह नही है कि मानवीय व्यक्तित्व को कोई महत्व नहीं दिया गया।

राषिदः यह इस बात का प्रमाण है कि मानवीय समितियों में नैतिकता के स्त्रोत का देवत्व होना आवश्यक है, न कि मानवीय बुद्धि। क्योंकि केवल बुद्धि निश्चित रूप से भटक जाती है। लेकिन जब बुद्धि देवत्व वाणी के छाया में हो, तो उससे प्रकट होने वाले चरित्र आदर्श होंगे।

माइकलः प्रिय राजीव हमारे वाद-विवाद में तुम्हारी उपस्थिति समृद्धि का कारण होगी... मेरे विचार से कल इसी जगह और इसी समय हम नयी चर्चा लेकर इकट्ठा होंगे। क्या तुम दोनों के लिए यह समय ठीक रहेगा ?

राजीवः हाँ। मेरे लिए तो ठीक है।

राषिदः मेरे लिए संतुष्टजनक होगा कि तुम दोनों इसी समय मेरे घर दोपहर के भोजन के लिए आ जाओ। ताकि हमारे नये मित्र राजीव का स्वागत हो जाये।

माइकल व राजीवः बडी खुशी की बात है।

ईमान (विश्वास) की ओर हमारी आवश्यकता



ईमान (विश्वास) की ओर हमारी आवश्यकता

निर्धारित समय पर युवक हास्टल की होटल में सारे मित्र इकट्ठा हो गये। मेनू देख लेने के बाद माइकल और राषिद ने अपने पसंद का भोजन निर्धारित कर लिया। जब कि राजीव लंबे समय तक मेनू को देखते रहा और यह कहने लगाः

अधिकतर होटल संपूर्ण रूप से शाकाहारी भोजन प्रस्तुत करने की ओर ज्यादा ध्यान नही देते। लेकिन मैं किसी भी स्थिति में अपने लिए कोई भोजन ज़रूर मंगवाऊँगा ।

माइकलः इसका अर्थ यह हुवा कि तुम शाकाहारी हो ?

राजीवः हाँ। भारत के लगभग 40% वासी शाकाहारी है।

राषिदः इसका कारण स्वास्थ्य है या धार्मिक ?

राजीवः वास्तविक रूप से हिन्दु धर्म (जिसका मैं कभी अनुपालन किया करता था) में गाय का मांस खाना संपूर्ण रूप से अवैध है। भारत में हिन्दू धर्म के अनुयायियों के बीच शाकाहारी भोजन सामान्य बात है। हालांकि आज कल उनकी संख्या घटती जा रही है। क्योंकि हिन्दू धर्म में कुछ क्रूरता है। मैं व्यक्तिगत रूप से स्वास्थ्य पर्यावरणीय कारणों से शाकाहारी भोजन को महत्व देता हूँ।

राषिद (सेवक को आवाज़ देते हुए) - कृपया। यह हमारा अनुरोध है।

माइकलः प्रिय राजीव। तुम अपने धर्म को छोडकर किस धर्म के अनुयायी बनगये ?

राजीवः किसी भी धर्म का नही। जर्मनी मे मेरी पढाई ने हिन्दू धर्म की ओर आलोचना और संदेह युक्त दृष्टिकोण से देखने की स्वतंत्रता दी है। मैं ईसाई धर्म से भी संतुष्ट नही हूँ। इसीलिए मै नास्तिकता के अधिक निकट हूँ।

माइकलः मै भी तुम्हारी तरह इस संदेह मे पडा हूँ। और मेरे विचार से कुछ समयों में मानव को किसी एक ईशवर से संबंधित रहने की आवश्यकता है। लेकिन यह संबंध का संपूर्ण रूप से मानव को नियंत्रित करने वाला, या उसको गुलाम बनाने वाला न हो।

राषिदः मेरे विचार से तुम्हारी यह बात-चीत संवीक्षा और वाद-विवाद की आवश्यकता रखती है।

माइकलः कौन-सी बात चीत ?

राषिदः नास्तिकता का विचार, और मानवीय जीवन में ईशवर या धर्म का स्थान ।

राजीवः मेरा विश्वास है कि विज्ञान की प्रगति के बाद मानव के सामने कई रहस्य खुल गये। जिसके कारण गुप्त विषयों को अनदेखे स्पष्टीकरण की आवश्यकता नही रही। मेरे विचार से यह ब्रहमाण्ड विज्ञान के नियमों का पालन करता है। यह कहना संभव है कि ब्रहमाण्ड एक यांत्रिक मशीन है जो निर्धारित अनिवार्य क़ानून के माध्यम से चलता है, और इस ब्रहमाण्ड में होने वाली हर घटना का एक कारण होता है, जो निर्धारित परिणाम की ओर ले जाता है। जब तक यह यांत्रिक नियम ब्रहमाण्ड को चलाते रहेंगे, तो उसको नियंत्रण में रखने वाले किसी प्रभु की आवश्यकता नही है।

राषिदः हमारे आस-पास की चीज़ो का स्पष्टीकरण करने के लिए विज्ञान एक अद्भुत उपकरण है। लेकिन समस्या यह नही है। किन्तु इस जैसी बडी समस्या, (जिसने इतिहास के प्रारंभ से सारे मानव को व्यस्त रखा) का किसी एक आयाम से (चाहे वह आयाम हमें अच्छा लगता हो या हम उस से संतुष्ट हो) चर्चा करना हमारे लिए संभव नही है। क्योंकि इस विषय में कई अन्य आयाम भी है। जिनमें से कुछ निम्न लिखे जा रहे है।

क्या ज्ञान हमारे आस-पास पाये जाने वाली प्रकृति के प्रत्येक भाग का स्पष्टीकरण करता है ? वास्तविक रूप से नही ... ज्ञान में इतनी क्षमता नही है। उदाहरण के रूप से अगर हम खगोल विज्ञान को लें, तो उसके वैज्ञानिक विचारों के प्रति तुम यह देखोगे कि आज तक हम ने ब्रहमाण्ड के जिन जिन चीज़ों की खोज की है, वह केवल 5% है। इसके अतिरिक्त और बहुत कुछ है जिसके प्रति हम कुछ नही जानते। निश्चित रूप से खगोल वैज्ञानिकों की यह खोज भी उनके पास पायी जानेवाली प्रस्तुत सुविधाओं और प्रयासों का परिणाम है। वरना तो यह संभव है कि उनके ज्ञान से बाहर रहनेवाली चीज़ों की संख्या बहुत बडी हो।

वास्तविक विश्व की जब यह स्थिति है, तो अदृश्य विश्व की स्थिति क्या होगी ?

इससे हमारे मन में यह प्रश्न पैदा होता है कि क्या ज्ञान कि कोई सीमा नही है, जहाँ पर वह ठहर जाये ? हमें यह बात जानने की आवश्यकता है कि ज्ञान चाहे कितने ही उच्च शिखर तक पहुँच जाये, फिर भी वह प्रत्येक विषय का स्पष्टीकरण करने में सीमित ही रहेगा। अदृश्य विश्व ज्ञान के सीमाओं के भीतर नही आता है। इसलिए कि ज्ञान कई भौतिक घटनाओं का स्पष्टीकरण करने में असहाय है। तो ज्ञान उस अदृश्य विश्व का कैसे स्पष्टीकरण कर सकता है, जिसका प्रयोगशालाओं में परीक्षण करना संभव नही है ?।

एक और बात यह भी है कि अगर हम किसी विषय को तैयार करने की विधि जानलें, तो उसके निर्माता का इंकार करना या उसके आविष्कार को निम्न समझना संभव नही है। अगर कोई व्यक्ति पहले-पहले टी.वि. देखा हो, और आश्चर्य चकित हो गया हो, फिर इसके बाद वह स्वयं टी.वि. तैयार करने का ज्ञान

प्राप्त करलिया हो तो इसका अर्थ यह नही है कि यह विषय कोई महत्वपूर्ण नही है, या इसका कोई निर्माता भी नही है। इसी प्रकार उदाहरण के रूप से जब हम जीव विज्ञान के द्वारा ब्लड़ सेल को अलग-अलग करने का ज्ञान प्राप्त करलें, या डीएनए की खोज करलें, और इस ज्ञान के चमत्कार प्रकट हो जायें, तो क्या इसका अर्थ यह होगा कि इस विषय में कोई चमत्कार ही नही है ? या कोई इसका सृष्टि करने वाला ही नही है? मामला तो उल्टा है। यह संसार जिसके सामने मानव आश्चर्य चकित होकर खडा है, वह इस जैसे संसार की आदिम से सृष्टि करने में असहाय है, या इस संसार के छोटे-छोटे कार्य का स्पष्टीकरण नही कर सकता है। यह सब बातें इस विश्वास की ओर ले जाती है, कि इस संसार का कोई प्रजापति है।

एक दूसरा उदाहरण लो। प्रोफेसर सेसेल बाईस हामान (अमेरिकी भौतिक प्रोफेसर) ने यह कहाः

भोजन का शरीर के एक भाग में परिवर्तन हो जाने की अद्भुत प्रक्रिया को प्राचीन काल में ईशवर की क्षमता से संबंधित किया जाता था। फिर आज कल आधुनिक विज्ञान से यह रासायनिक प्रतिक्रिया हो गयी। क्या इससे ईशवर का वजूद समाप्त हो गया ? किस क्षमता ने रासायनिक तत्वों को लाभदायक प्रतिक्रिया में बदलने के लिए उपयुक्त बनाया ? .... निस्संदेह भोजन मानवीय शरीर में प्रवेश करने के बाद स्वयं प्रणाली के अनुसार कई चरणों से गुजरता है। इस अद्भुत प्रणाली का अपने वुजूद में आना संभव है। तो इन चीज़ों के ज्ञान के बाद अल्लाह पर विश्वास रखना हमारा कर्त्तव्य बन जाता है, जो अपने उन नियमों के अनुसार इस संसार को चलाता है, जिस के अनुसार उसने इस जीवन की सृष्टि की है।

माइकलः डार्विन के विकासवादी दृष्टिकोण (विज्ञान की अनिवार्यता और प्रजापति ईशवर का रद्द) इसी बात की पुष्टी करती है। और संसार के सारे जीव प्राकृतिक उन्नयन के नियम अनुसार (न कि सृष्टि के अनुसार) फलते-फूलते हैं।

राषिदः तुम्हारी यह बात-चीत इस दृष्टिकोण या इस जैसे अन्य दृष्टिकोण के प्रति एक मुख्य प्रश्न हमारे अंदर पैदा करती है, कि वैज्ञानिक स्पष्टीकरण हर स्थिति में स्थिर और पूर्ण है? वैज्ञानिक प्रगति से आश्चर्य जनक होने वाले अधिक लोग यह भूल गये कि ज्ञान की विशेषता संचय और क्रांतिकारी है यह दोनों विशेषताएँ वैज्ञानिक प्रगति कि स्वचालित प्रकृति है, इस प्रकार से कि जानकारी और खोज संचय होते हैं, यहाँ तक कि उस स्थान को पहुँच जाते हैं, जहाँ पर नयी नयी घटनायें संसार की ओर मानव की दृष्टि में परिवर्तन लाते हुए, पुरानी खोजों में पुनर्विचार करना शुरू करदेती है।

डार्विन के दृष्टिकोण (वह प्रत्येक रूप से वैज्ञानिक परिकल्पना है, जो वैज्ञानिक वास्तविकता, और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से स्थान तक नही पहुँचती है) बल्कि यह

तो विकासवाद के प्रति कुछ विचार है। यह विचार आधुनिक भ्रूण विज्ञान की खोज से टकराते हैं ... इसी प्रकार क्रैंब्रीयन के युग के नाम से पहचाने जानेवाले थोडि सी अवधि में खुदाई के बीच अचानक प्रकट होने वाले पशु (इस अवधि को सामान्य रूप से कैम्ब्रियन विस्पोट के नाम से जाना जाता है) भी डार्विन के दृष्टिकोण के विपरीत यह बताते हैं कि एक से दूसरे का विकास नही हुवा है।

राजीवः तो फिर क्या यह संभव नही कि यह संसार किसी प्रजापति के बिना ही दर्घटना पूर्वक हुई हो ?

राषिदः तुम मुझे गणित विज्ञान और दर्घटना के नियमों का उपयोग करते हुए, दुर्घटना का विवरण करने की अनुमति दो, ताकि किसी भी विषय के दुर्घटना पूर्वक होने की संभावना का ज्ञान प्राप्त हो जायेः

जब हम मान लें कि हमारे पास बहुत बडा डिब्बा है, जिस में हज़ारों अक्षर हैं। तो अ के बाज़ू म का होना बहुत बडी हद तक संभव है, जिससे कि अम बन जाता है। लेकिन इन अक्षरों का इस प्रकार से संघटन होना, जिससे कि कविता बन जाये या अद्भुत कहानी बन जाये, यह संभावना बहुत कम है।

वैज्ञानिकों ने उन परमाणुओं के इकट्ठा होने की संभावना गिनती की, जिन से एमिनो एसिड (जो मांस और प्रोटीन बनने में प्रमुख विषय है) का एक भाग बनता है। वैज्ञानिकों ने देखा कि इसके लिए कई बिलियन वर्षो की आवश्यकता है, और एक ऐसे विषय की आवश्यकता रखता है, जिसकी समर्थता इस बडे ब्रह्माण्ड में नही है। यह तो केवल एक मामूली भाग के बनने का मामला था। तो फिर पेड-पौधे, पशु-पक्षी और सारे जीव के शरीरों के बारे में आपका विचार क्या है? और ब्रह्माण्ड और जीवन कि सृष्टि के बारे में आपका क्या विचार है... निस्संदेह बुद्धिमत्ता के अनुसार इस ब्रह्माण्ड का दुर्घटना के रूप में प्रकट हो जाना असंभव है।

विज्ञान के सारे भाग इस बात की पुष्टी करते हैं कि नियंत्रित संयुक्त प्रणाली इस ब्रह्माण्ड को चलाती है। उसका स्थभ ब्रह्माण्ड के वह नियम और स्थिर प्रकृति है, जिस में कभी परिवर्तन नही होता, और यही वह नियम या प्रकृति है जिसकी खोज करने और ज्ञान प्राप्त करने वैज्ञानिक प्रयास में लगे हुए हैं। वास्तविक रूप से वैज्ञानिक खोज इस हद तक पहुँच गयी, जिससे हम सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण और इस जैसे अन्य प्राकृतिक घटनाओं को उसके प्रकट होने से कई सौ साल पहले जान लेते हैं।

तो किस ने इन नियमों को बनाया? । किस ने इस ब्रह्माण्ड में परमाणु पैदा किये? । बल्कि परमाणु से भी निम्न चीज़े किस ने सबसे पहले पैदा किया? । किस ने इस प्रणाली को अनुकूल और सामंजस्य बनाया ?। किस ने इसका निर्माण किया, फिर इसको अद्भुत बनाया, और इसका अंदाज़ा लगाया, फिर बडा

अच्छा अंदाज़ा लगाया? । क्या यह सारी चीज़ें प्रजापति के बिना ही सृजन हुई है, या लोगों ने स्वयं अपने आप सृजन करलिया ?। पवित्र ख़ुरआन इसी तरह का प्रश्न करता हैः या वे बिना किसी चीज़ के पैदा हो गये (अत-तूर, 35)

निश्चित रूप से वह नियम और प्रणाली जिस पर यह ब्रहमाण्ड चलता है, और ब्रहमाण्ड के हर दिशा में हम जो अद्भुत संतुलन देखते हैं, यह इस बात का प्रमाण है कि एक शक्तिमान, प्रभुत्वशाली, सब चीज़ों की ख़बर रखने वाला ईशवर है, वही इस ब्रहमाण्ड का अद्भुत रूप में निर्माण करने वाला है।

माइकलः लेकिन यहाँ पर एक प्रश्न पैदा होता है (हालांकि मै इस प्रश्न के सारांश से सहमत नही हूँ), वह प्रश्न यह है कि हमें धर्म की और ईशवर पर विश्वास रखने की क्या आवश्यकता है? निस्संदेह अधिकतर लोग किसी भी ईशवर पर विश्वास रखे बिना, या किसी भी धर्म को माने बिना अपना जीवन यापन कर रहे हैं।

राषिदः एंथ्रोपोलॉजी और धर्मो के विज्ञान के अध्ययन ने इस बात की पुष्टी की है कि हर समय, व हर समिति में रहने वाले प्रत्येक मानव को धर्म की आवश्यकता है। किन्तु मानव प्राचीन काल ही से उस ईशवर की खोज करता है, जिसकी वह प्रार्थना करे, जिसके सामने वह विनती करें, और जिसके प्रति उसका यह विश्वास हो ब्रहमाण्ड को नियंत्रित रखने वाला प्रभुत्वशाली वही है। हर विषय का वही प्रजापति है, और वह जीवित है, कभी उसको मृत्यु नही आती।

मानवीय वृत्ति इस बात की पुष्टि करती है कि जब भी मानव किसी कष्ट से पीडित हो, या समस्याएँ उसको परेशान कर रखी हो, या विनाश होने के निकट हो, तो मानव के अंदर एक जैविक आवश्यकता पैदा होती है, जो उसको अल्लाह पर विश्वास करने की ओर प्रेरित करती है।

इसी प्रकार मानव इस विश्वास के बिना अधिकतर समयों में वह एक पशु बन जाता है, जिस पर इच्छाओं का प्रभाव होता है, और मानवता से उसका कोई संबंध नही होता ।

राजीवः श्रीमान राषिद। मुझे भी कुछ कहने की अनुमति दो। मैं ने ऐसे देश में जीवन यापन किया जहाँ पर विभिन्न धर्म है। फिर मै पश्चिम चला आया और अन्य धर्म वालों से मेरा परिचय हुवा। मैं ने यह देखा कि हर धर्म वाले सदस्य के विचार ईशवर के प्रति दूसरे धर्मं वाले से अलग है। तो कैसे मैं इस अंतर का स्पष्टीकरण करूँ ? और मैं यह कैसे जानूँ कि सच्चे ईशवर के लिए उपयुक्त गुण या मूल्य क्या है? इसी प्रकार अन्य धर्मो के बीच सच्चे धर्म को मै कैसे पहचानूँ ?

राषिदः सेवक भोजन ले आया। मै वादा करता हूँ कि हम इन समस्याओं पर अगली बात-चीत में चर्चा करेंगे। लेकिन पहले हमें भौतिक वैज्ञानिक अलबर्ट ऐन्स्टीन की इस बात पर सहमत होना चाहिए कि ज्ञान धर्म के बिना अपाहिज है, और धर्म ज्ञान के बिना अंधा है।

प्रकाशवान मार्ग



प्रकाशवान मार्ग

होटल के मेज़ पर तीनों मित्र राषिद, **माइकल** और राजीव एकत्रित हुए, और हर एक ने अपनी-अपनी पसंद की चीज़ मंगवाई। फिर राजीव कहने लगाः

पिछली मुलाक़ात में सच्चे ईश्वर के लिए उपयुक्त मूल्य, और विभिन्न धर्मो के बीच सच्चे धर्म को जानने के प्रति बात-चीत चल रही थी।

माइकलः मुझे सत्यता प्रकट करने और एक प्रश्न करने की सहमती दोः निश्चित रूप से भौतिक विज्ञान ने अपने विभिन्न भागों मे बडी ऊँची छलांग लगाई है। वर्तमान काल का वैद्य ज्ञान पिछली दो शताब्दियों पहले उपस्थित वैद्य ज्ञान से कई गुणा आगे बडा हुवा है। संचार तकनीकी व्यवस्था ने अधिक उन्नति की है, और हमने रसायन विज्ञान के द्वारा बहुत सारी चीज़ो के तथ्यों का ज्ञान प्राप्त करलिया है..., इन सारे विज्ञान को जिन वैज्ञानिक तरीक़ों से समझा जाता है, उनमें बडी तेज़ी के साथ परिवर्तन होता है। ताकि यह तरीक़े नये-नये आविष्कार और खोज के समान हो। भौतिक विज्ञान में आज भी हम किसी ऐसे वैज्ञानिक को नही पाते, जो यह कहता हो पृथ्वी गोल नही है। जब कि बौद्धिक विज्ञान आज तक भी उन्हीं समस्याओं की चर्चा में लगा हुवा है, जो हज़ारो साल पहले से चले आ रहे हैं, जैसे अल्लाह का वजूद, धर्मो की सत्यता, मानवीय जीवन के लिए उपयुक्त प्रणाली, न्याय का उदाहरण, और इसके अतिरिक्त अन्य विचार। जब हम यह कहें कि विज्ञान में उन्नति होती है, तो यह कहना क्यों संभव नही है कि धर्म में भी उन्नति होती है ?।

राषिदः हज़ारों साल पहले से सिद्धांत, विचार, और ख़ियालात में टकराऊ चल रहा है। आज तक भी यह टकराऊ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हो रहा है। इसका अर्थ यह निकला कि बौद्धिक विज्ञान में मानवीय बुद्धि इतनी बडी छलांग नही लगायी है, जो भौतिक विज्ञान के समान हो। इसी प्रकार मानवीय विचार को व्यस्त रखने वाले बडी बडी मानवीय समस्याएँ भी नही बदली। किन्तु मानव सदा अपने वजूद के व्यापक विवरण की खोज में लगा रहता है, जिस पर आधारित होते हुए वह इस वजूद के साथ व्यवहार करे। मानव ऐसे विवरण की खोज में लगा है जो उसको अपने जीवन में स्थिर बडे बडे तथ्य की प्रकृति के ज्ञान से, और इन तथ्यों के बीच, स्थिर संबंधों की वास्तविकता से निकट करें। जिस विषय ने हमे जीव, यानी ईश्वर और अन्य लोगों के साथ संबंध रखनेवाला प्राणी बनाया है, वही विषय प्राचीन काल के वैज्ञानिकों के पास भी था। इसीलिए इन जैसी समस्याओं में हमारे पिछले वैज्ञानिकों के ज्ञान से लाभ उठाया जा सकता है, जिस प्रकार की हम वर्तमान काल के वैज्ञानिकों से लाभ उठाते है। जिन विषयों मे पहले कभी बात हो चुकी है वही विषय आज भी हमारे सामने है। वह विषय ब्रह्माण्ड, मानव और जीवन से संबंधित है। किन्तु सारी मानवता भौतिक विज्ञान

की अधिकतर समस्याओं पर सहमत तो हो गयी, लेकिन बौद्धिक आवधारणों और विचारों से संबंधित अधिकतर तथ्यों पर वह सहमत नही हुई। यह समस्या मानव के समाप्त होने से पहले समाप्त होनेवाली नही है।

माइकलः तो फिर हम यह कह सकते हैं कि इन जैसी समस्याओं में सत्यता तक पहुँचना हमारे लिए संभव नही है।

राषिदः यह किसने कहा ? वरना फिर वाद-विवाद का लाभ क्या होगा ?। मेरे विचार से सत्यता तक पहुँचने को महत्व देते हुए, और असहिष्णुता व व्यक्तिगत इच्छाओं से दूर रहते हुए बौद्धिक उच्च वाद-विवाद के द्वारा हम सत्यता तक पहुँच सकते हैं। जो भी व्यक्ति सच्चे मन के साथ सत्यता तक पहुँचने की इच्छा रखता है, और उसकी ओर ले जानेवाले मार्ग पर चलता है, तो अल्लाह उसको अवश्य मार्गदर्शन करेगा। इसका सबूत यह है कि विरोधाभास के होते हुए भी इतिहास कि अलग अलग अवधि में नबी, या साधु संत, या आलोचकों के द्वारा, बल्कि कुछ देशों के द्वारा भी इन विचारों और आवधारणों में उन्नती हुई है। लेकिन लक्ष्य यह है कि बौद्धिक या मानवीय समस्याओं की पहचान यह है कि उन में भ्रम और विरोधाभास होता है। यह पुरानी और नयी समस्या है।

लेकिन इस संदर्भ में मुझे दो महत्वपूर्ण बातों की तरफ संकेत करने दो, और वह दो बातें यह हैः

प्रथमः भौतिक विज्ञान की उन्नति निश्चित रूप से विचारों और आवधारणाओं की उन्नति नही है। क्योंकि इन दोनों के बीच कोई संबंध नही। इसका सबूत यह है कि अमेरिकी और जापानी भौतिक उन्नति एक दूसरे के समान है। जब की मानवीय व धार्मिक विचारों और आवधारणाओं में इन दोनों के बीच बडा गहरा मत-भेद है। इसका अर्थ यह निकला कि कुछ मानवीय समितियों द्वारा भौतिक विज्ञान में उन्नति करने से बौद्धिक विज्ञान में उसकी उन्नति ज़रूरी नही है।

द्वितीयः किसी भी विषय की सत्यता और उसके दृढ़ होने के लिए लोगों की स्वीकृति या अस्वीकृति की आवश्यकता नही है। क्योंकि मानवीय एकता अधिकतर समय ग़लती में पड जाती है। बल्कि मानवीय इतिहास ने तो यह पंजीकृत किया है कि बहुत से लोग ग़लत विचारों या अश्लीलता और अपराध पर एक जुट हो गये थे।

राजीवः मै तुम्हारी इस बात से सहमत हूँ। लेकिन मेरे विचार से हम (भारतीय) विभिन्न सभ्यताओं से जुडे हुए हैं। इसी प्रकार हम में से हर एक सदस्य अलग-अलग विचार और सिद्धांत रखता है। इसीलिए सब से पहले हमे उन दलीलों और सबूतों पर सहमत होना चाहिए, जिनसे हम किसी विषय के सही होने या ग़लत होने को साबित करते हैं।

माइकलः मेरे विचार से इसके केवल दो ही विकल्प हैः बुद्धि या ज्ञान .... यह

वह विकल्प है जिस पर हम सब सहमत है।

राषिदः सिद्धांत के रूप से मै तुम से सहमत हूँ। लेकिन तुम किस बुद्धि की बात कर रहे हो ? मेरी बुद्धि तो तुम्हारी बुद्धि से अलग है। इसी प्रकार तुम किस ज्ञान की बात कर रहे हो? क्या केवल प्रायोगिक विज्ञान ही तुम्हारा अर्थ है?

माइकलः बुद्धि से मेरा अर्थ मान्सिक रूप से स्वयं सिद्ध चीज़े हैं, जिनके बारे में कोई भी विरोध नही करता, या वह मानसिक प्रमाण है, जिन पर हम सब सहमत है। मेरा अनुमान है वैज्ञानिक रूप से साबित होने वाली वैज्ञानिक तत्वों को स्वीकार करने में हम अंतर नही रखते हैं। निश्चित रूप से मैं उन वैज्ञानिक परिकल्पना, या दृष्टिकोण, या उन प्रयोग की बात नही कर रहा हूँ, जो वैज्ञानिक तत्व तक न पहुँचे हों .... क्या तुम मेरी इस बात से सहमत नहीं हो ?

राषिदः मै तुम्हारी बात से सहमत तो हूँ। लेकिन मैं एक और सबूत की ओर भी संकेत करना चाहता हूँ, जो इन दोनों से महत्व में कम नही है। वह सबूत वृत्ति है। इसी प्रकार बुद्धि और ज्ञान के प्रामाणिक होने में एक और प्रमुख विषय की ओर संकेत करना चाहता हूँ। वह यह कि बुद्धि के द्वारा किसी विषय के ग़लत होने या असंभव होने के निर्णय लेने के बीच, और बुद्धि के द्वारा किसी विषय की कल्पना करने या समझने में कठिनाई होने के बीच अंतर है।

राजीवः प्रकृति से तुम्हारा अर्थ क्या है ?

राषिदः मेरा अर्थ मानव की वह भावना या आंतरिक प्रवृत्ति है, जिसमें सारे मानव बाराबर के भागीदार है। किन्तु सारे जीवः पत्थार, पेड-पौधे, पशु-पक्षी और मानव में कुछ विशेषताएँ और प्रवृत्ति है। उदाहरण के रूप में हम यह कह सकते हैं कि पानी की विशेशता सौ डिग्री तापमान पर उबलने की है, या मानवीय शरीर को जीवित रहने के लिए 34-42 डिग्री सेंटिग्रेट तापमान की आवश्यकता है। यह चीज़े सारे जीव में विन्यास के रूप से पायी जाती है, हालांकि विन्यास में इनकी कोई भूमिका नही है।

माइकलः तुम्हारा अर्थ मानव और पशु-पक्षियों में पायी जाने वाली वृत्ति है ?

राषिदः मानव और पशु-पक्षियों में अलग-अलग वृत्ति पायी जाती है। वृत्ति एक आंतरिक विशेषता है जो जीवन में मार्गदर्शन करने की भूमिका निभाती है, जैसे दरिंदों मे शिकार करने की वृत्ति। कोई भी इन दरिंदों में शिकार करने की इच्छा और प्रवृत्ति नही पैदा करता है। इसी प्रकार से कुछ मछलियों और यायवार पक्षियों में अपनी जन्मभूमि की ओर लौटने की प्रवृत्ति, और महिला के अंदर मातृ वृत्ति होती है। प्रत्येक जीव अपनी इस प्रवृत्ति का कभी-कभी ज्ञान तो प्राप्त कर लेता है, लेकिन वह इसके रहस्य को नही जानता।

वृत्ति और वृत्ति की चीज़ें केवल मानव में पायी जाती है। यह भी मानव में स्वयं अपने आप पैदा होती है। कोई बाहर से इसको प्राप्त नही करता । मानव इसका ज्ञान भी रखता है और उससे प्रभावित भी होता है। लेकिन वृत्ति और प्रवृत्ति में अंतर यह है कि प्रवृत्ति केवल भौतिक विषयों में होती है। जब कि वृत्ति का संबंध मानवीय मामलों से होता है। जैसे ज्ञान की इच्छा, सत्यता की चाहत, नवीनता और अद्भुत चीज़ों की ख़ाइश (भलाई और नेकी से लगाव, और सुंदरता से प्रेम .... किन्तु मानव अपने आस-पास के वातावरण द्वारा हस्त-क्षेप के बिना, और सामाजिक नीति से प्राप्त किये बिना इन चीज़ों की इच्छा रखता है और इनकी तरफ मोहित होता है। वृत्ति मानव में डाल दी गयी है, जो स्वयं फलती-फूलती है। यह बिल्कुल पशु-पक्षियों की प्रवृत्ति के समान है, लेकिन मानवीय नैतिक हालत के साथ इसको विशेषता प्राप्त है। यही वह मानवीय वृत्ति है जो मानव को अच्छाई स्वीकार करने और बुराई से नफरत करने की ओर प्रोत्साहित करती है। किन्तु आप किसी ऐसे ध्वनी वृत्ति वाले मानव को नही देखेंगे, जो सुगंध, और अद्भुत दृश्य से नफरत करता हो। दुर्गन्ध और अदृश्य से प्रेम करता हो।

राजीवः लेकिन कैसे हम वृत्ति के विषयों को निर्धारित करें, और कैसे हम किसी विषय के प्रति वृत्ति के अनुसार होने या न होने का निर्णय ले ?

राषिदः मानव के भीतर पाये जानेवाले वृत्ति विषय कई गुणों से पहचाने जाते हैं। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण गुण यह है।

- प्रत्येक सदस्य के लिए सामान्य और व्यापक गुण ।

- प्रत्येक युग के लिए उपयुक्त गुण। इन गुणों से यह संभव नही है कि वे एक युग में किसी एक विषय की आवश्यकता रखते हों, और दूसरे युग में किसी अन्य विषय की आवश्यकता रखते हो।

- यह गुण इंसान के भीतर स्वयं पैदा होते हैं। शिक्षा और अर्जन से प्राप्त नही होते। लेकिन शिक्षा से इन गुणों में विकास और प्रगति होती है।

- यह गुण आस-पास पाये जाने वाले कारकों से प्रभावित नही होते। लेकिन कभी-कभी कुछ स्थितियों में कारक प्रभावित करते है। वृत्ति की उच्चता में कभी-कभी परिवर्तन होता है, और उसका रूप ख़राब हो जाता है। यह बिल्कुल मानवीय ज्ञानेन्द्रीय, जैसे सुनना, देखना, रुचि के समान है कि जब मानव अस्वस्थ होता है तो हम में परिवर्तन आ जाता है। लेकिन ज्ञानेन्द्रिय समाप्त नही होते हैं बल्कि कभी-कभी कमज़ोर पड़ जाते हैं या छिप जाते है।

माइकलः मेरे विचार से हम सब इन बातों से सहमत है। लेकिन इस आख़री अंश के कारण मुझे इस बात का संदेह है कि हमारे इस विषय में वृत्ति एक सबूत बन सके।

राजीवः यह संभव है कि हम वृत्ति पर निर्भर विषय की उसका समय आने पर

चर्चा करेंगे। अगर हम सब वृत्ति को स्वीकार करलें, तो इस पर सहमत हो जायेंगे और अगर स्वीकार न करें, तो हम किसी दूसरे प्रमाण की तलाश करेंगे।

राषिदः इस संदर्भ में प्रमाण के साधनों मे हमारे सहमत हो जाने के बाद मै यह चेतावनी देना चाहूँगा कि जो लोग इस्लाम धर्म का ज्ञान नही रखते हैं, हो सकता है कि वे यह अनुमान लगा ले कि हमारे द्वारा इन साधनों पर सहमत हो जाना इस्लाम धर्म के उपयुक्त नही है। उनका यह अनुमान बिल्कुल ग़लत है।

माइकलः मेरी जानकारी के अनुसार धर्म पवित्र वाणी पर विश्वास रखने, और उसके द्वारा वर्णन की हुई बातों की सत्यता को बिना किसी संदेह और भ्रम के संपूर्ण रूप से मानने पर निर्भर है। इसीलिए वैज्ञानिक खोज के बाद पश्चिम के इतिहास मे बडे-बडे युद्ध हुए हैं। क्योंकि गिरजा घर इन वैज्ञानिक खोज का विरोध करते थे, और पवित्र पुस्तक के विचारों के विपरीत बौद्धिक विचारों का तिरस्कार करते थे।

राषिदः तुम्हारी बात सही है, लेकिन इस में मुझे कुछ आपत्ति है, क्यों कि इस्लाम धर्म पर इसको लागू नही किया जा सकता। यह बात तो सही है कि धर्म पवित्र वाणी पर विश्वास रखने और उसकी सारी बातों को संपूर्ण रूप से मानने पर निर्भर होता है। लेकिन इस्लाम ने बुद्धि, तर्क, सोंच-विचार से पैदा होने वाला ज्ञान, जीव और प्रकृति में प्रयोग को अल्लाह पर ईमान (विश्वास) रखने, मुसलमानों की पवित्र पुस्तक ख़ुरआन और इस्लाम के रसूल मुहम्मद पर विश्वास करने का मार्ग बनाया है.... इस्लामी इतिहास में आज तक धर्म और ज्ञान या बुद्धि के बीच कोई टकराऊ या विरोधाभासी देखने में नही आयी है, जिसके बारे में तुम बात कर रहे हो।

राजीवः बडी आश्चर्यजनक बात है कि तुम्हारी पवित्र पुस्तक बुद्धि, तर्क और ज्ञान को सम्मान देने पर प्रोत्साहित करती है।

माइकलः मेरे विचार से होटल के प्रबंधक हमें इस बात का संकेत दे रहे हैं कि होटल बंद करने का समय हो चुका है। हम इस अंश पर अपनी बात रोकते हैं कल इसको ज़रूर पूरी करेंगे।

राजीवः मैं कल व्यस्त हूँ। मेरे लिए संतोषजनक बात यह होगी कि तुम दोनो परसों मेरे साथ सीन नदी के किनारे घूमने के लिए तैयार हो जाओ।

माइकल व **राषिदः** अद्भुत। बडी ख़ुशी की बात है।

अपने प्रभु को पहचानो ।।



अपने प्रभु को पहचानो ।।

निम्न दर्जे के गर्मी वाले दिन की शाम तीनों मित्र निर्धारित समय पर सीन नदी के किनारे एकत्रित हुए। राजीव ने अपने दोनों मित्रों को एक विलासित स्टीमर पर बैठने के लिए कहा... तीनों मित्र नदी की अद्भुत दृष्टि और उसके आस-पास की हरियाली से आनंद ले रहे थे... राषिद आकाश की ओर अपनी निगाह उठाया, और अपने दोनो मित्रों से यह कहाः

नदी, समुद्र, पेड-पौधे, पशु-पक्षी, पहाड़, मानव और जो कुछ हम इस जगत में देख रहे हैं, बल्कि वह सारी चीज़ें जिन्हे हम देख नही पाते हैं .... यह सब उस अद्भुत तत्वदर्शिता का खुला प्रमाण है, जो इन सब चीज़ों को जीवित रखा। इस बात का भी प्रमाण है कि इस जगत का कोई प्रभु व प्रजापति है... क्या तुम दोनों मेरी इस बात से सहमत नही हो ?

राजीवः हम इस से पहले की चर्चा मे इस बात पर सहमत हो गये थे कि इस जगत का कोई प्रजापति आवश्यक है। लेकिन इस विश्वास से संबंधित कुछ समस्याएँ हैं जिनकी संवीक्षा ज़रूरी है।

माइकलः मेरे विचार से हम अपनी चर्चा उसी बात से प्रारंभ करें जिस के प्रति इंजीनियर राजीव ने पहले ही चर्चा किया था कि वह कौन-से गुण है, जो सत्य प्रभु मे होना ज़रूरी है।

राषिदः हम जो ब्रहमाण्ड की अद्भुत संरचना देख रहे हैं, इसका तुम्हारे प्रश्न से गहरा संबंध है। क्योंकि अल्लाह के सच्चे होने का विश्वास रखने में महत्वपूर्ण भाग यह है, कि तुम इस ब्रहमाण्ड के प्रति, (जिस में तुम्हारी अपनी आत्मा भी है) सही विचार रखें, जो आपको ब्रहमाण्ड के विभिन्न तत्वों संरचनाओं और ब्रहमाण्ड में पाये जाने वाले प्रत्येक जीव कि सृष्टि का कारण जानने से पैदा होता है।

माइकलः हम मान लेते हैं कि इस ब्रहमाण्ड का कोई प्रजापति प्रभु है। लेकिन इस प्रभु का चित्रण धर्मो पर निर्भर होता है। बल्कि इस चित्रण के बीच कई विचार है। और विभिन्न रूप में विरोध भी पाया जाता है, यही वह कारण है जिसने कुछ लोगों को इस विषय में सोंच-विचार करने से दूर रखा है, और नास्तिकता के जीवन से निकट कर दिया है। हालांकि यह लोग खुल कर इसको स्वीकार नही करते।

राषिदः मेरे मित्र तुम सच कह रहे हो। लेकिन मै तम्हे यह भी बताना चाहूँगा कि धर्म से यह दूरी लोगों को किसी प्रभु की आवश्यकता के प्रभाव से नही रोकती। बल्कि इनमें से कुछ लोग जब प्रभु के होने का तिरस्कार करते हैं, तो वह अपने आपको प्रभु बना लेते हैं ... यानी अपनी हवस को प्रभु मान लेते हैं। नास्तिक लोग ने अल्लाह को मानने और उस पर विश्वास करने से दूर भागते हुए ऐसे विषयों को अपनालिया है, जिसको उन्होंने प्रभु के समान ही सम्मान दिया, और

बिना किसी कारण के ऐसे गुण इन विषयों को दे दिया, जो केवल सत्य प्रभु के लिए ही उपयुक्त है। इसका कारण केवल यह है कि वे दवेत्व चित्रण के जिस ग़लत रूप को देख रहे हैं उससे वे भागना चाहते हैं।

राजीवः जब हम इस विषय में चर्चा कर रहे हैं, तो हमारे लिए यह कहना संभव है कि प्रभु का रूप यह हो, एक ही समय में वह प्रिय भी हो, और उसका भय भी रखा जाता हो। मानव अपने अंदर प्रभु की आवश्यकता पाता हो। यह तो मानव द्वारा है। लेकिन वास्तविकता में यह गुण मानव के अंदर एक ऐसी स्थिति का रूप धारण कर लेते हैं, जो कभी-कभी कई प्रभु के प्रति प्रकट होते हैं। इसलिए हम सच्चे प्रभु के उन गुणों का विस्तार करें जिसके प्रति सारी मानवता का सहमत होना संभव हो।

राषिदः तुम्हारी बात बहुत सुंदर सत्य है ... और उसी विषय से इसका संबंध है जिससे हमने अपनी बात प्रारंभ की थी। हमने जब किसी प्रभु के होने की अनिवार्यता को स्वीकार करलिया है और इस बात पर सहमत हो गये हैं कि इस अद्भुत ब्रहमाण्ड का एक प्रजापति है, जिसने इसका निर्माण किया, और शून्य को एक महत्वपूर्ण रूप दिया। यही वह प्रजापति है जिसको हम प्रभु के नाम से जानते हैं। यही वह प्रभु है (जो हमारा और हर चीज़ का प्रजापति है) जो वास्तविक रूप से देवत्व के गुण का अधिकार रखता है और प्रार्थना का हक़ रखता है। उसके अलावा किसी की प्रार्थना करना सही नही है। यानी जैसा कि तुम ने कहा कि कोई भी व्यक्ति भय और प्रेम के साथ, डर और आशा के साथ उस प्रभु के अलावा किसी और की ओर न देखे ... इस स्थान से हम सच्चे प्रभु के गुणों की भावना पा सकते हैं।

राजीवः जब हम तुम्हारी बात मान लें, तो मैं यह कह सकता हूँ कि सब से पहले इस प्रभु के लिए महत्वपूर्ण आवश्यकता रखने वाले गुण ये होंगे कि वह हर स्थान पर स्थिर हो और ज़िन्दा हो। इसी प्रकार उस प्रभु का प्रजापति होना भी आवश्यक है।

राषिदः यह बात सत्य है। जो प्रधान रूप से इस बात की आवश्यकता रखती है कि वह प्रभु अपने व्यक्तिगत और गुणों के साथ जीव (किसी का पैदा किया हुआ) न हो। क्योंकि प्रजापति का प्रजा में से होना संभव नही है। इसलिए कि अगर वह प्रजा में से होता, तो ज़रूर वह भी हमारे ही समान होता। उसका भी कोई प्रजापति होता। किन्तु वह न प्रभु होता और न उसकी प्रार्थना करना जायज़ होता। इसी कारण सारे जीव में से कोई भी प्रभु होने की आशंका नही है।

माइकलः तो फिर हमें यह जानना चाहिए कि प्रजापति का अर्थ क्या है ?

राषिदः सारांश रूप से मै यह कह सकता हूँ कि प्रजापति वह है, जो बिना किसी पिछले नमूने, या बिना किसी उदाहरण आविष्कार करता है। यानी जो सारे चीज़ों को पैदा करता है, जबकि वह पहले कुछ भी न थी। वही इनको शून्य से अच्छे रूप में रचना करता है, उसी ने अपनी अद्भुत तत्वदर्शिता के अनुसार (यानी

खेल-कूद या दुर्घटना के रूप में नही) इस ब्रहमाण्ड में पायी जानेवाली चीज़ों कि संरचना की।

प्राणी के महत्वपूर्ण गुण यह है कि सृष्टि से पहले कभी उसका वुजूद न रहा हो। यानी उसको वुजूद दिया गया हो, और उसकी शुरूआत किसी समय से हुई हो। इसी प्रकार वाणी का विनाश होना भी आवश्यक है। यानी किसी समय में वह समाप्त हो जाता है। मानव की क्षमता और दक्षता सीमित है, और सदा वह दूसरे की सहायता की आवश्यकता रखता है।

राजीवः जब यह प्रभु प्रजापति है, तो निश्चित रूप से वह अपनी पैदा की हुई चीज़ों का मालिक होगा।

जब हम आकाश और पृथ्वी की हर चीज़ के बारे में यह कहें कि वह अल्लाह की राजतंत्र में है और उसी ने इसको पैदा किया है, तो यह कहना भी ज़रूरी होगा कि इन सारी चीज़ों का ज्ञान अल्लाह को प्राप्त है। क्यों कि अगर अल्लाह से कोई चीज़ गुप्त रह जाती है, तो प्राणी (ईशवर के ज्ञान से अपनी स्थिति गुप्त रहने के समय) स्वयं स्वतंत्र हो जायेगा। इसी प्रकार अल्लाह के ज्ञान पर वह कारीगरी और महारथ भी खुला प्रमाण है, जो हम प्राणियों मे देखते हैं। निश्चित रूप से यह संपूर्ण ज्ञान के द्वारा ही संभव है।

राषिदः राजतंत्र का परिणाम यह होता है कि आकाश, पृथ्वी और इनके बीच पायी जानेवाली हर चीज़ में परिवर्तन करने का उसे पूरा अधिकार है। राजतंत्र और ज्ञान का परिणाम यह होता है कि सारी चीज़ों को चलाने और उनके नियम निर्धारित करने का हक़ उसीको प्राप्त है।

माइकलः लेकिन मै भी तो कई चीज़ों का मालिक हूँ, और मैं भी कई बातें जानता हूँ, तो क्या इसका अर्थ यह होगा कि मेरे अंदर देवत्व गुण पाये जाते हैं ? ... मेरे अनुमान से यह बिल्कुल ग़लत बात है।

राषिदः मेरे मित्र तुम्हारी बात बहुत ही महत्वपूर्ण है। और मेरे विचार से इस रूप में गुणों की चर्चा करते रहने में ज्यादा समय लग जायेगा (हालांकि वह महत्वपूर्ण है) हमारे लिए एक ऐसे साधारण नियम को बनाना संभव है, जिससे हम इन गुणों को निर्धारित कर सकें, और बडी हद तक इस नियम के द्वारा हम इनको प्रस्तुत कर सकें। मेरे मित्र मुझे अनुमति दो कि मैं तुम्हारे सामने उस नियम के कुछ विशेषताएँ विवरण करूँ। वह नियम वास्तविक रूप से मेरे उन विचारों के अनुसार है जो इस्लामी सभ्यता पर निर्भर है।

माइकल व राजीवः बोलिए ....

राषिदः इस नियम का निम्न लिखित अंकों में सारांश करना संभव हैः

प्रथमः व्यक्तिगत गुणों को दो भागों मे विभाजन किया जा सकता हैः निम्न गुण, और उच्च गुण।

उच्चता यह है कि कोई भी व्यक्ति अच्छे गुण रखता हो, और इस अच्छे गुण

के विपरीत नकारात्मक गुण उसके अंदर न पाये जाते हों।

निम्नता यह है कि कोई भी व्यक्ति नकारात्मक गुण रखता हो और इसके विपरीत अच्छे गुण उसके अंदर न पाये जाते हों।

इसी कारण जब किसी व्यक्ति में नकारात्मक गुण न होने का निर्णय लिया जाये, तो इसका अर्थ यह होगा कि वह पवित्र है, जिसके लिए इस गुण के विपरीत, यानी उच्चता के गुण रखना आवश्यक है। वरना निम्न गुण न होने का निर्णय लेना सही निर्णय नही होगा। क्योंकि गुणहीन होना अपने आप एक निम्नता और कमज़ोरी है।

द्वितीयः हर वह विषय जो प्राणी के भीतर पाया जाता है, उसको प्रजापति के लिए साबित करना संभव नही है। हर वह विषय जिससे प्राणी को पवित्र माना जाता है, और जिससे शीलवान या शीलहीन समझा जाता है, वह सारी चीज़ें बुरी और ख़राब है। प्रजापति ईशवर को इन सारी चीज़ों से पवित्र मानना अधिक ज़रूरी है, और किसी भी रूप से उसके गुणों में निम्नता या कमी प्रवेश करना सही नही है। इसलिए कि प्रभु वह होता है जो प्रत्येक रूप से संपूर्ण हो।

तृतीयः प्रजापति और प्राणियों के बीच संपूर्ण रूप से अंतर करना। किन्तु प्रजापति के समान कोई और चीज़ नही है... रहे वह गुण जिनका प्रजापति और प्राणी में पाया जाना संभव है, जैसे राजतंत्र, ज्ञान, दया, और प्रेम.... इन गुणों में भी वास्तविक रूप से प्रजापति और प्राणियों के बीच कोई समानता नही है। क्यों कि प्रजापति ईशवर के गुण प्राणियों के गुणों से विपरीत है। इसलिए कि प्राणियों के गुणों में निम्नता, व्यक्तिगत उद्देश्य और लक्षण होते हैं।

माइकलः तुम अपनी बात उदाहरणों से विस्तार करो तो कितना ही अच्छा होगा ।

राजीवः तुम ने जो अंक वर्णन किया है, उसी से संबंधित अगर विस्तार से बोलो तो अच्छा रहेगा, इसी प्रकार उदाहरण उसी बातों से जुडा हुवा हो जिसके प्रति हमने पिछले समय बात की थी, या वास्तविक उदाहरण हो।

राषिदः ठीक है। पहला अंकः सारे बुद्धिमान इस बात से सहमत है कि कमज़ोरी एक निम्न गुण है। इसी प्रकार से अन्य लोगों या विषयों पर निर्भर होना भी निम्न गुण है। इसीलिए सत्य प्रभु में इन दोनों गुणों में से एक भी गुण का पाया जाना संभव नही होगा। बल्कि सत्य प्रभु का इन दोनों गुणों से श्रेष्ठता होना, और उसी समय इन दोनों के विपरीत उच्च गुण, यानी बलवान होना और दूसरों पर निर्भर न होना आवश्यक है.... इसीलिए हमारे पवित्र ख़ुरआन ने ईसा मसीह और उनकी माँ में देवत्व गुण होने का तिरस्कार ऐसे तीन शब्दों में किया, जो इस समस्या का उत्तम रूप से समाधान बताते हैं, वह शब्द ईशवर की यह वाणी हैः दोनों ही भोजन करते थे। (अल-माइदा, 75) जो भी व्यक्ति भोजन की आवश्यकता रखता है, निस्संदेह वह भूख की भावना, और भूख के कारण पैदा

होनेवाली कमज़ोरी की वजह से भोजन करता है। जो व्यक्ति भोजन करता है, वह अन्य मानव की तरह भोजन की आवश्यकता रखता है। इसीलिए यह दोनों (ईसा मसीह और मरयम) या इनमें से किसी एक का प्रभु होना संभव नही है। क्योंकि इन दोनों में सत्य प्रभु के गुण उपलब्ध नही है।

इसी प्रकार संतान होने की समस्या है। दुसरों पर निर्भर रहने वाले प्राणियों किसमानता से सत्य प्रभु सर्वश्रेष्ठ है। किन्तु जो अपने लिए संतान की इच्छा रखता है, वह या तो संतान बढाने के लिए, कठिनाईयों में सहायक बनाने के लिए, अपना वारिस बनाने के लिए या इस प्रकार के दूसरे लक्ष्यों के कारण उसकी यह इच्छा होती है। यह सब निम्नता और निर्भरता के गुण है, जो किसी भी रूप में सत्य प्रभु के लिए उपयुक्त नही है।

दूसरा अंकः सारे बुद्धिमान निम्नता या कमज़ोरी के गुण अपने अंदर रखने से भागते हैं। किन्तु सत्य प्रभु में निम्न गुण न होना अधिक मुख्य होगा बल्कि इस बात की भी आवश्यकता होगी कि सत्य प्रभु में इसके विपरीत उच्च गण (बलवान) हो। इसी प्रकार जब ईसा मसीह दुश्मनों के हमले से स्वयं अपने आपको सुरक्षित करने में असहाय थे। या कुछ लोगों द्वारा प्रभु बनाये हुए पशु-पक्षी और मूर्तियाँ अपने आप की सरक्षा नही कर सकते हैं, तो निस्संदेह यह अपने अनुयायियों और प्रेमियों की सुरक्षा करने में भी असहाय है। यह एक सामान्य रूप से समझ में आनेवाली बात है। इसीलिए असहाय व्यक्ति प्रभु बनने की क्षमता नही रख सकता है।

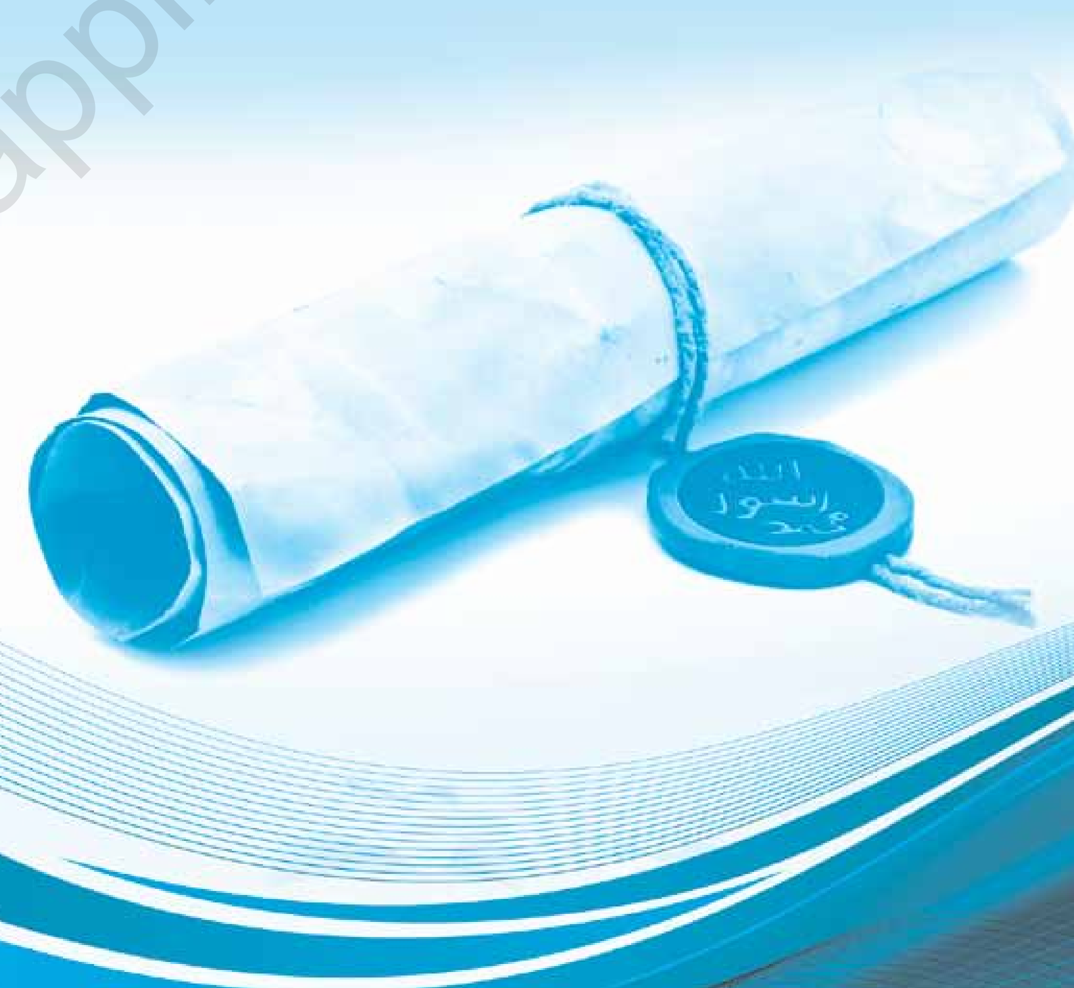
बुद्धिमान लोग अन्याय का गुण अपनाने से नफरत करते हैं। इसीलिए सत्य प्रभु अन्याय नही करता है, क्यों कि वह संपूर्ण रूप से न्याय प्रिय है.... इसी प्रकार प्रत्येक निम्न गुण का तिरस्कार करने से उसके विपरीत उच्च गुण का सबूत मिलता है।

अंत में तीसरा अंकः हम उदाहरण के रूप में ज्ञान का गुण लेते हैं। यह एक अच्छा गुण है, और इसका विपरीत गुण अज्ञान .... उच्चता यह है कि तुम को ज्ञानी कहा जाये, और अज्ञान से तुम्हें दूर रखा जाये.... निम्नता यह है कि तुम्हें अज्ञानी कहा जाये और ज्ञान से तुम्हें दूर रखा जाए ..... पवित्र अल्लाह ज्ञान के गुण में संपूर्ण रूप से उत्तम है। क्योंकि वह पूर्ण ज्ञान रखता है और सदा वह अज्ञान से दूर है....

जहाँ तक मानव की स्थिति है, उसको तो ज्ञान के गुण में किसी हद तक उच्चता प्राप्त है। क्यों कि एक ही समय में मानव कुछ विषयों का ज्ञान रखता है और कुछ विषयों का ज्ञान नही रखता .... तो मानव की उच्चता का गुण अल्प है ... और अन्य गुणों की भी यही परिस्थिति है....

माइकलः रात जैसे जैसे बढती जा रही है, मैं ठण्ड महसूस कर रहा हूँ। मेरे अनुमान से आज इतनी ही बात-चीत काफी है।

आकाशीय प्रकाश (मानव के लिए ईशदेवत्व की आवश्यकता)



आकाशीय प्रकाश (मानव के लिए ईशदेवत्व की आवश्यकता)

अपने हास्टल की होटल में जब राषिद प्रवेश किया, तो देखा कि माइकल एक मेज़ पर बैठा हुवा है, और अपनी निगाहें हाल की छत पर इस तरह जमा रखी थी कि वह उस पर लगे हुए झूमर के प्रति सोंच-विचार कर रहा हो... राषिद उसकी ओर आया और प्रणाम किया.... माइकल उसकी ओर ध्यान नही दिया.... राषिद ने उसके सामने वाली कुर्सी खींचा फिर उससे कहाः

ऐसा लगता है कि तुम किसी मुख्य विषय के प्रति दुःख में डूबे हुए हो.... क्या तुम अपना दुःख मेरे साथ बाँट सकते हो ?

माइकलः ओह। मैंने तो तुम्हारी ओर ध्यान ही नही दिया....

राजीव अब तक नही आया ?

राषिदः हमारा समय होने में अभी पाँच मिनट है...

यह देखो वह हमारी ओर ही आ रहा है।

राजीवः प्रणाम मेरे मित्र... मै तुम दोनों से मिलने का इच्छुक था।

राषिदः और हम भी इच्छुक थे.....

माइकलः वास्तविक रूप से इस लाभ दायक विवाद से मै बहुत ही संतुष्ट हूँ.... मैं तुम दोनों के आने से पहले एक मुख्य विषय में गंभीरता के साथ सोंच रहा था। मैं चाहता हूँ कि इस विषय में तुम भी भागीदार बनो.... हमारे पिछले विवाद कि गंभीरता से यह सोंच मेरे अंदर पैदा हुई है... वह प्रभु जिसने हमारी सृष्टि की है, उसी को हम अपना ईशवर बनाना चाहिए, तो क्या यह बात समझ में आती है कि ईशवर हमें अपने से किसी संबंध के बिना, और किसी ऐसे मार्ग के बिना ही छोड दे, जो हमें उसका परिचय कराता है? और क्या यह उचित है कि वह ईशवर हमें यू ही छोड़ दे ?।

राजीवः मैं भी तुम दोनों के मिलने से पहले इसी अंक के बारे में सोंच रहा था।

राषिदः तुम दोनों के प्रश्न बहुत ही सही स्थान मे है जिस अल्लाह ने मानव को अच्छे रूप में पैदा किया। जिसने पृथ्वी पर रहने वाली सारी चीज़ों को मानव के

काम मे लगा दिया, और बिना किसी अधिकार के आकाश से मानव पर अपनी अनुग्रह अवतरित किया। उस अल्लाह से बुद्धिमत्ता की दृष्टि में यह संभव नही है कि उसने बिना किसी लक्ष्य के इस ब्रह्माण्ड की सृष्टि की हो, मानव को पैदा किया हो, और मानव की ओर अपनी अनुग्रह अवतरित की हो।

माइकलः बहुत अच्छा हुवा कि हम इस अंक के प्रति बात कर रहे हैं। तो फिर वह लक्ष्य क्या है जिसके लिए अल्लाह ने ब्रह्माण्ड व मानव को पैदा किया, और उनपर अपनी अनुग्रह अवतरित की ?

राजीवः मेरा अनुमान है कि वह लक्ष्य सत्य प्रभु के उन्ही गुणों से संबंधित होगा, जिसका हम ने पिछली बात-चीत में चर्चा की है। इसलिए कि प्रभु इस ब्रह्माण्ड के पैदा होने से पहले भी स्थिर थे.... लेकिन निर्धारित रूप से मै इस विषय को स्पष्ट नही कर सकता।

राषिदः तुम ने जो कुछ कहा वह सत्य है। मै इसी बात का निर्धारित रूप से विवरण करने का प्रयास करूँगा, और उस उदाहरण से इसको समझने की कोशिश करूँगा, जिससे मेरा लक्ष्य केवल निकटता है न कि समानताः जब तुम किसी विषय से प्रेम करते हो, तो निश्चित रूप से तुम्हारी यह इच्छा होती है कि वास्तव में वह चीज़ तुम्हें मिल जाय.... क्या यह बात सच नही है?

राजीवः बिल्कुल

राषिदः तो फिर वास्तव में अपने इस कल्पना को पूरा करने से किस चीज़ ने तुम्हें रोका ?

राजीवः इसका कारण जो अभी अभी मेरे मन में आया है वह यह कि मै अपनी इस कल्पना को पूरी करने की क्षमता नही रखता हूँ।

राषिदः इसका अर्थ यह हुवा कि जब भी तुम में क्षमता होगी, तो तुम ज़रूर अपनी कल्पना पूरी करते.... मामला यही है।

माइकलः तुम्हारे इस उदाहरण से तो मेरे अंदर अस्पष्टता बड़ गयी।

राषिदः तुम ने सत्य कहा। लेकिन मै अपनी बात को अभी पूरा करूँगा ... हम पिछली चर्चा में इस बात पर सहमत हो गये थे कि प्रभु के लिए कुछ गुण है जो उत्तम और सर्वश्रेष्ठ हैं। यह सारे गुण प्रिय है, अल्लाह भी उनको चाहता है और प्राणी भी उनसे प्रेम करते हैं। अल्लाह के इन गुणों में से कुछ गुण यह हैः

बलवान होना, प्रजापति और शासक.... इन गुणों से प्रेम रखना इनके अनुसार कार्यान्वयन की आवश्यकता रखता है।

अल्लाह बलवान है, उसको कोई चीज़ अपनी इच्छा पूरा करने से नही रोकती। इसलिए अल्लाह ने प्राणियों की सृष्टि की, ताकि उसके प्रिय गुणों का एक प्रभाव हो। वह प्रजापति है इसलिए वह सृष्टि करने की इच्छा रखता है। वह दयावान है, इसलिए अनुग्रह करने से उसको प्रेम है। वह दयालु है, इसलिए दया करना उसकी चाहत है... वह बलवान है, इसलिए उसकी इच्छा या चाहत को पूरा करने से कोई चीज़ रुकावट नही बन सकती।

माइकलः इस समीकरण में हमारा क्या स्थान होगा ?।

राषिदः हमारा स्थान यह है कि अल्लाह ने हमें उसे पहचान ने, निम्नता और दोष से उसको सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए पैदा किया। उसने हम पर अनुग्रह की, केवल आनंद उठाने के लिए ही नही, बल्कि उसका आभारी होने, और इस अनुग्रह को बरबाद न करने के लिए भी किया। अल्लाह अपनी प्रशंसा को पसंद करता है। क्योंकि प्रशंसा का अर्थ यह होता है कि मानव केवल उसी की बंदगी पर विश्वास रखता है। इसलिए की वह अनुग्रह करने वाला प्रजापति, और प्रार्थना का अधिकार रखने वाला है।

राजीवः तुम्हारे विचार से दो मुख्य अंक प्रकट होते हैं। प्रथम क्या इसका अर्थ यह हुवा कि हम में से कोई प्रार्थना गृह में सदा बैठा रहे, ताकि वह उस लक्ष्य को प्राप्त करलें, जिसकी तुम बात कर रहे हो ?

राषिदः नही, नही। मेरा अर्थ वह नही जो तुम कह रहे हो। अल्लाह की बंदगी का यह अर्थ संपूर्ण रूप से अधूरा अर्थ है। वह इस्लाम धर्म इसकी पुष्टी नही करता है, जिसका मैं अनुयायी हूँ। अल्लाह की बंदगी का अर्थ जीवन के हर कार्यकलाप में शामिल है, जिसमें जमीन का पुनर्निर्माण करना भी शुमार है और मानवीय सभ्यता की स्थापना भी शामिल है।

माइकलः हम तो पृथ्वी का पुनर्निर्माण करते हैं और अपनी आधुनिक सभ्यता की स्थापना भी करते हैं, लेकिन हम धर्म की ओर ध्यान नही देते।

राषिदः इस जैसी सभ्यता का परिणाम हम यह देखते हैं कि मानवता अप्रसन्नता से पीडित है, जैसे आत्महत्या, दुःख, समलैंगिकता, सामाजिक विघटन, और मानव का मानव पर अत्याचार, विशेष तौर पर उस समय जब मानव को यह ज्ञान हो कि कोई सुरक्षा कर्मी यहाँ नही है... जब सभ्यता इस प्रकार की हो

तो आधुनिकता से अधिक निकट होगी, यानी उस समूह से जो भौतिक चीज़ों, आविष्कारों की ओर ज्यादा ध्यान देता है, और उसकी उन्नति में लगा रहता है। जब कि इस सभ्यता में मानवीय आचार अदृश्य हो जाते हैं। जब हम मानवीय आचार की ओर ध्यान दे, तो उसके अवयव की ओर ध्यान देना ज़रूरी है, जिस में सबसे महत्वपूर्ण अवयव आध्यात्मिकता है। जब सभ्यता और मानवीय कार्यकलाप प्रजापति से जुड़ जाते हैं, तो जीवन के सारे भाग मानव की मानवता, बल्कि सारे ब्रह्माण्ड के साथ अनुकूल हो जाते हैं। क्योंकि यह बात साफ है जिस प्रजापति ने इस मानव और ब्रह्माण्ड की सृष्टि की है, वह मानव के लिए लाभदायक और नष्ट दायक चीज़ों का अधिक ज्ञान रखता है।

माइकलः तो क्या इसका अर्थ यह हुवा कि इंजीनियर राजीव अपनी इंजीनीरिंग में माहिर बनना चाहे, तो वह धार्मिक पुस्तकों को खोलकर बैठ जाये ?.... ऐसे कैसे हो सकता है ?। फिर भी अगर हम तुम्हारी बात मान भी लें, तो भी अल्लाह जीवन को सुधारने का जो लक्ष्य हम से चाहता है, उस लक्ष्य को हम कैसे प्राप्त करलेंगे ?

राषिदः मेरी बात का अर्थ यह नही है कि धर्म विज्ञान की तकनीकी समस्याओं में, और जीवन के कार्यकलाप में हस्तक्षेप करता है। लेकिन धर्म जीवन के कार्यकलाप के लिए नैतिक नियम बनाता है, और जीवन के तरीक़ों की प्रणाली प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार धर्म मानव के अन्य लोगों के साथ, अपनी समिति के साथ, और विभिन्न समितियों के बीच आपसी संबंध पैदा करता है। साथ-साथ धर्म इस ब्रहमाण्ड में मानव के स्थान की, और प्रभु के साथ उसके संबंध का विवरण करता है।

मैं तुम्हारे सामने विस्तार करते हुए दो उदाहरण प्रस्तुत करूँगाः अल्लाह ने हम सबको, पृथ्वी को, और पृथ्वी पर स्थिर सारी चीज़ों को पैदा किया। उसी ने बारिश के पानी से हमारे लिए ज़मीन में खाने-पीने की सामग्री उगायी। फिर उसी ने ज़मीन से बीमारियाँ, और हानिकारक विष पैदा किया। उसने हमें बुद्धि का उपयोग करने की क्षमता दी, ताकि हम लाभदायक और नष्टदायक के बीच अंतर जानें। उसी ने पेड़-पौधों को खोजने, इनसे लाभ उठाने, इनसे दवाइयाँ बनाने में अपनी परीक्षणों का उपयोग करने की हमें क्षमता दी... फिर उसी ने अपने धर्म में यह नियम लागू किया कि अपने आप के लिए या दूसरों के लिए जो भी विषय नष्ट का कारण हो, हम पर उसका उपयोग करना अवैध है।

दुसरा उधाहरण यह कि सारी मानवता न्याय के अच्छे होने और अन्याय के बुरे होने पर सहमत है। लेकिन जब हम इस न्याय के विस्तार में हम बात करेंगे, तो हमें बहुत अंतर नज़र आयेगा। इस का कारण यह है बुद्धि अपने लक्ष्य और

उद्देश्य में अलग-अलग होती है, और हर समूह के लक्ष्य भी विभिन्न होते हैं। इसीलिए हमें इस बात की आवश्यकता है कि इस न्याय का स्त्रोत वह व्यक्तित्व हो जो सारी मानवता से प्रभुत्व शक्तिशाली हो, जिसकी दृष्टि में सारी मानवता एक समान हो, जिसके प्रति यह कहना संभव न हो कि वह किसी के पक्ष में बात करेगा, या उसके अंदर किसी के प्रति लगाव हो, या उसके स्वयं कुछ लाभ हो।

जो लक्ष्य अल्लाह हम से चाहता है, उस लक्ष्य को प्राप्त करने का तरीक़ा भी अल्लाह के गुणों से संबंधित है। अल्लाह राजतंत्र और तत्वदर्शी है... इसी प्रकार इसका संबंध उस बात से भी है जिसका हमने पहले चर्चा किया था कि अल्लाह ने इस ब्रह्माण्ड की किसी तत्वदिर्शिता के कारण सृष्टि की है। उसको व्यर्थ नही बनाया... क्या तुम यह समझते हो कि किसी कंपनी की स्थापना की जाती हो। उसके लिए भवन निर्मित किये जाते हों। कर्मचारियों को नियुक्त किया जाता हो, प्रशासनिक कमिटि बनायी जाती, और उसके उत्पादन बाज़ार में प्रवेश किए जाते हों... और इन सब चीज़ों के लिए कोई प्रणाली, नियम और क़ानून न हो ?

माइकलः निश्चित रूप से ऐसा हो नही सकता ।

राषिदः तो फिर इस ब्रह्माण्ड और जीव के प्रति तुम्हारा विचार क्या है? इसीलिए अल्लाह ने अपनी पुस्तकें अवतरित की, ताकि धार्मिक और संसारिक लाभ की ओर मानवता की मार्गदर्शनी हो। यह पुस्तकें ईशवर ने अपने और अपनी प्रजा के बीच राजदूतों के द्वारा अवतरित किया। वह राजदूत अल्लाह के रसूल (मैसेंजर) हैं, जो अल्लाह और उसके प्रजा के बीच मध्यवर्ती की भूमिका निभाते हैं। ताकि मानवता का उनके प्रभु से परिचय कराये। न्याय के लाभ, और अन्याय के नष्ट की ओर उनकी मार्गदर्शनी करे, और संसार और परलोक में मानवता के लिए लाभदायक और नष्टदायक चीज़ों का विवरण करें।

किन्तु मानव ईश देवत्व की आवश्यकता रखता है। इसलिए कि वह दो आंदोलन के बीच होता हैः एक आंदोलन के द्वारा यह अपने लिए लाभदायक चीज़े प्राप्त करता है। और दूसरा वह आंदोलन जिससे वह अपनी सुरक्षा करता है। और ईश देवत्व एक प्रकाश के समान है, जो मानव के लिए लाभदायक और नष्टदायक चीज़ों का विवरण करता है। ईश देवत्व पृथ्वी पर अल्लाह का प्रकाश, और प्राणियों के बीच न्याय है।

ईश देवत्व का लक्ष्य लाभदायक और नष्टदायक चीज़ो के बीच संवेदी अंतर का विवरण करना नही है। यह तो बुद्धि न रखनेवाले पशु-पक्षियों के लिए उपलब्ध है। उदाहरण के रूप में गधा, जौ और मिट्टी के बीच अंतर करलेता है। बल्कि ईश देवत्व का लक्ष्य यह है कि संसार और परलोक में नष्टदायक कार्यो के बीच,

इसी प्रकार संसार और परलोक में लाभदायक चीज़ों के बीच अंतर करना है। अगर ईश देवत्व की उपलब्धी न होती, तो जीवन में लाभदायक और नष्टदायक चीज़ों के विस्तार की ओर बुद्धि की मार्गदर्शनी न होती।

राजीवः दूसरा अंक यह है कि हम लोगों को प्रभु के प्रति, और उसके अनुयायी बनने के प्रति अलग अलग स्थितियों में देखते हैं। तो कैसे वह प्रभु की अनुग्रह से आनंदित होने में एक समान हो सकते हैं ?।

राषिदः यह तो परीक्षा की तत्वदर्शिता है, ताकि अपने प्रभु के प्रति उनके विचार प्रकट हो। लेकिन निश्चित रूप से बदला और परिणाम में लोग एक समान नही है। इस बदले का स्त्रोत क़ानून और नियम के रूप में रसूलों के वह संदेश है, जिसकी ओर ध्यान देना आवश्यक है।

माइकलः मै एक तीसरा अंक भी वर्णन करूँगा। वह यह कि सारी मानवता अल्लाह के अनुग्रह से कैसे आनंदित हो सकती है, जबकि उनमें भ्रामक, झूठा, और अत्याचारी भी है। कभी-कभी इनमें से कुछ लोग सामाजिक दण्ड से मुक्ति प्राप्त करलेते हैं, और उन पर नियम लागू नही किये जाते हैं ? ।

राषिदः इसका भी कारण परीक्षा की तत्वदर्शिता है। लेकिन यह लोग जब दण्ड से सुरक्षित हो जाते हैं, और समाज के द्वारा उनके प्रति न्याय नही हो पाता है। फिर भी वे देवत्व न्याय से छुटकार प्राप्त नही कर सकते। मृत्यु के बाद ख़ियामत के दिन हिसाब-किताब लेने और ज़िन्दा उठाये जाने की तत्वदर्शिता यही है। उस दिन मानव को उसके अच्छे और बुरे कार्यों का फल मिलेगा, चाहे उसने वह कार्य अपने रब के प्रति किया हो, या अपने आप के प्रति किया हो, या अन्य लोगों के प्रति किया हो। उस दिन दश्मनों के बीच सत्य निर्णय होगा ।

लेकिन किसी ऐसे प्रमाण की आवश्यकता है जिस पर निर्भर रहते हुए लोगों के बीच फैसले किये जा सके, लोगों को इस प्रमाण का ज्ञान हो, और आवश्यकता के समय इस प्रमाण की ओर लौटना उनके लिए संभव हो... इस जैसे स्थान पर भी अल्लाह के उन रसूलों के संदेश की भूमिका प्रकट होती है, जो मानवता को उस नियम का परिचय करायेंगे, जिसके अनुसार उनसे हिसाब-किताब लिया जायेगा। यह भी बतायेंगे कि इस नियम का विरोध करने, या इससे संतुष्ट रहने पर उनका परिणाम क्या होगा। इस बात का भी परिचय करायेंगे भविष्य जीवन में उनके लिए कैसी कैसी अनुग्रह या दण्ड होंगें, और यह भी बतायेंगे कि क़ियामत के दिन क्या-क्या होगा।

राजीवः प्रिय राषिद। क्या तुम्हें याद है हमने पहले यह कहा था कि सच्चे धर्म

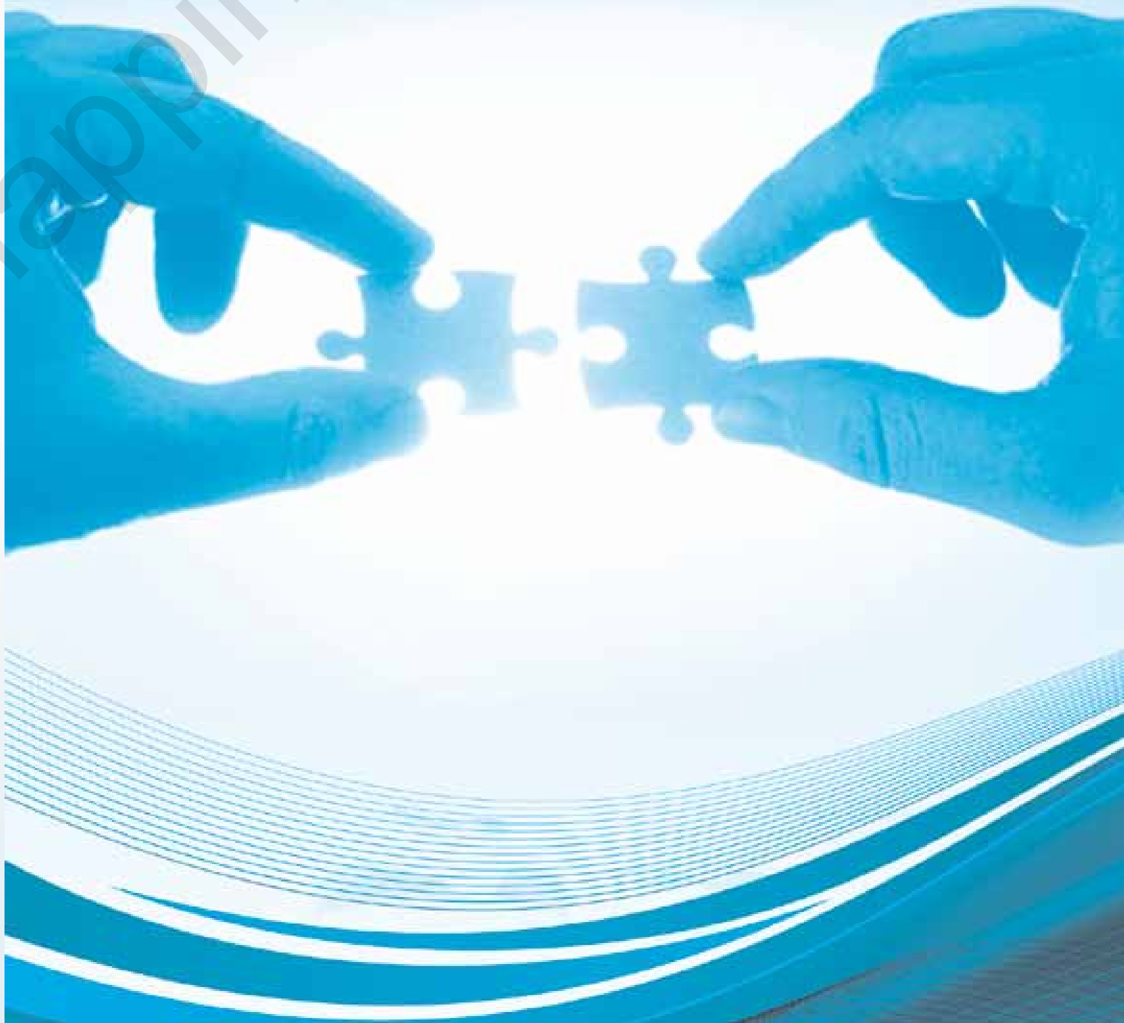
के गुण के प्रति चर्चा आवश्यक है ?

राषिदः हाँ । मुझे याद है।

राजीवः मेरे विचार से अब इसी के बारे में बात करने का समय आ गया ।

माइकलः तुम ने सच कहा। प्रिय राजीव... और मेरे विचार से हम अपनी अगली बात-चीत को इसी विषय के साथ जोडेंगे ।

सच्चे धर्म के गुण



सच्चे धर्म के गुण

ठीक निर्धारित समय पर राषिद ने अपने दोनों मित्र को लौकर संग्रहालय के फाटक पर स्वागत किया। राषिद ने ही उन्हें संग्रहालय देखने आमंत्रित किया। राषिद ने यह कहाः

मैं ने संग्रहालय देखने के लिए इस स्थान को चुना, ताकि हम आज के विषय के प्रति बात-चीत प्रारंभ करने से पहले मानवता के इतिहास के कुछ भाग दोहराले... मेरे इस विचार के प्रति तुम्हारा क्या ख्याल है ? अगर तुम दोनों को इसमें कुछ संदेह हो, तो हम इस विचार को बदल सकते हैं....

माइकलः प्रिय राषिद तुम्हारा व्यवहार बडा आश्चर्यजनक है.... यहाँ पहुँच जाने के बाद तुम हमारी सलाह पूछ रहे हो। अच्छा तो यह होता कि पहुँचने से पहले तुम हमसे सलाह लेते... फिर भी मुझे इसमें कोई आपत्ति नही है.... तुम्हारा क्या विचार है प्रिय राजीव ?

राजीवः मुझे भी कोई आपत्ति नही। लेकिन मेरे विचार से जल्दी-जल्दी इस यात्रा को हम पूरी कर लें। क्योंकि हम पहले से इस बात पर सहमत हो चुके थे कि हम अपने विषय के प्रति चर्चा करना चाहते हैं। इसलिए कि लौवर संग्रहालय बहुत बडा है इसमें हमारा अधिक समय लग जायेगा, और हमारी चुस्ती भी समाप्त हो जायेगी।

राषिदः मै अपनी इस ग़लती से क्षमा चाहता हूँ। मेरी इच्छा यह थी मै तुम्हारे लिए इस यात्रा को आश्चर्य बनाऊँ। लेकिन मैं ने ग़लत निर्णय लिया।

माइकलः कोई बात नही। अब हमें जल्दी करना चाहिए। संग्रहालय के हालों की पूरी लंबाई लगभग 13 स्कवायर किलोमीटर है। जिसमें 10 लाख से भी ज्यादा विभाग है।

राषिदः लौवर संग्रहालय की यात्रा करना मेरा लक्ष्य नही है। बल्कि मैं यह चाह रहा था कि इस यात्रा से हमें कुछ उस विषय की जानकारी मिल जाये जिसके प्रति हम आज चर्चा करेंगे।... मेरा अनुमान है कि हमारा अधिकतर ध्यान प्राचीन सभ्यताओं के संग्रहालय अवशेष की ओर अधिक होगा। यह अवशेष अधिकतर तल मंजिल और पहली मंजिल में रखे हुए हैं ....

लगभग दो घंटों के बाद तीनों मित्र संग्रहालय से बाहर निकले। उनके चेहरों पर थकावट का असर साफ दिख रहा था।

राषिदः हम एक पास वाली होटल में दोपहर का भोजन कर लेते हैं, और कुछ समय विश्राम कर लेते हैं। इस होटल का पता मै ने इंटरनेट से प्राप्त किया है....

वे सब होटल की ओर चल ही रहे थे, अचानक राषिद ने अपनी बात शुरू कर दीः

क्या तुम लोगों ने नोट नही किया, हमने विभिन्न सभ्यताओं के जो कुछ भी अवशेष देखें हैं, इनमें से अधिकतर का संबंध किसी न किसी रूप में धर्म से

मिलता है। क्या यह इस बात का प्रमाण नही है कि किसी भी समय या स्थान में मानव के भीतर धर्म का उच्च स्थान था ?।

राजीवः एंथ्रोपोलॉजी के वैज्ञानिकों के अनुसार तुम ने जो कुछ कहा वह लगभग सही है। उनका कहना है कि वे मानवीय इतिहास और अवशेष की खोज के बाद इस परिणाम तक पहुँचे हैः हो सकता है कि मानवीय समितियाँ कारख़ानो और सभ्यता के बिना, महल और इतिहास के बिना, ज्ञान और दर्शन के बिना पायी जाये.... लेकिन प्रार्थना गृह के बिना कोई समिति उपलब्ध नही है

माइकलः वास्तविक रूप से प्रत्येक बुद्धिमान यह कहता है कि धर्म बुरा नही है। बल्कि धर्म तो मानवीय व्यक्तित्व की सभ्यता के लिए महत्वपूर्ण अवयव है। लेकिन यहाँ समस्या यह है कि प्रत्येक धर्म के अनुयायी अपने धर्म को ही सच्चा समझते हैं। लोगों को इसी की ओर बुलाते हैं। प्रत्येक सिद्धांत के अनुयायी लोगों को अपने सिद्धांत की स्थापना करने वाले को मानने की ओर, और अपने धार्मिक पुरुष को सम्मान देने की ओर आकर्षित करते हैं। हर धर्म वाले का यह विश्वास है कि उसी का धर्म सच्चा है। और मानव भ्रम में पड़ जाता है कि सच्चा धर्म यहूदीयत (ज़ियूष) है, या ईसाईयत है, या बौद्धमत या इस्लाम धर्म ? तो फिर कैसे यह पहचाना जाये कि इनमें से सच्चा धर्म कौन-सा है ? या फिर हम यह कहें कि इनमें से हर एक सच्चा है, क्यों कि उनकी धार्मिक आवश्यकता इसी से पूरी हो रही है ?। समस्या बडी गंभीर है। क्या ऐसा नही है ?।

राषिदः हाँ समस्या बडी गंभीर है। लेकिन अगर हम कुछ सोंच-विचार से काम लें तो इस भ्रम से हम बाहर निकल सकते हैं.... निस्संदेह अब हम (तीनो मित्र) भूखे हैं। हमें यह अच्छा नही लगेगा कि कोई भी भोजन अपने पेट में डाल लें, चाहे वह भोजन मानव को खिलाने लायक हो या पशु-पक्षी को। हमें पसंद नही कि अपनी भूख मिटाने के लिए किसी भी भोजन से अपना पेट भर लें... तो फिर हमारी आध्यात्मिक प्रवृत्ति को पूरा करने के प्रति हमे क्या करना चाहिए.... निस्संदेह उसके लिए भी कोई ठीक और उपयुक्त भोजन होना ज़रूरी है।

असंभव है कि सब के सब सच्चे धर्म के अनुयायी हो। इसलिए कि सच एक होता है, अनेक नही। और यह भी असंभव है कि सारे मानवीय धर्म अल्लाह की ओर से आये हैं और वह सारे सच्चे हैं। जब धर्म अनेक हो (और सच्चा धर्म एक हो) तो यह प्रश्न सदा रहेगा कि सच्चा धर्म कौन-सा है ? इसलिए ऐसे नियमों की आवश्यकता है, जिससे हम ग़लत धर्मो के बीच सच्चे धर्म को पहचान लें। और जब कोई धर्म इन नियमों के अनुसार सही हो, तो हम यह जानलेंगें कि वही सच्चा धर्म है। और जब यह सारे नियम या इनमें से किसी एक नियम के अनुसार कोई धर्म सही न हो तो हम यह समझलें कि वह धर्म ग़लत है।

राजीवः तुम ने तो अभी अपनी बात-चीत में सबसे पहला नियम यह रखा कि धर्म अल्लाह के द्वारा अवतरित किया हुवा हो। तो क्या धर्म का देवत्व होना आवश्यक है ? पृथ्वी पर कई धर्म है जो देवत्व नही है और लाखों लोग उसके

अनुयायी है। जैसे बौद्धमत, हिन्दु धर्म, कन्फ्यूशीवाद, इसके अतिरिक्त और भी कई धर्म है।

राषिदः यह खुली बात है। इसलिए कि किसी भी धर्म का मुख्य स्तंभ एक या अनेक प्रभु की प्रार्थना करना है। जब हम विश्वास के साथ यह मानलें कि केवल एक ही प्रभु है, जिसने ब्रह्माण्ड और मानव की सृष्टि की है। उसी ने पृथ्वी पर पायी जाने वाली सारी चीज़ों को मानव की सेवा में लगा दिया। और उसीने मानव को अपनी अनुग्रह प्रदान किया। तो इस बात को भी हमें मानना चाहिए वही एक है जो प्रार्थना का अधिकार रखता है। उसी की पूजा-पाठ की जाए और कोई उसका भागीदार नही। इसलिए कि यह कैसे संभव है कि सृष्टि वही करें, और वही लोगों को रोज़ी-रोटी दे, लेकिन उसके अतिरिक्त किसी और की प्रार्थना की जाए, किसी और का आभारी रहा जाए ? इसके साथ-साथ यह भी ज़रूरी है कि सच्चा धर्म केवल एक ईशवर की प्रार्थना की ओर बुलाये, सच्चे ईशवर के गुण उसी में मानें। उसकी तरफ से आये हुए रसूलों को सम्मान दें, और उनका अनुसरण करें।

हम पिछली बैठक में इस बात पर सहमत हुए थे कि सच्चे प्रभु के गुण और मानवीय आवश्यकता किसी ऐसे प्रमाण की उपस्थिति ज़रूरी समझते हैं, जो मानव की मार्गदर्शनी करें। उनके जीवन को संतुलित बनाये और प्रसन्नता की उपलब्धी को निश्चित बनाये। यह प्रमाण केवल वही धर्म होगा जिस को अपनी प्रजा के बारे में अधिक ज्ञान रखने वाले प्रभु ने पसंद किया हो।

हम इस बात पर सहमत हुए थे कि किसी ऐसे दिन का पाया जाना ज़रूरी है, जिस में मानवता के कार्य के बारे में हिसाब-किताब लिया जायेगा, और उनकी शिकायतें दूर की जायेगी। जब अल्लाह ही वह एक प्रभु है जो बदला देगा और ख़ियामत के दिन अपने प्राणियों से हिसाब-किताब लेगा, तो इस बात की आवश्यकता होगी कि मानवता का हिसाब-किताब उसी धर्म के अनुसार हो, जो प्रभु द्वारा उनकी ओर अवतरित किया गया। इस नियम के अनुसार जो भी धर्म किसी भी व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किया गया हो, और वह इस धर्म को अपनी ओर केन्द्रित किया हो वह धर्म निश्चित रूप से ग़लत होगा ।

लेकिन मैं यहाँ पर इस बात की ओर संकेत करना चाहूँगा कि विभिन्न धर्मो के अधिकतर अनुयायीओं से जब उनके धर्म के प्रमाण के बारे में तुम प्रश्न करते हो, तो वे यही उत्तर देंगे कि उन्होंने अपने-बाप-दादा को इसी धर्म और इसी रीति-रिवाज का अनुयायी पाया था। फिर वे ऐसी कथाएँ और किस्से कहने लगते हैं, जो किसी भी रूप से सही नही होते। वे पीडि दर पीडि से मिली हुई ऐसी किताबों पर निर्भर होते हैं, जिस के प्रति न यह ज्ञान होता है, किस ने ये बातें कही है। किस ने इस को लिखा है। पहली बार किस भाषा में यह किताब लिखी गयी है। और न यह ज्ञान होता है किस देश में यह किताब उपलब्ध है। यह तो केवल कई विचारों का मिश्रण है, जो इकट्ठा किये गये, फिर उन्हें सम्मान जनक बनाया गया और फिर बिना किसी शैक्षिक खोज के एक के बाद दूसरी पीडि इन

किताबों का वारिस बनते गयी। यही वह विषय है जिससे हमें दूर रहना चाहिए। और इसी से हमें यह मालूम होता है सच्चे धर्म के महत्वपूर्ण गुण उसका अपने स्त्रोत से केंद्रित होना, और ईशवर की ओर से धर्म पहुँचाने वाले रसूल के प्रमाणों का सही होना है।

राजीवः ठीक है। तो फिर हमें उन्ही नियमों के अनुसार आगे बढना चाहिए जिस पर हम पहले से सहमत है, चाहे वह नियम प्रमाण के रूप में हो, जैसे बुद्धि, ज्ञान, और वृति। या उन तत्वों के रूप में हो जिस पर हम पहले से सहमत हैं, जैसे ईशवर की उपस्थिति, सच्चे ईशवर के गुण, और ईश देवत्व की ओर मानवीय आवश्यकता के कारण।

माइकलः जब हम इससे सहमत हो जाये, तो धर्म के ईशवर द्वारा अवतरित होने, और केवल एक ही ईशवर की प्रार्थना किये जाने के बाद, दूसरा गुण यह होगा कि धर्म ज्ञान को सम्मान दे, उसका विरोध न करे, और उच्च बुद्धि के विचारों के साथ समानता रखें। जब हम यह कहे कि सच्चा धर्म अल्लाह का धर्म है, और उच्च बुद्धि, अल्लाह के द्वारा बनायी हुई चीज़ है, तो यह संभव है कि अल्लाह के धर्म और उसकी बनायी हुई चीज़ों के बीच आपसी टकराऊ हो।

राषिदः मै तुम्हारी इस बात से सहमत तो हूँ। लेकिन दो विषयों की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ ।

प्रथमः हमने पहले इस बात को स्वीकार करलिया है कि बुद्धि जिन घटनाओं के घटने या साबित करने को असंभव समझती है, और जिन घटनाओं के प्रति बुद्धि के लिए विचार करना ही संभव हो, इन दोनों के बीच बडा अंतर है। किन्तु धर्म में एक सीमा है जिसके बारे में विचार करना, या उसके रंग रूप पर विश्वास रखना मुश्किल है। वह सीमा अदृश्य है.... उदाहरण के रूप मे शैतानों और फरिश्तों की उपस्थिति, रसूलों के पास आने वाली वाणी, (वही) का तरीक़ा, और ख़ियामत के दिन का विस्तार ... लेकिन यह सारे विषय उस विषय के विपरीत है, जिस के प्रति बुद्धि यह निर्णय लेती है कि उसका होना असंभव है...

उदाहरण के रूप में आज से सौ साल पहले बुद्धि के लिए यह मानना मुश्किल था कि मानव चाँद पर कृत्रिम उपग्रह ले जायें, या खुद पहुँच जाये, या हज़ारों किलोमीटर की दूरी से किसी दूसरे इन्सान को सुने या देखें। लेकिन जिस बात को मानने से बुद्धि इंकार कर रही थी वह इसको असंभव नही समझ रही थी। और जब हम यह कहें कि एक ही मानव अपने शरीर के साथ एक ही समय में दो अलग-अलग स्थान पर उपस्थित है, या 1+1+1 = 1 कहें तो बुद्धि इसको असंभव समझेगी ।

द्विवितीयः पिछले अंक के आधार पर धर्म के कुछ स्पष्टों में हमे कोई (मानसिक स्पष्टीकरण) नज़र नही आता, जब कि वह हमारी बुद्धि के विरोध भी नही होता है। इस जैसे स्थान पर हमें इसको स्वीकार करलेने की आवश्यकता होती है। क्योंकि हमारे विश्वास (ईमान) को हम ने प्रमाणों के सही स्तंभ पर खड़ा किया

है। जब तुम अपनी बुद्धि से किसी व्यक्ति को 100% विश्वसनीय समझते हो, और तुम्हें उसके प्रति कोई संदेह भी नही। और यही व्यक्ति तुम्हारे विश्वास का परीक्षण लेते हुए तुमसे यह कहेः तुम इन कोरे (सफेद) कागज़ पर दस्तखत कर दो। तो निस्संदेह तुम इन कागज़ों के बारे में कुछ प्रश्न किये बिना दस्तखत करदोगे। और जब तुम्हारा विश्वास उस व्यक्ति पर पूरा न हो, तो ज़रूर तुम इन कोरे कागज़ों के बारे में प्रश्न करोगे। इसी प्रकार विश्वास (ईमान) या सिद्धांत बुद्धि और विचार के द्वारा अल्लाह के प्रति विश्वास रखना है। और धर्म के स्पष्टीकरण वह प्रमाण है, जो तुम्हारे लिए अल्लाह के प्रति विश्वास रखने में सहायक होंगे।

माइकलः तो फिर सच्चे धर्म का एक गुण यह हुवा कि इनमें से कुछ आदेश अन्य आदेशों के विपरीत न हो। किन्तु धर्म एक विषय का आदेश दे, फिर इसके विपरीत दूसरा आदेश दे। धर्म किसी चीज़ को अवैध ठहराये, फिर उसी के समान दूसरी चीज़ को बिना किसी कारण के वैध बताये। धर्म किसी विषय को एक समूह के लिए वैध बताये, फिर उसी विषय को दूसरे समूह के लिए अवैध ठहराये।

राजीवः जब हम यह कहे कि यह धर्म मानवता के लिए उस चीज़ का प्रमाण है, जो उनका प्रजापति उनसे चाहता है, तो इस बात की आवश्यकता होगी वह धर्म अल्लाह के प्रार्थना के मार्ग की ओर मार्गदर्शनी करें। मानव को यह बताये कि अल्लाह उससे क्या चाहता है। वह प्रणाली भी बताये जिस का मानव द्वारा अनुसरण किया जाए। जीवन के हर बडे प्रश्न का उत्तर दे। किन्तु यह बताये कि मानव कहाँ से आया है और उसका अंत क्या है। मानव के लिए सुख और संतोष का कारण हो, और मानवीय उच्च वृत्ति के अनुसार हो।

माइकलः मेरे विचार से महत्वपूर्ण बात यह है कि धर्म अच्छे चरित्र व अच्छे कार्य की ओर बुलाये। बुरे चरित्र व बुरे कार्य से रोके। सारे प्रणियों के लिए दयालु हो, जो स्वयं अपने आप पर अत्याचार करने से, और आपस में एक दूसरे पर अत्याचार करने से रोके। चाहे यह अत्याचार अधिकारों का उल्लंघन के रूप में, या अच्छाइयों को बिगाड़ने के रूप मे, या बडों के द्वारा छोटों को गुमराह करने के रूप में हो।

राषिदः यहाँ एक महत्वपूर्ण शर्त है, जो हम भूल ही गये। वह यह कि धर्म में यह सारे गुण उपलब्ध हो, और इन में से किसी एक गुण की कमी न हो।

माइकलः प्रिय राषिद। मै यह चाहता हूँ कि तुम अपने धर्म के प्रति कुछ विस्तार से बात करो। क्यों कि मुझे यह लग रहा है कि इस्लाम धर्म के प्रति मेरी जानकारी बहुत कम है, और जो कुछ मालूमात हैं, वह विकृत है।

राषिदः मै अगली मुलाक़ात में ज़रूर तुम्हें विस्तार से बताऊँगा ।

मानवीय महान लोगों में से सब से प्रमुख व्यक्तित्व



मानवीय महान लोगों में से सब से प्रमुख व्यक्तित्व

राषिद: अपने दोनों मित्र के पास सतर्क होकर पहुँचा। उसके हाथ में पुस्तक थी और कंधे पर लापटॉप था .... जैसे ही उनके निकट हुवा तो तुरंत नमस्कार किया, और उनसे पुनः उत्तर का इंतज़ार नही किया, फिर यह कहने लगाः

आज मैं अपने मित्र माइकल की इच्छा पूरी करूँगा ।.... चलो मैं अब तुम्हारे सामने वह महत्वपूर्ण चीज़ों का विस्तार करूँ, जो इस्लाम धर्म के साथ विशिष्टता रखते हैं। कोई भी व्यक्ति इन चीज़ों की महत्वता का इंकार नही करता, वह विशिष्ट चीज़े यह हैं, इस्लाम धर्म के रसूल मुहम्मद (सल्लेल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर विश्वास करना... मैं ने तुम दोनों के लिए एक पश्चिमी आलोचक की वह पुस्तक ले आया हूँ, जो मुहम्मद के बारे में लिखी गयी है..... सुनो वह आलोचक क्या कहता है....

माइकल: धीरज प्रिय राषिद।... मेरा अनुमान था कि इस्लाम धर्म की महत्वपूर्ण विशेषता प्रभु के प्रति उसके विचार हैं।

राषिद: समग्र रूप से बिल्कुल सही है.... लेकिन मैं ने कई कारणों से उसको छोड दिया। कुछ महत्वपूर्ण कारण यह हैः

इस्लाम धर्म रसूल सल्लेल्लाहु अलैहि वसल्लम का संदेश होने के रूप में यह नही मानता है कि देवत्व का विचार रसूल के द्वारा बनाया हुवा एक नया विचार है। बल्कि वह तो आदम से लेकर ईसा मसीह तक, फिर मुहम्मद तक आनेवाले सारे रसूलों का धर्म है। बल्कि वह तो सारी मानवता का धर्म है... और हुवा यह कि मानवता इस धर्म से विचलन हो गयी, और उसके विचारों का विकृत किया। फिर इस्लाम धर्म आया। अल्लाह के साथ विश्वास का पुनर्निर्माण किया। सारे लोगों को अल्लाह के एकत्व के सिद्धांत की ओर, और उसकी प्रार्थना में किसी को साझीदार बनाने की ओर बुलाया.... किन्तु इस्लाम धर्म में विश्वास करने और अल्लाह के एकत्व का सिद्धांत स्वयं मानव की सृष्टि से सारे इतिहास की विस्तारित श्रंखला की एक नयी कडी है। जो इस संसार के विनाश होने से पहले समाप्त नही होगी... निस्संदेह इस्लाम वह धर्म है, जो इस्लाम के रसूल मुहम्मद का जन्म होने से पहले भी था।

दूसरा कारण यह था कि हमारी पिछली बैठकों में जिन विचारों पर हम सहमत हो गये थे, उसको सामने रखते हुए मैं ने यह सोंचा कि देवत्व विचार के प्रति चर्चा करने की आवश्यकता नही रही।

राजीव: क्या तुम्हारा अर्थ यह है कि इस्लाम धर्म में वह सारे गुण उपलब्ध है, जिसके बारे में हमने चर्चा की।

राषिद: हाँ। यह सत्य है।

राजीव: तो फिर कितना ही अच्छा होगा कि तुम अपनी बात प्रस्तुत करने से

पहले-पहले सारांश रूप में देवत्व के प्रति इस्लाम धर्म के विचारों का विवरण करो।

राषिद: ठीक है। इस्लाम धर्म में एक ही प्रभु है, जिसने शून्य से मानव को और सारे प्राणियों को पैदा किया। सारे ब्रहमाण्ड में कोई चीज़ उसके समान नही है। उसी ने ब्रहमाण्ड के नियम बनाये, जिनको हम प्रकृति के नियम कहते हैं। उसी ने ब्रहमाण्ड के हर चीज़ को विशेष आकार और विधि में रखा। वह हर विषय से महान, बडा, प्रभुत्व है....

उसके व्यक्तित्व, गुण, कार्यकलाप में कोई विषय उसके समान नही है। वही उत्तम, उच्च है। किसी भी प्रकार से उसके व्यक्तित्व में निम्नता नही है। वह न किसी से पैदा हुवा, और न कोई उससे पैदा हुवा। न कोई उसका साझीदार है, न कोई उसके समान है। वही एक है जो मौत और ज़िंदगी देता है। वह प्राणी में प्रवेश नही करता है, और न कोई प्राणी उसमें प्रवेश करती है। ....

वही प्रभु जो एकत्व (अकेला) है, इसके अलावा किसी और की प्रार्थना नही की जायेगी। उसके राजतंत्र में कोई उसका भागीदार नही है, न कोई उसके समान है। न कोई उसका मंत्री है, न कोई उसका सलाहाकार है, जिसकी प्रार्थना की जा सके। न कोई ऐसा मध्यवर्ती है, जो उसके अनुमति के बिना सिफारिश कर दे। और उसका प्रिय बना दे। किन्तु हर रूप में प्रार्थना उसी एक के लिए संपूर्ण है।

माइकल: तुम जो पुस्तक अपने साथ लाये हो, उसमें किस विषय पर चर्चा की गयी है ?

राषिद: यह पुस्तक मानवीय इतिहास में शाश्वत रहने वाले व्यक्तियों के बारे में चर्चा करती हैं। डाक्टर माइकल हार्ट इसके लेखक है। जो खगोल वैज्ञानिक और गणितज्ञ है, और अमेरिकी अंतरिक्ष विभाग में काम किया करते थे।

माइकल: एतिहासिक अध्ययन से इस वैज्ञानिक का क्या संबंध है? ।

राषिद: एतिहासिक अध्ययन इस वैज्ञानिक के लिए आनंद उठाने का साधन था। उसने यह नोट किया करोडों लोगों में से हज़ारों लोगों के बीच परिशोधक संस्थाओं ने केवल बीस हज़ार व्यक्तियों का नाम वर्णन किया। इस वैज्ञानिक ने इन बीस हज़ार में से प्रमुख महान व्यक्तियों को चुनने के लिए कुछ नियम निर्धारित किये। इन नियमों में से कुछ मुख्य नियम यह हैः वह व्यक्ति वास्तविक हो, अयथार्थ और अज्ञान न हो। उसका अच्छा या बुरा प्रभाव बड़ा गहरा हो। उसका प्रभाव विश्व व्याप्त हो। यह प्रभाव मानवीय इतिहास में विस्तारित हो... मेरे अनुमान से यह नियम इस विषय में बहुत उत्तम है।

राजीव: इस वैज्ञानिक लेखक की दृष्टि से शाश्वत महान व्यक्ति कौन है ?

राषिद: इस लेखक ने इतिहास में शाश्वत रहने वाले 100 व्यक्तियों के नाम चुने, इनमें से सबसे पहले व्यक्ति इस्लाम धर्म के रसूल मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम है। लेखक ने इसके कुछ कारण विवरण किये हैं, जो यह है....

फिर राषिद ने पुस्तक निकाली और यह पढने लगाः

मैं ने इस सूची के प्रथम अंक में मुहम्मद को चुना है। मेरे इस चयन से अधिकतर लोग ज़रूर आश्चर्य चकित होंगे। उन्हें इसका अधिकार भी है। लेकिन मुहम्मद ही इतिहास में वह एक इंसान है, जो धार्मिक और सांसारिक स्थर से पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

उन्होंने इस्लाम का प्रचार किया। सारे धर्मों में प्रमुख धर्म के रूप में इस्लाम को प्रस्तुत किया। वह राजनीतिक नेता, कमांडर और धार्मिक महात्मा बन गये.... उनकी मृत्यु के 13 शताब्दों के बाद भी आज तक मुहम्मद का प्रभाव सर्व व्याप्त और नवीकृत है।

फिर अमेरिकी लेखक यह कहता हैः.... हो सकता है कि इस सूची के प्रथम अंक में मुहम्मद का होना आश्चर्यचकित लगे, क्योंकि ईसाइयों की संख्या मुसलमानों से दुगना है। हो सकता है कि इस सूची में मुहम्मद का प्रथम होना अधिकतर लोगों को भ्रम में रख दिया भी हो, जब कि ईसा अलैहिसलाम नंबर 3 पर, और मूसा अलैहिसलाम नंबर 16 पर हैं।

लेकिन इसके कई कारण है। इनमें से एक कारण यह है कि इस्लाम का प्रचार करने में, उसको मज़बूत बनाने में, और उसके नियमों की स्थाप्ना करने में, मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम की भूमिका ईसा अलैहिसलाम से बहुत बडी और महान थीं। हालांकि ईसाई धर्म में नैतिक नियमों के ज़िम्मेदार ईसा तो हैं लेकिन सेंट पॉल ने ईसाई धर्म के नियमों की स्थाप्ना की है, और बाईबल में लिखी हुई कई बातों का ज़िम्मेदार वह भी है।

जब कि मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम इस्लामिक नियम, धार्मिक क़ानून, सामाजिक व नैतिक व्यवहार, और संसारिक व धार्मिक जीवन में लोगों के बीच होने वाले व्यवहारिक नियम की स्थाप्ना करने के ज़िम्मेदार इस्लाम धर्म के रसूल ही है। इसी प्रकार पवित्र ख़ुरआन केवल उन्ही पर अवतरित हुवा है, और पवित्र ख़ुरआन में मुसलमानों ने अपने संसार और परलोक की प्रत्येक आवश्यकता को उपलब्ध पाया है।.... क्या तुम इस बात से आश्चर्यचकित हो रहे हो ? ।

राजीवः वास्तविक रूप से यहाँ इस बात में कुछ सोंच-विचार की आवश्यकता है। लेकिन मुझे तुम यह कहने की अनुमति दो कि यह लेखक मानव अध्ययन का विशेषज्ञ नही है।

राषिदः हाँ। वह मानव अध्ययन का विशेशज्ञ तो नही है। लेकिन उसकी बात ठोस और वस्तुनिष्ठ नियमों पर आधारित है। यहाँ इस लेखक के द्वारा मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम के पक्षपात का भी संदेह नही है, क्योंकि वह यहूदी है। अगर तुम अन्य लोगों की गवाही सुनना चाहते हो, तो मुझे अनुमति दो कि मैं इनमें से कुछ का विवरण करूँ।....

फिर राषिद ने अपना लाप-टाप निकाला। अपने कुछ रिकार्ड पढने लगा। फिर उसने कहाः

देखो मेरे मित्रः

फ्रेंच कवि लामार्टिन कहता हैः किस पुरुष ने उस प्रकार की मानवीय महानता प्राप्त की है, जिस प्रकार मुहम्मद ने प्राप्त की ?। किस मानव ने अद्भुतता के उच्च स्थान को प्राप्त किया, जिस प्रकार मुहम्मद ने प्राप्त किया ?। निस्संदेह मुहम्मद प्रजापति और प्राणियों के बीच मध्यवर्ती की भूमिका निभाने वाले ग़लत सिद्धांतों को समाप्त कर दिया।

जर्मनी के प्रथम कवि गोतह कहता हैः मैं ने इतिहास में मानव के उच्च नैतिकता की खोज की, तो मुझे यह नैतिकता अरब के रसूल मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम में मिली।

रूस के प्रसिद्ध दार्शनिक व आलोचक लियो टालस्टय कहता हैः मैं उन लोगों में से एक हूँ, जो मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम के व्यक्तित्व से उत्तेजित हूँ, जिनको अल्लाह ने इसलिए चुना कि अंतिम देवत्व संदेश उनके द्वारा भेजा जाये, और अंतिम रसूल भी वही हो।

ऐरलान्ड का लेखक व आलोचक (साहित्य में नोबल पुरस्कार का तिरस्कार करनेवाला प्रसिद्ध व्यक्ति) जार्ज बर्नार्डशाह कहता हैः मै इस्लाम के रसूल मुहम्मद की जीवन चर्या कई बार गहराई के साथ पढा। मैं ने उनके जीवन में केवल वही नैतिकता पायी, जैसी होना चाहिए। कितनी बार मैं ने यह आशा की इस्लाम धर्म इस जगत का मार्ग बन जाये। मै ने मुहम्मद को एक अद्भुत पुरुष के रूप में पढा है, तो मैं ने उसको ईसा मसीह के साथ विरोध करने से बहुत दूर पाया। किन्तु मुहम्मद को मानवता को मुक्ति दिलाने वाला कहना आवश्यक है।

माइकलः यह बात चीत मुहम्मद की महानता के आस-पास घूम रही है। लेकिन यह कैसे साबित हो कि मुहम्मद वास्तविक रूप से अल्लाह के रसूल हैं ?

राषिदः सुनो मेरे मित्र । स्विट्जरलैंड के धर्म शास्त्र वैज्ञानिक डाक्टर हैन्स क्विंग कहता हैः मुहम्मद समग्र रूप से सच्चे नबी हैं। आज तक हमारे लिए यह असंभव है कि हम मुहम्मद को मार्गदर्शक न माने, और मुक्ति के मार्ग की और ले जाने वाला नेता होने का इंकार करे।

अन्य और भी कई प्रमाण है, जो मुहम्मद को अल्लाह का सच्चा रसूल साबित करते हैं।

माइकलः अगर तुम्हे वह प्रमाण अभी याद है, तो वह सारे या कम से कम कुछ प्रमाण ज़रूर प्रस्तुत करो।

राषिद अपने लाप-टाप में अपने रिकार्डस देख रहा था, फिर उसने कहाः

मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम की सत्यता का एक प्रमाण यह है कि देवत्व पुस्तकों ने आपके आने की शुभ-सूचना दी है। तौरात के प्रथम पाँच खंड (अल-इसहाः 18, अनुच्छेद 15-30) में प्रभु ने मूसा से यह कहाः मैं बहुत जल्द बनी-इसराईल के लिए उनके भाइयों में से तुम्हारी तरह एक नबी भेजूँगा। मै अपनी वाणी को उसके मुँह में रखूँगा। वह बनी-इसराईल से वही कहेगा जिसका मै आदेश दूँगा, और जो मेरे इस प्रतिनिधि की बात स्वीकार नही करेगा, तो मै उससे

और उसकी संतान से बदला लूँगा। यह बात सब जानते हैं कि बनी-इसराईल के भाई बनी-इसमाईल (यानी अरब) है। इसी प्रकार मूसा और मुहम्मद के बीच किसी भी अन्य रसूल से अधिक समानता पायी जाती है। और मै अपनी वाणी को उसके मुँह में रखूँगा का वाक्य भी मुहम्मद के निरक्षर होने की ओर संकेत देता है।

बाइबल जॉन (अल-इसहाः 15 अनुच्छेद 15) में यह आया है कि ईसा मसीह ने अपने साथियों से कहाः मै तो जा रहा हूँ। अब तुम्हारे पास प्रभु की आत्मा वारख़लइट आयेगी, जो अपनी ओर से कुछ नही कहेगा। केवल वह तो वही बात बतायेगा, जो उससे कही जायेगी। वह मेरे प्रति गवाही देगा और तुम भी गवाही दोगे, क्योंकि तुम अन्य लोगों से पहले मेरे साथ रहे हो। वारखलइट यूनानी भाषा का शब्द है, जो हक़ीकत में पेरीक्लेटस (PERIQLYTOS) है। इसका माना अधिक प्रशंसा करना है। तो इस शब्द का अर्थ यह हुवाः बहुत प्रशंसा करने वाला, या प्रशंसा करने वाला, या वह जिसकी अधिक प्रशंसा की जाय। यही अर्थ अरबी भाषा में इस्लाम धर्म के रसूल का नाम मुहम्मद का है।

मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम की सत्यता का सबूत यह भी है कि आप ने अदृश्य की सूचना दी, बल्कि आप ने तो कुछ अदृश्य चीज़ों का सटीक वर्णन किया। आपने कई विषयों के प्रारंभ ही मे उनके अंत की खबर दी है। आपके संदेश का वैज्ञानिक रूप से चमत्कारी होना, और आपके लाये हुए धर्म के नियमों का संपूर्ण रूप से दृढ़ होना भी एक सबूत है....

माइकलः कहाँ की बात कर रहे हो ? यह सब कहाँ से ले आये हो?। हमारे सामने तो कुछ उदाहरण प्रस्तुत करो।

राषिदः पवित्र ख़ुरआन में बहुत सारे उदाहरण है। यह वह पुस्तक है जिसको अल्लाह ने मुहम्मद की ओर वही (रहस्योद्घाटन) के द्वारा अवतरित किया, और यह पुस्तक मुहम्मद का सबसे बडा चमत्कार है।

राजीवः तो फिर मुख्य बात यह होगी कि हम सब से पहले पवित्र ख़ुरआन के प्रति जानकारी प्राप्त कर लें, जिसके द्वारा हम यह ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे कि तुम्हारे रसूल की सत्यता किस हद तक सही है, और हम इस धर्म के नियम जान सकेंगे।

राषिदः यह बात सही है। और मैं तुम्हे यह सलाह दूँगा कि हम इसका अगली बैठक में चर्चा करेंगे।

माइकलः हमारी वापसी से पहले पहले मै यह जानना चाहूँगा कि जो पुस्तक तुम्हारे पास है, उसको मै कहाँ से खरीद सकूँगा ?

राषिदः यह पुस्तक मेरे पास कई वर्षो से हैं। लेकिन मैं ने अपने हास्टल के नज़दीक बुक डिपो में इस पुस्तक का नया प्रिंट देखा। हम अगली बैठक से पहले ज़रूर उस बुक डिपो जायेंगे ।

अंतिम बात



अंतिम बात

तीनों मित्र निर्धारित समय पर हास्टल के फाटक के सामने इकट्ठा हुए... राषिद उन्हें उस बुक डिपो की ओर ले गया, जहाँ पर उसने वह पुस्तक देखी थी। पुस्तक का नाम शाश्वत व्यक्ति 100 है.... इन में सब से प्रमुख व्यक्ति मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम है। बुक डिपो के एक कोने में माइकल किताबों के नाम देखते हुए खडा था। अचानक उसने राषिद को आवाज़ दीः
राषिद.... यह दिल्चस्प नाम देखो.. इस्राईल के एक पुस्तकालय में पवित्र खुरआन की पांडुलिपि के रूप में उपलब्धी...
राषिदः क्या तुम यह प्रश्न करना चाहते हो कि पवित्र खुरआन पांडुलिपि में इस्राईल के पुस्तकालय तक कैसे पहुँच गया ?.... मै ने कल ही यह समाचार एक वेब साइट में पढी है। विश्लेषण के द्वारा इस बात का संकेत मिलता है कि गठबंधन सेना द्वारा ईराक के विरोध युद्ध करने के बाद यह पांडुलिपि चुरा ली गयी है।
माइकलः नही, नहीं। मेरा अर्थ यह नही है। मै तो यह बताना चाहता हूँ कि तुम्हारे हाथों में पायी जाने वाले पवित्र खुरआन की सत्यता से, और मौलिकता से इसका संबंध है। यह खबर बताती है कि इस पांडुलिपि को 1200 वर्ष पहले लिखा गया। यानी पवित्र खुरआन के पहली बार लिखे जाने के केवल 200 वर्ष बाद यह पांडुलिपि लिखी गयी। निश्चित यह आश्चर्यजनक ख़बर है।
राषिदः सब से पहले तो पवित्र खुरआन की यह सब से पुरानी पांडुलिपि नही है, जिसकी आज तक खोज की गयी, क्योंकि रूस के लोग कहते हैं कि पवित्र खुरआन की सबसे पुरानी पांडुलिपि उनके हाथ में है। रूसी परिशोधक यफीम रिज़वान ने इस बात की पुष्टी की है कि हालेण्ड में किये जाने वाले रेडियो धर्मी कार्बन विश्लेषण से यह ज्ञान प्राप्त होता है कि हालेण्ड में पाये जाने वाली पवित्र खुरआन की पांडुलिपि 8 और 9 शताब्दियों में लिखी गयी है।
जब कि ईजिप्ट के वासी यह कहते हैं कि पवित्र खुरआन की सब से प्राचीन पांडुलिपि काइरो की मस्जिदे हुसैन में उपलब्ध है। जो लग-भग 1400 वर्ष पुरानी है। मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम के तीसरे सत्ताधारी (खलीफा) उसमान बिन अफ्फान के आदेश से पवित्र खुरआन को सुरक्षित रखने के लिए जो 6 पवित्र खुरआन लिखे गये थे, उनमें से यह एक है।
यमन के वासी कहते हैं कि राजधानी साना में वर्ष 1972 के बीच एक बडी मस्जिद की मरम्मत के समय उन्हें एक पवित्र खुरआन प्राचीन पांडुलिपि में मिला है। जो मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम के पहले सत्ताधारी (खलीफा) अबुबकर सिद्दीख़ के ज़माने में लिखा गया।
हो सकता है कि यह सब बातें सही है। इसीलिए कि पवित्र खुरआन के कई नक़ल तैयार किये गये और विभिन्न देशों में इसको भेजा गया।

दूसरी बात यह कि जो पवित्र खुरआन आज-कल मुसलमानों के हाथों में पाया जाता है। उसके प्रति यह कहना कि यह वही खुरआन है जो रसूल के ज़माने में पाया जाता था, धार्मिक वैज्ञानिकों के अनुसार यह कहना बिल्कुल सही है। और प्राच्य विद्या विशारद भी इसको मानते हैं। लेकिन वे यह नही मानते कि पवित्र खुरआन अल्लाह की ओर से अवतरित किया हुवा है। जबकि पवित्र पुस्तक तौरात और बाईबाल की मौलिकता का प्रारंभ से कोई मौलिकता नही है।
फ्रांस के सामाजिक वैज्ञानिक आर्निस्ट रिनान कहता है, पवित्र खुरआन में कोई परिवर्तन या विरूपण नही हुवा है।
अमेरिकी डाक्टर माइकल हार्ट (उसी पुस्तक का लेखक जिसको हम आज खरीदने के लिए यहाँ आये हैं) कहता है देवत्व संदेशों के इतिहास में कोई पुस्तक बिना किसी परिवर्तन के अपने पूरे अक्षरों के साथ सुरक्षित नही रही है, सिवाय उस पवित्र खुरआन के, जिसको मुहम्मद ने प्रस्तुत किया। जर्मनी कवि गोतह ने तो यहाँ तक कह दियाः पवित्र खुरआन सारी पुस्तकों की पुस्तक है, और मैं इसका विश्वास ऐसा ही रखता हूँ जैसा कि हर मुस्लिम रखता है। बल्कि जब वह 70 वर्ष की उम्र को पहुँच गया, तो उसने यह घोषणा किया कि वह तो उस पवित्र रात में उत्सव मनाने की इच्छा रखता है जिस रात मुहम्मद पर पवित्र खुरआन को अवतरित किया गया।
राजीवः हमारा आज का विषय यही है.... वास्तविक रूप में इस बात का परिणाम क्या है पवित्र खुरआन अल्लाह के द्वारा अवतरित किया हुवा वही (रहस्योद्घाटन) है। और इस बात का क्या सबूत है इस्लाम अल्लाह का धर्म है, जो आकाश से आया है ?
राषिदः इस्लाम केवल अल्लाह की तरफ से अवतरित किया हुवा धर्म ही नही है, बल्कि यही वह एक सच्चा धर्म है, जो आज कल उपलब्ध है....
माइकलः चलो हम एक ओर खडे हो जाते हैं। ताकि पुस्तकालय में आने-जाने वालों को हमारी आवाज़ों से कुछ कष्ट न हो।
राजीव (वह राषिद से कह रहा था, जब कि वे अपनी बात-चीत को पूरी करने के लिए एक ओर खडे हो रहे थे) - हो सकता है वही हो जो तुम कह रहे हो, लेकिन इसका सबूत क्या है ?।
राषिदः मैं तुम्हारे सामने अपर्याप्त समय में यह साबित करूँगा कि पवित्र खुरआन की वास्तविकता क्या है, वह अल्लाह की वाणी है न कि मुहम्मद की वाणी। और मैं पवित्र खुरआन के कुछ चमत्कारी भागों का भी विवरण करूँगा जिससे यह प्रकट होता है, कि अल्लाह का व्यापक ज्ञान मानवी सीमा से पार है।
माइकलः तुम अपनी बातों को संतोष जनक रूप में उसी संदर्भ के अंदर प्रस्तुत करो, जिस पर हम पहले से सहमत हुए हैं। तुम हम से ज्ञान और बुद्धि के संदर्भ में बात करो।
राषिदः गिरजा घरों के अनुयायी अपने धर्म की पुस्तक को पवित्र पुस्तक का नाम देते हैं। और पवित्रता ग़लती व विरोधाभासी से संपूर्ण रूप विपरीत है। क्योंकि उस

सत्य प्रभु के गुणों में विरोधाभासी असंभव है, जिसके प्रति यह माना जाता है कि वह संपूर्ण हो, और हर निम्नता से श्रेष्ठ हो, ताकि वह प्रभु होने का हक़दार बन सके... पवित्र पुस्तक की वाणी का ज्ञान के साथ टकराऊ होने के कारण गिरजा घर और वैज्ञानिकों के बीच जो लड़ाई हुई है, इसी प्रकार ज्ञान के प्रति गिरजा घर की जो स्थिति है, इन सब के बारे में मै चर्चा नही करूँगा। लेकिन अवश्य रूप से हम पवित्र खुरआन और ज्ञान के प्रति पवित्र खुरआन की चुनौती के बारे में चर्चा करेंगेः

वर्तमान काल के मुस्लिम वैज्ञानिकों में से एक शेख अब्दुल मजीद ज़न्दानी अमेरिका के नार्थ वेस्टर्न विश्व विद्यालय में प्रसूति और स्त्री रोग विभाग के प्रोफेसर जूली सैमसन के साथ पवित्र खुरआन की उस वाणी के प्रति बात-चीत हुई, जिस में भ्रूण के निर्माण के प्रारंभिक चरणों का विवरण किया गया है। जब कि केवल वह एक शुक्राणु के रूप में होता है। और कैसे पवित्र खुरआन ने यह वर्णन किया कि मानव का निर्माण दो शुक्राणु के इकट्ठा होने से होता है, फिर मानव की रूप रेखा तैयार होती है, इसके बाद पवित्र खुरआन जन्म लेने वाले मानव का स्पष्टीकरण करता है, आँखों का रंग, त्वचा का रंग और बाल का रंग वग़ैरह-वग़ैरह। किन्तु उसी समय निर्धारित हो जाता है, जब कि वह शुक्राणु के रूप में होता है। यह बात पवित्र खुरआन की उस वाणी के संपूर्ण रूप से समान है, जिस में अल्लाह ने यह कहाः विनष्ट हुवा मानुष्य। कैसा अकृतज्ञ है। उसको किस चीज़ से पैदा किया ? तनिक-सी बूँध से उसको पैदा किया, तो उसके लिए एक अन्दाज़ा ठहराया । (सूरा अबस, 17-19).... प्रोफेसर जूली सैमसेन ने पवित्र खुरआन में उपस्थित इस स्पष्टीकरण को सुनने के बात एक सम्मेलन में खडे होकर इस विषय के प्रति अपने विचारों की घोषणा करते हुए यह कहाः कई शताब्दियों पहले पवित्र खुरआन वह सन्देश लेकर आया, जो वर्तमान काल में हमारे द्वारा किये हुए आविष्कारों की पुष्टि करता है। यह इस बात का खुला सबूत है कि पवित्र खुरआन अल्लाह की वाणी है.... ।

तुम मुझे अपना लाप-टाप खोलने दो, ताकि मैं कुछ प्रमाणों को बारीकी के साथ पढ सकूँ ... प्रोफेसर कीथ मूर, जिन्होंने THE HUMAN DEVELOPING (मानवीय निर्माण के चरण) पुस्तक लिखी है। यह पुस्तक विज्ञान वैश्विक संदर्भ का स्थान रखती है। इस पुस्तक का आठ भाषाओं में अनुवाद हुवा है...। प्रोफेसर कीथ मूर ने एक सम्मेलन में यह कहा किः पवित्र खुरआन में मानव भ्रूण का जो विवरण हुवा है, उसको सातवीं शताब्दी के वैज्ञानिक खोज पर आधारित करना संभव नहीं है।

केवल उचित निष्कर्ष यह होगा कि भ्रूण का यह विवरण अल्लाह की ओर से मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर वही (रहस्योद्घाटन) के द्वारा अवतरित किया गया। क्योंकि मुहम्मद के लिए यह संभव नही था कि वह इस जैसे विवरण का ज्ञान रखे, क्योंकि वह निरक्षर थे, और इसलिए भी कि मुहम्मद ने कोई वैज्ञानिक प्रशिक्षण भी नही की। डाक्टर कीथ मूर ने केवल इतना ही

नही किया, बल्कि उन्होंने अपनी पुस्तक के हर पन्ने में भ्रूण ज्ञान के तत्वों से संबंधित पवित्र खुरआन और रसूल की वाणी लिखी।

प्रोफेसर योशोदी कोज़ान (टोक्यो के वेधशाला का निर्देशक) ने यह कहाः मुझे इस बात को स्वीकार करने में कोई आपत्ति नही कि पवित्र खुरआन अल्लाह की वाणी है। क्योंकि पवित्र खुरआन में मानव भ्रूण का जो विवरण किया गया है, उसको सातवीं शताब्दी के वैज्ञानिक खोज पर आधारित करना संभव नही है। केवल उचित निष्कर्ष यह होगा कि भ्रूण का यह विवरण अल्लाह की ओर से मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर वही (रहस्योदघाटन) के द्वारा अवतरित किया गया। .... क्या तुम लोग और कुछ सुनना चाहोगे ?।

राजीवः क्या पवित्र खुरआन में अन्य क्षेत्रों के प्रति भी चर्चा हुई है ?

राषिदः पवित्र खुरआन में विभिन्न क्षेत्रों के प्रति कई वाणी उपलब्ध है... किन्तु उदाहरण के रूप में पवित्र खुरआन में ऐसी वाणी भी है, जो ऐतिहासिक तथ्वों के प्रति स्पष्ट करती है। यह तत्व अभी-अभी आधुनिक ज्ञान से प्रकट हुए हैं। जैसे मूसा और फिरऔन की कथा में पवित्र खुरआन ने यह विवरण किया कि फिरऔन की मृत्यु डूबने से हुई है, और फिरऔन के शरीर को सुरक्षित रखा गया, ताकि आनेवाली पीडियाँ इसको देखकर नसीहत (शिक्षा) प्राप्त करें। यानी आनेवाली पीढ़ियों के लिए यह संभव होगा कि वह इस कथा को देखकर शिक्षा ग्रहण करें। इस कथा को अल्लाह ताला ने अपनी इस वाणी में वर्णन कियाः अतः आज हम तेरे शरीर को बचा लेंगे, ताकि तू अपने बाद वालों के लिए एक निशानी हो जाये। निश्चय ही बहुत-से लोग हमारी निशानियों के प्रति असावधान ही रहते हैं। (सूरा यूनुस, 92) इस वाणी में तीन बातों का संकेत हैः

1) फिरऔन की मृत्यु डूबने के कारण होना ।
2) उसका शरीर सुरक्षित रहना, और समुद्र से शरीर का बाहर आ जाना
3) इस शरीर को ऐसे रूप में सरुक्षित रखना, जिस को लोग देख सकें ।

यही वह तत्व है, जिसका वास्तविक रूप से आधुनिक विज्ञान ने पुष्टी की है, लेकिन ममीकृत की छवि में। इसकी आधुनिक विज्ञान ने अभी 1898 में खोज की है। यानी इस्लाम धर्म के रसूल मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के लगभग 1200 साल बाद। इन मम्मी की मृत्यु के कारणों (डूबना) की खोज अभी 1981 में उन्नत उपकरणों, जटिल प्रयोगों और विश्लेशणों द्वारा हुई है। फ्रांस के वैज्ञानिक समूह ने यह खोज की है। जिस में सब से प्रसिद्ध वैज्ञानिक मोरेस बोकाय है। इस प्रोफेसर को जैसे ही यह मालूम हुवा कि मुसलमानों की पवित्र खुरआन में इसका विवरण किया है, तो उसने इस्लाम धर्म स्वीकार करने कि घोषणा की। फिर उसने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तकः पवित्र खुरआन, तौरात, बाईबल और ज्ञान .... आधुनिक ज्ञान के प्रकाश में पवित्र पुस्तकों का अध्ययन लिखी। पवित्र खुरआन में कई ऐसे वाणी है, जो एक ही समय में विभन्न चमत्कारों का शामिल है। जैसे सूरे रूम में अल्लाह कहता हैः अलिफ़-लाम-मीम। रूमी निकटवर्ती क्षेत्र में पराभूत हो गए हैं। और वे अपने पराभव के पश्चात शीघ्र ही कुछ वर्षो में

प्रभावी हो जाएँगे। (अल-रूम, 1-3) इस वाणी में दो प्रकार से चमत्कार प्रकट होता हैः 1) पवित्र खुरआन ने यह सूचना दी कि रूमी अपने पराभव के पश्चात शीघ्र ही कुछ वर्षो में (यानी एक वर्ष से नौ वर्षो के बीच) प्रभावी हो जाएँगे। और सात वर्षो के बाद वही हुवा जिस की सूचना पवित्र खुरआन ने दी। किन्तु वर्ष 627 में रूमी और फारसियौं के बीच युद्ध हुवा, और इसमें रूमी प्रभावी रहें।
2) पवित्र खुरआन अपने इस वाणी में भौगोलिक तत्व का भी विवरण किया, जिससे पहले किसी को ज्ञान नही था। वह यह कि यह युद्ध पृथ्वी के न्यूनतम क्षेत्र में होगा। और शब्द अदना का अरबी भाषा में दो अर्थो में उपयोग होता है, 1) पास 2) न्यूनतम क्षेत्र । किन्तु वह क्षेत्र एख प्रकार से अरब प्रायद्वीप क्षेत्र से निकट था, और दूसरे प्रकार से वह पृथ्वी का न्यूनतम क्षेत्र भी था। क्योंकि वह क्षेत्र समुद्र तल से 1312 स्केवर फीट निम्न है (यानी लगभग 400 मीटर) वह क्षेत्र पृथ्वी का सबसे निम्नतम क्षेत्र है जिसको उपग्रह ने आज तक रिकार्ड में लाया, जैसा कि ब्रिटिश विश्व कोश ने इसका वर्णन किया। ऐतिहासिक तथ्व इस बात की पुष्टी करते हैं कि यह युद्ध पृथ्वी के सब से न्यूनतम क्षेत्र मृत सागर के किनारे हुवा, और आधुनिक माप तकनीक के बिना इसके प्रति ज्ञान संभव नही है।

माइकलेः प्रिय राषिद। मेरे अनुमान से इतनी बात काफी है।

राजीवः लेकिन मैं एक और बात जानना चाहता हूँ कि क्या पवित्र खुरआन ने अन्य क्षेत्रो, जैसे खगोल विज्ञान, पृथ्वी विज्ञान, समुद्र विज्ञान के प्रति भी कुछ चर्चा किया है ?

राषिदः हाँ। पवित्र खुरआन में इन क्षेत्रों में, और इसके अलावा अन्य क्षेत्रो में कई चमत्कारी संकेत मिलते हैं, जैसे ब्रहमाण्ड का निर्माण, मानव का निर्माण वैद्य विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जंतु विज्ञान, भौतिक विज्ञान, प्रकाश का विज्ञान, और एतिहासिक चमत्कार का भी संकेत है ... इसके अलावा पवित्र खुरआन अपनी भाषण कला, और अपने नियमों में चमत्कारी है.... इसके अतिरिक्त अन्य और भी चमत्कार है।

माइकलः जिन विषयों में चर्चा की आवश्यकता है, वे अधिक है। लेकिन दुःख की बात यह होगी कि हम अपने मित्र राजीव का साथ छोड रहे हैं, क्योंकि कल हमारी वापसी होने वाली है।

राजीवः यह मेरे लिए अधिक चिंताजनक बात है। निश्चित रूप से मै हमारे आपसी परिचय से संतुष्ट हूँ, और मुझे तुम्हारी बातों से बहुत लाभ हुवा ... हमारे लिए इंटरनेट के द्वारा सोशल नेटवर्किंग साइटों पर आपसी संबंध जारी रखना और अपनी बात-चीत पूरी करना संभव है।

राषिदः बहुत अच्छी सोंच है। मेरी एक और सोंच भी सुन लो। तुम दोनों की क्या सलाह होगी कि हम इस शुभ अवसर पर पार्टी कर लें । ताकि एक सुंदर स्मृति से हमारे इस अवसर का अंत हो।

माइकल व **राजीवः** अद्भुत सोंच है।

सुख का साधन



सुख का साधन

राषिद व **माइकल**: लंडन जाने के लिए रेल पर सवार हो गये। जब रेल चलने लगी तो **माइकल** ने राषिद से यह कहा:

तुम ने अपनी बात-चीत के बीच कई बार एक अंश कहा था। और मै समझता हूँ वह अंश अधिक महत्व है, लेकिन तुम ने संपूर्ण रूप से उसको स्पष्ट नही किया ... तुम ने कई बार यह कहा: मानव के निर्माण का लक्ष्य। मुझे याद आ रहा है कि तुम ने एक बार यह कहा कि वह लक्ष्य अल्लाह की प्रार्थना है... निस्संदेह यह विषय मुझे और मेरे कई मित्रों को व्यस्त कर रखा है... कई स्थितियों और समय में मानव अपने आप से यह प्रश्न करता है कि मै इस संसार में क्यों उपस्थित हूँ ? यह अप्रसन्नता क्यों है? मानवता के बीच, बल्कि मानव और ब्रह्माण्ड के बीच यह संघर्ष क्यों है? .... क्या यह मुख्य प्रश्न नही है ? ....

राषिद: हाँ। वास्तविक रूप से मुख्य है। मेरा अनुमान है कि इसका कारण पश्चिमी मानव का नैतिक और सांस्कृतिक विन्यास है। किन्तु संघर्ष की अनिवार्यता एक महत्वपूर्ण कारण है, जिस पर पश्चिम की भौतिक सभ्यता निर्भर है। पश्चिमी आधुनिक सभ्यता दो प्राचीन सभ्यता: यूनानी और रोमानि सभ्यता से व्युत्पन्न है, इन दोनों सभ्यताओं में मुख्य एक विचार संघर्ष की अनिवार्यता है: प्रभु के बीच संघर्ष, मानव और प्रभु के बीच संघर्ष, मानव और प्रकृति के बीच संघर्ष, भलाई और बुराई के बीच संघर्ष। इस के साथ-साथ भौतिक वाद के कारण पैदा होने वाली आध्यात्मिकता से दूरी है। यह विषय आधुनिक पश्चिमी सभ्यता की विशेषता है ....

माइकल: तुम ऐसे बात कर रहे हो, जिससे यह लगता है कि तुम्हारे पास कोई चमत्कारी समाधान है, जो तुम मानव के सामने प्रस्तुत कर सकते हो।

राषिद: सच्चा ईमान (विश्वास) रखने वाले मुसलमान के पास इस समस्या के प्रति कुछ संदेह या भ्रम नही है। मुसलमान जो भी हो, वह अपने इस्लाम के द्वारा यह ज्ञान प्राप्त कर लेता है कि वह कहाँ से आया है ? उसका परिणाम क्या होगा ? उस संसार की सभ्यता क्या है ?, जिसमें वह जीवन-यापन कर रहा है ? इस जीवन का लक्ष्य क्या है ? इस सांसारिक जीवन का महत्व क्या है ? और संसार में उसका क्या मानवीय कर्त्तव्य बनता है ?

माइकल: मेरा प्रश्न अभी बाक़ी है, बल्कि तुम ने तो प्रश्नों को और बडा दिया । इन प्रश्नों के उत्तर के लिए इस्लाम धर्म के क्या विचार है ?

राषिद: मुसलमान की यह भावना होती है कि वह ब्रह्माण्ड और उसके भागों के साथ संयुक्त है। यह सारी चीज़े अल्लाह की प्रशंसा, और उसके अनुयायी बनने में शीलवान मानव के साझीदार है, जो खुली विधि के रूप में प्रकट होती है, जैसा

कि हमारे भौतिक संसार में। या वृत्ति के प्रकार होती है, जिसकी विधी हमारे ज्ञान से बाहर होती है ... निश्चित रूप से पवित्र ख़ुरआन ने 30 से अधिक बार शब्द तस्बीह (प्रशंसा) के द्वारा यह वर्णन किया कि ब्रह्माण्ड की हर चीज़ अल्लाह की प्रशंसा करती है। इस शब्द के अतिरिक्त कई बार यही अर्थ पवित्र ख़ुरआन में आया है। इसी प्रकार समझ-बूझ रखने वाला हर मुसलमान यह जानता है कि ब्रह्माण्ड के इस सामूहिक प्रार्थना का वह एक सदस्य है, जो अल्लाह की प्रशंसा करता है। वह ब्रह्माण्ड और उसके भागों के साथ संपूर्ण रूप से संयुक्त है, न कि संघर्ष और द्वेष की स्थिति में।

इसी प्रकार मानव प्रकृति से प्रभावित होता है, उससे प्रेम करता है, और उसको अपना दोस्त समझता है न कि दुशमन। किन्तु पवित्र ख़ुरआन ने स्पष्ट किया है कि ब्रह्माण्ड की हर चीज़ मानव की सेवा में तत्पर है। पवित्र ख़ुरआन ने 20 से अधिक बार इसी शब्द (तस्ख़ीर) से विवरण किया, और दूसरे शब्दों से कई बार इसी अर्थ का चर्चा किया।

माइकल: इस का लक्ष्य क्या है ? और इससे क्या परिणाम मिलने वाला है ?

राषिद: जब हम यह ध्यान दें कि मानव आत्मिक व प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए, और अपनी मानवता के अनुसार जीवन-यापन करने के लिए किस चीज़ की इच्छा रखता है, तो हम देखेंगे कि मानव की यह इच्छा 5 शब्दों में प्रकट होती है: 1) अनुसरण करना, 2) झुकना, 3) आदेशों का पालन करना, 4) एकाग्रिचित्त होना, 5) सुख । मानव की यह इच्छा वास्तविक रूप में बंदगी के उस छाया तले ही पूरी होगी, जिसके तले सारा ब्रह्माण्ड चल रहा है। हम यह नोट कर सकते हैं यह पाँच शब्द ही इस्लाम का अर्थ है।

माइकल: मैरी आशा है कि तुम अपनी बात का अधिक विवरण करो ।

राषिद: मानव का ब्रह्माण्ड के साथ संबंधित होने के विचार का महत्वपूर्ण फल यह है कि मानव स्वयं अपने आप में और अपने समाज में आंतरिक सुख की भावना प्राप्त करलेगा, और एकत्व सिद्धांत के अनुभव के साथ जीवन यापन करेगा। यही वह विषय है जिससे मानव के लिए भावनाओं की इकाई से आचार को नियंत्रित रखने की इकाई की ओर जाना सरल होगा, और उसके जीवन में संतुलन पैदा होगा, ऐसा संतुलन जो प्रत्येक मानवीय आयाम (आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक) की ओर ध्यान देता है।

इसी प्रकार जो मुसलमान यह ज्ञान रखता है कि अल्लाह ने सूचना दी है कि पृथ्वी में पायी जाने वाली सारी चीज़े मानव की सेवा के लिए बनायी गयी है: वही तो है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन की सारी चीज़े पैदा की। (अल-बक़रा, 29) और ईशवर ने यह भी कहा: जो चीज़ें आकाशों में हैं और जो धरती मे हैं, उसने उन सबको अपनी ओर से तुम्हारे काम में लगा रखा है। (अल-जासिया, 13) वह

मुसलमान यह ज्ञान रखता है कि अल्लाह उसके लिए इस ब्रह्माण्ड का निर्माण किया हो, और ब्रह्माण्ड को उसकी सेवा के लिए बनाया हो, फिर उसका इस ब्रह्माण्ड से कोई संबंध या रिश्ता न हो। किन्तु अल्लाह ने जिस चीज़ को मानव की सेवा के लिए बनाया है, उस से मानव के संबंध का विवरण करना आवश्यक है। जब बात यह हो तो इस की भी आवश्यकता होगी कि अल्लाह ऐसा ज्ञान अवतरित करे, जिससे मानव और इस ब्रह्माण्ड के बीच का यह संबंध अटूट हो। इसलिए कि अल्लाह ने कहाः और सूर्य, चन्द्रमा और तारे भी बनाए, इस प्रकार कि वे उसके आदेश से काम में लगे हुए हैं। सावधान रहो, उसी की सृष्टी है और उसी का आदेश है। (अल-आराफ़, 54) और ईशवर ने यह भी कहाः क्या मनुष्य समझता है कि वह यूँ ही स्वतंत्र छोड़ दिया जायेगा ? (अल-क़ियामह, 36) यानी वह बिना किसी नियम और आदेश के यूँ ही इस संसार में व्यवहार करता जायेगा। जब स्थिति यह हो, तो मुसलमान के लिए शिक्षा ग्रहण करना, और अपने धर्म में उन चीज़ों की खोज करना ज़रूरी है, जिससे पृथ्वी पर सामाजिक व धार्मिक न्याय उपयुक्त हो।

इस्लाम इसी नियम के अनुसार आगे बढता है, ताकि जीवन के लिए एक संपूर्ण विधि प्रदान करें, जिससे मुसलमान को अपने ईशवर के साथ आध्यात्मिक और प्रार्थना में संबंध जुड जाये। इसी प्रकार इस्लाम मुसलमान के व्यवहार, जैसे शादी-ब्याह, तलाक़, लेन-देन.... और मुसलमान के रीति-रिवाज जैसे खाने-पीने, सोने-उठने, वस्त्र धारण करने, घर से निकलने और प्रवेश करने, यहाँ तक की व्यक्तिगत स्वच्छता में भी इस्लाम मुसलमान के जीवन को क्रमानुसार बनाता है.... इस्लाम मुसलमान को अपने समाज के साथ, अपने देश के साथ, और अन्य समाजों के साथ संबंध जोड़ता है, ताकि जीवन के विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्र, जैसे प्रशासनिक नियम, आर्थिक, राजनीतिक, सभ्यतागत और सामाजिक क्षेत्रों का शामिल हो .... इस्लाम धर्म इन्हीं नियमों के अनुसार आगे बढता है, ताकि एक संपूर्ण समूह का संघटन करे, जिसमें जीवन के सारे भाग शामिल हो।

धर्म जिस प्रकार से मुसलमानों कि भावनाओं का मार्गदर्शन करता है, उसी प्रकार उसके लिए नियम बनाता है, और न्याय व इन्साफ की तराज़ू प्रदान करता है। मुसलमान को यह हुक्म देता है पृथ्वी का पुनर्निर्माण करें, और ब्रह्माण्ड व मानवता की गहराइयों तक पहुँचने का प्रयास करें .... यह सब अल्लाह के साथ जुडे हुए संबंध और उसकी बंदगी के संदर्भ मे होगा। जब मानवीय जीवन के दैनिक आचार अल्लाह के तरीक़ों के साथ संबंधित होंगे, तो वह अल्लाह की प्रार्थना का रूप धारण करलेगा ।

माइकलः तुम ने जो कुछ कहा, उससे मेरे अन्दर योद्धापन व अपराधी व्यवहार का भय अधिक हो रहा हो। या साफ शब्दों में यह कहो धर्म का जीवन पर प्रभाव से भय हो रहा है।

राषिदः हमारे लिए यह जानना आवश्य है कि हर विषय के लिए एक प्रणाली है, जिसके अनुसार उस विषय के भाग संघटित हो जाते हैं। किन्तु हर भाग के लिए उसका एक स्थान, और उसका विशेष लाभ होता है। इन भागों को एकीकृत में जोड़ने से इस प्रणाली का लाभ प्रकट होता है। उसका सक्रीय करण पूर्ण होता है, और उसका सामान्य लक्ष्य प्राप्त होता है। इसी को अल्लाह ने अपनी वाणी में संतुलन के नाम से विवरण कियाः उस ने आकाश को ऊँचा किया और संतुलन स्थापित किया - कि तुम भी तुला में सीमा का उल्लंघन न करो। (अर-रहमान, 7-9) संतुलन का अर्थ न्याय है, और यह न्याय हर विषय में होगा। जिस प्रकार से यह ब्रह्माण्ड संतुलन और ठीक अंदाज़े के अनुसार स्थापित हुवा है, और इन्ही पर कुल प्रणाली और आंशिक प्रणाली निर्धारित है। इसी प्रकार से इस ब्रह्माण्ड के प्रजापति द्वारा अवतरित किया हुवा यह धर्म भी संतुलन और न्याय पर आधारित है।

किन्तु सन्तुलन रखना और अधिकारों का अत्याचार न करना इस्लाम धर्म की एक सामान्य विशेषता है। इसी को मानव का स्वयं अपने आप के साथ व्यवहार में, और अन्य लोगों के साथ व्यवहार में मध्यस्त, संयम और न्याय का नाम दिया जाता है।

मानव का मध्यवर्ग होना, स्वयं अपने आप के प्रति विचारों में संयम होना, और स्वयं अपने आप के प्रति निर्धारण कर लेना, अधिकतर समय में अन्य लोगों के प्रति विचारों में और निर्णय लेने में सहायक होता है। इसी मध्यवर्ती का अर्थ धार्मिक पुरुषों की प्रार्थना में आया है, जिसका अल्लाह ने अपनी वाणी में इस प्रकार वर्णन कियाः हमारे रब। हमें प्रदान कर दुनिया में भी अच्छी दशा और आख़िरत में भी अच्छी दशा, और हमें आग (जहन्नम) की यातना से बचा ले। (अल-बक़रा, 201) इसी अर्थ में पवित्र ख़ुरआन की बहुत सी वाणी है। जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया है, उसमें आख़िरत के घर का निर्माण कर और दुनिया में से अपना हिस्सा न भूल, और भलाई कर जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है, और धरती में बिगाड़ मत चाह। (अल-क़सस, 77) जो ख़र्च करते हैं तो न तो अपव्यय करते हैं और न ही तंगी से काम लेते हैं, बल्कि वे इनके बीच मध्य-मार्ग पर रहते हैं। (अल-फ़ुरक़ान, 67) और अपना हाथ न तो अपनी गरदन से बाँधे रखो और न उसे बिल्कुल खुला छोड दो कि निन्दित और असहाय होकर बैठ जाओ। (बनी इस्राईल, 29) ।

माइकलः यह बात भी मेरे लिए चिंताजनक है आज कल मानव अपने भाई का ही खून चूसने लगा है, और नैतिकता का नाम व निशान नही रहा, यहाँ तक की परिस्थिति यह हो गयी कि जो शक्ति अल्लाह ने मानव को प्रदान की है, उसको प्रसन्नता, शांति और कल्याण का कारण बनने वाले कार्य के बदले उसका ऐसे कार्यो में उपयोग किया जा रहा है जो मानव के लिए नष्ट, अप्रसन्नता और

बरबादी का कारण है ... इस परिस्थिति की ओर इस्लाम का दृष्टिकोण क्या है ?

राषिदः यह परीक्षा स्थान है, जिसको इस जगत में मानव ने स्वयं अपने लिए बना लिया है, इसका कोई कारण नही है, सिवाय इसके कि मानव ने व्यर्थ प्रयास करते हुए, ऐसे उपकरण को चलाने की ज़िम्मेदारी ली, जिसके भागों को जोड़ने का उसको ज्ञान नही है। निस्संदेह इस मानवीय उपकरण के रहस्य का ज्ञान उसी को है जिसने इसका निर्माण किया। वही उसकी वृत्ति जानता है, और उसी को यह ज्ञान है कि मानव किस रूप-रेखा में संयुक्त होकर चल सकता है। वर्तमान काल में अगर मानव इस मूर्खता से अपने आपको दूर कर लें, और उन नियमों का पालन कर लें, जिसको इस उपकरण के बनाने वाले ने निर्धारित किया तो आशा है आज तक जो-जो बिगाड़ हुवा है, उन सब में फिर से सुधार पैदा हो जाये। वरना आज कल मानव जिस कष्ट, मुसीबत, घाटा, अप्रसन्नता और बरबादी के गड्ढे मे पडा हुवा है, उसका कोई इलाज नही।

माइकलः तुम यह कहना चाहते हो कि इस्लाम धर्म की विधि का पालन करने के अलावा कोई दूसरा मुक्ति का मार्ग नही है, वरना तो फिर मानव समाज अप्रसन्न जीवन-यापन करेगा ?।

राषिदः हाँ यही बात है, व्यक्तिगत स्तर पर, और सामूहिक स्तर पर भी, संसार में और परलोक में भी। क्योंकि मानव पर जो बोझ और ज़िम्मेदारी लागू की गयी है। उसके अनुभव के बिना कोई भी विषय इस संसार में मानव को उसकी निम्नता, व क्रूरता से रोक नही सकता। जब इस संसार में कोई व्यक्ति यह विश्वास करलें कि वह जो चाहे कर सकता है, और कोई उससे पूछ ताछ करने वाला नही है, न कोई उससे अधिक शक्तिवान है, जो उसके बुरे कार्य पर दण्ड देगा, तो फिर इस स्थिति में मानव की निम्नता व क्रूरता की कोई सीमा नही रह जाती है। जिस प्रकार से यह स्थिति व्यक्तिगत रूप से सही है, इसी प्रकार से यह स्थिति परिवार, समाज, या धरती के सारे वासियों के प्रति भी यही है। निस्संदेह यह हम सब के लिए हमारे प्रजापति व मालिक की बंदगी, और अनुसरणीय बनने में परीक्षा है।

मै व तुम और वह सारी चीज़े जिनको अल्लाह ने धरती पर रखा है, सब इस परीक्षा का सामना करते है। हम सब की बुद्धि, उदारता, कर्तव्य, को पूरा करने के अनुभव में परीक्षा ली जा रही है। किन्तु हम में से प्रत्येक का कर्तव्य यह बनता है कि वह यह सोंचे कि क्या वह अपना फर्ज़ पूरा कर रहा है, या अपने असली राजा के साथ विश्वासघात कर रहा है ?

मैं ने अपने आप में यह निर्णय लिया है कि मै वफादारी और बंदगी के मार्ग पर चलूँगा, हर उस व्यक्ति की आज्ञाकारिता से दूर रहूँगा, जो अल्लाह की आज्ञाकारीता से दूर है। .... निस्संदेह यही सुख का साधन है।

माइकलः रेल अपने आखरी स्टेशन पर पहुँच चुकी है.... चलो जल्दी करो।

देवत्व कानून (शरीअत)



देवत्व कानून (शरीअत)

निर्धारित समय पर मिलने के बाद माइकल ने बात प्रारंभ करने की इच्छा करते हुए यह कहाः
मैं ने आज प्राच्य विद्या विशारद की अद्भुत पुस्तक पढी है, इस पुस्तक मे लेखक ने इस्लामी नियम के प्रति कई विषयों का वर्णन किया है। मैं इन विषयों के प्रति तुम से चर्चा करना चाहता हूँ।
राजीवः यह बहुत ही मुख्य विषय है।
राषिदः अगर संभव हो, तो तुम एक के बाद एक विषय वर्णन करो, ताकि हम इनमें से प्रत्येक विषय का विस्तार से चर्चा करें।
माइकलः इस पुस्तक में यह लिखा है कि इस्लामी धर्म के नियम रूमानी नियम से बनाये गये हैं, और इन दोनों के स्पष्टीकरण में अनुकूलता पायी जाती है।
राषिदः मुझे यह कहने की अनुमति दो कि यह विचार बहुत पुराना है। आज कल के अधिकतर प्राचय विद्या विशारद यह विचार नही रखते। मैं ने स्वयं इस्लामी नियम और शरीअत के विशिष्ट रूसी प्राच्य विद्या विशारद से मुलाक़ात की। उसका नाम लियोनिद सुक्यानन है। उसने जो कुछ कहा, वह शब्द यह हैः वर्तमान काल में पश्चिमी आलोचकों में कोई भी यह विचार नही रखता कि इस्लामी नियम रूमानी नियम से बनाये गये। यह विचार 19 वीं शताब्दी में पश्चिम के कुछ आलोचकों का था। वर्तमान काल में पश्चिमी नियम बिना किसी शर्त और अनुबंध के यह मानते हैं कि इस्लामी नियम स्वतंत्र क़ानूनी प्रणाली है, जो रूमानी क़ानून से प्रभावित नही हुई है।
यह तो पहली बात थी। दूसरी बात यह कि इस्लाम धर्म के नियमों का स्त्रोत अन्य धर्मो के नियमों से संपूर्ण रूप में अलग है। जैसा कि मैं ने तुम्हारे सामने कई बार यह वर्णन किया कि इस्लाम एकीकृत संयुक्त प्रणाली है। इस्लामी नियम के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि वह प्रजा पर प्रजापति के उस अधिकार से संबंधित है, जिस के अनुसार प्रजापति प्रजा के निर्माण के लक्ष्य को पूरा करनेवाले आदेश लागू करता है, और उस अधिकार से भी संबंधित है, जिसके अनुसार प्रजा, प्रजापति के राज्य में संतान होने के कारण उसकी आज्ञाकारिता को न छोडे। इसीलिए इस्लाम धर्म के नियमों का स्त्रोत वही (रहस्योद्घाटन) है, जो पवित्र खुरआन रसूल की वाणी के रूप में उपस्थित है। हम में से प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि इस्लाम धर्म के रसूल निरक्षर थे, जो न लिखना जानते थे और न पढना। और जिन परिस्थितियों में रसूल ने जीवन-यापन किया है, उन में अन्य स्त्रोतों से (विशेष तौर पर जब की वह स्त्रोत विदेशी भाषाओं में हो) ज्ञान प्राप्त करना, या कम से कम इकट्ठा करने का कोई अवसर नही था।
प्राच्य विद्या विशारद डेविड डिसान्टे लाना कहता है किः यह प्रयास व्यर्थ है कि

हम दोः पूर्वी और पश्चिमी धर्मिक नियमों (इस्लामी और रोमानी नियम) को एक ही स्त्रोत से मिलायें। इसी प्रकार यह बात निश्चित हो चुकी है कि इस्लाम धर्म के नियम निर्धारित सीमाओं और स्थिर क़ानून रखते हैं। इनको हमारे धार्मिक नियमों से जोड़ना संभव नही है। इसीलिए कि इस्लाम वह धार्मिक नियम रखता है जो संपूर्ण रूप में हमारे विचारों के विपरीत है।
विभिन्न धार्मिक प्रणालियों के बीच कभी-कभी जो अनुकूलता प्रकट होती है, उसका कारण या तो मानवीय समस्याओं की अनुकूलता है, फिर इन समस्याओं का समाधान करने की विधियों में अनुकूलता है, जिस में कभी-कभी उस समय समानता हो जाती है, जब कि इन साधनों का स्तंभ मानवीय लाभ व नष्ट को ध्यान में रखना हो। या उन विषयों में अनुकूलता होती है, जिसका संबंध मानवीय वृत्ति से हो। जैसा कि इस्लाम धर्म के रसूल सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह वाणी हैः अभियोजक सबूत पेश करें और तिरस्कार करने वाला क़सम खाये।
माइकलः लेकिन इसलामी नियम का यहूदी धर्म और ईसाई नियमों से अनुकूल होने की संभावना बाक़ी रह जाती है। क्योंकि यह दोनों धर्म इस्लाम से पहले आनेवाले देवत्व धर्म है।
राषिदः बहुत जल्द मै तुम्हारी इस बात का उत्तर इस विषय के विशिष्ट पश्चिमी आलोचकों में से एक प्रसिद्ध आलोचक की बात से दूँगा। जर्मन के प्राच्य विद्या विशारद ज़ोज़ेफ शाख्त कहता हैः इसलामी नियम (शरिअत) एक आदर्श है। उसका एक विशिष्ट महत्व है, जिस के अनुसार इस्लाम धर्म को धार्मिक नियम का नाम दिया जा सकता है। बल्कि इस्लाम से पहले के दो पवित्र नियम, जो कि धार्मिक नियम के लिए आदर्श समझे जाते हैं, यह दोनों ऐतिहासिक, व भौगोलिक के संदर्भ में इसलामिक नियम से अधिक निकट है। (वह दोनों पवित्र यहूदी, और ईसाई नियम है।) यह दोनों नियम इस्लाम धर्म के नियमों से संपूर्ण रूप से विपरीत है। इसका कारण यह है कि इस्लाम धर्म पिछले दो धर्मो के नियमों से अपनी रूप रेखा में अधिक विशाल है। क्यों कि धार्मिक संदर्भ से क़ानून के ऐसे भागों में सोंच-विचार के बाद यह नियम सामने आये हैं, जिनको एक रूप में ढाला नही जा सकता था।
बल्कि जोज़ेफ शाख्त ने तो उस संभावनाओं के बिल्कुल विपरीत बात की है जो तुम ने कहा। वह कहता हैः .... हम यह देखते हैं कि भूमध्य सागर के दूसरी ओर इस्लाम धर्म क़ानून के प्रत्येक भाग में बहुत गहरा प्रभाव डाला है ... और अन्य धर्म वालों, जैसे यहूदी और ईसाइयों के क़ानून पर भी इस्लाम धर्म का प्रभाव हुवा है। यह वह लोग हैं कि जिनको इस्लाम ने अपनी दयालुता में शामिल करलिया है, और वे इसलामी राज्य में जीवन-यापन किये हैं। इस बात में कोई संदेह नही कि पूर्व के ईसाई गिरजा घरों के दो अलग-अलग शाखः जेकोबिन्स और निस्टोरियन के अनुयायी ने इस्लामिक शरिअत के नियमों की स्वतंत्रता से उद्धरण करने में कोई संकोच नही किया। यह उद्धरण हर उस विषय में था, जिसके प्रति मानव

यह विचार करता हो कि वह मुसलमान जज़ की दृष्टि में आता है....

राजीवः ऐसा लगता है कि तुम इस्लामिक शरिअत और विभिन्न धार्मिक नियमों के बीच का अंतर हमारे सामने विवरण कर रहे हो।

राषिदः असंभव है कि मैं सारे अंतरों का तुम्हारे सामने विवरण करूँ । विशेषता के साथ उस समय जब कि तुम किसी नियम को निर्धारित न किया हो, जिसके साथ तुलना की जा सके। लेकिन यह संभव है कि मैं इस्लामिक शरिअत की विशेषता का वर्णन करूँ, और तुम इसका अन्य नियमों के साथ तुलना करलो।

राजीवः ठीक है।

राषिदः इस्लामिक शरिअत की महत्वपूर्ण विशेषता यह हैः

1. देवत्व स्त्रोतः (जैसा कि मैं ने तुम से पहले भी कहा) इस्लामिक शरिअत दो महत्वपूर्ण मूल से (बुनियाद) स्थापित हुई है। वह दो बुनियाद पवित्र खुरआन और मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम की वाणी है। जहाँ तक मानव की भूमिका का प्रश्न है, तो वह इस शरिअत में सोंच-विचार करने, इसी के अनुसार अन्य नियम बनाने, और वास्तविक जीवन में उपयोग करने से प्रकट होते हैं। इस्लामिक शरिअत के देवत्व होने का एक रूप यह भी है कि उसके आदेशों का लक्ष्य प्रजा को अपने प्रजापति से संबंधित रखना है।
2. स्थिरता और लचीलापन का इकट्ठा होनाः इस्लामिक शरिअत की स्थिरता उसके नियम, और उन वास्तविक आदेशों मे प्रकट होती है, जिसमें न कोई परिवर्तन होता है, और न उसमें सुधार की आवश्यकता होती है। यह वह कारण है जिससे इस्लामिक शरिअत अन्य विभिन्न नियमों में घुल-मिल जाने से सुरक्षित रहती है। इस्लामिक शरिअत का लचीलापन उसके शाख, अंश और उन विषयों में प्रकट होता है, जिसमें अनुमान की संभावना है। यह वह कारण है जिससे घटनाओं के अनुसार नियम बनाने की शक्ति पैदा होती है, और युग की नवीन समस्याओं का समाधान करने की शक्ति मिलती है।
3. (समय, स्थान, मानव और आदेशों के रूप में) व्याप्त होना। समय के रूप में इस प्रकार की इस्लामी शरिअत हर समय और हर लोक में प्रभुत्वशाली है। स्थान के रूप में इस प्रकार की भौगोलिक सीमायें उसकी आज्ञाकारिता की दक्षता को सीमित नही रख सकती है। मानव के रूप में इस प्रकार कि इसलामिक नियम प्रत्येक मनुष्य को अपने आदेश सुनाते हैं। और आदेश के रूप में इस प्रकार कि वह जीवन की हर समस्या में व्याप्त है, किन्तु इस्लामिक नियम मानव को जीवन के प्रत्येक चरण और प्रत्येक स्थिति में मार्गदर्शन करते हैं। मानव के साथ, चाहे वह अभी भ्रूण के रूप में हो, या शिशु के रूप में हो, या बालक के रूप में हो, या युवावस्था के रूप में हो, या बूढ़ा हो, इस्लामिक नियम उसके साथ व्यवहार करते हैं, मृत्यु के बाद मानव को सम्मान देते हैं, और मानव को अपने प्रभु के साथ, स्वयं अपने आप के साथ, और अन्य लोगों के साथ उसके संबंध को दृढ बनाते हैं।

4. वास्तविकताः इस्लामिक नियम की वास्तविकता आदोशों को लागू करने और अपने अनुयायियों के साथ व्यवहार करने मे उनके वास्तविक जीवन का ध्यान रखने में प्रकट होती है। किन्तु इस्लामिक नियम ने मानव के शारीरिक, आध्यात्मिक, मानसिक, व्यक्तिगत और सामूहिक क्षेत्रों का ध्यान रखा। और अपने आदेशों को लागू करते समय सदस्य या समूह की दक्षता को व्यर्थ नही किया।
5. मध्यवर्तीः इस्लामिक नियम ने अपने आदेशों को लागू करते समय विभिन्न धार्मिक नियमों के बीच संतुलन बनाया रखा। किन्तु इस्लामिक नियम मध्यवर्त है। यह वह कारण है जिससे इन नियमों में शक्ति और स्थिरता पैदा होती है। उदाहरण के रूप में इसलामिक नियम ने प्रत्येक व्यक्ति को नियमानुसार संपत्ति रखने का अधिकार दिया है, जो कि कम्यूनिस्ट प्रणाली में संपत्ति के अधिकार को न मानने, और पूंजीवाद प्रणाली में बिना किसी प्रतिबंध के संपत्ति रखने का अधिकार देने के मध्यवर्त है। इस्लामिक नियम ने बहादुरी की ओर प्रोत्साहित किया है जो कि कायरता और दुस्साहस के मध्यवर्त है। ख़र्च करने का आदेश दिया, जो कि कंजूसी और फुज़ूल खर्चो के बीच है... इसी प्रकार इस्लाम के अन्य नियम मध्यवर्त है।
6. संसार और परलोक में मिलनेवाले बदले को इकट्ठा करनाः अन्य क़ानूनी प्रणालियों के अनुसार संसार में अपने आदेशों का उल्लंघन करनेवाले को दण्ड देने में इस्लामिक प्रणाली भी नियम रखती है। और सांसारिक नियम मानव को परलोक में दण्ड देने की क्षमता नही रखते हैं, जब कि इस्लामिक नियम अपने आदेशों का उल्लंघन करने वाले को परलोक में मिलने वाले दण्ड से चुनौती देते हैं। किन्तु इस्लामिक नियम एक साथ दो बदले अपने अंदर रखते हैं।
7. इस्लामिक नियम का मानवीय आवश्यकताओं की ओर ध्यान देना, और उन विषयों में ज्ञान से टकराऊ न रखना, जिससे उसका संबंध है।

माइकलः प्रिय राषिद। तुम तो सदा चालाकी व होशियारी से अपने धर्म की छवि को सुंदर बनाने का प्रयास करते रहते हो।

राषिदः मेरे मित्र समस्या यहाँ पर किसी धर्म के प्रति पक्षपात करना नही है, वरना तो तुम जर्मनी के प्रसिद्ध कवि गोतह के इस विचार के प्रति क्या कहोगेः इस्लामी शिक्षाओं के संदर्भ से पश्चिमी नियम असंपूर्ण है, और हम पश्चिम वाले हमारे सारे ज्ञान के बाद भी अभी तक उस स्थान को नही पहूँच पाये हैं, जहाँ तक मुहम्मद पहुँच चुके, और कोई भी व्यक्ति मुहम्मद से कभी आगे नही बढ़ सकता। क्या गोतह ने भी यह बात इसलिए कही कि वह मुसलमान था ?।

राजीवः तुम ने जो इस्लामी नियम की विशेषता का अंतिम अंश वर्णन किया है, उसका अधिक विवरण ज़रूरी है।

राषिदः मैं तुम्हारे सामने इस्लामिक शरिअत के ज्ञान से टकराऊ न करने के प्रति

एक उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ। वह यह कि इस्लामिक नियम की यह बात मशहूर है कि वह माँस खाये जानेवाले जानवरों को एक निर्धारित तरीक़े से ज़िबह (वध) करने के आदेश पर अटल है। जब कि वह इन जानवरों की प्रजातियाँ निर्धारित नही किया। इसके अतिरिक्त इस्लाम धर्म ने वध के लिए अन्य शर्ते भी लगायी है। मैं तुम्हारे साथ केवल वध के तरीक़े के प्रति चर्चा करूँगा ।

इस्लामिक तरीक़ा यह चाहता है कि जानवर को जीवित होते समय उसके गले की नस से अंतिम नस तक काटा जाय, जानवर की गर्दन अलग न की जाय। इससे वध के बाद मांसपेशि में संचालन रह जाती है, और इससे जानवर को आज़ादी के साथ तडपने का अवसर मिलता है, और ख़ून की एख बडी मात्रा शरीर से निकल जाने में सहायता मिलती है। इस्लाम के अलावा वध के अन्य तरीक़ों में जानवर को बिस्मिल्लाह, या अल्लाह का नाम लिए बिना मारा जाता है, और ग़लत तरीख़ो, जैसे गला घोंट कर, बिजली द्वारा प्राणदण्ड देकर, या गोली मारकर हत्या की जाती है। इन तरीक़ो से वध करने के कारण जानवर के अंदर मांसपेशि के संचलन की क्षमता नही रहती है, जो जानवर के शरीर में खून रह जाने का कारण बनता है, और इससे जानवर के जिस्म में एक क्यारी बन जाती है, जिस में विभिन्न कीटाणु फलने-फुलने लगते हैं, और जब यह ख़ून प्रवाहित होता है, तो इससे मानव के शरीर में ज़हरीले कीटाणु पैदा होते हैं। इस के साथ-साथ इन तरीको में वध करने से जानवर अधिक नष्ट से पीडित होता है।

मुझे एक और अनोखी बात कहने दो। वह यह कि जानवर पर बिस्मिल्लाह कहने की शर्त लगाना है। हालांकि प्रारंभिक या भौतिक दृष्टि से इसकी आवश्यकता नही है। क्योंकि भौतिक दृष्टि के अनुसार जानवर को भोजन में तबदील करने के लिए उसकी हत्या के अलावा कोई और चीज़ महत्व नही होती है। लेकिन इस्लाम की दृष्टि में हर चीज़ अल्लाह के एकीकृत सिद्धांत से संबंधित है, और धार्मिक नियम बडे-बडे प्रश्न (अल्लाह-ब्रह्माण्ड-मानव-परिणाम) के उत्तेरों के अनुसार धर्म की संयुक्त प्रणाली से संबंधित है। इस परिस्थिति में मानव अल्लाह की प्रजा का एक सदस्य होने के कारण उसको किसी दूसरे सदस्य का अत्याचार करने, या उसकी हत्या करने का अधिकार नही होगा। हाँ अगर इस आत्मा के प्रजापति की अनुमति मिल जाये तो बात अलग है। चाहे हत्या किसी जानवर की जान बचाने के लिए ही क्यों न हो। इसीलिए वध के समय बिस्मिल्लाह पढना अल्लाह की राजतंत्र की घोषणा करना है। इसी प्रकार मुसलमान की ओर से होने वाला यह कार्य उसी प्रजापति की अनुमति से हो रहा है, जिसने उसके लिए यह कार्य वैध ठहराया, और इस बात की घोषणा करना है कि मुसलमान संपूर्ण रूप से अपने प्रभु की आज्ञाकारिता में लगा हुवा है।

माइकलः मै यह स्वीकार करता हूँ, इस्लामिक नियम का परिचय, उसकी सत्यता और रहस्य का ज्ञान गंभीर रूप से अध्ययन की आवश्यकता रखता है।

सभ्यता के तथ्य



सभ्यता के तथ्य

राजीव कुछ नये चित्र दिखाते हुए अपने मित्रों के साथ बात-चीत शुरू की, और यह कहा कि

यह चित्र मैंने अपने एक मित्र के द्वारा आमंत्रित करने पर टर्की की यात्रा मे ली थी। निस्संदेह मैं इस अद्भुत देश (टर्की) में सभ्यता का प्रभाव देखा तो मैं बहुत आश्चर्यचकित हो गया। मेरे मित्र ने इस्लामिक सभ्यता के प्रभाव से संबंधित कुछ नयी जानकारी मुझे दी, और मुझे उन चीज़ों का पुनः स्मरण करने पर मजबूर किया, जो मै अपने देश भारत में देखा ।

माइकलः लेकिन मेरे पास इस्लामिक सभ्यता के प्रति कुछ ऐसी जानकारी है, जो इसका दूसरा रूप प्रकट करते है ।

राषिदः मेरे विचार से हम सब से पहले सभ्यता की अवधारणा निर्धारित कर लें। फिर अगर हम इस्लामिक सभ्यता को जानना चाहे तो उसका मूल्यांकन करें।

माइकलः मेरे अनुमान से हम सभ्यता की अवधारणा पर सहमत है।

राषिदः ठीक है। हम पहले इसको निर्धारित कर लेते हैं, फिर इसी पर हम सहमत हो तो उसी के अनुसार आगे बढते हैं।

माइकलः सभ्यता मानवीय गतिविधि (बौद्धिक व भौतिक) का उत्पाद है। जिसके द्वारा कोई भी समाज एक निर्धारित समय में अपने आविष्कारों और उन्नती को प्रदान करता है।

राजीवः मै **माइकल** के विचार का कुछ अधिक स्पष्ट करना चाहूँगा। वह यह कि सभ्यता सामाजिक प्रणाली है, जो मानव को अपनी सभ्यतागत उत्पाद की उन्नती में सहायक होती है। निस्संदेह सभ्यता 4 विषयों से संयुक्त होती है। 1) आर्थिक संसाधन, 2) राजनीतिक व्यवस्था, 3) नैतिक परंपरा, 4) विज्ञान और कला का अनुवर्तन ।

सभ्यता प्रथम रूप से ज्ञान और कला की खोज पर आधारित होती है। ज्ञान का क्षेत्र तकनीकि आविष्कारों और समाज शास्त्र में प्रकट होता है... और कला का क्षेत्र निर्माण की कला, मूर्ति कला और उन विभिन्न कलाओं में प्रकट होता है जो उन्नति में सहायक होते हैं। किन्तु कला और ज्ञान दो महत्वपूर्ण भाग हैं, जो किसी भी सभ्यता को आगे ले जाते हैं।

राषिदः सब से पहले मैं हमारे मित्र **माइकल** की बात पर टिप्पणी करना चाहता हूँ। जब हम उस अवधारणा को मान लें, जिसकी चर्चा **माइकल** ने की, तो इस बात की ओर ध्यान देना आवश्यक होगा कि सभ्यता प्रथम स्थान में मानवीय उत्पाद है। इसका परिणाम यह निकलता है कि मानवीय तत्वों में से प्रत्येक तत्व के प्रति विचार करने की आवश्यकता है। वरना वह सभ्यता असंपूर्ण हो जायेगी, या फिर उसको सभ्यता का नाम ही न दिया जायेगा ... यह एक बात थी।

और दूसरी बात यह कि सभ्यता की अभिव्यक्ति हर समाज में अलग-अलग होती है। क्योंकि सभ्यता उन मूल्यों का प्रतिबिंब है, जिन पर समाज निर्भर होता है। फिर इसके बाद इन मूल्यों के सही या ग़लत होने, मानवता के साथ इसके संयुक्त होने, और वातावरण के साथ उपयुक्त होने को, किसी भी सभ्यता के अच्छे होने, या बुरा होने के लिए मानक की रूप में देखा जायेगा। .... यही वह कारण है जिससे हमें विभिन्न सभ्यताओं के बीच खुला अंतर नज़र आता है, और वह कठिनाइयाँ प्रकट होती हैं, जो पश्चिमी सभ्यता, विशेष रूप से आधुनिक सभ्यता की छाया में मानवता सामना कर रही है।

माइकलः मै समझता हूँ कि प्रिय राषिद इस्लामिक सभ्यता के अंधकारिक भागों के प्रति चर्चा करने से दूर भाग रहा है, जो कि हम उसके सामने प्रस्तुत करने वाले हैं।

राजीवः शायद हमारी यह बात-चीत राषिद से इस्लामिक सभ्यता की विशेषताएँ, और अन्य सभ्यताओं से इस्लामिक सभ्यता विपरीत होने के कारण, विवरण करने की प्रार्थना करती है।

राषिदः ठीक है। इस्लामिक सभ्यता मानव, ब्रह्माण्ड, और जीवन के प्रति इस्लामिक विचार पर आधारित है। मै इसकी महत्वपूर्ण विशेषताएँ तुम्हारे सामने रखूँगा। लेकिन मुझे इस बात की भी अनुमति दो कि मैं इन विशेषताओं की आधुनिक पश्चिमी सभ्यता के संस्थानिक विषयों से तुलना करूँ।

इस्लामिक सभ्यता की महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्न लिखित चीज़ो में प्रकट होती है:

- इस्लामिक विचार (जीस पर यह सभ्यता आधारित है) में मानव एक प्राणी, और भक्त है। इस धरती में वह अल्लाह का प्रतिनिधि है। अल्लाह की प्रणाली का विश्वासी है। स्वतंत्र और निर्णय लेने का अधिकार रखता है। इसी के अनुसार मानव उस अच्छे कार्य करने का ज़िम्मेदार है, जो इस प्रणाली पर आधारित है। इसी प्रकार मानव सांसारिक जीवन और परलोक में अपने स्वैच्छिक कार्य का भी ज़िम्मेदार है।

आधुनिक पश्चिमी सभ्यता का दृष्टिकोण मानव के प्रति यह है कि वह ब्रह्माण्ड का नायक और स्वतंत्र है। कोई भी उस पर प्रतिबंध नही लगा सकता। केवल वही ब्रह्माण्ड और स्वयं अपने आप के लिए इच्छा के अनुसार जो चाहे निर्धारित करलें। मानव का अधिकार ध्यान उसकी रूचियों और हवस के आस-पास घूमता है, और यह वह विषय है, जिसमें मानव के साथ अन्य पशु-पक्षी भी साझीदार है। पश्चिमी सभ्यता का विचार यह है कि मानव की सृष्टि व्यर्थ हुई है, उसके लिए कोई पूछ-ताछ नही है। सिवाय उन विषयों मे जिसको वह स्वयं निर्धारित करलें। इसी प्रकार पश्चिमी सभ्यता में मानव के सारे लक्ष्य निम्न व सांसारिक हैं।

- इस्लामिक विचार में ब्रह्माण्ड भी मानव के समान एक जीव और भक्त है। लेकिन ब्रह्माण्ड को मानव की सेवा के लिए बनाया गया है। इसी कारण अल्लाह की प्रणाली का आज्ञाकारी मानव इस ब्रह्माण्ड के साथ संयुक्त हो जाता है,

एकीकृत का रूप धारण करलेता है, और सुख-चैन से प्रसन्न होता है।

आधुनिक पश्चिमी सभ्यता का दृष्टिकोण ब्रहमाण्ड की ओर यह है कि मानव और ब्रहमाण्ड के बीच एक संघर्ष है न कि सामंजस्य। इसी कारण इन दोनों के बीच कठिन युद्ध है।

- इस्लामिक विचार में, जीवन, ब्रहमाण्ड और मानव के प्रजापति की संपत्ति है। जीवन एक बडी यात्रा का विश्राम घर है। वह यात्रा उस जीवन से बहुत बडी है जो हम देख रहे हैं। एक सांसारिक जीवन है, जो प्रत्येक मानव के जन्म से मृत्यु तक समाप्त हो जाता है, और दूसरा परलोक जीवन है, जो मृत्यु के बाद होता है। मानव को जीवन, ब्रहमाण्ड, और मानव के प्रणाली अल्लाह को संतुष्ट करने वाले कार्य से सांसारिक जीवन के निर्माण का आदेश दिया गया है। सांसारिक जीवन परलोक जीवन के लिए खेत के समान है, और सांसारिक जीवन में मानव के कार्य का बदला और हिसाब-किताब भी है।

पश्चिमी सभ्यता जीवन की ओर इस दृष्टिकोण से देखती है, केवल वही संसार है, और न परलोक पर, न हिसाब-किताब पर, और न प्रतिफल (बदला) मिलने पर विश्वास रखती है। इसीलिए पश्चिमी सभ्यता मानव के लिए केवल इस जीवन में जीने का अवसर मानती है।

इन सब बातों से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पश्चिमी सभ्यता का इस्लामिक सभ्यता के साथ विचारों में रिशता जोड़ना असंभव है, क्योंकि दोनों दो अलग-अलग किनारों पर खडी है।

माइकलः प्रिय राषिद तुम मुझे यह कहने की अनुमति दो कि मैं तुम्हारी बातों में दो मुद्दों के प्रति अपना विचार प्रकट करूँ।

प्रथमः तुम पश्चिमी सभ्यता के एक मुख्य भाग को भूलगये। वह भाग ईसाई धर्म, और इसी प्रकार यहूदी धर्म है। किन्तु तुम यह कहते हो कि पश्चिमी सभ्यता का जीवन के प्रति दृष्टिकोण यह है कि वह न परलोक पर, न हिसाब-किताब पर, और न प्रतिफल (बदला) पर विश्वास रखती है। तुम्हारी यह बात सही नही है। क्योंकि यह दोनों धर्म परलोक पर विश्वास रखते हैं। हाँ यह बात भी है कि विस्तार के रूप से इस विश्वास का अर्थ दोनों धर्म में अलग है।

द्वितीयः तुम्हारी इस बात-चीत में वह मूल स्तंभ वर्णन किये गये है, जिन पर इस्लामिक सभ्यता आधारित है, और इन स्तंभों कि पश्चिमी सभ्यता के साथ तुलना की गयी। तुमने तो उन विशेषताओं के प्रति कुछ कहा ही नही, जिन पर इस्लामिक सभ्यता आधारित है। जब कि हमारे मित्र राजीव ने तुमसे इसी का अनुवाद किया था।

राषिदः पहले विषय के प्रति मै तुम से विरोध करता हूँ। क्योंकि जिन स्तंभों पर सभ्यता आधारित होती है, और समाज के वह विषय जिन की यह सभ्यता आविष्कार करती है, इन दोनों में बडा अंतर है। इस बात में कोई संदेह नही कि

पश्चिमी सभ्यता में यहूदी व ईसाई धर्म का प्रभाव हुवा है। लेकिन बिल्कुल हम यह नही कह सकते कि पश्चिमी सभ्यता इन दो धर्मों के संदर्भ में स्थापित हुई है, बल्कि हम संपूर्ण रूप से इसके विपरीत बात की पुष्टी कर सकते हैं। वह यह कि पश्चिमी सभ्यता सामान्य रूप से धर्म के साथ विरोध करने पर, और विशेष रूप से गिरजा घर के द्वारा नियंत्रण रखने पर आधारित है, यानी केवल बौद्धिक और सांसारिक विचारों पर पश्चिमी सभ्यता की स्थापना हुई है। और यही वह विषय है जो लौकिक प्रणाली में उभर कर सामने आता है, जो कि धर्म को जीवन से दूर रखता है। मेरा अनुमान है कि तुम दोनों मेरे इस विचार से सहमत हो।

दूसरे विषय के प्रति मैं तुम से सहमत हूँ। लेकिन मै यह कहना चाहूँगा कि इस्लामिक सभ्यता के इन स्तंभों से उसकी विशेषतायें भी प्रकट होती है, और वह यह हैः

- इस्लामिक सभ्यता की सब से महत्वपूर्ण व्यवसाय मानव का निर्माण है। इसका लक्ष्य मानव के आयाम का ध्यान रखना, मानवता की इच्छाओं को तृप्त करना ब्रहमाण्ड के साथ मानव के सामंजस्य को उपयुक्त बनाना और उसके निर्माण के लक्ष्य को प्राप्त करना है।

- एक ओर से धर्म और संसार के बीच संबंध जोड़ना, और दूसरी ओर से धर्म, ज्ञान और बुद्धि के बीच रिश्ता पैदा करना, और इसी के अनुसार सभ्यतागत उत्पाद और विचारों का निर्माण करना है।

- मानवीय ज्ञान के स्त्रोतों में संयुक्ता व संतुलन पैदा करना। सारे तत्व, चाहे उसका संबंध लौकिक संसार से हो, य वह अलौकिक हो। सब के सब मानव की क्षमता के भीतर है, अपने विभिन्न धारणाओं से मानव इन तत्वों तक पहुँच सकता है। यह धारणाएँ एक दूसरे से संबंधित होती है.. किन्तु वृत्ति की धारणाओं के पीछे संवेदना की धारणा है, फिर संवेदना की धारणा के पीछे बौद्धिक धारणा है। फिर बौद्धिक धारणा उन चीज़ों का परिचय कराती है, जो वही (रहस्योद्घाटन) द्वारा प्रकट होनेवाले अदृश्य धारणाओं को स्वीकार करने, और उस पर विश्वास रखने की ओर ले जाती है।

राजीवः क्षमा चाहता हूँ प्रिय राषिद । **माइकल** ने यह कहा है कि वह इस्लामिक सभ्यता के कुछ अंधकारिक भागों का उसको ज्ञान है। मै तुम से यह विनती करता हूँ कि हम **माइकल** की बात सुने ताकि संपूर्ण छवि हमारे सामने प्रस्तुत हो।

माइकलः अंधकारिक भाग में महत्वपूर्ण विषय यह है कि इस्लामिक सभ्यता ने जिस देश की बुनियाद रखी है, वह तलवार की नोक पर स्थापित है, उसका संबंध शक्ति, और हिंसा से है।

राषिदः मेरे मित्र तलवार किसी सभ्यता का निर्माण नही करती, इसलिए कि सभ्यता की शर्तों में से एक मुख्य शर्त स्थिरता है। यह शर्त युद्ध की परिस्थिति के विपरीत है। इसी प्रकार पराक्रम जीत का हर गिस यह अर्थ नही कि सभ्यता व विचार के भाग में भी जीत हो। तुम टैटार, मंगोल, और इनके अतिरिक्त अन्य

क़ौमों के इतिहास में विचार कर सकते हो, इनके पास सैन्य बल अद्भुत था। लेकिन इस बल से उन्होंने किसी सभ्यता का निर्माण नही किया ।

लेकिन अगर तुम यह कहना चाहते हो कि इस्लाम का फैलाव जिहाद (युद्ध) से हुवा है, तो मैं केवल इस बात का संकेत देना चाहूँगा कि इस्लाम इस जगत के अधिकतर ऐसे देशों में फैला, और उन देशों में अपनी सभ्यता स्थापित की, जहाँ पर इस्लाम की सेना कभी नही प्रवेश किया। इस विषय का स्पष्टीकरण बहुत विस्तार से उपलब्ध है। लेकिन मैं इस अवसर पर पश्चिम के कुछ आलोचकों की बातें प्रस्तुत करूँगा। अमेरिकी लेखक लोथ्रप स्टोडार्ड (Lothrop Stoddard) (जिसने इस्लामिक जगत की प्रस्तुत स्थिति नामक पुस्तक लिखी है) कहता हैः .... अरब केवल वह जाति नही थी, जो अत्याचार के इच्छुक हो, और लूटमार व विनाश करना पसंद करते हो। बल्कि वे इसके विपरीत निपुण, नैतिकता और आदर्श आचार के उत्तम स्थान पर थे। ज्ञान प्राप्त करने के उत्सुक थे, और सभ्यता की अनुग्रह के साथ अच्छा व्यवहार करते थे। यह वह अनुग्रह थी जिसको पिछली सभ्यतायें प्राप्त कर चुकी थी। किन्तु प्रभावी और पराभूत लोगों के बीच विवाह और विचारों का विनिमय साधारण बात थी। वे तुरंत आपस में संबंध जोड लेते थे, और इसी संबंध से एक नयी सभ्यता का निर्माण हुवा, जिसका नाम अरबी सभ्यता है।

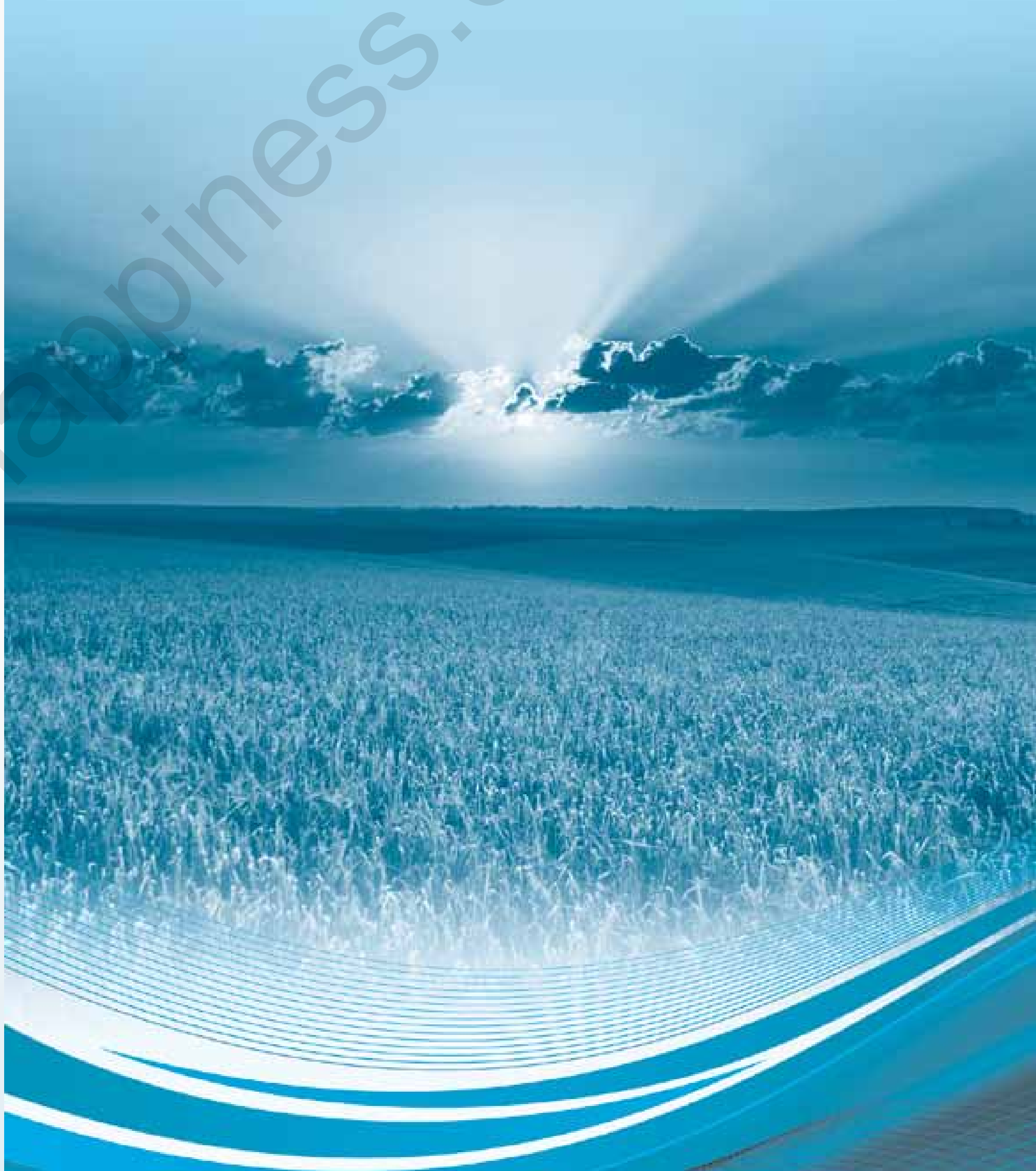
फ्रेंच सेना का कर्नल हेनरी डी कास्ट्रिस कहता हैः .... हम लोग यह विचार रखते हैं कि वर्तमान काल में इस धर्म (इस्लाम) की स्थिति का कोई प्रभाव नही रहा, क्योंकि यह धर्म तलवार की नोक से (जैसा कि लोग कहते हैं) फैला है। अगर मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलौहि व सल्लम का धर्म हिंसा और ज़बरदस्ती से फैलता, तो मुस्लिम विजय अभियान समाप्त हो जाने के बाद इस धर्म का फैलाव रुक जाना आवश्यक होता। लेकिन हम आज तक यह देख रहे हैं कि पवित्र खुरआन इस जगत के कोने कोने में अपने पंख फैला रहा है।

निस्संदेह मानवता के इतिहास में इस्लामिक सभ्यता के प्रभाव को वर्णन करने के लिए मुझे फ्रंच इतिहासकार गोस्ताव लोबोन के विचार से अधिक सच्चा विचार नही मिलता हैः

हमे इतिहास में अरब जाति के समान महत्वपूर्ण रखने वाली कोई अन्य जाति नही मिलती। किन्तु अरब से संबंध रखने वाले प्रत्येक जाति ने उनकी सभ्यता को अपनाया, चाहे कुछ समय के लिए ही क्यों न हो ....

अंत में तुम यह सोंचों कि वर्तमान काल के सभ्यता की छाया में मानवीय विशेषताओं का विनाश के द्वारा स्वयं मानव का विनाश हो जाने से मानवीय जीवन किस तरह नष्ट से पीडित लग रहा है। यही वह विषय है जो इस्लामिक सभ्यता के निर्माण को मानवीय आवश्यकता और स्वभाविक अनिवार्यता बनाता है।

इस्लाम का सूर्य मानवता पर प्रकाशित हो रहा है



इस्लाम का सूर्य मानवता पर प्रकाशित हो रहा है

आपसी बधाई संभाषण के बाद राजीव और राषिद ने यह नोट किया कि माइकल बात-चीत प्रारंभ करने के लिए लालायित (इच्छुक) है। तो राषिद ने उससे परिहास करते हुए यह कहाः

बोलो माइकल। क्या तुम ने आज की बैठक के लिए नोकिले तीर तैयार करके आये हो। मैं तो तीरों से बचने के लिए तुम्हारे लापटाप का सामना नही करूँगा ।

माइकलः नही नही संतुष्ट रहो ..... इस बार तुम बिना किसी चिंता के लाप-टाप पर निगाहें जमा सकते हो .... वास्तविक रूप से पिछले वाद-विवाद में मुझे सांस्कृति अन्वेषण और मानवीय उन्नति में मुसलमानों के भाग का ज्ञान प्राप्त करने का प्रयास करने पर प्रोत्साहित किया। किन्तु मैं एक हज़ार एक आविष्कार और रहस्य पुस्तकालय नामक डाक्यूमेंटरी फिल्म देखा। यह फिल्म बहुत छोटा है। केवल 13 मिनट की फिल्म है। लेकिन इस विषय मे ज्ञानवर्धक और आनंद दायक है..... इस फिल्म में यह प्रस्तुत किया गया कि मानव के आधुनिक निर्माण में इस्लामिक सभ्यता की भूमिका क्या रही। इस फिल्म ने 20 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किया है।

इस फिल्म को लघु चित्र की शैली में बनाया गया है। स्कूल से निकाले गये विज्ञान विहार यात्रा में पुस्तकालय के सचिव ने नव युवक छात्रों को एक पुस्तकालय ले गया। इस यात्रा के बीच वे उस काल की खोज करने लगे, जिसको अंधकार का काल नाम दिया गया। इस फिल्म में श्रीमान बिनकिंज़ली ने पुस्तकालय के सचिव की भूमिका निभायी। वह आगे चलकर मुसलमान वैज्ञानिक की भूमिका निभायेगा, और नव युवक छात्रों के सामने कुछ उन मुसलमान वैज्ञानिकों का परिचय प्रस्तुत करेगा जो उस काल में जीवित थे। वे उन्हें इस्लामिक जगत के उस काल में होने वाले आविष्कारों की जानकारी देगा, जो काल 7वीं शताब्दी से 17 वीं शताब्दी तक विस्तरित है। इस काल को अद्भुत इतिहास माना गया, लेकिन इसको सही सम्मान नही मिला।

राषिदः इस फिल्म का सारांश क्या है ? और यह फिल्म क्या बताना चाहती है ?

माइकलः पश्चिम में प्रगति के निर्माण का महत्वपूर्ण कारण इस्लामिक जगत में होने वाले वैज्ञानिक और सांस्कृतिक आविष्कार है, जो विभिन्न धर्मो के मानने वाले वैज्ञानिकों द्वारा नये-नये क्षेत्र प्रस्तुत किये। यह फिल्म संकेत देती है कि यह एक इतिहासिक तत्व है, जो बडी हद तक भुला दी गयी।

राजीवः प्रिय माइकल तुम ने मुझे तो इस बात पर अधिक उत्सुक बना दिया कि मैं तुम्हारी कही हुई बातों का विस्तार से ज्ञान प्राप्त करूँ ।

माइकलः इस विषय में कई प्रकार से स्पष्टीकरण हुवा है। उस में से एक यह है कि इतिहास के एक बहुत बडे आविष्कार, रसायन शास्त्र के वैज्ञानिक और इंजीनियर अल जज़री ने हाथी की घडी का आविष्कार किया, जो इतिहास में एक अद्भुत आविष्कार है। इसी प्रकार अल जज़री ने कई ऐसे तंत्र का आविष्कार किया, जो पृथ्वी के हर कोने में दैनिक जीवन के लिए उपयुक्त मशीनों के लिए महत्वपूर्ण हैं। निस्संदेह प्राचीन काल के सुविधाओं के अनुसार जिन तकनीकि उपकरणों का उत्पादन हुवा है, उससे यह ज्ञात होता है कि इस वैज्ञानिक ने खेती-बाडी के क्षेत्र में विकास के लिए पानी और हवा की शक्ति का कैसे उपयोग किया ..... इन आविष्कारों में से यह भी है कि स्पेन के चिकित्सक ज़हरावी ने 1000 से पहले-पहले सैकड़ों दवायें, और सर्जिकल उपायो का आविष्कार किया। इस वैज्ञानिक के आविष्कार आज तक वर्तमान काल के अस्पतालों मे रोगियों का जीवन सुरक्षित बना रहे हैं, साथ-साथ यह भी कि इन अस्पतालों में इस वैज्ञानिक के सर्जिकल उपायों का भी उपयोग हो रहा है... इन में से यह आविष्कार भी है कि हसन बिन हैसम पहला वह वैज्ञानिक है, जो इस बात का विवरण करता है कि आँख कैसे देखती है। इस डाक्यूमेंटरी फिल्म में हम मैक्रोस्कोप तकनीकि के कई नमूने देखेंगे, ताकि हमे यह ज्ञान प्राप्त हो कि इब्ने हैसम ने चित्रकारी और फिल्म बनाने के लिए कैसे नियम बनाये।

राजीवः प्रिय माइकल तुम ने तो बहुमूल्य जानकारी दी है। लेकिन केवल तुम अकेले ही नही हो, जो इस विषय के प्रति खोज किया हो। मैंने भी इस विषय में खोज की है। मुझे एक जर्मनी लेखिका सिग्रड हुंके की अद्भुत पुस्तक मिली है। इस पुस्तक का नामः पश्चिम पर देवत्व सूर्य उदित हो रहा है।

माइकलः तुम ने इस पुस्तक में कौन-सी नयी चीज़े देखी ?

राजीवः मैं ने कई ऐसी चीज़े देखी, जिसकी मै संभावना नही कर रहा था। क्या तुम जानते हो कि पश्चिमी भाषाओं में बोले जानेवाले अधिकतर शब्द वास्तविक रूप से अरबी भाषा के शब्द है ? ।

माइकलः निश्चित रूप से यह आश्चर्यजनक बात है। क्या तुम अपनी बात में गंभीर हो ?

राजीवः हाँ। मैं परिहास नही कर रहा हूँ। उदाहरण के रूप से तुम अंग्रेजी भाषा में बोले जानेवाला शब्द काफी, और अन्य पश्चिमी भाषाओं में बोले जानेवाले इस जैसे शब्द अरबी भाषा के शब्द ख़हवा से लिया गया है। इसी शब्द से वह शब्द भी लिया गया है, जो उस स्थान के लिए उपयोग में आता है, जहाँ काफी पी जाती है। Rice शब्द अरबी भाषा के शब्द अरूज़ से लिया गया है, और sofa अरबी भाषा का शब्द सुफ्फा से लिया गया है, इस शब्द का अर्थ मस्जिद के पास पाये जानेवाली छायांकित बैठने की जगह है... बल्कि मैं ने कई ऐसे शब्द भी पाये,

जो स्वच्छ वैज्ञानिक अर्थ के लिए उपयोग में आते हैं। वह शब्द अरबी बोलचाल के बिल्कुल समान है, जैसे Alcohol...

इस पुस्तक ने कई ऐसे तत्व मेरे सामने प्रस्तुत किये, जिनका मुझे ज्ञान नही था। लेखिका ने इन तत्वों का सारांश इस रूप में कियाः निस्संदेह पश्चिम अरब वासियों का, और अरबी सभ्यता का आभारी है। अरब का जो खर्ज़ पश्चिम और अन्य महाद्वीप पर है, बहुत बडा है। पश्चिम को इस बात की आवश्यकता है कि वह कई वर्षों से अरब की इस दया को माने। लेकिन विभिन्न धार्मिक सिद्धांत और असहिष्णुता ने हमारी आँखों को अंधा कर दिया, और उस पर परदा डाल दिया।

राषिदः प्रिय राजीव तुम ने तो मुझे उन तत्व का अधिक ज्ञान प्राप्त करने का इच्छुक बना दिया, जिसके प्रति तुम ने कहा कि तुम उसका ज्ञान नही रखते थे।

राजीवः इसी का उदाहरण यह भी है कि मुझे यह ज्ञान नही था कि सब से पहले जिस व्यक्ति ने गैलन की ग़लतियों के प्रति सोंच विचार किया। उसमें आलोचना की, फिर रक्त प्रसरण की दृष्टिकोण प्रधान की, वह व्यक्ति न स्पेन का सर्विटोस था, और न इंग्लैंड का हार्वे था। बल्कि वह तो 13वीं शताब्दी का उत्तम अरबी व्यक्ति था। इसका नाम इब्ने नफीस है। इस व्यक्ति ने हार्वे से 400 वर्ष पहले, और सर्विटोस से 300 वर्ष पहले चिकित्सा के इतिहास, बल्कि मानवीय इतिहास में यह महान खोज की है... मुझे यह ज्ञान नही था कि अरब का मुसलमान वैज्ञानिक इब्ने हैसम वह पहला व्यक्ति है, जिसने यूक्लिड और टॉलेमी की ग़लतीयों को सुधारा है। इन दो वैज्ञानिकों ने यह दावा किया था कि आँखें जब किसी चीज़ को देखना चाहती है तो उसकी ओर अपनी किरणें भेजती है। इब्ने हैसम ने यह घोषणा की कि यह दावा ग़लत है। क्योंकि कोई ऐसी किरण ही नही है जो आँख से निकलती हो। बल्कि देखी जाने वाली चीज़े ही आँख पर किरणें डालती है, फिर आँख अपने नयनों से उसे देखती है... इसी प्रकार मुझे यह ज्ञान भी नही था कि अरब का मुस्लिम वैज्ञानिक अल-बेरूमी वह व्यक्ति है, जिसने खोज किया कि पृथ्वी सूर्य की ओर परिक्रमण करती है और स्वयं अपनी ओर परिक्रमा करती है। यह खोज करने वाला (जैसा कि साधारण रूप से लोगों में मशहूर है) कापर निकस या कोई और नही है.... इसी प्रकार प्राच्य विद्या विशारद लेखिका ने वर्णन किया कि मुसलमान चिकित्सक राज़ी को पूरे इतिहासकारों ने हर समय के लिए सब से महान चिकित्सक माना। किन्तु चेचक और खसरा के प्रति राज़ी का परिशोध पेट के रोगों में सबसे पहला दृढ़ आविष्कार समझा गया। इस परिशोध में रोग का विशलेषण राज़ी ने उत्तम अद्भुत विधि में किया है। यह परिशोथ पश्चिम में अधिक प्रसिद्ध हुवा, यहाँ तक कि वर्ष 1489 से 1866 के बीच इस परिशोध को 40 बार अंग्रेज़ी भाषा मे छापा गया .... लेखिका ने यह भी वर्णन किया कि अरब के लोग उस काल में, (जिसको पश्चिम में अंधकार युग

का नाम दिया गया) संज्ञाहरण चिकित्सा का ज्ञान रखते थे। जब कि लोगों का यह विचार है कि आधुनिक काल में इस चिकित्सा का आविष्कार किया गया। हालांकि वास्तविकता और इतिहास यह गवाही देता है कि संज्ञाहरण चिकित्सा की कला उत्तम अरबी कला है, जिसको अरब के वासियों से पहले किसी ने नही जाना ... इस स्थान पर अन्य और भी स्पष्ट है लेकिन हमारे इस जैसे वाद-विवाद में उसका विवरण करना असंभव है।

राषिदः तुम ने जो कुछ कहा, उससे कुछ उन लोगों के दावें ग़लत साबित होते हैं, जो इतिहास की वास्तविकता का ज्ञान नही रखते, या इस बात का तिरस्कार करते हैं कि अरब और मुसलमानों ने मानवता के लिए, विशेष तौर पर प्रायोगिक विज्ञान में कोई नयी चीज़ प्रदान की। जब कि प्रायोगिक विज्ञान की विधि मानवता को अरब और मुसलमानों के हाथों ही मिली है। मुझे यह अनुमति दो कि इस विषय में मै तुम्हारे सामने पश्चिम के वैज्ञानिकों के कुछ विचार प्रस्तुत करूँ

फ्रेंच प्राच्य विद्या विशारद क्लाउड काहिन कहता हैः ... मुसलमान वैज्ञानिक (अपने बौद्धिक विचारों के बावजूद) अमूर्त बुद्धि में ग्रीक वैज्ञानिकों से निम्न थे। लेकिन इसके बदले उन्हों ने प्रायोगिक विज्ञान में अधिक इच्छा दिखायी। आगे चलकर होने वाले वैज्ञानिक उन्नति ने इस इच्छा की महत्वता का विवरण किया। किन्तु जो विज्ञान अरब मुसलमानों ने छोडा, वह उनके दैनिक जीवन में उपयोग होने वाला विज्ञान था। इसी कारण वह विज्ञान जीवित रहा, उसको महानता प्राप्त हुई। राज़ी (एक महान मुस्लिम वैज्ञानिक) ने वैज्ञानिक उन्नति के जारी रहने की संभावना हो खुले शब्दों में विवरण किया था। मध्य काल के अधिकतर आलोचकों के लिए राज़ी का यह विवरण आश्चर्यजनिक था। ... इटली परिशोधक महिला लोरा विशिया फाग्लेरी यह प्रश्न करती है ... क्या प्रायोगिक विधियों की आवश्यकता के प्रति बेकन के द्वारा घोषणा होने से कई वर्षों पहले अरब वैज्ञानिकों ने इसका आविष्कार नही किया ?। रसायन शास्त्र, खगोल विज्ञान की प्रगति, ग्रीक विज्ञान का फैलाव, चिकित्सा अध्ययन शास्त्र, और भौतिक शास्त्र के विभिन्न नियमों की खोज, क्या यह सब अरब के कारनामें नही है ? अमेरिकी दार्शनिक व इतिहासकार वेल्ड्योरान्ट कहता हैः ... निस्संदेह अरबिक ज्ञान ने रसायन शास्त्र में प्रायोगिक ज्ञान की विधि को बढावा दिया। यह विधि आधुनिक ज्ञान का महत्वपूर्ण उपकरण है.... राजर बेकन ने पश्चिम में इस विधि की घोषणा जाबिर बिन हय्यान की घोषणा के 500 वर्ष बाद की। इस विधि की ओर बेकन की मार्गदर्शनी उस प्रकार से हुई, जो उसको स्पेन के अरब मुसलमानों से मिला, और यह प्रकाश भी पूरब के मुसलमानों के प्रकाश का एक छोटा टुकडा है।

यह कुछ उदाहरण है, जिस के प्रति यह कहा जा सकता है कि इस्लामिक अरबी सभ्यता के वह आविष्कार है, जो मानवता को प्रधान हुए।

माइकलः वास्तविक रूप से यह आविष्कार है। इसका तिरस्कार नही किया

जा सकता। लेकिन यह भी भूलना संभव नही है कि यह सभ्यता कुछ पिछली सभ्यताओं, जैसे ग्रीक सभ्यता से बनी है।

राषिदः मेरे मित्र वैज्ञानिक प्रगति की यही वृत्ति है कि साधारण रूप से वह मानवीय आविष्कारों की मिली हुई एक ज़ंज़ीर होती है। इसी को सभ्यतागत युग से जाना जाता है, और फ्रेंच प्राच्य विद्या विशारद ऐल्डो मेली ने इसी बात की पुष्टी की हैः ..... यह अरबी ज्ञान प्राचीन सभ्यता और आधुनिक संसार के बीच संबंध की एक कडी है। जब हम इस अरबी ज्ञान का सामना न करे, और उसको न समझे, तो फिर हम ऐसा रिक्त पायेंगे, जिस के कारण प्राचीन सभ्यताओं और हमारी आधुनिक सभ्यताओं के बीच होने वाले संबंध का स्पष्ट करना असंभव होगा ।

हार्वर्ड विश्व विद्यालय में ज्ञान इतिहास विभाग के प्रोफेसर, और आधुनिक ज्ञान की सुबह .... इस्लाम-चीन-पश्चिम नामक पुस्तक के लेखक डाक्टर टोबी हेफ का विचार है कि इस्लामिक अरबी सभ्यता में उमड़ ने वाले ज्ञान व दर्शन का मध्य काल में पश्चिमी परिशोधकों द्वारा होने वाला अनुवाद पश्चिमी बौद्धिक प्रगति में महत्वपूर्ण रूप से प्रभाव रखता है।

लेकिन मुझे यह कहने भी दो इस्लामिक अरबी सभ्यता के आविष्कार कई ऐसे विशेष गुण रखते हैं, जो किसी और सभ्यता में नही। उदाहरण के रूप से कुछ महत्वपूर्ण गुण यह हैः

इस्लामिक ज्ञान कभी धर्म से अलग नही रहा। बल्कि धर्म तो ज्ञान के लिए प्रेरणादायक केन्द्र और प्रोत्साहित करने वाली मुख्य शक्ति है।

और दूसरा महत्वपूर्ण गुण यह है कि मुसलमानों का ज्ञान कोई रहस्य नही था। बल्कि वे तो मानवता के विभिन्न समितियों के बीच इस ज्ञान को फैलाने के लालायित थे। किन्तु मुसलमानों के विश्व विद्यालय शिक्षा पाने के लिए उनके देश पहुँचने वाले पश्चिमी विद्यार्थियों के सामने खुले हुए थे....

मै इस सभ्यता पर गर्व करता हूँ।

मानव ..... जब अछूत हो



मानव ..... जब अछूत हो

राजीव और राषिद माइकल से पहले-पहले मीटिंग हॉल में प्रवेश किये। इन दोनों के बीच वाद-विवाद प्रारंभ हुवा। राजीव ने यह कहाः

एक विषय ऐसा है, जिसके प्रति मेरी इच्छा है कि हम उसके बारे में चर्चा करें, और मेरे लिए यह जानकारी प्राप्त करना महत्वपूर्ण होगा कि इस्लाम धर्म का इस विषय के प्रति विचार क्या है। क्यों कि इस विषय और विचार के बीच गहरा संबंध है।

राषिदः कहो । पूरी खुशी के साथ ।

राजीवः मेरे देश भारत में एक जाति है, जिसका नाम अछूत रखा गया था। वर्तमान काल में उसको हरिजन, या प्रभु की संतान कहा जाता है। भारत के इतिहासकार नेता महात्मा गाँधी ने इस जाति को यह नाम दिया..... हालांकि भारतीय सरकार ने वर्ष 1949 में अछूत का शब्द इस्तेमाल करने पर प्रतिबंध लगाया है, फिर भी वास्तविक रूप में, बल्कि अध्ययन के द्वारा यह साबित होता है कि आज भी भारत के छोटे छोटे शहरों, और गाँव में अछूत की परंपरा पायी जाती है।

राषिदः इस परंपरा की समस्या क्या है ?

राजीवः निस्संदेह यह समस्या नही है। यह तो एक त्रास (मुसीबत) है .... यह तो मानवता के लिए एक त्रास है, जिस में गंभीर रूप से मानवीय अधिकारों को बर्बाद किया जाता है। ....

अब इस समय माइकल अपने दो मित्रों से मिलता है और उन्हें प्रणाम करता है।

राषिदः तुम्हारा स्वागत है माइकल। राजीव ने कुछ समय पहले अपनी बात प्रारंभ कर दी है। तुम राजीव की अगली बात-चीत से इस विषय को समझ सकते हो। राजीव तुम अपनी बात पूरी करो।

राजीवः हिन्दू धर्म के अनुसार जाति विन्यास की समस्या है। सब से उच्च जाति ब्राहमण है। हिन्दु विचार के अनुसार ब्राहमण वह लोग है, जिन को प्रभु ब्रहमा ने अपने मुँह से पैदा किया। इन्हीं लोगों में से शिक्षक, पुजारी, और जज़ होता है। इस के बाद की जाति कूचर है। इन को प्रभु ने अपने दो हाथों से पैदा किया। वे शिक्षा प्राप्त करते हैं, भेंट चढाते हैं, और सुरक्षा के लिए हथियार रखते हैं। इस के बाद की जाति वैश्य है। इन को प्रभु ने अपनी जांघ से पैदा किया है। वे खेती करते हैं। व्यापार करते हैं। धन इकट्ठा करते हैं, और धार्मिक संस्थानों पर अपना धन खर्च करते हैं। इस जाति विन्यास के सब से निम्न स्थान पर शूद्र है। इन को प्रभु ने अपने पैरों से पैदा किया। वे अफ्रिकियों के साथ अछूत जात कहलाते हैं। उनकी भूमिका केवल पिछली तीन उच्च जातियों की सेवा करना है। वे नीच

व्यवसायों में जीवन-यापन करते हैं।

राषिदः मै तुम्हारे कहने का अर्थ समझ गया हूँ...

राजीवः क्षमा चाहता हूँ तुम ने अभी समझा नही।

माइकलः क्या परिस्थिति इससे भी अधिक बुरी है ? और क्या आज तक भी इस जाति विन्यास के अनुसार व्यवहार किया जाता है।

राजीवः हाँ। मैं ने राषिद से कहा था कि आज तक भी गाँव, देहात में इस जाति विन्यास के अनुसार अछूत जाति के साथ व्यवहार किया जाता है। कुछ ऐसे भी व्यवहार है, जिस के प्रति यह विचार करना असंभव है कि इस जाति के किसी मानव के साथ यह व्यवहार हो रहा है। किन्तु ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में बनाये गये मनु हिन्द नियम शूद्र और अछूत जाति को नीच समझने पर आधारित है। इन्हीं नियमों में यह भी है कि कोई व्यक्ति किसी शूद्र जाति के सदस्य को हिन्दू धार्मिक शिक्षा दे, तो वह उसी के साथ नरक में जायेगा ... और अछूत जाति के लोगों पर यह ज़रूरी है कि व गाँव के बाहर अपना जीवन-यापन करें। खाने-पीने के लिए टूटे बर्तनों का ही उपयोग करें। कुत्ता और गधे के अलावा किसी और चीज़ को अपनी संपत्ति बनाने का उन्हें अधिकार नही है । वे केवल मृतकों के कपड़े पहने। सदा वे नंगे पैर चले। उनकी महिलाएँ लोहे के ज़ेवर पहने। उनके पूरे संबंध उन्हीं की जाति के लोगों के बीच निर्भर हो, और वे अपनी जाति के लोगों से ही विवाह करें .... यह नियम (जो आज तक हिन्दू सभ्यता पर प्रभावित है) कहते हैं कि जब कोई शूद्र जाति का व्यक्ति धार्मिक विषयों में बात-चीत करे, तो उसके मुँह में गरम तेल डाला जाए। .... बल्कि इस से भी ज्यादा चिंता जनक बात यह है कि आज तक भी अछूत जाति के लोगों पर गाँव, देहात में सुबह, 9 बजे से पहले, और शाम 3 बजे के बाद अपने घरों से निकलने का प्रतिबंध लगा हुवा है। क्योंकि इन समयों में उनकी छाया लंबी होती है, और ब्राहमणों को यह भय होता है कि अछूत जाति की छाया उन पर पडे और उन्हें भी अशुद्ध बना दे .... ब्राहमण जाति का सदस्य अछूत जाति के छाया की गंदगी से स्नान किए बिना न खा सकता है और न पी सकता है। .....

माइकलः समझ में आने वाली बात नही। क्या हमारे काल में भी यह सब हो रहा है ? भारतीय समाज में इन लोगों की संख्या कितनी है ?

राजीवः भारत की कुल आबादी में अछूत जाति का दर 45% है। यानी हिन्दू जाति के 80% लोग। जब कि अन्य तीन हिन्दू जाति का दर 11% है।

राषिदः तुम ने तो कहा कि भारतीय सरकार ने पिछली सदी के 40 वे वर्ष में अछूत शब्द का उपयोग करने पर प्रतिबंध लगा दिया। और निश्चित रूप से इस प्रकार के व्यवहार पर पाबंदी होगी। यह सब क़ानून के संदर्भ में होगा।

राजीवः यह सत्य है। लेकिन समस्या यह है कि शुद्ध जाति और अशुद्ध जाति का सिद्धांत, और इसी आधार पर मानव के बीच अंतर करना हिन्दू धर्म के मुख्य

नियम समझा जाता है। किन्तु वे हिन्दू धर्म को न मानने वाले, और तीन उच्च जाति से संबंध न रखने वाले मानव को अशुद्ध और गंदा समझते हैं।

राषिदः यह तो अन्याय, मानव की मानवता का अपमान, और ऐसे नियमों के आधार पर भेद-भाव पर आधारित प्रणाली है, जिसमें मानव का कोई हस्त क्षेप नही। लेकिन तुम ने जो कहा कि इस समस्या का इस्लाम धर्म के विचार से संबंध है, उसका इस समस्या से क्या संबंध है?

राजीवः संबंध यह है कि अधिकतर अछूत जाति के लोग, विशेष तौर पर भारतीय सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाने से पहले, अन्य धर्मो के अलावा इस्लाम धर्म अपनाते हैं। हालांकि वे ब्रिटिश साम्राज्य मे ईसाई धर्म के छाया तले में जीवन-यापन कर रहे थे, और ईसाई धर्म प्रचार का बोल बाला था।

राषिदः शायद इसका कारण यह है कि वे इस्लाम धर्म में मानव को दिये जाने वाले सम्मान से आकर्षित हुए हों। जो भी व्यक्ति इस्लाम की वास्तविकता, इस्लाम में मिलने वाले मानवीय अधिकार, छोटे बडे, और धनी निर्धन के बीच इस्लाम धर्म में पायी जाने वाली समानता, और मानव को मिलने वाली स्वतंत्रता का जो भी व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करलेगा, वह आवश्यक इस धर्म को स्वीकार करलेगा ..... मेरा अनुमान है कि वे मुसलमानों के साथ जीवन-यापन करने के कारण इस्लाम धर्म की इन विशेषताओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया हो।

माइकलः तुम हमें यह समझाना चाहते हो कि इस्लाम धर्म स्वतंत्रता और अधिकार का सम्मान करता है? .... स्वतंत्रता और मानवीय अधिकार का ज्ञान धर्मो के द्वारा नही हुवा है। बल्कि पश्चिम के आलोचक और दार्शनिक लोगों ने इनकी स्थापना की हैं, और विभिन्न जाति के लोगों ने अन्याय, अपने अधिकारों का उल्लंघन और स्वतंत्रता के विरोध की जानेवाली एक लंबे संघर्ष के बाद इसको प्राप्त किया है.... यह अधिकार इस्लाम धर्म में नही पाये जाते है। इस्लाम धर्म में सिद्धांत की स्वतंत्रता और अन्य धर्मो को मानने का अधिकार कहाँ है ? अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कहाँ है ? महिला के अधिकार कहाँ है ? तुम्हारा अपने धर्म पर दृढ़ विश्वास वास्तविकता को छिपाने का कारण नही बनना चाहिए...

राषिदः मेरे मित्र तुम ने तो बौद्धिक विवाद का व्यापक द्वार खोल दिया... और मै यह देख रहा हूँ कि तुम विजेता का विश्वास रखने वाले व्यक्ति के रूप में बात कर रहे हो। और ऐसा लग रहा है कि पश्चिम की सभ्यता मानवीय अधिकार में ठेठ का स्थान तक पहुँच गयी है.... जब पश्चिम इस स्थान को पहुँच गया है, तो तुम उन विभिन्न न्यायालय की सज़ाओं के प्रति क्या कहोगे, जो कई आलोचकों, लेखकों और इतिहासकारों को दी गयी। इसका कारण केवल यह था कि इन लोगों ने यहूदियों के प्रलय (होलोकोस्ट) में संदेह करते हुए अपने विचारों को प्रकट किया। इन लोगों ने इस प्रलय का तिरस्कार कर दिया, या उससे पीडित होने वाली लोगों की संख्या कम बताया। क्या यह सच्चाई तक पहूँचने व अध्ययन

के अधिकार का, बौद्धिक स्वतंत्रता, विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उल्लंघन नही है ?। क्या कोई लंडन में रिपब्लिकन पार्टी स्थापना करने का, या जर्मन में नाज़ी पार्टी बनाने का अपने अधिकार का उपयोग कर सकता है? .... बल्कि मैं मुसलमान लंडन में क्या क़ानूनी तौर पर दूसरी शादी कर सकता हूँ, जब कि मेरा धर्म मुझे इसका अधिकार देता है? क्या सरकार इन अधिकारों के उपयोग से रोकने और इस जैसी स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाने में हस्तक्षेप नही करेगी ..... ?

माइकलः इस जैसी स्वतंत्रता और अधिकार वास्तविक रूप से मानवीय अधिकारों के साथ टकराते हैं। निश्चित रूप से सारे अधिकार स्थिर है, और नियम के रूप में उसको क्रमानुसार रख दिया गया है, इसका अनुसरण करना हम सब के लिए आवश्यक है। किन्तु यहूदी प्रलय मे संदेह करना यहूदी विरोधी भावना का शामिल है। और यह एक जाति वाद-भेद-भाव है, जो नफरत को फैलाता है। इसी प्रकार यह भेद-भाव भाई-चारगी और समानता के भी विरोध है। और यह स्थिरांक और पवित्र विषय है, जिसका अपमान संभव नही है, चाहे इसके लिए अन्य स्वतंत्रताओं पर प्रतिबंध लगाना पड़ जाये। यही मामला उन देशों में पार्टी की स्थापना करने पर प्रतिबंध लगाने का भी है, जिसका तुम ने चर्चा किया। इसी प्रकार तुम्हारा दूसरा विवाह करना भी धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार में शामिल नही है। क्योंकि यह समस्या व्यक्तिगत भावना के संदर्भ से बाहर है। और क्योंकि इस में उस क़ानून, सामाजिक संस्कृति व प्रणाली का भी विरोध हो रहा है, जिसको तुम्हारे समाज के अधिकतर लोगों ने पसंद किया। इसलिए भी कि इस में दूसरे सदस्य (महिला, चाहे वह राज़ी हो, तो भी) के अधिकार का उल्लंघन हो रहा हो। लेकिन साथ-साथ तुम्हें इस बात की अनुमति होगी कि तुम वैवाहिक संबंध के बाहर अन्य महिलाओं के साथ जीवन-यापन करो, शर्त यह होगी कि वे इससे संतुष्ट हो।

राषिदः बहुत खूब। जिस विषय को मैं अन्याय, और मेरे अधिकार व स्वतंत्रता पर प्रतिबंध समझ रहा हूँ, उसी को तुम ऐसी प्रणाली और नियम समझ रहे हो, जिस में किसी पर अत्याचार नही है। निश्चित रूप से यह वही व्यवहार है, जिसका हिन्दू धार्मिक लोग उपयोग करते हैं (जैसा कि हमारे मित्र राजीव ने कुछ देर पहले कहा था, और हम सब ने इस जैसे व्यवहार को नीच समझा था) क्या तुम यह अनुमान करते हो वे लोग इस व्यवहार को दूसरों के अधिकारों का उल्लंघन मानते हैं ? हरगिस नही ....

राजीवः तुम्हारी बात-चीत से यह समझ में आ रहा है कि वे जाति-वाद भेद-भाव और नीच व्यवहार में सत्य पर है।

राषिदः ऐसा हरगिस नही। मेरा लक्ष्य यह विवरण करना है कि हम अधिकार व स्वतंत्रता को उस नैतिक संघटन से अलग नही कर सकते, जिससे वह निकलते हैं, और न उस धार्मिक नियमों के संदर्भ से दूर कर सकते हैं, जो इसको संयुक्त और क्रमानुसार बनाता है। जब हम वास्तविक रूप से इन अधिकारों और स्वतंत्रता

की समीक्षा करना चाहे तो हमे चाहिए कि हम उन नियमों की समीक्षा करें जिन पर यह आधारित है, न कि इन नियमों के मानने वालों के व्यवहार और कर्म को देखे। जब हम इस बात से सहमत है तो हम इस्लामिक दृष्टिकोण और पश्चिमी दृष्टिकोण के बीच बुनियादी अंतर पायेंगे, जिस का मानवीय अधिकार और स्वतंत्रता के क्षेत्र पर प्रभाव होता है.... इस अंतर का बुनियादी कारण मानवीय व्यक्तित्व, अधिकारों की वास्तविकता, और स्वतंत्रता के अर्थ की दृष्टिकोण में मानव, ब्रह्माण्ड और जीवन की समग्र दृष्टिकोण के भीतर होने वाला फर्क है .... मेरे मित्र माइकल के साथ यही हुवा है कि उसने धर्म, भाई-चारगी और समानता के आवधारणों को पश्चिमी विचारों के अनुसार अधिकार और स्वतंत्रता के सामने कुछ नही समझा, और इन अधिकारों व स्वतंत्रता और पवित्र मान लिया, जब कि इस्लाम धर्म के अनुसार यह आवधारण कुछ अलग है।

जब हम इस्लाम धर्म में मानवीय अधिकारों के बारे में बात करें, तो हम यह देखते हैं कि वह अधिकार आवश्यकताओं की हद तक पहुँच गये हैं, जिसका धर्म के संदर्भ से सारा समाज ज़िम्मेदार होगा। किन्तु इस्लाम धर्म ने सामान्य व्यवहार, दया, नैतिकता के अधिकारों, और न्यायिक क़ानून की सीमायें स्थापित कर दी है। बल्कि इस्लाम धर्म में अधिकार केवल मानव पर निर्भर नही है, साथ-साथ पशु-पक्षियों पर भी शामिल है।

माइकलः मैं ने कभी यह विचार नही किया था कि तुम्हारे धर्म में पशु-पक्षी के लिए भी कुछ अधिकार है।

राषिदः निस्संदेह इस्लाम ने पशु-पक्षियों को तकलीफ़ देने से रोका, जब तक कि पशु-पक्षियों की ओर से कोई हानि होने की संभावना न हो। इस्लाम धर्म ने मनोरंजन और खेल-कूद में (जैसा कि शूटिंग या जानवरों की आपसी लड़ाई वग़ैरह में होता है) जानवरों की हत्या करने पर प्रतिबंध लगाया, और यह आदेश दिया कि केवल खाने के लिए जानवरों को वध किया जाए। जब कोई मुसलमान वध करता है, तो उसको चाहिए कि वह अपने प्रजापति की अनुमति, उसी के नाम, और उसी विधि के अनुसार वध करें, जिस को प्रजापति ने निर्धारित किया है। इसी प्रकार वध के कुछ नैतिक नियम भी है, जो वध होने वाले जानवर की भावना का ख्याल रखते हैं, यह वह नियम है जो हम किसी मानव के द्वारा किसी दूसरे मानव को देवत्व विधि से हट जाने के समय होने वाली हत्या में नही पाते हैं। किन्तु इस्लाम ने यह आदेश दिया कि जानवर के सामने चाकू तेज़ न की जाये, और न दूसरे जानवर को उसके सामने (ज़िबह) वध किया जाये.... तुम्हारे विचार से क्या किसी धर्म ने जानवर को यह अधिकार दिये हैं, जब कि वह मानव के अधिकारों का उल्लंघन करता है?।

राजीवः मेरे विचार से इस विषय में अधिक विस्तार की आवश्यकता है। हम इसको अपनी अगली बैठक में पूरा करेंगे ।

इस्लाम धर्म में मानव के अधिकारों का स्थान



इस्लाम धर्म में मानव के अधिकारों का स्थान

राषिद अपना मोबइल फोन आन करते हुए जब मीटिंग हाल में प्रवेश किया, तो उसको माइकल की तरफ से अपने फोन पर एक सन्देश मिला, जिस में लिखा था किः अगली बैठक के लिए तैयार रहो..... कई ऐसी समस्याएँ हैं, जिस के प्रति हमें चर्चा करना ज़रूरी है, जैसे अन्य लोगों के साथ व्यवहार, अपनी इच्छाओं को दबाके रखना, बौद्धिक स्वतंत्रता .... धन्यवाद।

राषिद अपने दो मित्रों को मीटिंग हाल में बैठे हुए पाया। उन्हें प्रणाम किया फिर यह कहने लगाः

मानवीय अधिकारों से संबंधित समस्याएँ बहुत अधिक है। केवल उन्हीं समस्याओं में यह सीमित नही है, जिसका तुमने विवरण किया है प्रिय माइकल। इसी कारण मैं समझता हूँ कि एक समग्र परीधि बनाने की आवश्यकता है, जिस के संदर्भ में हम सारी समस्याओं का समाधान प्राप्त करेंगे, चाहे इस समस्याओं के बीच कितना ही अधिक अंतर हो, या कितनी ही ज्यादा दूरी हो।

माइकलः कुछ उदाहरण प्रस्तुत करने में कोई आपत्ति नही है, जैसा कि मैं ने अपने मोबइल संदेश में तुम्हें भेजा था, ताकि हमारी बात-चीत वास्तविकता पर आधारित हो, जिसका अनुसरण करना संभव हो।

राषिदः बिल्कुल सही। इस में कोई आपत्ति नही।

राजीवः हमारी पिछली बैठक में तुम ने एक नियम की चर्चा की थी, हम उसी नियम के संदर्भ में अपनी बात-चीत प्रारंभ करेंगे। वह नियम यह था कि जब हम वास्तविक रूप से अधिकारों व स्वतंत्रता की समीक्षा करना चाहें, तो हमें इस बात की आवश्यकता है कि हम उन नियमों का सम्वीक्षण करें, जिन पर यह अधिकार निर्भर है, न कि इन नियमों के मानने वाले लोगों के व्यवहार और कर्मो को देखें ।

राषिदः सच है... स्वतंत्रता और मानवीय अधिकारों के मूल्य का आवधारण उस बौद्धिक अनुभव से प्रभावित होती है, जिससे यह अधिकार प्रकट हुए हैं, और उस समाज के साधारण नियमों का अनुयायी होता है, जिस में वह फला-फुला है। मैं इस स्थान पर अपने मित्र माइकल से यह प्रश्न करूँगाः क्या तुम उन साधारण नियमों और बौद्धिक अनुभव का हमारे सामने विस्तार से विवरण करोगे, जिन

पर पश्चिमी विचारों के अनुसार मानवीय अधिकार निर्भर है ?

माइकलः यह कहना संभव है कि पश्चिम में अधिकार और स्वतंत्रता जिस बौद्धिक और नियमित संदर्भ से निकली है, वह निम्न लिखित विषयों में प्रकट हैः

1. केवल बुद्धि ही इन अधिकारों व स्वतंत्रता का स्त्रोत है। हालांकि बुद्धि कुछ धार्मिक नियमों को भी अपना लेती है (जैसा कि लिब्रलिज़म प्रोटेसटन्ट सिद्धांत से प्रभावित हुवा) लेकिन बुद्धि ही इन नियमों का तिरस्कार करने या इनको स्वीकार करने का अधिकार रखती है।

2. लैकिकता (धर्म को जीवन और सरकार से दूर रखना) यह वह विधि है, जिस में इन अधिकारों और स्वतंत्रता का संतुलन होता है।

3. स्वतंत्रता व समानता। समाज के दो महत्वपूर्ण नियम हैं जिस का समाज अनुयायी होता है, और इन्हीं के साथ मिलकर अन्य समाज के साथ संयुक्त होता है। यह दोनों स्थिरांक और पवित्र नियम है, जिनका उल्लंघन असंभव है।

4. प्रत्येक सदस्य के व्यक्तित्व को बढाना, और उसके हितों को महत्व देना, साथ-साथ समाज की भूमिका और उसके हितों की उपेक्षा न करना। इस से प्रसन्नता लौट आती है, और प्रत्येक सदस्य का जीवन शांतिपूर्ण होता है।

राषिदः अच्छा स्पष्ट हुवा है। इस पर मैं तुम्हारा आभारी हूँ। इससे यह मालूम होता है कि (पश्चिमी समाज द्वारा जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में गिरजा घर से कट जाने का बाद) पश्चिम में मुख्य स्त्रोत भौतिक भावनाओं के साथ-साथ बुद्धि है। इसी स्त्रोत से अधिकार और स्वतंत्रता प्रकट हुए हैं, और यह भी मालूम होता है, यह अधिकार और स्वतंत्रता जिस विधि पर निर्भर है, वह लौकिकता है।

यह कहना भी संभव है कि स्वतंत्रता व समानता इसी स्त्रोत के आधार पर उन नियमों में अग्र है, जिन पर पश्चिमी समाज स्थापित हुवा है। इसी कारण (पश्चिम के स्थिर विचारों के अनुसार) इन दो नियमों को संपूर्ण रूप से प्राथमिकता प्राप्त है, जिसका समाज को अनुसरण करना, या प्रतिबंध होना, या अन्य समाज के नियमों के साथ संयुक्त होना आवश्यक है। इस स्थान पर स्वतंत्रता और समानता स्थिरांक और पवित्र चीज़ो में सब से अग्र हो जाते हैं, जिनका अपमान असंभव

है, और यह संभव हो जाता है कि इन दोनों नियमों का अपमान न करने के लिए अन्य अधिकारों और नियमों का उल्लंघन हो।

यह वह विषय है, जो समग्र रूप से उन इस्लामिक नियमों से विपरीत है, जो जीवन के प्रत्येक भाग में शामिल है।

राजीवः तुम हमारे सामने उस क़ानूनी और बौद्धिक का विस्तार करो जिस में यह शब्द मानवीय अधिकार इस्लाम धर्म की सीमाओं में प्रकट होता है, ताकि हम अन्य विचारों के साथ इसकी तुलना कर सकें।

राषिदः इस्लाम धर्म में, और इस्लामी समाज में संपूर्ण रूप से एक अलग क़ानूनी विधि हैः

1. बुद्धि और भौतिक भावनाओं के बदले इस्लाम धर्म में नियम और सिद्धांत का प्राथमिक स्त्रोत वही (रहस्योद्घाटन) है, जिससे स्थिरांक और पवित्र विषय प्रकट होते हैं, साथ-साथ बुद्धि और भावनाओं की विशेष क्षेत्र में महत्वता की भी उपेक्षा नही की गयी।

2. लौकिकता के बदले इस्लाम धर्म में हम शरिअत, और धर्म का संसार के साथ संघटन पाते हैं। यही वह विधि है, जिस पर समाज निर्भर है।

3. स्वतंत्रता व समानता के बदले इस्लाम धर्म में हमे अल्लाह की बंदगी, और मानवता के बीच न्याय मिलता है। (न्याय का अर्थ अवश्य रूप से समानता नही है, जैसा की कुछ लोग मानते है) यह दोनों (बंदगी और न्याय) इस्लामी समाज में न्यायिक मूल में सब से अग्र है। इन दोनों की उपस्थिति और इनका अपमान न करना संपूर्ण रूप से मुख्य विषय है, अन्य समाज के नियमों (जिन में अधिकार और स्वतंत्रता के नियम भी शामिल है) का इसके साथ संयुक्त होना, या इसका पालन करना, या इसका अनुसरण करना ज़रूरी है।

4. व्यक्तिगत परिस्थिति के बदले इस्लाम धर्म में हमे समाज और व्यक्ति दोनों पर एक समान ज़िम्मेदारी, और आपसी प्रेम मिलता है। इन में से किसी पर अन्याय या ज़्यादती नही होती।

राजीवः अच्छा यह होगा कि हम इन दो विचारों को अन्य उन अधिकारों के

सामने रखें, जिन के प्रति हमारे बीच विरोध है, ताकि परिस्थिति अधिक प्रकट हो।

माइकलः प्रत्येक प्रणाली की पृष्ठभूमि मूल्यों के आधार पर (जिन से अधिकार प्रकट होते हैं) इस्लामिक और पश्चिमी विचारों के बीच तुलना करने के लिए सिद्धांत की स्वतंत्रता के विषय को निर्धारित करना संभव है।

राषिदः सिद्धांत की स्वतंत्रता, या धार्मिक स्वतंत्रता वास्तविक रूप से तुलना करने के लिए एक उपजाऊ क्षेत्र है। इस विषय का कारण धर्म के आवधारण में और मूल्य नियमों से धर्म के संबंधित होने के प्रति दोनों (इस्लामिक व पश्चिमी) प्रणालियों के बीच पाया जानेवाला अंतर है।

पश्चिम में किसी भी सदस्य को यह अधिकार प्राप्त है कि वह किसी भी धर्म को अपना लें, या नास्तिक बन जाये, या अपना धर्म छोडकर कोई और धर्म स्वीकार करलें। क्योंकि यह सिद्धांत की स्वतंत्रता के अधिकार के संदर्भ में आता है, और यह व्यक्तिगत अधिकार है, जिस में किसी की ओर से हस्तक्षेप की अनुमति नही होगी।

लेकिन साथ-साथ हम यह देखते हैं कि पश्चिम का मुसलमान, अगर हम यह मान भी लें कि वह जो चाहे सिद्धांत रख सकता है, लेकिन इसी स्वतंत्रता के साथ उसको अपने सिद्धांत के अनुसार व्यवहार करने का अधिकार प्राप्त नही है। इसका अर्थ यह हुवा कि पश्चिम मुसलमान को जीवन में अपने धर्म के अनुसार उपयोग करने का अधिकार नही देता है। किन्तु पश्चिम के लोग मुसलमान को (उदाहरण के रूप में) कई पश्चिमी देशों में जानवरों को इस्लामिक विधि के अनुसार ज़िबह (वध) करने से रोकते हैं। इसी प्रकार मुसलमान को दूसरी शादी करने से मना करते हैं। कुछ देशों में मुस्लिम महिला को ऐसी वेश-भूषा से रोकते हैं जिस के प्रति उस महिला का यह विश्वास होता है कि धर्म उसके लिए यह वेश-भूषा ज़रूरी मानता है, और इस जैसे व्यवहार को मुसलमान (पुरुष हो या स्त्री) अपने धर्म का एक भाग समझता है... क्या तुम इस पश्चिमी व्यवहार का स्पष्टीकरण कर सकते हो ?

माइकलः इसलिए कि यह व्यवहार भावनाओं और मानव जाति की अंतरात्मा के संदर्भ से बाहर है, तो यह सिद्धांत की स्वतंत्रता के अधिकार से भी बाहर होगा। और इसलिए भी कि इस जैसे व्यवहार में प्रणाली, सामाजिक संस्कृति और उस क़ानून का उल्लंघन है, जिसको समाज के अधिकतर सदस्यों ने पसंद किया, और जो जीवन के मामलों से धर्म को अलग रखना आवश्यक ठहराता है।

लेकिन साथ-साथ मैं तुम्हे यह आश्वासन (गारंटी) देता हूँ कि क़ानून के अनुसार मुसलमान के लिए वैवाहिक संबंध से हटकर अन्य महिलाओं के साथ जीवन-यापन करना जायज़ है। बस शर्त यह होगी कि आपसी समझौते के साथ हो, और वैवाहिक गृह से बाहर हो।

राषिदः लेकिन जिस व्यवहार की अनुमति मुसलमान को क़ानूनी तौर पर दी गयी है, वह व्यवहार उस धर्म के विपरीत है, जिसको वह मानता और अनुसरण करता है।

निश्चित रूप से मैं मानता हूँ कि तुम (पश्चिम के लोग) इस जैसे प्रतिबंध को अधिकार और स्वतंत्रता के लिए कलंक नही समझते हैं। क्योंकि तुम लोग इस जैसे व्यवहार और धर्म के बीच कोई संबंध ही नही मानते। बल्कि तुम लोग तो इस जैसे व्यवहार को अपनी आधुनिक प्रगति (जो पवित्र स्थिरांक बन गयी) के लिए सुरक्षित और नियंत्रित रखने का कारण जानते हो।

और इसका कारण यह है कि सिद्धांत या धर्म का विचार पश्चिम की उस लौकिक दृष्टिकोण के साथ सामंजस्य हुवा है, जो धर्म को जीवन से अलग करती है। किन्तु इस नियम के अनुसार धर्म का सामाजिक प्रणाली से कोई संबंध नही, बल्कि धर्म तो एक भावना या अंतरात्मा है, जो मानव केवल अपने भीतर गुप्त रखता है। वह अपनी इस भावना में जीवन संबंधित व्यवहार से बिल्कुल अलग होता है। जैसा कि पिछली बात-चीत में तुम्हारे सामने इसका स्पष्ट किया गया।

राजीवः अब मै इस्लामिक दृष्टिकोण को समझने लगा हूँ।

राषिदः इस्लामिक विचार के अनुसार सिद्धांत की स्वतंत्रता समाज के मख्य स्थिरांक (अल्लाह की बंदगी और अनुसरण) का ध्यान रखने के संदर्भ में उपलब्ध है। इसी आधार पर इस्लामिक समाज हर उस व्यक्ति को अपनी छाया तले स्थान प्रधान करता है, जो यह घोषणा कर ले कि अल्लाह ही उस पर प्रभावी है। और हर उस व्यक्ति का तिरस्कार करे, जो अल्लाह का विद्रोही हो, और अल्लाह के क़ानून को तोडने वाला हो। इसी कारण इस्लामिक समाज में धार्मिक बहु वाद की उपलब्धी की क्षमता मिलती है, क्योंकि इस्लामिक समाज यहूदी और ईसाई धर्म को मानने वाले लोगों के साथ जीवन-यापन करना स्वीकार करता है, और उन्हें अपने व्यक्तिगत मामलों का आयोजन करने की स्वतंत्रता देता है। जब कि इस्लामिक समाज में इन दो धर्मो के अलावा मूर्ति पूजा या नास्तिकता के

अनुयायियों का कोई स्थान नही है। इसका कारण यह है कि यहूदी और ईसाई धर्म का संबंध देवत्व धर्मो से है, और इन दोनों धर्मो का अनुसरण करने वाले अल्लाह की बंदगी और उसको प्रभु मानने के घोषणा करते हैं।

लेकिन इन दोनों धर्मो में होने वाला बदलाव (जो अल्लाह की बंदगी की वास्तविकता से टकराता है) इस्लाम धर्म के अनुसार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमा को उनके लिए सिद्धांत की स्वतंत्रता की सीमा को अधिक तंग कर देता है। किन्तु उन्हें अपने धर्म का प्रचार करने, और प्रार्थना गृह के बाहर उन्हें अपनी पूजा के संस्कार (जो इस्लाम धर्म के विपरीत होने का संकेत देता हो) प्रयोग करने का अधिकार नही होगा। इस सीमा से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का बाहर आना, इस्लामिक समाज की प्रणाली का उल्लंघन और उसके प्राथमिक पवित्र स्थिरांक के अपमान के समान है।

माइकलः इस्लाम धर्म अपने अनुयायियों को किसी और धर्म को स्वीकार करने से रोकता है। इसके प्रति तुम्हारा क्या विचार है ?

राषिदः इस समस्या का भी संबंध मेरी पिछली बातों से है। इस्लाम धर्म को छोडने की समस्या का संबंध इस्लामिक सिद्धांत के अनुसार धार्मिक स्वतंत्रता के विचार से है। किन्तु इस्लाम धर्म किसी ऐसे व्यक्ति को दण्ड नही देता, जो कभी इस धर्म को स्वीकार ही न किया हो, और न किसी व्यक्ति को इस धर्म को स्वीकार करने पर मजबूर करता है। धर्म के विषय में कोई ज़बरदस्ती नही। (अल-बक़रा, 256) कह दो, यह सत्य है तुम्हारे रब की ओर से। तो अब जो कोई चाहे माने और जो चाहे इनकार कर दे। (अल-कहफ, 29) तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म है और मेरे लिए मेरा धर्म। (अल-काफ़िरून, 6)... हम साथ-साथ यह भी देखते हैं कि इस्लाम धर्म किसी अन्य धर्म को स्वीकार करने वाले व्यक्ति को रोकता और दण्ड देता है।

इस्लाम धर्म को छोडने वाले व्यक्ति के प्रति इस्लाम की परिस्थिति हम इस तरह समझ सकते हैं कि इस्लाम धर्म को छोडना उन मूल्य नियमों और सिद्धांत पर कलंक लगाने के समान है, जिन पर यह समाज निर्भर है। या दूसरे शब्दों में यह कहो कि इस्लाम धर्म को छोडना इस धर्म की वास्तविकता को ग़लत मानने की घोषणा, या मानव को इस धर्म की आवश्यकता न होने की घोषणा करना है। और यह ऐसे समाज में अस्वीकार है जिसका स्त्रोत इस धर्म की सत्यता का सिद्धांत और उसकी आवश्यकता है।

यह बिल्कुल उसी प्रकार है, जैसे पश्चिमी समाज में कोई (स्वतंत्रता का नारा लगाते हुए) पवित्र स्थिरांक स्वतंत्रता की उपेक्षा करने की अपील करे। स्वतः स्वतंत्रता के समर्थको की ओर से तुरंत तैयार जवाब मिलेगा। वह उनका यह मशहूर नारा होगाः स्वतंत्रता के दुशमनों के लिए कोई स्वतंत्रता नही है। क्योंकि यह व्यक्ति स्वतंत्रता का उपयोग स्वतंत्रता का उल्लंघन करने के लिए करेगा । यानी ऐसे मूल्य नियम और सिद्धांत का अपमान करेगा जिस का यह समाज निर्भर है।

माइकलः प्रिय राषिद। विस्तार से स्पष्टीकरण पर मै तुम्हारा आभारी हूँ.... मैं इस वाद-विवाद से संतुष्ट हूँ और यह आशा करता हूँ कि यह चर्चा चलती रहेगी ।

कृपा । कुछ समय दीजिए ।



कृपा । कुछ समय दीजिए ।

माइकलः हमें पहुँच कर दस मिनट हो चुके हैं, और अब तक राषिद नही आया... बडी आश्चर्यजनक बात है ।

राजीवः हाँ। इस से अन्य समय सीमायें प्रभावित होती है...

कुछ समय बाद राषिद मीटिंग हॉल में प्रवेश करता है, और अपने दोनों मित्रों को प्रणाम करते हुए यह कहता हैः

मुझे आने में देर हो गयी। क्षमा चाहता हूँ। मैं कुछ मुख्य कार्य में व्यस्त था, जिसके कारण मैं समय पर नही पहुँच सका, और इन कार्यो को दूसरे समय पर करना भी संभव नही था।

माइकलः प्रिय **राषिदः** तुम मुझे यह कहने की अनुमति दो कि अरबी और इस्लामी जाति की यह सामान्य विशेषता है। समय का उनके पास कोई महत्व नही है। क्षमा चाहता हूँ, अगर यह मेरा स्पष्ठ तुम्हे कठोर लगा हो।

राषिदः तुमने जो कुछ कहा, अधिकतर वह सत्य है। वास्तविक रूप से हम मुसलमानों ने अपने-आप के साथ बुरा व्यवहार किया, और अन्य जातियों को अपने प्रति ग़लत सोंचने का आदि बनाया.... लेकिन मैं केवल इस ग़लत व्यवहार को इस्लाम धर्म से संबंधित करने की ग़लती सुधारूँगा ।

माइकलः अगर इस्लाम से इसका संबंध न हो, तो फिर किस से संबंध होगा ?। मेरे विचार के अनुसार समय सारिणी का उल्लंघन करने वाले अधिकतर लोग तुम मुस्लिम देशों के वासी हैं।

राषिदः हमारी जाति और तुम्हारी जाति के बीच दो मुख्य अंतर हैः 1. संस्कृति, 2. वातावरण.... वास्तविक रूप से वातावरण, न कि इस्लाम धर्म इस जैसे व्यवहार का ज़िम्मेदार है।

राजीवः ऐसे कैसे हो सकता है। होना तो यह चाहिए कि तुम्हारे पास धर्म ही संस्कृति का निर्माण करने में मुख्य सहायक हो ?।

राषिदः यह बात भी सही है। लेकिन वास्तविक रूप से आधुनिक काल के अधिकतर मुसलमान अपने धर्म की शिक्षाओं का, या तो अज्ञानी होने के कारण, या लापरवाही के कारण पालन नही करते हैं, और जब मानव पर धर्म व सिद्धांत का प्रभाव कम होता है, तो वह अपने आस-पास के वातावरण से प्रभावित हो जाता है।

माइकलः हम जिस विषय के बारे में चर्चा कर रहे हैं, उसमें वातावरण के प्रभाव का क्या अर्थ ?

राषिदः मैं इसका विस्तार करता हुँ, तुम लोग (उदाहरण के रूप से) प्राचीन काल से अपने देशों में कठोर ठण्डे मौसम में जीवन-यापन करते हो। जीवित रहने के नियमों ने तुम पर यह अनिवार्यता कर दिया है कि तुम इस जैसे मौसम के प्रभाव को ध्यान में रखो। किन्तु तुम लोग सर्दी के मौसम के लिए पहले से अनाज इकट्ठा कर लेते हो, और सर्दी का मुक़ाबला करने के लिए तैयारी करते हुए लकड़ियाँ या इंधन जमा करलेते हो... इसी प्रकार किसी भी चीज़ के प्रति विचार करने से पहले-पहले वातावरण तुम्हारे लिए यह अनिवार्य कर देता है कि तुम ऐसे व्यवहार की विधि अपनाओ जिसमें संतुलन हो और समय-सारिणी का ध्यान हो।

हमारे देश शीतोष्ण कटिबंध, या गर्म समशीतोष्ण प्रांत में आते है। इन में साल भर अधिकतर मौसमों में वातावरण संतुलित होता है। इसी प्रकार वहाँ धन और फसलों की प्रचुरता है। किन्तु थोड़ा सा प्रयास और थोडा-सा ध्यान इन देशों में जीवन की निरंतरता के लिए काफी है। इसी का प्रभाव इन देशों के वासियों के प्रभाव पर भी हुवा है। किन्तु वे आराम के आदि हो गये। या तुम इसको सुस्ती और कमज़ोरी भी कह सकते हो। (जिस पर गर्म मौसम भी सहायक होता है) और उनके भीतर यह भावना नही पैदा हुई कि बारिकी के साथ व्यवहार न करने, और समय सारिणी का ध्यान न रखने से उनके जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

राजीवः निस्संदेह मानव पर वातावरण का गंभीर प्रभाव होता है, और इस प्रभाव का मुक़ाबला करने के लिए इससे भी अधिक शक्तिशाली प्रभावी की आवश्यकता होती है। तो क्या इस्लाम धर्म ने इन विषयों की ओर ध्यान न देने के कारण, या इस्लाम धर्म में इनका समाधान करने की क्षमता न होने के कारण, वातावरण के इस नकारात्मक प्रभाव में परिवर्तन नही लाया ?

राषिदः जहाँ तक इस्लाम धर्म में क्षमता न होने की बात है, तो उसके कई कारण है, जिसकी चर्चा करने का यह स्थान नही है। लेकिन सामान्य रूप से यह कहना

संभव है कि इस्लाम धर्म ने उन सारी समितियों को संयुक्त बना दिया है, जिन्हों ने इस्लाम धर्म को अपना स्त्रोत माना। इसी प्रकार इस्लाम धर्म का संपूर्ण रूप से अनुसरण करने वाले मुसलमानों के जीवन को संतुलित बनाया, चाहे वह किसी भी समय या स्थान के वासी हो। इस क्षेत्र में कई उदाहरण उपलब्ध है।

माइकलः क्या तुम हमारे सामने इनमें से कुछ उदाहरणों का विवरण करोगे ?

राषिदः विभिन्न उदाहरण हैं। इनमें से एक यह हैः

उमारह बिन ख़ुज़ैमा बिन साबित कहते हैं कि उन्हों ने सत्ताधारी उमर बिन खत्ताब को उनके पिता ख़ुज़ैमह से यह कहते हुए सुनाः तुम्हें अपनी ज़मीन पर खेती करने में क्या आपत्ति है? तो मेरे पिता ने उनसे कहाः मै बूढा आदमी हूँ, कल मेरी मृत्यु हो जायेगी। तो उमर ने उनसे कहाः मेरा तुम्हें यह आदेश है तुम ज़रूर इस ज़मीन पर खेती करो। उमारह कहते हैः मैं ने उमर को मेरे पिता के साथ अपने हाथों से खेती करते हुए देखा। अल्लाह के रसूल के साथी अब्दुल्ला बिन मस्ऊद कहते हैः मैं उस पुरुष से नाराज़ हो जाता हूँ जो खाली बैठा हुवा होता है, न वह अपने संसारिक जीवन के लिए कुछ करता है, और न परलोक के लिए। अब्दुर्रहमान बिन इमाम अबु हातिम राज़ी अपने पिता की जीवन चर्चा के बारे में चर्चा करते हुए कहते हैः अधिकतर समय ऐसा होता था कि वह भोजन कर रहे होते और मैं उन्हें किताब पढकर सुनाता। वह चल रहे होते और मै पढ़कर उन्हें सुनाता। वह शौचालय के लिए जा रहे होते, और मैं उन्हें पढ कर सुनाता, और किसी विषय की खोज में वह घर में प्रवेश कर रहे होते, और मैं उन्हें पढ कर सुनाता।

राजीवः लेकिन क्या इस्लाम धर्म ने अपनी शिक्षाओं में समय की महत्वता को स्थापित किया है, ताकि किसी भी काल में इस्लाम के अनुसरण करने वाले के लिए यह शिक्षाएँ मार्गदर्शन हों ?

राषिदः हाँ इस्लाम ने समय और उसकी महत्वता को पवित्र ख़ुरआन और रसूल की वाणी में बहुत उच्च स्थान प्रधान किया है। किन्तु पवित्र ख़ुरआन, इस्लाम धर्म के रसूल की शिक्षाओं, और सहाबा व उनके अनुयायियों की आत्म कथा का ज्ञान रखने वाला उसमें केवल समय की महत्वता और प्रत्येक स्थिति में समय की पाबंदी देखेगा। इसका एक उदाहरण यह है कि अल्लाह ने अपनी पुस्तक में कई बार निर्धारित समय की ख़सम खायी। अल्लाह ने कहाः साक्षी है उषाकाल, साक्षी हैं दस रातें। (अल-फ़ज्र, 1-2) अल्लाह ने कहाः साक्षी है रात जब कि वह

छा जाये, और दिन जब कि वह प्रकाशमान हो। (अल-लैल, 1-2) अल्लाह ने यह भी कहाः गवाह है गुज़रता समय। (अल अस्र, 1) अल्लाह ने इस बात का संकेत दिया कि अल्लाह के प्रभुत्वशाली होने की निशानियों में से एक निशानी सूर्य और चन्द्र की सृष्टि है, ताकि इससे हमें वर्ष और गणित का ज्ञान हो।

इस्लाम की अधिकतर प्रार्थनाओं में समय की महत्वता को प्रकट किया गया, किन्तु सारी प्रार्थनाएँ प्रारंभ होने से लेकर अंत होने तक समय से संबंधित है। बल्कि प्रत्येक प्रार्थना का निर्धारित समय उसके ठीक होने और ईशवर द्वारा स्वीकार होने की एक शर्त है। इसीलिए इस्लाम धर्म ने इस महत्वपूर्ण क्षेत्र को अधिक महत्व दिया है। वह क्षेत्र समय को सम्मान देने और उसकी पाबंदी करने को सारी प्रार्थनाएँ ईशवर द्वारा स्वीकार होने की एक शर्त माना। उदाहरण के रूप से अल्लाह ने कहाः निस्संदेह ईमानवालों पर समय की पाबन्दी के साथ नमाज़ पढना अनिवार्य है। (अन-निसा, 103) नमाज़ जो कि इस्लाम धर्म का एक स्तंभ है दिन और रात को कई भागों में विभाजित करती है, जिसके लिए निर्धारित समय और स्पष्ट कारण है, यही स्थिति इस्लाम धर्म के अन्य स्तंभों का भी हैः उपन्यास के लिए प्रति वर्ष निर्धारित समय है, जिस के द्वारा मुसलमान अपने दैनिक जीवन को निर्धारित समय-सारिणी से जोड़ लेता है। इसी प्रकार ज़कात (दान) एक सामाजिक आर्थिक प्रणाली है, जो निर्धारित समय और विशिष्ट राशि से संबंधित है, और यही स्थिति हम हज यात्रा में भी देखेंगे।

इस्लाम धर्म के रसूल मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम की वाणी में समय की महत्वता के कई उदाहरण मिलते हैं। किन्तु इस में समय का बहुत ध्यान रखा गया। रसूल की वाणी की परिस्थिति समय की महत्वता का विवरण करने में पवित्र ख़ुरआन के समान है। रसूल ने निर्धारित समय की पाबंदी करने को उच्च स्थान प्रधान किया, आप ने कहाः मुसलमान अपनी शर्तो को पूरा करते हैं। मीटिंग या बैठक के लिए समय को निर्धारित करना प्रत्येक सदस्य द्वारा अपने आप पर इस समय की पाबंदी करने की शर्त लगाने के समान है। अगर उसने निर्धारित समय की पाबंदी न की, तो अवश्य उसने अपने ऊपर लगाये हुए शर्त के विपरीत व्यवहार किया है। रसूल सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वादा तोडने को पाखंड का संकेत माना है। आप ने कहाः पाखंड की तीन निशानियाँ हैः जब भी वह बात करता है तो झूठ बोलता है, जब भी वादा करता है तो तोडता है, और जब भी उसको विश्वसनीय बनाया जाता है तो वह विश्वासघात करता है। निर्धारित समय की पाबंदी न करने वाला सदस्य अवश्य रूप से वादा करके तोडा है।

माइकलः समय की महत्वता सारी समितियों और संस्कृतियों के बीच एक संयुक्त मूल्य है तो क्या इस्लाम धर्म ने इस मूल्य में अधिक चीज़ें जोडा है ?

राषिदः इस्लाम धर्म ने समय को उपयुक्त बनाने, व उसका निवेश करने के मूल्य में तीन प्रमुख आयाम जोड़े हैः **प्रथमः** अवधि। किन्तु समय मानव की अधिक मूल्यवान चीज़ यानी उसकी आत्मा से भी अधिक मूल्यवान चीज़ है। समय को आगे पीछे करना, या बढाना असंभव है। समय जब हाथ से निकल जाता है, तो उसके लौटने की कोई आशा नही रहती। इसीलिए इस्लाम धर्म ने अंतिम अवधि तक, यानी मानव के जीवन के अंत तक समय का सही उपयोग करने पर प्रोत्साहित किया। बल्कि इस्लाम ने तो मृत्यु के बाद वाले जीवन, और परलोक में होने वाले हिसाब-किताब से समय को संबंधित किया। इसी प्रकार इस्लाम ने कठिन और गंभीर स्थितियों में भी समय से पूरा-पूरा लाभ उठाने की मुसलमानों को शिक्षा दी है। रसूल ने कहाः अगर क़ियामत आ जाये, और तुम में से किसी के हाथ में शाख़ हो, और उसको बोने की क्षमता अपने अंदर भी वह पाता हो, तो ज़रूर वह उसको बो दे।

द्वितीयः अनिवार्यताः इस्लाम धर्म ने समय को उपयुक्त बनाने व उसका निवेश करने के मूल्य को मुसलमान के लिए कोई विकल्प नही, बल्कि अनिवार्य माना है। इस सिद्धांत से कि मुसलमान की उम्र (जो मानवीय कार्य के लिए समय अवधि होती है) केवल उसकी विशिष्ट संपत्ति नही है। बल्कि वह तो उसके प्रभु के द्वारा मिला हुवा दान है, ताकि वह अपनी उम्र अच्छे से अच्छे रूप में उन विषयों में बितायें, जिससे उसका प्रभु संतुष्ट होता हो। इस्लाम धर्म ने समय को पूंजी के समान माना, जिसको खर्च करने और उपयोग करने की विधि के प्रति मानव से हिसाब लिया जायेगा, किन्तु इस्लाम के रसूल सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहाः ख़ियामत के दिन चार चीज़ों के प्रति पूछे जाने से पहले-पहले किसी भी मानव के पैर नही हटेंगेः उसकी उम्र के प्रति प्रश्न होगा, किन चीज़ो में उसने अपनी उम्र बितायी?... रसूल ने कहाः दो अनुग्रह ऐसी हैं जिस में अधिकतर लोग धोखे में पडे हुए हैः स्वास्थ्य और रिक्त समय। रसूल ने यह भी कहाः पाँच चीज़ो से अन्य पाँच चीज़ो के आने से पहले-पहले लाभ उठाओः मृत्यु से पहले-पहले जीवन से। बीमारी से पहले-पहले तंदुरुस्ती से। व्यस्तता से पहले-पहले रिक्त समय से। बुढापे से पहले-पहले जवानी से, और ग़रीबी से पहले-पहले मालदारी से लाभ उठाओ। निस्संदेह जब पूँजी अधिक होती है, तो उसका हिसाब भी अधिक होता है। अल्लाह ने कहाः क्या हमने तुम्हें इतनी आयु नही दी कि जिस में कोई होश में आना चाहता तो होश में आ जाता ? (फ़ातिर, 37) और रसूल ने कहाः मैं अल्लाह से उस व्यक्ति के लिए क्षमा चाहता हूँ, जिसकी उम्र को अल्लाह ने बढाते हुए 60 वर्ष तक पहुंचा दि हो। हसन बस्री से नक़ल किया गया कि आप ने कहाः ऐ आदम की संतान। तुम्हारा जीवन तो कुछ दिनों और रातों का नाम है, जब जब दिन समाप्त होता रहेगा, तो तुम्हारे जीवन का कुछ भाग भी समाप्त होता रहेगा।.... जीवन का यह भाग घंटों, मिनटों और क्षणों में भी विभाजित होता है.... जब जब एक-एक मिनट या क्षण समाप्त होता है तो तुम्हारे जीवन का भाग भी समाप्त होता है। किन्तु समय ही जीवन है।

तृतीयः समय के मूल्य का सही उपयोग करने पर मिलने वाला बदला और प्रेरित करनाः समय बाह्य रूप से परिवर्तन होने वाला विषय है। किसी अन्य व्यक्ति की ओर से इस को नियंत्रण करना, और उसका ठीक उपयोग करना असंभव है। इसीलिए इस्लाम ने मुसलमान सदस्य के लिए आंतरिक रूप से प्रेरित करने वाले विषय निर्धारित किया, जिसका महत्व भौतिक विषयों से अधिक है। इस स्थान पर अंतारात्मिकता के रूप से व्यक्तिगत निगरानी का महत्व बढता है, क्योंकि व्यक्तिगत व्यवहार के ठीक होने की दर को नियंत्रित रखने का यही प्रमुख कारण है। इस्लाम ने व्यक्तिगत निगरानी प्रजापति की ओर से हिसाब-किताब का भय रखने, और उसकी ओर से मिलने वाले की पुण्य की आशा रखने में प्रकट होती है। यह वह विषय है जो मुसलमान को अपना समय स्वयं अपने लिए और अपने समाज के लिए लाभदायक चीज़ो में लगाने की ओर प्रेरित करता है।

माइकलः इस धर्म का मामला बडा आश्चर्यजनक है। ..... मानवीय जीवन के प्रत्येक विषय मे हस्तक्षेप करता है, और निजी जीवन में भी मानव के लिए कोई विकल्प नही छोडता है।

राषिदः नही, नही। इस्लाम धर्म तो विविधता और विकल्पों के लिए कई अवसर प्रधान करता है। लेकिन इस्लाम अपने मूल्य नियमों के संदर्भ से हटकर अन्य विधियों के बीच टकराऊ का अवसर नही छोडता। यह मानव, ब्रह्माण्ड और जीवन की ओर उस इस्लामी दृष्टकोण के उचित है, जिस के बारे मे मैं पहले तुम्हारे सामने विवरण किया था।

इस्लाम धर्म समय की महत्वता की ओर केवल प्रशासनिक या आर्थिक क्षेत्र में आने वाले भौतिक निवेश के संदर्भ में ही नही देखता। बल्कि इस्लाम का दृष्टिकोण इससे भी अधिक ऊँचा है। किन्तु मानव इस्लामिक दृष्टिकोण से भौतिक या सांसारिक क्षेत्र में उत्पादक या सेवक होने से पहले वह अनुपालन करने वाला मुसलमान है, जो अल्लाह के दण्ड से भय रखता है, उसकी ओर से मिलने वाले पुण्य की आशा रखता है, और वह अपने प्रत्येक कथन और कार्य में अल्लाह को उपस्थित मानता है। इस्लाम धर्म में समय के निवेश और आयोजन का अर्थ केवल उसका सही उपयोग ही नही है, जिस पर उत्पाद और भौतिक लाभ निर्भर होता है, बल्कि इसका अर्थ इस से भी अधिक उच्च है। वह यह कि समय का निवेश एक आद्यात्मिक लक्ष्य है, जो क़ियामत के दिन, यानी पुण्य और दण्ड के दिन भय से पैदा होता है।

राजीवः मेरे दिमाग़ में एक और बात है, जो कुछ मुसलमानों के व्यवहार से संबंधित है। लेकिन अगली बैठक तक इस बात को स्थगित करना बेहतर समझता हूँ ..... फिर मिलेंगे ।

मुझे अनुमति दो ।



मुझे अनुमति दो ।

तीनों मित्रों के बीच निर्धारित किये हुए समय से पहले ही राषिद अपना लापटाप लेकर राजीव और माइकल की प्रतीक्षा में तैयार बैठा था। कुछ देर बात वे एक के बाद एक आये। आपसी कुशल समाचार के बाद राषिद कहने लगाः

प्रिय राजीव पिछली बैठक में तुम ने यह कहा था कि तुम्हारे मन में समय की पाबंदी के विषय के अलावा एक और बात है, जो कुछ मुसलमानों के व्यवहार से संबंधित है।

राजीवः हाँ। देखने में यह आता है कि अन्य लोगों के साथ व्यवहार करने के नियमों का ध्यान न रखना तुम मुसलमानों के पास केवल समय की पाबंदी पर निर्भर नही है, बल्कि व्यवहार के दूसरे क्षेत्रों में भी नियमों का उल्लंघन होता है।

राषिदः वह कैसे ? क्या तुम ने मेरी तरफ से कोई दुर्व्यवहार नोट किया ?

राजीवः नही। नही। .... क्षमा चाहता हूँ। मैं व्यक्तिगत रूप से तुम्हारे बारे में नही कहना चाहता हूँ। लेकिन सामान्य रूप से वास्तविकता यही है। मैं ने एक होटल के दरवाजे पर नोटिस बोर्ड देखा, जिस पर लिखा थाः कुत्तों और अरबों को होटल में प्रवेश करने की अनुमति नही है। मुझे इस नोटिस बोर्ड को देखते ही बहुत कष्ट हुवा तो मैं उस होटल के मालिक से बात किया, और नोटिस बोर्ड लगाने का कारण पूछा.... हाँ उस मालिक के चेहरे पर घमंड और उसके व्यवहार में दृढ़ता पैदा हुई, लेकिन उसने नोटिस बोर्ड लगाने के कुछ उचित कारण प्रधान किये। उसने कहाः मेरी होटल संपन्न है, इस में नेता, मंत्री और धनिक लोग आते हैं.... हुवा यह कि कुछ वर्षो पहले मैं ने कुछ अरब नव युवकों को अपने होटल में स्वागत किया, लेकिन वे इस तरह दुर्व्यवहार किया, जिस से मेरी होटल और उसमें आनेवालों की छवि खराब होती हैः

- एक बार कुछ अरब नव युवकों ने होटल के कर्मचारियों की अनुमति के बिना अपनी इच्छा के अनुसार टेबुल इधर-उधर करने लगे, जिस के कारण होटल में बाधा और अराजकता पैदा हो गयी...

- और एक बार अरब नव युवकों के बीच झगडा हो गया, और वे ऊँची आवाज़ से आपस में चिल्लाने लगे....

- कुछ अरब लोग अधिक ग़लत तरीक़े से अपनी उंगलियाँ थाली में डालते हैं, जिस से अन्य लोगों को प्रतिकर्षण होता है।

- बल्कि कुछ लोगों ने तो भोजन के लिए उपयोग में आनेवाले कांटे या चाकू से अपनी पीठ खुजाया....

होटल के मालिक ने कहाः अरब लोगों के इस दुर्व्यवहार के कारण उसने अपने कई बडे ग्राहक खो दिये। किन्तु इस समस्या के समाधान के लिए अरबों को

होटल में प्रवेश करने से रोकने का निर्णय लिया गया।

राषिदः तुम ने जो कुछ कहा, उसमें अधिकतर बातें सही है। लेकिन जैसा कि मैं ने पहले भी कहा कि हम मुसलमानों ने अपने आपके साथ बुरा व्यवहार किया, और अन्य जातियों को अपने प्रति ग़लत सोंचने का आदि बनाया.... लेकिन फिर एक बार मैं इस ग़लती व्यवहार को इस्लाम धर्म से संबंधित करने की ग़लती सुधारूँगा ।

माइकलः शायद तुम इस व्यवहार का कारण भी वातावरण का प्रभाव मानते हो ?।

राषिदः हाँ निश्चित रूप से। मैं वातावरण के प्रभाव को भूल नही सकता। साथ-साथ इन जैसे नव युवकों की गलत शिक्षा भी इसका कारण है।

माइकलः ग़लत शिक्षा का प्रभाव मैं मानता हूँ। लेकिन इस जैसे व्यवहार में वातावरण का प्रभाव मेरी समझ में आनेवाली बात नही है ।

राषिदः इस वातावरण के प्रभाव को समझाने के लिए मैं तुम्हारे सामने एक उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ - तुम लोग ऐसे देशों मे जीवन-यापन कर रहे हो, जिसके प्रति सब यह जानते हैं कि वह धरती का सबसे ठण्डा प्रांत है। जहाँ पर सर्दी का मौसम लम्बा होता है, और सर्दी बडी कठोर होती है। वर्षा, बर्फ, और ठण्डी-ठण्डी आंधियाँ बहुत चलती हैं। इस जैसे मौसम में इन समस्याओं का ध्यान रखे बिना, और इन समस्याओं का समाधान करने के लिए उपयुक्त उपाय के बिना मानव जीवन यापन नही कर सकता। इसीलिए इन समस्याओं को सामने रखते हुए इन्हीं के अनुसार घरों और कंपनियों की योजना बनाना आवश्यक हो जाता है। इस योजना का कार्यन्वयन के समय मज़बूती और कठोरता के साथ काम करने की कभी आवश्यकता होती है। उदाहरण के रूप से छत और खिड़कियाँ बडी सावधानी के साथ बनाना ज़रूरी है। ताकि पानी या हवा अंदर न आये। और यह भी ज़रूरी होगा कि इन समस्याओं का ध्यान रखते हुए मौसम की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपयुक्त हीटिंग सिस्टम (गर्माने की सामाग्री) प्रबंध किया जाय.... यह सब चीज़े ऐसे व्यवहार में परिवर्तन हो जाती है, जो सावधान रहने, अनुशासन करने और आयोजन करने का आदि बना देते हैं।

जब कि हमारे देशों में कठोर मौसम की यह समस्याएँ नही है। वहाँ पर मानव अपने जीवन को सुरक्षा करने के लिए इस मूल्य व्यवहार की आवश्यकता नही रखता है। जब मानव को इस जैसे वातावरण के प्रभाव के सामने अकेला छोड़ दिया जाय, तो हमारे देश के अधिकतर लोगों के जीवन में अराजकता एक विशेषता बन जायेगी। तुम यह न भूलो कि हमारा वातावरण अधिकतर रेगिस्तान प्रांत में होता है, जो अपने भीतर सूखे की विशेषता रखता है, और यही विशेषता भावनाओं के सूखा होने का कारण बनती है।

राजीवः तो क्या हम मानव को, उसके निजी जीवन और नैतिक व्यवहार को

सुधारे बिना इस वातावरण के प्रभाव से पीडित रहने दें, अराजक जीवन यापन करने के लिए उसको स्वतंत्रता प्रधान कर दें, और लोगों के साथ आदर्श व्यवहार करने के गुण उसको न सिखायें ?

राषिदः परिस्थिति यह नही है। मै तो वातावरण के प्रभाव का विवरण इसलिए कर रहा हूँ, ताकि हम जो परिस्थिति देख रहे हैं, उसके सही कारण का ज्ञान प्राप्त हो।

राजीवः पश्चिमी जाति और पूर्वी (इस्लामिक) जाति के बीच वातावरण का अंतर देख रहे हैं, तो हमे उस धार्मिक अंतर को भी देखना चाहिए, जो इन जातियों में प्रभावी है। तो क्या हम जिन परिस्थितियों के प्रति चर्चा कर रहे हैं, इसका कारण इस्लाम धर्म भी नही है ?

राषिदः इस्लाम धर्म ने मुसलमान के जीवन और उसके समय को नियंत्रण बनाया, ताकि वह अपने पूरे कार्य को प्रभुत्वशाली अल्लाह की प्रार्थना बना दे। (प्रार्थना का आवधारण बहुत विशाल है, जिसका मैं ने पहले विवरण करदिया है।) अधिकतर लोगों को यह ज्ञान प्राप्त नही है कि अन्य लोगों के साथ व्यवहार की कला शिष्टाचार के अधिक दृष्टिकोण इस बात की पुष्टी करते हैं कि इस कला का प्रमुख केन्द्र इस्लाम धर्म है, जो मुसलमानों के द्वारा स्पेन के शहरो तक पहुँचा। स्पेन में इस्लामी शासन के समाप्त होने के बाद मुसलमानों के हाथों से यह कला (शिष्टाचार की कला) ले ली गयी। फिर कई अन्य देशों, जैसे फ्रांस, स्पेन और लंडन ने इस कला की ओर ध्यान दिया, फिर इसका विकास किया, और अन्य कई चीज़ो का संबंध इस से जोडा, यहाँ तक कि प्रस्तुत स्थिति में यह हमारे सामने उपस्थित है।

माइकलः (हँसते हुए) - तुम मुसलमान लोग अपने धर्म की ओर अधिक प्रेरित होने के कारण यह चाहते हैं कि हर अच्छी चीज़ का संबंध अपने धर्म से जोड़ लें .... मैं तुम से यह नही कहूँगा कि तुम अपने कथन को साबित करो। क्योंकि मै यह जानता हूँ इसके लिए विस्तार से चर्चा की आवश्यकता होगी। लेकिन मैं तुम से केवल यह विनती करूँगा कि तुम यह साबित कर दो कि इस्लाम धर्म में यह नियम उपलब्ध है।

राषिदः निश्चित रूप से इस्लाम ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानव के व्यवहार और नैतिक मूल्यों में परिवर्तन लाया। किन्तु पवित्र ख़ुरआन और रसूल की वाणी में कई विभिन्न नियम उपलब्ध है, जिन को व्यवहार की कला शिष्टाचार के क्षेत्र में प्राथमिकता प्राप्त है।

माइकलः मेरे मित्र यह तो सामान्य बातें है। मैं तो तुम्हारी बातों का उदाहरण चाहता हूँ, ताकि तुम्हारे विचार विश्वसनीय हो।

राषिदः मैं अपने विचारों का वर्णन करने के लिए तुम्हारे सामने कुछ उदाहरण प्रस्तुत करूँगा । हम इस्लाम धर्म के रसूल का उनकी पत्नी और संतान के साथ

व्यवहार का उदाहरण देखेः

जब हम किसी पुरुष को अपनी पत्नी के लिए कार का दरवाज़ा खोलते हुए देखते हैं, तो हम उसके प्रति यह कहते हैं कि वह शांत स्वभावी और नरम व्यवहार वाला पुरुष है। लेकिन हमारे रसूल सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम ज़मीन पर बैठ कर अपने दोनों हाथ उस पर रखते थे, और अपनी पत्नी से यह कहते थे कि तुम अपने पाँव इन हाथों पर रखकर खडी हो जाओ और ऊँटनी पर बैठ जाओ।

रसूल का अपनी पत्नियों, संतान और सेवकों के साथ व्यवहार संपूर्ण रूप से दयालु था। आप कमज़ोरों को क्षमा करते थे। किन्तु एक बार आप मुसलमानों को नमाज़ पढा रहे थे। आप सजदे की हालत में थे, आप का एक छोटा पोता आपकी पीठ पर बैठ गया, तो आपने इस छोटे बालक का ध्यान रखते हुए उसके पीठ पर से उतर जाने तक आप सजदे से नही उठे।

इस्लाम धर्म ने नैतिकता और विनम्रता का संदेश दिया। इस्लाम धर्म के रसूल में यह गुण उपलब्ध थे। किन्तु रसूल सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम अधिक विनम्र थे। इसी विनम्रता के कारण आप स्वयं अपने वस्त्र धो लेते थे। आप अपने किसी भी सेवक पर उसकी क्षमता से अधिक बोझ नही डालते थे, और अगर आप अपने सेवकों से कुछ मंगवाते, तो भी आप उनकी सहायता करते। हालांकि आप अपने साथियों के बीच महान रसूल थे और इस्लामी सरकार के शासक थे। ग़ैर मुस्लिमों के साथ भी आपके आदर्शीय व्यवहार के कुछ उदाहरण मिलते हैं। किन्तु एक बार यहूदी व्यक्ति की शव यात्रा आपके पास से गज़री। आप उसके सम्मान में खडे हो गये। आपके आस-पास वाले लोग इस व्यवहार से आश्चर्यचकित हो गये, तो आपने उनसे यह कहा कि मृत्यु के सम्मान में मानवता के बीच कोई अंतर नही।

बल्कि इस्लाम ने तो मानव की चाल और उसकी नैतिकता के बीच संबंध जोड़ दिया। किन्तु पवित्र ख़ुरआन ने चाल के नैतिक नियम निर्धारित किये। वह यह कि चलते समय अपना सर अधिक ऊपर न उठाये, जिससे तुम लोगों के बीच घमण्डी लगो, और न अपना सर ऐसे झुकाओ जिस से तुम नीच लगो। अल्लाह ने कहाः और लोगों से अपना रुख़ न फेर और न धरती में इतराकर चल। निश्चय ही अल्लाह किसी अहंकारी, डींग मारने वाले को पसन्द नही करता। और अपनी चाल में सहजता एवं संतुलन बनाये रख और अपनी आवाज़ धीमी रख।

राजीवः जब कभी इस होटल के मालिक से मेरा सामना हो, तो उसने अरब नव युवकों का जो व्यवहार देखा है, उसके विपरीत मैं उसके सामने इनकी दूसरी छवी प्रस्तुत कर सकता हूँ ?

राषिदः इस जैसे स्थान (होटल) या अन्य स्थानों में इन नव युवकों के दुर्व्यवहार का तुमने चर्चा किया, उसी से संबंधित कुछ इस्लामी आचार तुम्हारे सामने वर्णन करूँगाः

इस्लामी आचार में से यह है कि इस्लाम ने अन्य लोगों को प्रणाम (सलाम) करने

का आदेश दिया । समाज में सलाम की रीति फैलाने की ओर प्रेरित किया। यह संकेत दिया कि सलाम आपसी प्रेम का कारण है। इस्लाम ने सलाम के जवाब देने को केवल सामाजिक आचार ही नही, बल्कि धार्मिक फर्ज़ बताया। इसी प्रकार इस्लाम ने भोजन करने वाले को, जब कि उसके मुँह में भोजन हो, सलाम करने से रोका। उस व्यक्ति को सलाम करने से भी रोका, जिसको नींद लग रही हो, और जब लोग सोये हो तो अपनी आवाज़ हल्की रखने का आदेश दिया।

पवित्र ख़ुरआन ने बिना किसी आवश्यकता के आवाज़ ऊँची करने को पसंद नही किया। निस्संदेह आवाज़ों में सब से बुरी आवाज़ गधों की आवाज़ होती हैं। (लुक़मान, 19) बल्कि पवित्र ख़ुरआन ने तो अपने किसी मित्र के घर के बाहर खडे होकर बुलंद आवाज़ से पुकारने वाले व्यक्ति को न समझ कहाः जो लोग (ऐ नबी) तुम्हें कमरों के बाहर से पुकारते हैं उनमें से अधिकतर बुद्धि से काम नही लेते। (अल हुजरात, 4) मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी किसी व्यक्ति की डाँट डपट नहीं किं, और न कभी ऊँची आवाज़ से बात किया।

इस्लाम धर्म ने निरंतर रूप से प्रत्येक स्थानः सार्वजनिक मंच, भोजन की जगह, घर और घर के बाहर हर जगह सफाई का आदेश दिया। खाने-पीने के नियम उस समय बताये, जब कि मानवता को भोजन सामाग्री जैसे चम्चा, काटे, का ज्ञान नहीं था, और न प्लेट पायी जाती थी। रसूल सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम ने केवल तीन उंगलियों से खाने का आदेश दिया। बर्तन में अपना हाथ-इधर उधर न ले जायें। अपने से जो चीज़ निकट है, वह सब से पहले खाये। एक साँस में पानी न पिया जाय, बल्कि तीन साँसों में पिया जाय, भोजन और पानी से अपना पेट न भर लें।.... इस्लाम धर्म ने खाने-पीने के समय होने वाली असंभव चीज़ो का ध्यान रखते हुए सामाजिक व भावुक पहलु की ओर ध्यान दिया, किन्तु भोजन करते समय मेहमान के साथ बात-चीत करने पर प्रोत्साहित किया, ताकि मेहमान न शर्माये, या अपने आप को तन्हा न समझे। हमारे रसूल सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी पत्नी को स्वयं अपने हाथों से भोजन कराते थे। आप कहते थेः सब से अच्छा दान वह भोजन का निवाला है जो पुरुष अपने पत्नी के मुँह में रखे। आप सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम गिलास की उसी जगह से पानी पिया करते थे, जहाँ से आपकी पत्नी आइशा (रजि अल्लाहु अन्हा) पिया करती थी) इस्लाम धर्म ने तो अल्लाह की प्रार्थना और भोजन के बीच संबंध जोड दिया, किन्तु इस्लाम में खाने से पहले अल्लाह का नाम लेने (बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम पढने), और खाने के बाद अल्लाह की प्रशंसा करने का आदेश दिया गया।

माइकलः प्रिय राषिद। मुझे तुम से यह कहने की अनुमति दो कि तुम्हारे धर्म और तुम्हारे व्यवहार के बीच बडा अंतर है। हम (ग़ैर मुस्लिम) लोग इस क्षेत्र में तुम्हारी धर्म की शिक्षाओं से तुम से ज्यादा निकट हैं।

राषिदः दुख के साथ कहना पडता है कि तुम्हारी बात सही है।

पवित्र ख़ुरआन के आदर्श



पवित्र ख़ुरआन के आदर्श

माइकल व राषिद की ओर देखते हुए राजीव ने चर्चा का प्रारंभ इस तरह कियाः कुछ मुसलमानों के व्यवहार के प्रति होने वाली हमारी पिछली चर्चा हमें इस्लाम धर्म के आदर्श, आचार के प्रति करने पर मजबूर करती है। तुम्हारे विचार से क्या यह विषय चर्चा के लिए उचित नही है ?

माइकलः हाँ। मैं कुछ मुसलमानों से बडा आश्चर्यचकित हूँ। एक ओर तो वे आदर्श आचार के उच्च स्थान पर विराजित है, और दूसरी ओर उनके आचार ऊपरी छवि के साथ फिट नही होते हैं।

राषिदः इसके दो कारण हैः आदर्श आचार की ओर तुम्हारा दृष्टिकोण। दूसरा कारण मुसलमानों की ओर से इन आचारों का अनुपालन करने, और वास्तविक रूप से निर्धारित नैतिक नियमों का अनुसरण करने की परिस्थिति हैं। किन्तु व्यक्तिगत आचार में शिक्षा और वातावरण का भी प्रभाव होता है। साथ-साथ पारंपरिक प्रभाव भी एक अधिक कारण है... इसी का इस्लाम धर्म के रसूल ने संकेत दिया, और वैज्ञानिक अध्ययन व प्रायोगिक जीवन भी इसकी पुष्टि करता है।

राजीवः अगर तुम इस संकेत का अधिक विवरण करो, तो कितना ही अच्छा होगा ।

राषिदः यह संकेत मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो वाणियों से व्यत्पन्न हैः 1) रसूल ने अपने एक साथी से यह कहाः तुम्हारे भीतर दो आदतें हैं जिन को अल्लाह और उसका रसूल पसन्द करता हैः शांत स्वभाव और धैर्य है। तो उस साथी ने आप से कहाः ऐ अल्लाह के रसूल मैं ने स्वयं इन दो आदतों को अपना लिया है, या अल्लाह ने मेरे अन्दर यह आदतें पैदा किया है? तो आप ने अपने साथी से यह कहाः बल्कि अल्लाह ने तुम्हारे अंदर यह आदतें पैदा की है। रसूल की वाणी में इस बात की पुष्टी होती है, धैर्य और शांत स्वभाव मानव के भीतर आनुवंशिक रूप से पाये जाते हैं। दूसरी वाणी में रसूल सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह कहाः निस्संदेह ज्ञान तो सीखने से प्राप्त होता है, और शांत स्वभाव स्वयं इसको अपनाने से आता है। जो व्यक्ति भलाई की खोज करेगा, उसको भलाई मिलेगी और जो व्यक्ति बुराई से डरेगा, वह सुरक्षित रहेगा। इस वाणी में रसूल ने इस बात की पुष्टी की है कि शांत स्वभाव के आचार (जो पिछली वाणी में रसूल के साथी के भीतर आनुवंशिक विषय था) को प्राप्त करना संभव है... निश्चित रूप से शिक्षा के द्वारा ही यह संभव है, जिसमें सामाजीकरण का भी भाग होता है।

माइकलः तुम्हारी यह बात-चीत हमें एक दार्शनिक अध्ययन और अधिक विस्तार

की ओर ले जाती है। लेकिन इस दार्शनिक अध्ययन से दूर रहते हुए सब से पहले मैं यह बताना चाहूँगा कि मानव में नैतिक भावनायें वृत्ति (स्वभाव) के अनुसार होती है, जो उसको कुछ गुण पसंद करने और अन्य कुछ गुण पसंद न करने की प्रेरित करती है। और यह नैतिक भावना विभिन्न लोगों में अलग-अलग दर्जे की होती है, लेकिन यह सामान्य मानवीय भावना है। जो सदा कुछ नैतिक आचारों को अच्छा, और कुछ आचारों को बुरा समझती है। किन्तु सच्चाई, अमानतदारी, न्याय और वादा पूरा करना, यह सब वह नैतिक गुण है, जिन को मानवता ने हर काल में प्रशंसनीय कार्य माना। आज तक झूठ, अन्याय, धोखा और विश्वासघात को मानवता ने अच्छा नही समझा .... कुछ यही परिस्थिति भाई-चारगी, दयालुता, दान, हमदर्दी और कृपा की है।

इन विषयों के बारे में क्या हम यह कह सकते हैं कि इस्लाम धर्म सारी मानवता के विपरीत है, और क्या कोई व्यक्ति यह दावा कर सकता है इस्लाम धर्म एक स्वतंत्र व अन्य नैतिक नियमों से विशिष्ट नैतिक नियम रखता है ?

राषिदः तुमने जिस वास्तविकता का विवरण किया है, और जो अच्छाई व बुराई के उदाहरण की चर्चा की है, इसमें मुझे कुछ आपत्ति है। फिर भी मैं इस विषय में अधिक यह कहना चाहूँगा कि स्वभाव के होते हुए भी विभिन्न नैतिक नियम, केवल इस्लाम धर्म में ही नही, बल्कि धार्मिक और सामाजिक प्रणालियों में उत्पन्न हुए हैं। इसलिए कि आचार के अच्छे या बुरे होने की पहचान को निर्धारित करने में, और ज्ञान के उस तरीक़े में भी अंतर हो गया, जिससे अच्छाई को बुराई से अलग किया जाता है। और इसलिए भी कि इन सामाजिक प्रणालियों में किसी ऐसी बलवान शक्ति को निर्धारित करने में सहमती न हो पायी, जो क़ानून और उसका अनुसरण करने के अतिरिक्त अपना एक प्रभाव रखती है। इस अंतर का कारण ब्रह्माण्ड के प्रति विचार में, ब्रह्माण्ड की विशाल प्रणाली की महत्वता और इस में मानवीय जीवन के लक्ष्य में अंतर होना है।

उदाहरण के रूप से अधिकतर नैतिक दृष्टिकोण स्वार्थ पर आधारित होते हैं। किन्तु पश्चिमी प्रगति के काल में हॉब्स एस्पिनोसा ने विभिन्न तरीक़ो से यह साबित किया कि व्यक्तिगत जीवन की सुरक्षा करना भलाई है। इसी प्रकार फ्राइड ने प्रारंभ से ही अपनी पुस्तकों में एक ऐसा दृष्टिकोण (जो आज तक पश्चिम के अधिकतर लोगों के व्यवहार की छवि निर्धारित करता है) प्रदान किया जिस में स्वयं को संतुष्ट रखने का उदाहरण gratification-self संपूर्ण रूप से प्रभावी है। बल्कि फ्राइड़ ने तो अन्य मानसिक उदाहरणों के सामने स्वार्थ के उदाहरण को प्राथमिकता दी है। जब कि फ्राइड़ ने दया और अन्य लोगों का ध्यान रखने की ओर इस दृष्टिकोण से देखा कि यह दोनों माध्यमिक घटनाये हैं, इनमें से प्रत्येक का प्रभाव केवल स्वार्थ को संतुष्ट रखने के विभिन्न तरीक़ो से संबंधित है।

इस व्यक्तिगत नैतिकता के सामने वह नैतिक नियम प्रकट होते हैं, जो समूह

और समाज पर आधारित होते हैं। इस प्रकार के नैतिक नियम ऐसी दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जो व्यक्तिगत महानता के बदले सामूहिक महानता को महत्व देते हैं।

माइकलः जब हम यह मानलें कि इस्लाम धर्म वास्तविक रूप से ऐसी नैतिक प्रणाली रखता है, जो अन्य प्रणालियों से विशिष्ट है। तो यह बताओ कि इस्लामिक प्रणाली किस पर आधारित है, उसकी विशेषता और ख़ूबी क्या है ?

राषिदः मै पिछले समय यह चर्चा किया था कि इस्लाम धर्म मानव के वास्तविक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नियम बद्ध है। जिस तरह इस्लाम सिद्धांत के उस विचार को शामिल करने की विधि है, जो संसार की प्रकृति का स्पष्ट करती है, और इस संसार में मानव के स्थान को निर्धारित करती है। जिस तरह इस संसार में मानव की उपस्थिति का कारण बताती है। इसी तरह इस्लाम वह विधि भी है जो इस सिद्धांत के विचार के प्रकट होने वाले वास्तविक प्रणालियों को शामिल है, और जो इसको मानवीय जीवन में प्रकट होने वाली वास्तविकता बनाती है। जैसे नैतिक प्रणाली। उससे प्रकट होनेवाले आचार। वह नियम जिन पर नैतिक प्रणाली निर्भर है, और वह शक्ति जिससे यह नैतिक प्रणाली उत्पन्न होती है। राजनीतिक प्रणाली, उसका रूप और उसकी विशेषताएँ। सामाजिक प्रणाली, उसके नियम और उसके संघटक। आर्थिक प्रणाली, उसके विचार और उसकी संरचना। अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली, उसके संबंध और आपसी गठबंधन...

डाक्टर यम.हेच. डुर्रानी (M.H. Durrani) (जो अपने जीवन के कई वर्षो तक इंग्लैंड के गिरजा घर में फादर के पद पर नियुक्त रहे) ने इस विषय के प्रति अपने विचार प्रकट करते हुए यह कहाः

इस्लाम धर्म के पास प्रणाली, नियम और नैतिक विचार सब कुछ है। किन्तु लोगों पर जिन धार्मिक आदेशों का अधिरोपण किया गया, उनका एक नैतिक लक्ष्य है .... वह उचित ढंग से प्रत्येक व्यक्ति को नैतिक और आध्यात्मिक रूप से नियंत्रित बनाता है। मन को पवित्र, शुद्ध करता है, और उसको शक्ति प्रदान करता है। ताकि मानव अपने साथ जीवन-यापन करने वाले अन्य लोगों के प्रति अपने कर्तव्य पूरा करे। इस्लाम सैद्धांतिक और व्यवहारिक होने के कारण केवल वह एक धर्म है, जो मानव से गुप्त रहस्य और नष्टदायक नियमों पर विश्वास करने को नही कहता। जैसा कि ईसाई धर्म की परिस्थिति है। इसलिए कि इस्लाम आध्यात्मिक और भौतिक दोनों जीवन के क्षेत्रों को एक ही समान मानता है। इनमें से प्रत्येक को उसका उचित स्थान प्रधान करता है, और मानवीय व्यवहार के पूरे क्षेत्रों को व्यापक होने पर इस्लाम के नियम निर्भर है।

राजीवः जब हम यह मानलें कि इस्लाम के नैतिक नियम जैसे स्तंभ पर निर्भर है, तो इस नियम की विशेषताएँ, और अन्य नियमों से इसको विशिष्ट बनाने वाली चीज़ों का विवरण करना महत्वपूर्ण होगा।

राषिदः इस्लाम धर्म कि नैतिक प्रणाली की विशेषताओं का सारांश निम्न लिखित चीज़ो में करना संभव हैः

सिद्धांत का नियमः इसका अर्थ यह होता है कि मानव एक भक्त और जीव है। उसका प्रजापति उसको और उसके लिए लाभदायक चीज़ो को अधिक जानता है। प्रजापति ने उसको व्यर्थ नही छोड़ा। बल्कि मानव की और अपने रसूल अवतरित किये, जो उसको देवत्व शिक्षाएँ देते हैं, और उसको प्रजापति की विधि सिखाते हैं। सिद्धांत यह संदेश देता है कि मानव मृत्यु के बाद फिर से ज़िंदा किया जायेगा। उसने अपने सांसारिक जीवन में जो कुछ अच्छा या बुरा किया हो, उसका हिसाब-किताब होगा। यह सिद्धांत आधुनिक पश्चिमी सभ्यता (जो ज्ञान और जीवन की गिरजा घरों से दूरी के साथ-साथ धर्म से भी दूर हो गयी है) के नैतिक नियम के विपरीत है।

स्थिरताः इस्लाम धर्म के नैतिक स्थिर मूल्य, और मानव, जीवन व ब्रह्माण्ड के प्रति विचार से प्रकट होते हैं। यह नियम मानव की मार्गदर्शनी करते हैं, जिसकी वास्तविकता कभी नही बदलती, और न कभी इसके सार में परिवर्तन होता है। चाहे इसके आस-पास प्रकट होने वाली जीवन समस्याएँ बदलती रहे। किन्तु सच्चाई, अमानतदारी और शांत स्वभाव इस संसार के समाप्त होने तक अच्छाई शुमार होगी। झूठ, गप-शप और चुगली सदा बुरी समझी जायेगी। और समलैंगिकता समलैंगिकता ही रहेगी। लोगों के बीच इसका फैलाव होने, या कुछ प्रणालियों द्वारा इस को जायज़ समझने से इस में कोई परिवर्तन नही होगा। चाहे लोगों की जीवन शैली में कितना ही परिवर्तन हो जाये।

वास्तविकता व आदर्शनीयः इस्लामी नैतिक नियम को, इसका ज्ञान न रखने वाले कुछ लोग आदर्श नियम कहते हैं। लेकिन सत्यता यह है कि वह वास्तविक व आदर्शनीय है, जो मानव के प्रायोगिक जीवन और उसकी क्षमताओं का ध्यान रखते हैं। प्रत्येक सदस्य इन नियमों का पालन कर सकता है, और यह नियम मानव के पारस्परिक मेल रखते हैं। यह प्रत्येक सदस्य को सम्मानजनिक प्राणी मानते हुए उसके जीवन की सुरक्षा करते हैं, और रुकावटों या कठिनाइयों का मुकाबला किये बिना उसके जीवन को स्थिर बनाते हैं। यह ऐसे नियम है जो मानवीय वृत्ति के साथ न टकराते हैं, और न उसके विपरीत है। बल्कि वह तो मानवीय वृत्ति के साथ संपूर्ण रूप से संयुक्त है। किन्तु इस्लामी सिद्धांत जीवन के प्रत्येक उस धार्मिक क्षेत्र में भी शामिल है, जिसका यहूदी धर्म अधिक ध्यान रखता है, और उस आध्यात्मिक क्षेत्र में भी शामिल है, जिस पर ईसाई धर्म केंद्रित है. इसी की ओर संकेत करते हुए भारतीय लेखक पीग्गि रेडरिक (Peggy Raderik) ने यह कहाः

निस्संदेह इस्लाम धर्म की नैतिक शिक्षायें वास्तविकता और आदर्श का संपूर्ण रूप से मिश्रण है। इसी कारण मानव अल्लाह को पहचान सकता है और दिव्यवान

बन जाता है। जब कि वह अपने दैनिक जीवन की समस्याओं में घिरा रहता है...

प्रतिबद्धता: यानी सारी मानवता का मुक़ाबला करने के लिए मानव द्वारा इस्लामिक नैतिक नियमों को पालन करने का वचन देना। क्योंकि मानव सांसारिक जीवन में भक्त है, जिसका एक संदेश है, उसकी कुछ ज़िम्मेदारियाँ हैं, और उसको स्वतंत्रता प्राप्त है, जिस से वह अपने कार्य पर नियंत्रण रखता है, और जो प्रत्युपकार का कारण होता है। इसीलिए नैतिक प्रतिबद्धता व्यक्तिगत जिम्मेदारी की प्रमुख निशानी है।

कर्तव्य: जब तक मानव के मन में अपने कर्तव्य की भावना पैदा न हो, उस समय तक मानव का उच्च चरित्रवान होना संभव नही है। यहाँ कर्तव्य का अर्थ मानव का स्वयं से होने वाले कार्य को स्वीकार करना, और अपने निर्णय, चयन और दायित्वों पर नकारात्मक या सकरात्मक आधारित होने वाले परिमाणों की अल्लाह के सामने, अपनी अंतरात्मा के सामने, और अपने समाज के सामने ज़िम्मेदारी स्वीकार करने तैयार रहना।

कर्तव्य की कुछ सीमाये हैं। वह सीमायें इस्लाम धर्म में मानव की व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी हैं, जो किसी कार्य को करने, या उसका निर्णय लेने पर निर्भर होती है, और जब किसी कार्य को करने या उसका निर्णय लेने में कई व्यक्ति भागीदार हों, तो यह कर्तव्य सामाजिक ज़िम्मेदारी भी बन जाती है। इसी प्रकार सदस्य और समाज के बीच एक संयुक्त ज़िम्मेदारी भी है। लेकिन नियम यह है कि कोई भी सदस्य किसी अन्य सदस्य के निर्णय या उसके कार्य का बोझ नही उठायेगा।

सामाजिक प्रणाली को नैतिकता से जोड़ते हुए आंतरिक निवारक की उन्नति: मानव अपने आंतरिक जगत की संरचना करता है। इस जगत से नैतिकता की प्रतिबद्धता का वास्तविक निवारक जन्म लेता है। इस्लाम धर्म प्रत्येक परिस्थिति में आशय (नीयत) को सुधारने का आदेश देते हुए आंतरिक निवारक की उन्नति की है। आशय का अर्थ यह है कि मानव अपनी ओर से किए जाने वाला कार्य का निर्धारित, जायज़ और अच्छा लक्ष्य सामने रखे। लेकिन इस्लाम धर्म यह जानता है कि मानव संपूर्ण उत्तम नही है, और न ग़लतियों से सुरक्षित है। मानव पर कुछ ऐसी घडियाँ आती है, जो स्वयं मानव पर, और उसके आस-पास के वातावरण पर प्रभावित होती है। इसीलिए इस्लाम धर्म ने मानव और उसकी अंतरात्मा को ऐसे ही नही छोड़ दिया। बल्कि प्रत्येक सदस्य को उन नैतिक नियमों की पाबंदी करने का आदेश दिया, जिन को इस्लाम ने निषेधाज्ञाओं, सामाजिक, धार्मिक और परलौकिक दण्ड का विवरण करते हुए निर्धारित किया। यह दण्ड उस व्यक्ति को मिलेगा, जो इन नियमों का उल्लंघन करता है।

राजीव: वास्तविक रूप से इस प्रणाली में विचार करने की आवश्यकता है, और यह सम्मान जनिक प्रणाली है।

इस्लामी सरकार ... मानव की आवश्यकता



इस्लामी सरकार ... मानव की आवश्यकता

तीनों मित्र जब अपने बीच चर्चा प्रारंभ करने लगे, तो माइकल व राजीव ने यह नोट किया कि कुछ शोर हो रहा है, जिससे राषिद की बात समझ ने में कठिनाई होने लगी। यह दोनों कहने लगें कि शोर क्यों हो रहा है ? तो राषिद ने उन्हें बताया की यह समाचार बुलिटन का शोर है, तो यह दोनों समाचार समाप्त होने तक उसको सुनते रहे .... कुछ देर बाद राषिद ने अपनी बात प्रारंभ करते हुए यह कहाः

क्षमा चाहता हूँ। शायद तुम लोग मुझे क्षमा करोगे। आज-कल समाचार बुलिटन सुनने की महत्वता का तुम्हें अंदाज़ा हो, विशेष रूप से मेरे लिए तो यह बहुत महत्व है.... क्या तुम लोग जानते हो कि आज-कल मेरे देश में क्या-क्या घटनायें घट रही है ?

राजीवः हाँ। निस्संदेह यह समाचार आश्चर्य करने वाले हैं। क्यों कि घटनायें लगातार हो रही है।

माइकलः इन समाचारों में मेरे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है, कि इस्लाम धर्म को मानने वाले अग्रसर हो रहे हैं, और सरकारी प्रणाली को इस्लामिक प्रणाली में बदलने का प्रयास कर रहे हैं.... निस्संदेह यह चिंताजनक विषय है।

राषिदः इस में चिंता की क्या बात है ?

माइकलः मानवता ने धार्मिक सरकार का प्रयोग करलिया, और धार्मिक सरकार का असफल होना भी साबित हो गया। निस्संदेह वह एक कठोर प्रयोग था। धार्मिक सरकार समाप्त हो चुकी, और मध्य युग से ही उसका शासन अंत हो गया।

राषिदः धार्मिक सरकार का अर्थ क्या है ?

माइकलः यह वह सरकार होती है, जिस में शासन करने वाला गिरोह धार्मिक होता है। उनका यह विचार है कि वे अल्लाह के नाम से बात करते हैं .... धार्मिक सरकार का सबसे बडा ख़तरा यह है कि अल्लाह के नाम पर वास्तविकता और सत्यता का अपमान होता है। इसका कारण यह है कि वे अल्लाह के नाम से बात करते हैं, फिर अपने आप को पवित्रता और शुद्धता के गुण से माला माल समझते हैं। इसका परिणाम यह निकलता है कि शासक गिरोह यह दावा करने लगता है कि उनके विरोध आपत्ति करना अल्लाह के विरोध आपति करने के समान है। इस परिणाम के कारण होता यह है कि इन शासकों का न कोई हिसाब-किताब लिया जाता है, और न किसी को उनसे पूछ-ताछ का अधिकार होता है।

राषिदः दुःख के साथ यह कहना पड़ता है कि इस विषय में सांस्कृतिक संदेह हुवा है, जो इस्लामी सरकार के प्रति इस ग़लत विचार का कारण है। तुमने जिस परिस्थिति का चर्चा किया है, मैं इसमें तुम से सहमत हूँ। इसी को धर्मतन्त्र कहा

जाता है। लेकिन धर्म तन्त्र उस सरकार की प्रणाली है, जो केवल अपने धार्मिक नियम ही नही, बल्कि उसकी शक्ति और प्रभाव भी धर्म से व्युत्पन्न है। पश्चिम मध्य युग में गिरजा घर के हाथों इसी धार्मिक शासन से पीडित हुवा था। इस्लाम धर्म न इस प्रणाली को जानता है और न इसको स्वीकार करता है। किन्तु इस्लाम धर्म में धार्मिक लोगों का शासन नही है। लेकिन उस में ऐसे मानव के हाथों धर्म का शासन होता है, जो मानव ग़लत भी करता है, और ठीक भी करता है। उस से पूछ-ताछ भी होगी, और उसको दण्ड भी दिया जायेगा। और आवश्यकता पड़ने पर उसका बहिष्कार भी किया जायेगा। यहाँ मुख्य अंतर यह है कि इस्लामी सरकार का स्त्रोत इस्लाम धर्म है, और इसका अनुप्रयोग ऐसे मानव के द्वारा होगा, जो पवित्र नही है। इस्लाम धर्म में कोई ऐसा शासक नही है, जो यह दावा करता हो कि उसकी सरकार और उसकी शक्ति ईशवर द्वारा प्राप्त हुई है। बल्कि जनता की ओर से उसको शासन का अधिकार मिलना आवश्यक है।

इसी प्रकार इस्लामी जगत में धार्मिक सरकार का प्रयोग अपने समय में विकसित देश के लिए सफल प्रयोग था। जब कि पश्चिम में धार्मिक सरकार का प्रयोग इसके विपरीत है।

राजीवः इस्लामी सरकार और धार्मिक सरकार के बीच अंतर तो हमे मालूम हो गया। लेकिन इस्लामी सरकार और ग़ैर धार्मिक सरकार के बीच अंतर क्या है ?

राषिदः अंतर अनेक और मुख्य है। मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण विषय इन अंतरों का कारण है, जो कि ब्रहमाण्ड जीवन और मानव के प्रति लौकिक विचार और इस्लामी विचार के बीच अंतर होने में गुप्त है। किन्तु इस्लाम धर्म में सरकार की प्रणाली उस इस्लामी विचार से प्रकट होती है, जिस में धर्म जीवन के साथ सहमत होता है। एक संपूर्ण नैतिक नियम का निर्माण होता है, जिस में मुसलमान अपना जीवन-यापन करता है, और इसमें सदस्य, जाति और सरकार की भूमिका संयुक्त होकर एक समान हो जाती है।

इस वास्तविकता को जानने के लिए हमारे लिए यह जानना अनिवार्य है कि अल्लाह के इस राज्य में हमारा स्थान क्या है ? जब हम यह स्वीकार करलें कि अल्लाह ने ही हमे पैदा किया है, तो निश्चित रूप से उस अल्लाह की इच्छाओं का पालन करने के अलावा हमारे लिए कोई और काम नही होगा। जब हम यह स्वीकार करलें कि यह पृथ्वी और यह आकाश केवल उसी अल्लाह की संपत्ति है, तो हमें यह स्वीकार करना भी चाहिए कि इस राज्य में अल्लाह की इच्छा के अलावा किसी और की इच्छा चलना ठीक नही होगा। जब हम यह स्वीकार करलें कि वही एक अल्लाह हमारा शिक्षक है, और वही हमें रोज़ी रोटी देता है, तो हमारे सामने उसका भक्त बनने के अलावा कोई विकल्प नही .... जब अल्लाह ही हमारा, और इस संसार के प्रत्येक विषय का शासक है, तो इस संसार में संपूर्ण रूप से उसका पालन और अनुसरण किये बिना, हमारा कोई वास्तविक स्थान नही है।

माइकलः लेकिन किसी ऐसे प्रयोग को दुबारा करने की हमें क्या आवश्यकता है, जिसके प्रति बहुत कुछ बुरा कहा गया हो ? मानव के लिए स्वयं यह निर्धारित करना संभव है कि वह कैसे जीवन-यापन करें, किस चीज़ से उसको प्रसन्नता मिलती है, उसकी जीवन शैली के लिए कौन-सा रूप उचित है। फिर इसके बाद इसमें कोई आपत्ति नही कि मानव स्वयं अपने आप का सुधार करता जाये, और अपने अनुभव को बढ़ाता जाये।

राषिदः वास्तविक रूप से समस्या यह है कि क्या मानव संप्रभुता, या विधिकार बनने, या आदेश का केन्द्र बनने की वैधता रखता है ? हम सब को यह ज्ञान है जब कोई सामाग्री का ऐसा व्यक्ति उपयोग करे, जो उसके बारे में ज्ञान न रखता हो, तो अवश्य रूप से वह उसे नष्ट करदेगा । उदाहरण के रूप से जब कोई व्यक्ति गाड़ी चलाने के लिए बैठे, और उसको ड्रैविंग न आती हो, तो निश्चित रूप से हमें इस पागलपन का परिणाम मालूम होता है। तो हमें यह विचार करना चाहिए कि जब लोहे की एक छोटी सी सामाग्री की परिस्थिति यह है, सही ज्ञान के बिना उसका उपयोग करना असंभव है, तो जटिल और मुश्किल क्षेत्र रखने वाले मनुष्य, जिसके जीवन और व्यवहार की समस्याएँ अनगिनत क्षेत्र रखते हैं, और हर क्षेत्र में कई दुविधाएँ और मुश्किलें हैं, तो वह लोग मानव जैसी इस जटिल सामाग्री को कैसे चला सकेंगे, जो स्वयं अपने आप को संपूर्ण रूप से नही जानते, और यह बात तो बहुत दूर की है कि वे दूसरों को पहचाने ?।

दूसरी समस्या यह है कि न्याय की उपलब्धी केवल उसी समय संभव है, जब मानवीय जीवन की प्रणाली को वह व्यक्ति निर्धारित करें, जिसके दृष्टिकोण में मानवता के सारे सदस्य एक समान हो, और मानवता के सारे अधिकार वह व्यक्ति स्थापित करें, जो किसी भी प्रकार के व्यक्तिगत लक्ष्य से दूर हो, और किसी सदस्य, पिरवार, जाति, देश, या लोक के हितों की ओर विशेष रूप से झुकाऊँ न रखता हो। .... इस के बिना पृथ्वी में न्याय को स्थापित करना असंभव है।

मानव (चाहे जो भी हो) उसके भीतर व्यक्तिगत लक्ष्य ज़रूर होते हैं। यह मानवीय कमज़ोरी प्रत्येक मनुष्य में अनिवार्य है। अगर हम राजनीतिक नेता, धार्मिक संत जैसे ब्रहमण (पुजारी) पादरी, साधू, और समाज के प्रभावी व धनी लोगों की ओर देखेंगे, तो हमें यह ज्ञान प्राप्त होगा कि इन लोगों ने जबरदस्ती अपने लिए कुछ विशिष्ट अधिकार निर्धारित करलिया है। इस जैसे परिस्थिति में उनकी सरकार और प्रभाव के तले बनाये जाने वाले सारे नियम और क़ानून उन्हें वह अधिकार देते हैं, जो साधारण लोगों को प्राप्त नही है। वे विभिन्न तरीक़ों से इन विशिष्ट अधिकारों को न्यायिक बना लेते हैं, और सरकारी मीडिया लोगों को यह यक़ीन दिलाता है कि वास्तविक परिस्थिति यही है। तो क्या ऐसे समाज में न्याय पर आधारित और संतुलित सरकार के नियम बनाना संभव है, जिस पर इस जैसे नेता प्रभावी हो ?।

हम बडे-बडे देशों की ओर देखते हैं जिन्होंने अपने पास उपस्थित शक्ति के कारण अन्य जातियों को बहिष्कार किया। इन देशों का कौन-सा क़ानून और कौन-सी प्रणाली ऐसी है, जिस के भीतर स्वार्थ का प्रभाव न हो ? तो इन जैसे लोगों से यह आशा की जा सकती है कि वे मानवता के लिए ऐसी प्रणाली और नियम बनाये, जो सत्यता और न्याय पर निर्भर हो ?।

राजीवः लेकिन प्रिय राषिद। तुम लोग ऐसे देश में क्या कर रहे हो, जहाँ पर धार्मिक अल्प संख्यकों के लोग रहते हैं, और वह इस्लाम के अलावा अन्य धर्म के अनुयायी होते हैं.... भारत में कई धार्मिक अल्प संख्या के लोग रहते हैं। और जब तुम मुसलमान सरकार का स्त्रोत इस्लाम धर्म बनाते हो, तो तुम्हें उनके धर्म के अलावा अन्य धर्म को स्वीकार करने पर मजबूर होना पडेगा।

राषिदः अच्छा हुवा कि तुम ने यह समस्या मुझे याद दिला दी। इस में तीन मुख्य अंश हैं, जिनका मैं विवरण करना चाहूँगाः

प्रथमः मै आश्चर्यचकित हो जाता हूँ कि कैसे तुम लोग ऐसे देश की छाया में किसी ग़ैर मुस्लिम के जीवन-यापन करने में आपत्ति रखते हो, जिस देश का स्त्रोत इस्लाम हो, हालांकि इस देश का धर्म पृथ्वी पर अपनी विशिष्ट सरकार बनाने का संदेश नही देता... जब कि तुम लोग मुसलमान को ऐसे नियमों का पालन करने में मजबूर करते हो जो उसके धर्म के विपरीत होते हैं, और ऐसे स्त्रोत को स्वीकार करने के लिए दबाऊ डालते हो, जो उसके सिद्धांत के विपरीत है, जब कि वह एक लौकिक देश में जीवन-यापन कर रहा हो। हालांकि धर्म उसको इसकी अनुमति नही देता है।

द्वितीयः इस्लाम धर्म को किसी सरकार का स्त्रोत मानने का अर्थ ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम पर मजबूर करना नही है। वास्तव में धर्म के प्रति लौकिक विचार से लोगों के मन में यह आपत्ति पैदा हुई है। लौकिक विचार व्यक्तिगत सिद्धांत और अंतरात्मिक भावना पर निर्भर है। जब कि इस्लाम धर्म केवल इसी पर नही होता है। किन्तु इस्लाम मुसलमान के लिए धार्मिक नियम, प्रणाली और सभ्यतागत स्त्रोत है। जहाँ तक ग़ैर मुस्लिम की परिस्थिति का प्रश्न है, तो उसके लिए इस्लाम धर्म के सिद्धांत को अपनाये बिना इस्लाम के नियम व प्रणाली का पालन करना, और उसको सभ्यतागत स्त्रोत बनाना संभव है.... बिल्कुल उसी प्रकार जैसा कि तुम लोग करते हो कि जिन संस्कृतियों में कम्यूनिज़म का निर्माण नही हुवा है, उनमें भी विभिन्न धर्मो और जाति के मानने वालों के बीच इसके नियम लागू करना संभव है।

तृतीयः इस्लाम धर्म को किसी राज्य का स्त्रोत बनाने का अर्थ यह नही है कि अल्प संख्यों के अधिकार छीन लिये जाये, या उनके विशेष धार्मिक नियमों में हस्तक्षेप किया जाए। इस्लाम धर्म तो अल्प संख्यों के अधिकारों की सुरक्षा करता है, और उनकी व्यक्तिगत समस्याओं में अपने धार्मिक नियमों का पालन-करने में इस्लाम को कोई आपत्ति नही।

माइकलः लेकिन आज कल हम जिस काल में जीवन-यापन कर रहे हैं, वह उस काल के विपरीत है जिस में इस्लाम धर्म प्रकट हुवा और इस्लामी सरकार का प्रयोग किया गया। यह प्रयास अगर सफल भी हो जाये, तो भी यह प्रतिगामी प्रयास समझा जायेगा। तुम लोग यह चाहते हो कि हमारे विचारों को तिरस्कार किया जाए, और हम ऐसी स्थितियों में जीवन-यापन करें जो आज-कल उचित नही समझी जाती है, और न आधुनिक जीवन के साथ मेल रखती हैं।

उदाहरण के रूप से तुम मुसलमान लोग आज तक ब्याज को अवैध ठहराते हो। जब कि वह एक आर्थिक आवश्यकता है, जिस का हर एक आधुनिक देश ज़रूरत मंद है।

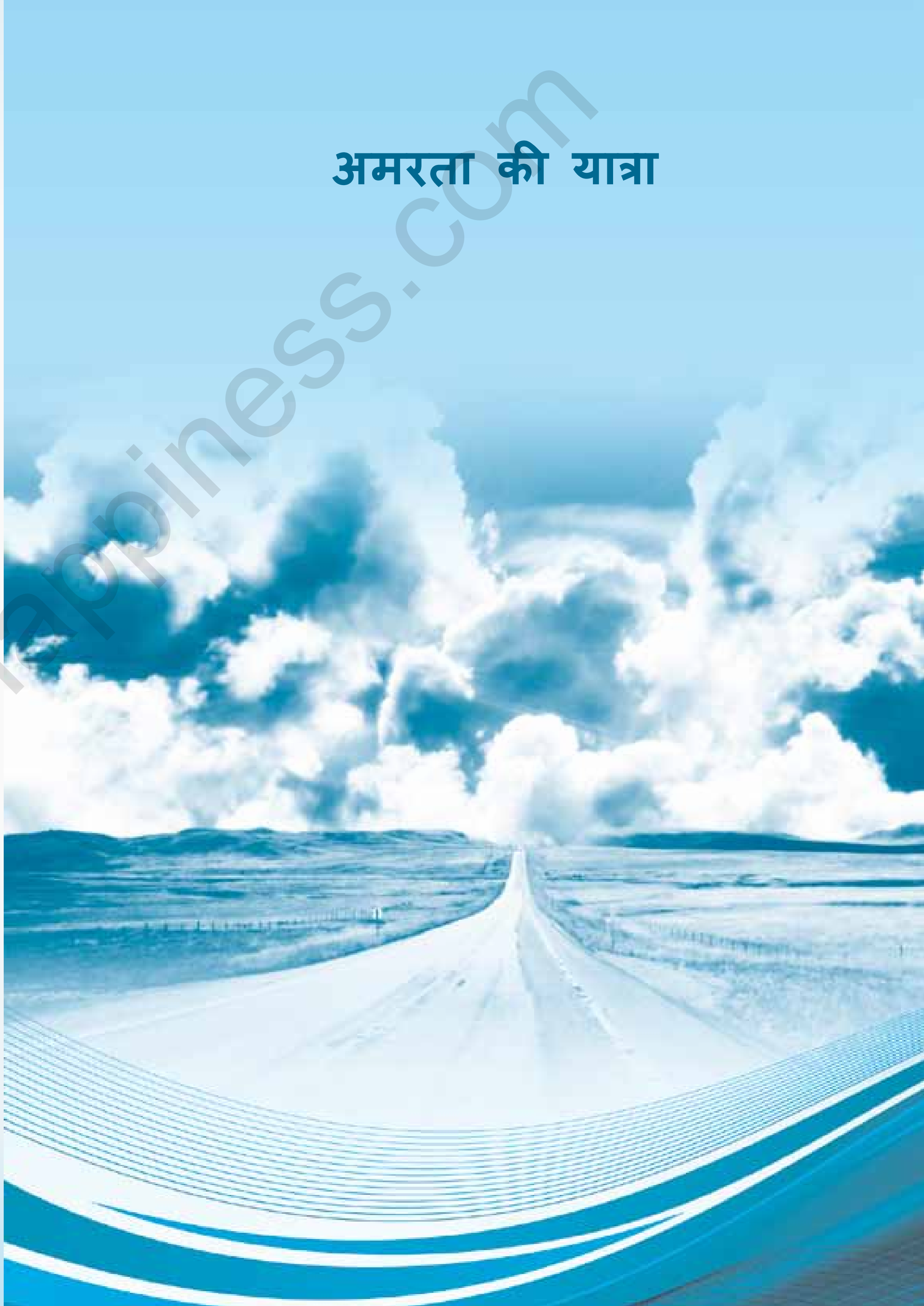
राषिदः मेरे मित्र इस उदाहरण में, इसके अलावा अन्य उदाहरणों में तुम्हारी बात-चीत उन विषयों पर आधारित है, जो सच नही है, और देश के रूप व जगत की प्रणाली के प्रति निर्धारित विचार से प्रकट हुवा है। (इसी प्रणाली में हम अपना जीवन-यापन कर रहे हैं।) इस प्रणाली ने प्रायोगिक वास्तविक परिस्थिति की शक्ति से अपने आपको स्थिर करलिया। इसी प्रकार आर्थिक प्रणाली के ब्याज़ के साथ संबंधित होने के कारण मानवता जिन नकारात्मक प्रभाव के प्रभावित है, यह प्रणाली उसकी ओर ध्यान नही देती।

यह बात सही है कि इस्लाम धर्म ब्याज़ को अवैध मानता है। लेकिन यह सही नही कि ब्याज आर्थिक आवश्यकता है।

इस जगत के बडे-बडे पूंजीपत और धनी लोग ब्याज़ के पक्ष में हैं, और वे जगत को इस भ्रम में डाल दिये हैं कि ब्याज़ एक आर्थिक आवश्यकता है। जब कि सच यह है कि ब्याज़ केवल उनके पूंजीवाद जगत की आवश्यकता है। पूंजीवाद पश्चिम के प्रसिद्ध अर्थ शास्त्री ब्याज़ की प्रणाली पर आरोप लगाते हैं और कहते हैं किः लोगों के एक छोटे से गिरोह के हाथ में धन की उपस्थिति, और धीरे-धीरे अधिकार लोगों के इस धन से वंछित रह जाने के कारण चलते समय के साथ इस प्रणाली का वास्तविक परिणाम यह होगा कि आर्थिक व वित्तीय संकट पैदा होंगे, और विभिन्न सामाजिक समस्याएँ प्रकट होती रहेंगी। अभी पिछले समय रियल एस्टेट के कारोबार में जो कर्ज़ का संकट हुवा, इसके बाद अंतर्राष्ट्रीय जो समस्याएँ पैदा हुई, और इससे पहले जो अनेक दुविधायें सामने आयी। इन में से सबसे मशहूर संकट पिछली सदी के तीसवें दशक में अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक मंदी है... हम अगर इन आर्थिक दुविधाओं की ओर देखें तो हमें परिस्थिति का अंदाज़ा हो जायेगा।

इस्लामिक प्रणाली का एक चमत्कार यह था कि उसने पूंजीवादी प्रणाली के प्रकट होने से लगभग एक हज़ार वर्ष पहले ब्याज़ और एकाधीकार (यह दोनों पूंजीवादी प्रणाली के प्रमुख स्तंभ है) को अवैध माना .... मेरे मित्र इस्लामिक राज्य केवल धार्मिक आवश्यकता ही नही, बल्कि मानवीय आवश्यकता भी है।

अमरता की यात्रा



अमरता की यात्रा

माइकल मीटिंग हॉल में प्रवेश करते ही अपने दोनो मित्रों को प्रणाम किया, तो राजीव ने भी उसको प्रणाम किया। जब कि राषिद ने यह कहाः

कुछ समय मेरा इंतज़ार करो.... मैं तुम्हारे लिए एक अद्भुत विडियो का प्रदर्शन करूँगा... क्या तुम दोनों ने इटालियन फुटबाल लीग में लिवोर्नो और पैस्कारा के बीच होने वाले मैच के समय लिवोर्नो टीम का खिलाडी मोरेसनी के ज़मीन पर गिरने का दृश्य देखा है ?.... उसका मैदान पर गिरने के बाद दिल का दौरा पड़ने से देहांत हो गया... दर्शकों के लिए यह एक कठिन समय था। वे उसे मरते हुए देख रहे हैं, और उसकी दिल की धडकन बंद हो रही है। जबकि कुछ समय पहले वह चुस्ती के साथ खेल रहा था।

माइकलः इस से भी अधिक आश्चर्यजनक घटना इंग्लिश प्रिमियर फुटबाल लीग में टोटनहम और बोल्टोन के बीच होने वाले मैच के समय बोल्टोन खिलाडी मुआंबा का ज़मीन पर गिर जाने का दुश्य है। यह खिलाडी दिल के रोग से पीडित होने के बाद बेहोश होकर ज़मीन पर गिर गया। मगर दुर्लभ परिस्थिति के रूप में इस खिलाडी के दिल की धडकन 78 मिनट्स बंद होने के बाद फिर प्रारंभ हो गयी। डाक्टरों ने इस परिस्थिति को 78 मिनट का मृत्यु माना। इसी कारण टीम के डाक्टर टोबेन ने आश्चर्य से यह कहाः यह अविश्वसनीय परिस्थिति है। हमें आशा नही थी कि मुआंबा इस प्रकार स्वस्थवान हो जायेगा। निश्चित रूप से मुआंबा का देहांत हो गया था, फिर दुबारा उसका पुनर्जन्म हुवा।

राषिदः मृत्यु एक ऐसी वास्तविकता है, जिसको सारे मानव स्वीकार करते हैं... लेकिन मृत्यु के बात क्या है ? क्या यही अंत है ? या इसके बाद परलोक में किसी दूसरे जीवन का प्रारंभ भी होता है? जैसा कि अधिकतर लोगों का सिद्धांत है।

राजीवः परलोक पर विश्वास रखना एक प्रमुख सिद्धांत है, इसको मानव ने अपने निर्माण और पृथ्वी पर रहने के समय से अपनाया है। ऐतिहासिक प्रमाण इस बात की पुष्टी करते हैं यह सिद्धांत प्राचीन संस्कृति में भी उपलब्ध था। इस सिद्धांत को ईजिप्ट के प्राचीन लोग माया जाति और रोमनों के समूह, इराख़, और इसके अलावा कई जातियों को इस सिद्धांत का ज्ञान था। यह सिद्धांत प्रत्येक देवत्व धर्म में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त सांसारिक धर्म, जैसे ब्राह्माण्ड, बुद्ध, कन्फ्यूशीवाद, पार्सी धर्मो ने भी इसकी शिक्षा दी है....

राषिदः तुम ने सच कहा। इस्लाम धर्म के रसूल इस सिद्धांत पर विश्वास रखने का संदेश दिया। इसी प्रकार सारे नबी और रसूलों ने लोगों के सामने इस सिद्धांत को प्रस्तुत किया, और इस्लाम की एक शर्त प्रत्येक काल में आज तक यह है

कि इस सिद्धांत पर विश्वास रखा जाये। किन्तु इस सिद्धांत के बिना अल्लाह, उसकी पुस्तकों, और उसके रसूलों पर विश्वास रखने का कोई अर्थ नही निकलता।

माइकलः लेकिन मैं यह देखता हूँ कि लोगों के जीवन में इस सिद्धांत का प्रभाव विभिन्न है। इसी प्रकार कुछ लोग ही अपने व्यवहार और अपनी भावनाओं में इस सिद्धांत को सम्मान देते हैं।

राषिदः तुम्हारी यह बात सत्य है। सारे लोग सैद्धांतिक रूप से इस सिद्धांत (परलोक पर विश्वास रखना) को स्वीकार करते हैं। लेकिन वास्तविक जीवन में कुछ ही लोग इस सिद्धांत को सम्मान देते हैं... इसका प्रमाण यह है कि युद्ध के समय हवाई हमले की घोषणा करने के लिए चेतावनी की घंटी बजने लगी, तो निश्चित रूप से सारी सडकें यात्रियों से खाली हो जायेंगी। यहाँ तक कि अगर कोई व्यक्ति न भागे तो उसको मूर्ख या पागल कहा जायेगा... जब इस जगत की मामूली घटना में हमारी यह परिस्थिति है तो इससे भी भयंकर और बडी घटना के समय हमारी परिस्थिति क्या होगी... वह ऐसी घटना होगी, जिस के प्रति लोगों को यक़ीन होगा कि वह अनिवार्य रूप से घटनेवाली है। जिस के बारे में इस ब्रह्माण्ड के प्रजापति ने चेतावनी दी, और अपने सारे रसूलों के द्वारा इसकी घोषणा की। होना तो यह चाहिए था कि इस देवत्व चेतावनी के सामने लोग अधिक सावधान रहते।

माइकलः मेरे विचार से इसका कारण यह है कि जिस घटना के बारे में चेतावनी की घंटी बजायी जाती है, लोग इस घटना को सुनते या देखते हैं। चाहे उनको इसके प्रयोग से वास्ता न पड़ा हो। लेकिन वे इस घटना के प्रभाव को किसी अन्य स्थान या अन्य देशों में देखा होगा। जहाँ तक परलोक का प्रश्न है, तो परलोक और हमारे बीच मृत्यु कि दीवार बनी है। परलोक, वर्तमान काल में हमारी आँखों से देखा नही जाता। इसी कारण पिछली इन दो परिस्थितियों के बीच विश्वास में अंतर हो गया।

राषिदः तुम्हारी बात सत्य है। लेकिन माना जाता है कि मानव केवल अपनी भावनाओं से ही नही, बल्कि अपनी बुद्धि से भी वास्तविक तत्वों तक पहुँच सकता है। और उसका विश्वास पैदा कर सकता है। इन लोगों के पास विश्वास की कमी का कारण अपनी बुद्धि का उपयोग न करना है। वे अगर सोंच-विचार से काम लें, और अपनी बुद्धि का उपयोग करें, तो अवश्य वे यह जानलेंगें कि जो चीज़ वे अपनी आँखों से देख रहे हैं, इससे भी अधिक विश्वास उन्हें उस चीज़ पर रखना चाहिए जो उनकी आँखों से अदृश्य है।

फिर कई ऐसी समस्याएँ भी है, जिन को देखने का या प्रयोग करने का इंतज़ार करना स्वयं मानव के लिए नष्टदायक होगा, क्यों कि अवश्य रूप से एक बार उस समस्या से पीडित होना पड़ता है। अगर किसी व्यक्ति ने अन्य व्यक्ति

से यह चालेंज किया कि वह चोट खाये बिना ऊँची इमारत से कूदने की क्षमता रखता है, तो दूसरे व्यक्ति ने उससे कहाः चलो, हम इसका प्रयोग (प्रदर्शन) करेंगे। निश्चित रूप से यही पहला व अंतिम प्रयोग होगा, और यह प्रयोग करने वाले का इसी स्थान पर देहांत हो जायेगा। इस प्रयोग को सही या ग़लत साबित करने के लिए हम इसका उपयोग नही करेंगे । बल्कि सोंच-विचार से काम लेते हुए और अगली-पिछली चीज़ो को देखते हुए उपयोग किये बिना इस प्रयोग का संभव परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

राजीवः तो फिर इस विश्वास को प्राप्त करने के लिए वैज्ञानिक प्रमाणों और बौद्धिक सबूतों से हमे इस सिद्धांत की पुष्टि करने की आवश्यकता है।

राषिदः इस में कोई आपत्ति नही, लेकिन मैं यह कहूँगा कि इसका सब से बडा प्रमाण उस व्यक्तित्व की सच्चाई पर भरोसा करना है, जिस ने हमें इसकी सूचना दी। वह व्यक्तित्व अल्लाह है, जिसने अपने रसूलों के द्वारा इस सिद्धांत की घोषणा की है। अल्लाह पर विश्वास रखने की अनिवार्यता यही है। वह अल्लाह हमारे लाभदायक चीज़ों, और हमारे हितों का हम से ज़्यादा ज्ञान रखता है।

तुमने जो वैज्ञानिक प्रमाण और बौद्धिक सबूत माँगा, वह तो बहुत है। मैं उन में से कुछ विवरण करता हूँ ।

पहला प्रमाणः निर्माण से पुनर्निर्मान का सबूतः इसका अर्थ यह होगा कि जब हम स्वीकार करलें अल्लाह ने हमे पहली बार पैदा किया, और जिसने पहली बार हमें शून्य से पैदा किया है, वह मृत्यु के बाद दुबारा हमें जीवित करने की क्षमता अवश्य रूप से रखता है। बल्कि सैद्धांतिक रूप से पहले जीवन की संभावना से दूसरे जीवन की संभावना अधिक दृढ़ है....

दूसरा प्रमाणः सामाग्री व चीज़ो का एक स्थिति से दूसरी स्थिति, और एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तन होनाः पवित्र ख़ुरआन ने इसका उदाहरण प्रदान किया। जिसका प्रत्येक सदस्य द्वारा प्रयोग करना संभव है। और वह हरे-भरे पेड़ से आग निकलना । जो अल्लाह किसी विषय को उसके विपरीत विषय से निकालता है। ब्रह्माण्ड की सामाग्री उसकी आज्ञा का पालन करती है, और कोई भी उसकी अवज्ञा नही करता है, तो उस अल्लाह के लिए हड्डियों को चूर्ण होने के बाद फिर जीवित करना संभव होगा।

तीसरा प्रमाणः प्राणियों का उलट फेरः मृत्यु, फिर जीवन, फिर मृत्यु, फिर जीवन। कठोर निर्जीव बीज से हरा भरा पौधा निकलता है। फलता-फूलता है। फिर यह जीवित पौधा निर्जीव बीज पैदा करता है, जो न फलते हैं, न फूलते हैं। जीवित पक्षियों से निर्जीव अंडे पैदा होते हैं फिर इन निर्जीव अंडों से चलने फिरने वाले पक्षी पैदा होते हैं। जिन चीज़ों को निर्जीव और बेजान समझते हैं, उसमें जीवन छिपा हुवा है... यही परिस्थिति मानव और सारे प्राणियों का है।

चौथा प्रमाणः मानव, पशु-पक्षी और पेड़-पौधों के जीवन में मृत्यु के बाद दुबारा जीवित होने की घटनाः साधारण मानव के शरीर का 260.000.000.000.000.000. सेल से निर्माण होता है, जिसमें प्रत्येक क्षण परिवर्तन होता है। यह सेल तुरंत कम होते हैं। भोजन के द्वारा यह कमी पूरी हो जाती है। तो मालूम यह हुवा कि मानवीय शरीर में स्वयं अपने आप लगातार जीव नदी के समान परिवर्तन होते रहता है। इसी प्रकार हमारा शरीर सदा परिवर्तन की प्रणाली के अनुसार चलते रहता है। एक समय ऐसा भी आता है कि शरीर में कोई पुराना सेल बाकी नही रहता। परिवर्तन की यह प्रणाली बाल्य और यौवन में तेज़ी के साथ चलती है, जब कि बुढ़ापे में धीरे-धीरे आगे बढ़ती है... दस साल में एक बार की दर से यह परिवर्तन होता है।

इसका निष्कर्ष यह हुवा कि भौतिक शरीर का परिवर्तन लगातार चलता है। लेकिन मानव आंतरिक रूप सेः ज्ञान, रीति-रिवाज, कामनायें, सोंच-विचार में परिवर्तन नही होता है... यह चीज़े जैसी हैं वैसे ही सदा रहेंगी। अगर मानव शरीर के समाप्त होने से समाप्त हो जाता, तो अवश्य रूप से यह अनिवार्य होता कि सेल के समाप्त होने, और संपूर्ण रूप से इस में परिवर्तन होने से वह प्रभावित हो ,.... इससे इस बात की पुष्टी होती है कि मानवीय जीवन शरीर के अलावा कोई और चीज़ है। जो शरीर के समाप्त होने और सेल के खतम हो जाने पर भी बाक़ी रहेगा।

पाँचवा प्रमाणः आधुनिक ज्ञान इस बात का संकेत देता है कि ब्रह्माण्ड की कुछ सामाग्री मानव के सारे कार्यो का पंजीकरण करती है। किन्तु परलोक का प्रमुख लक्ष्य मानव के विरोध पंजीकरण किए हुए सारे कार्य (अच्छे हों या बुरे) का बदला देना है। यह कार्य आशय, कथन और प्रयोग सब को शामिल है। .... वैज्ञानिक प्रमाण इस बात की पुष्टी करते हैं कि यह सारे कार्य व्यर्थ नही होंगे, बल्कि उनके अंत होने के बाद भी दुबारा इनका लौटना संभव होगाः

वह विचार या ख्याल जो हमारे मन में पैदा होता है, और हम उसको भूल जाते हैं.... हम स्वप्न में, या हिस्टिरिया की स्थिति में, या पागलपन में इस विचार के प्रति बोलते हैं, और हमे इसका ज्ञान भी नही होता। निश्चित रूप से यह इस बात की पुष्टी करता है, बुद्धि या स्मरण केवल वही नही है, जिस का हम एहसास रखते हैं। बल्कि स्मरण के कई ऐसे क्षेत्र भी है, जिस को हम अपने अनुभव में ला नही सकते। इन क्षेत्रों का संपूर्ण रूप से अलग व्यक्तित्व है। और ज्ञान इस बात की पुष्टी करता है कि हम इस व्यक्तित्व को मिटाने की क्षमता नही रखते हैं।

कथन को प्रति आधुनिक ज्ञान ने साबित किया है कि जो आवाज़े हम सुनते हैं, वह हवा के तरंगों से बनते हैं, निश्चित रूप से इस बात की पुष्टी हुई है कि यह तरंग पहली बार प्रकट होने के बाद व्योम (गगनमंडल) में बाक़ी रहती है, और कई शताब्दियाँ गुज़रने के बाद भी इसको सुनना संभव है। अभी तक प्रायोगिक

रूप में वैज्ञानिकों द्वारा इसका प्रयोग संभव नही हुवा है। इससे इस बात की पुष्टी होती है मानव जो कुछ बोलता है, उसका पंजीकरण हो जाता है।

कार्य की स्थिति आश्चर्यजनक रूप से परलोक के प्रकट होने की संभावना पुष्टी करती है। किन्तु आधुनिक ज्ञान ने यह साबित किया है कि दिन के उजाले या रात के अंधेरे में किये जाने वाले हमारे सारे कार्य चित्रों के रूप में अंतरिक्ष में बाक़ी रहते हैं, और किसी भी समय इन चित्रों को इकट्ठा करना संभव होता है। शरीर चाहे चलने फिरने वाला हो या एक जगह स्थिर रहने वाला हो, उससे सदा एक गर्मी निकलती है, जो शरीर के रंग रूप बनाने की भूमिका निभाती है। किसी भी जीव से निकलने वाले गर्म तरंगों की चित्रकारी के लिए सटीक मशीन की तैयार की गयी। लेकिन यह सटीक मशीने भी गर्म तरंगों की चित्रकारी केवल किसी घटन के प्रकट होने के बाद कुछ ही घंटों तक कर सकती है।

माइकलः जब हम परलोक के प्रकट होने की अनिवार्यता को मानलें, और इस्लाम धर्म में इसकी महत्वता का भी ज्ञान प्राप्त करलें, तो अब यह बताओ इस्लाम में इस सिद्धांत को महत्वपूर्ण विशेषताएँ क्या-क्या है ?

राषिदः इस्लाम धर्म में इस सिद्धांत का स्पष्टीकरण अधिकतर अन्य धर्मो से विपरीत है। लेकिन सामान्य रूप से निम्न लिखित बातों मे इस सिद्धांत का सारांश करना संभव हैः

1. अल्लाह-ताला बहुत जल्द इस जगत को, और इस में पाये जाने वाले हर जीव को उस दिन मिटा देगा, जिसको क़ियामत के दिन से जाना जाता है।
2. फिर अल्लाह दुबारा उन्हें जीवित करता है, और अपने दरबार में उन्हें इकट्ठा करता है। इसी को पुनर्निर्माण (पुनर्जन्म) कहा जाता है।
3. फिर इस के बाद लोगों ने अपने सांसारिक जीवन में जो कुछ अच्छा या बुरा किया हो, उसको बिना किसी कमी या ज्यादती के देवत्व न्यायालय में प्रस्तुत किया जाता है।
4. अल्लाह मानव के प्रत्येक बुरे या अच्छे काम को नापेगा। जिस के अच्छे काम का पल्ला भारी हो जायेगा, उसको मुक्ति प्रधान की जायेगी, और जिस के बुरे काम का पल्ला भारी होगा, उसको दण्ड दिया जायेगा।
5. जिन लोगों को मुक्ति मिलेगी, वे स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, और जिन्हें दण्ड दिया जायेगा, वे नरक में डाल दिये जायेंगें।

राजीवः वास्तविक रूप से यह बहुत गंभीर समस्या है।

इस्लाम और आतंकवाद



इस्लाम और आतंकवाद

वाद-विवाद के निर्धारित समय पर माइकल, राषिद और राजीव मीटिंग हॉल में इकट्ठा हुए... माइकल अपने दो मित्रों को प्रणाम करने के बाद अपनी बात प्रारंभ किया।

माइकलः पिछली बैठकों में राषिद ने जो कुछ कहा, मेरे विचार से वह सारी बाते, उसके धर्म के प्रति सामान्य मशहूर बातों से विपरीत है, और इन बातों की अधिक संवीक्षा ज़रूरी है। श्रीमान राषिद ने अपने धर्म के अच्छे क्षेत्रों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया। लेकिन बुरे क्षेत्रों का उसने चर्चा नही की.... हम अपनी आँखों से देखते हैं कि वर्तमान काल में जिस आतंकवाद से यह जगत पीडित है, वह विशेश रूप से इस्लामी आतंकवाद है।

राजीवः आंशिक रूप से मै तुम्हारे विचार से सहमत हूँ। लेकिन आतंकवाद का व्यवहार है, जिस को किसी धर्म या जाति से संबंधित नही किया जाना चाहिए। मै अपने देश भारत में इस को देखा है, इस प्रकार से कि कट्टरपंथी की घटनाएँ कई कारणों से विभिन्न जातियों में प्रकट होती है, तो इन घटनाओं का मुख्य स्त्रोत क्या है, जिस के बारे में हम चर्चा कर सकें ।

माइकलः निश्चित रूप से मैं भी इसी समस्या के प्रति चर्चा करना चाहता हूँ। मेरा विश्वास है कि आतंकवाद स्वयं इस्लाम धर्म में गुप्त है, और सब यह जानते हैं कि इस्लाम तलवार के द्वारा फैला है... प्रिय राषिद क्या तुम इसका इंकार करते हो ?

राषिदः निश्चित रूप से मैं इसका इंकार करता हूँ, और वास्तविक तथ्व भी इसका तिरस्कार करते हैं।

माइकलः कौन-से वास्तविक तथ्व ?

राषिदः धार्मिक, एतिहासिक, और वास्तविक तथ्व... लेकिन सब से पहले मुझे यह कहने दो कि मीडिया और स्वार्थी लोग जिन झूठी जानकारियों से हमारी बुद्धियों का निर्माण करते हैं, हमें इन से अपने बुद्धियों को दूर रखना चाहिए।

राजीवः मेरे विचार से हम स्वतंत्र समाज में जीवन-यापन कर रहे हैं, और इस जैसे समाज में हमारी बुद्धि का निर्माण करने के लिए हम पर कोई दबाऊ नही होता है।

राषिदः यह बात सत्य है कि हम पर कोई दबाऊ नही होता, और हम किसी भी चीज़ का चयन करने में हम स्वतंत्र है। लेकिन अंत में हम उन्ही चीज़ों का चयन करते हैं, जो मीडिया पर प्रभाव रखने वाले लोग, और राजनीति नेता व स्वार्थी लोग हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। आतंकवाद, और इस्लाम धर्म से आतंकवाद को संबंधित करने के प्रति पश्चिम के आलोचकों और राजनीतिक नेताओं के कई वाक्तव्य आज तक लगातार सामने आरहे हैं। आतंकवाद के विरोध में लड़ाई के नाम पर धार्मिक युद्ध का संदेश दिया जा रहा है, और यह दावा किया जा रहा है कि संपूर्ण रूप से सहिष्णुता और सादगी रखनेवाली पश्चिमी संस्कृति की सुरक्षा के लिए यह लड़ाई जारी है।

माइकलः मैं तुम्हे वचन देता हूँ कि हम उसी प्रकार अपनी बात-चीत जारी रखेंगे, जिस प्रकार से हम पहले बात-चीत कर रहे थे। यानी हम वास्तविकता की खोज करेंगे, चाहे जो भी उसका स्त्रोत हो, और जो भी उसकी परिस्थिति हो।

राषिदः जब इस्लाम अपने स्वभाव के अनुसार आक्रमक धर्म है, और तलवार से फैला है। जब कि ईसाई धर्म के प्रति पश्चिम के लोगों का यह दावा है कि वह सहिष्णुता का धर्म है। तो मेरे मित्र क्या तुम्हें यह ज्ञान है कि पवित्र ख़ुरआन में कितनी बार तलवार का शब्द आया है, और पवित्र पुस्तक (बाईबल) में कितनी बार आया ?

माइकलः निर्धारित रूप से मुझे इसका ज्ञान नही है। लेकिन निश्चित रूप से पवित्र पुस्तक (बाईबल) से अधिक पवित्र ख़ुरआन मे तलवार के शब्द का उपयोग हुवा है।

राषिदः तुम दोनों के सामने यह आश्चर्य सूचना है.... सुनो। पवित्र ख़ुरआन में 114 सूरे है। 6236 आयतें है। 77439 शब्द है। तलवार का शब्द, या इसका पर्यायवाची शब्द का पूरी पवित्र ख़ुरआन में एक बार भी चर्चा नही हुवा। हालांकि अरबी भाषा में तलवार के 60 पर्यायवाची शब्द है, जबकि पवित्र पुस्तक (बाईबल) में 200 बार से अधिक तलवार का शब्द आया है।

माइकलः ओह। निश्चित यह आश्चर्यजनक बात है.... क्या धार्मिक तत्वों से तुम्हारा अर्थ यही था ?

राषिदः बल्कि धार्मिक तत्वों में से यह केवल एक तत्व है। इसके प्रति मैं अधिक विस्तार नही करूँगा। ताकि अन्य तत्वों का चर्चा करने का समय उपलब्ध हो।

राजीवः इन तत्वों में से सबसे प्रमुख तत्व क्या है ?

राषिदः प्रिय राजीव। इन तत्वों में से सबसे प्रमुख तत्व का कुछ ज्ञान तुम भी अवस्य रखते हो। वह तत्व यह है कि इस जगत के जिन क्षेत्रों में मुसलमानों की अधिक संख्या रहती है, विशेष रूप से पूर्व व दक्षिण एशिया में कभी भी मुसलमानों की सेना ने प्रवेश नही किया, और इसी के अनुसार आफ्रिका के प्रान्तों में भी इस्लामी सेना नही पहुँची।

इसी ऐतिहासिक तत्वों से संबंधित न्याय प्रिय इतिहासकारों की यह गवाही है कि इस्लामी इतिहास में इस्लाम धर्म को स्वीकार करने के लिए किसी भी व्यक्ति को मजबूर करने की घटना (इन इतिहासकारों के अनुसार) नही घटी है।

माइकलः तुम ने जो कुछ इतिहासकारों की गवाही का चर्चा किया है, उसको छोडो। क्योंकि मैं भी कुछ अन्य इतिहासकारों की गवाही प्रस्तुत कर सकता हूँ, जो पिछली गवाही के विपरीत है। यह बताओ तुम्हारे इस दावे से किस चीज़ की पुष्टी होती है ?

राषिदः इस समस्या में कई प्रमाण है, जो मेरी बात की पुष्टी करते हैः

प्रथमः अधिकतर वह देश जिन पर मुसलमानों ने युद्ध के बाद विजेता प्राप्त की है, उस देश के वासी मुसलमानों के शासन तले अपने पिछले धर्म ही के अनुयायी रहे, और आज तक इनमें से कुछ लोग अपने-अपने धर्मो का ही पालन करते हैं। ईजिप्ट, फलस्तीन, लेबनान, यूनान और भारत की यही परिस्थिति है.... यह परिस्थिति संपूर्ण रूप से उस परिस्थिति के विपरीत है, जब कि ईसाइयों ने स्पेन, जेरूसलम और फिलिप्पीन पर युद्ध के बाद विजेता प्राप्त कर ली थी.... हत्याचार सामान्य बात थी, या ईसाई धर्म को स्वीकार करने पर मजबूर किया जा रहा था, या जबरदस्ती देश बहिष्कार किया जा रहा था... यह दण्ड उन लोगों के भाग में आये थे, जिन्हों ने ईसाइयों का धार्मिक रूप से विरोध किया।

द्वितीयः जिन देशों पर मुसलमानों ने विजेता प्राप्त की थी, जब इन देशों से इस्लाम का सैनिक बल समाप्त हो गया, और मुसलमानों या किसी और कि ओर से किसी प्रकार का कोई दबाव नही रहा, तो भी हम यह देखते हैं कि इन देशों के वासी इस्लाम को नही छोडा। बल्कि हम ने पूर्व सोवियत संघ के कुछ मुसलमान वासियों को देखा, जो कम्युनिस्ट उत्पीडन की छाया तले भी अपने इस्लाम को गुप्त रखा। वे इस अत्याचार कम्युनिस्ट प्रणाली के अंत का अवसर तलाश कर रहे थे, ताकि वे पूरी शक्ति के साथ अपने धर्म इस्लाम की ओर लौट आयें।

तृतीयः इतिहास हमे ऐसी जातियों की कथायें बताता है, जिन्हों ने मुसलमान देशों पर वार किया। उनके सैन्य बल को तोड दिया, और उनके देश के अधिकतर भागों पर कब्जा किया... जब इस जाति के लोग मुसलमानों के साथ जीवन-यापन करने लगे, तो पूरे के पूरे इस्लाम धर्म में प्रवेश करे, जैसे टटार और तुर्क जाति के लोगों ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था।

माइकलः मै तुम्हारी इस बात से सहमत हो जाता हूँ कि इस्लाम धर्म तलवार से नही फैला। लेकिन इतिहास को एक ओर रखो। हम तो अब वर्तमान काल की वास्तविक परिस्थिति के प्रति चर्चा करेंगे। क्या तुम मेरी उस बात से सहमत नही हो, जो मैं ने पहले कहा कि वर्तमान काल में जिस आतंकवाद से यह जगत पीडित है, वह विशेष रूप से इस्लामी आतंकवाद है ।

राषिदः पहले हम यह निर्धारित करलें कि आतंकवाद क्या है ? फिर हम इस जगत की ओर देखें ताकि वर्तमान काल में आतंकवाद का रोग क्या है ? और कौन इसको फैला रहा है ?

राजीवः इस जगत के सारे देश और अंतर्राष्ट्रीय समितियाँ आतंकवाद की निर्धारित परिभाषा के प्रति आज तक सहमत नही हुए हैं, लेकिन हमारे द्वारा आतंकवाद की इस परिभाषा पर सहमत होना संभव हैः शांतिप्रिय लोगों की इच्छाओं को कुचलने के लिए, या राजनीतिक आक्रामक गिरोह के पक्ष में हितों को प्राप्त करने के लिए, या आर्थिक लाभ उठाने के लिए भय में रखना।

राषिदः निश्चित रूप से आतंकवाद की परिभाषा निर्धारित न करना कुछ देशों का विशिष्ट लक्ष्य है। ताकि इसके साथ खिलवाड़ संभव हो... लेकिन तुम आतंकवाद के प्रति जो परिभाषा दी है, मै उसमें कुछ अधिक यह कहना चाहूँगाः चाहे यह आक्रामक गिरोह एक सदस्य के रूप में, या एक समूह के रूप में, या एक देश के रूप में हो।

माइकलः तुम्हारी इस परिभाषा से मुझे कोई आपत्ति नही। इसके आधार पर जब हम अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं की समीक्षा करें, तो हमें वर्ष 2001 में न्यूयार्क के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार केन्द्र ट्विन टवर्स में होने वाला बम धमाका इसके बाद मेड्रिट की ट्रेन में होने वाला बम धमाका, इंडोनेशिया के बालिश शहर के रिसार्टस में पश्चिमी पर्याटकों के विरोध होने वाले बम धमाके, और यहूदियों के विरोध फलिस्तिनियों की ओर से होने वाले हमले... यह सब के सब आंतकवादी हमले हैं, जिसके करने वाले मुसलमान है।

राषिदः मेरे मित्र थोड़ा धैर्य से काम लो। फलिस्तिनियों की ओर से होने वाले हमले उस अधिकृत के विरोध संघर्ष अभियान है, जिस के नाम पर आतंकवाद का एक काला इतिहास लिखा जा चुका है। क्या किसी जाति के पूरे देश को

कब्ज़ा करने, उसका वहाँ से बहिष्कार करने, और विभिन्न तरीक़ो से उस जाति के लोगों को भय में रखने की ओर ध्यान न देना संभव है ? इस जाति के लोगों के विरोध अधिकृत की ओर से होने वाले कुछ अत्याचार निम्न लिखे जा रहे हैः

- 31.12.1947 में शेख नामक शहर में होने वाला नरसंहार (क़त्ले आम) इस क़त्ले आम में 600 मासूम नागरिकों कि उनके घरों मे हत्या की गयी।

- 10.04.1984 में देर यासीन नामक गाँव में होनेवाला नरसंहार। इस क़त्ले आम में इस गाँव के आधे से अधिक लोगों कि हत्या की गयी।

- 11.07.1948 में अल लद् नामक गाँव में होने वाला नरसंहार । इस क़त्ले आम में गाँव की मस्जिद में इकट्ठा होने वाले 426 नागरिकों की हत्या की गयी। यहूदियों ने इस मस्जिद पर धावा बोला, और मस्जिद में उपस्थित सारे लोगों की हत्या कर डाली।

- अक्तोबर 1965 में कफ़्र ख़ासिम नामक गाँव में होने वाला नरसंहार। इस क़त्ले आम में बालकों और महिलाओं को मिलाकर 94 नागरिकों की हत्या की गयी।

- 18.09.1982 में सब्र व शतिला नामक नरसंहार। लेबनान में यह क़त्ले आम हुवा। युद्ध अपराधी शरून ने लेबनान के ईसाई फौज़ के साथ मिलकर यह हमला किया था। 72 घंटे लगातार चलने वाले इस क़त्ले आम में 3500 फलिस्तिनी और लेबनानी मारे गये। इस में अधिकतर संख्या महिलाओं, बालकों और बूढ़ों की थी। उनका अपराध केवल यह था कि वे इस्लामी पहचान रखते थे।

- 25.04.1994 में मस्जिदे इब्राहीमी में होने वाला नरसंहार। फौज और यहूदी आबादकार लोगों के साथ मिलकर इज़्राईल कि एक सेना ने यह हमला किया। इस क़त्ले आम में मस्जिद के अंदर 29, और मस्जिद के बाहर 50 नागरिकों की हत्या की गयी। 350 से अधिक लोग घायल हुए।

लेकिन मैं तुम्हारे दृष्टिकोण को अधिक व्यापक करने के लिए दो और घटनायें विवरण करूँगाः (1) वर्ष 1995 में ओक्लाहोमा की फेडरल भवन में होने वाला बम धमाका। इस बम धमाके में 168 लोग मारे गये, और 500 अन्य लोग घायल हुए। (2) ओस्लो और उटोया द्वीप में जुलाई 2011 के बीच होनेवाला नरसंहार। इस में 92 लोग मारे गये, और 90 अन्य घायल हुए। यह दोनों नरसंहार विशिष्ट रूप से जातिवाद और कट्टरपंथी ईसाई गिरोह से जोडे जाते हैं।

इसी प्रकार जब हम आतंकवाद को किसी धर्म या किसी संस्कृति से जोड़ने के प्रति चर्चा कर रहे हो, तो निश्चित रूप से हम इस वास्तविकता को भूल नही

सकते कि वर्तमान काल मेः

- कभी ऐसा नही हुवा कि कोई मुसलमान देश किसी पश्चिमी देश पर आक्रमण किया हो। इस के विपरीत इतिहास यह गवाही देता है कि प्राचीन और आधुनिक जगत सदा पश्चिम कि ओर से आक्रमण का लक्ष्य रहा।

- अमेरिकन इंडियन्स पश्चिमी सभ्यता का नारा लगाने वालों के हाथों क़त्ले आम से पीडित हुए। इसके बाद उनकी संख्या एक करोड़ से दो लाख तक पहुँच गयी। इसके अलावा उनका महाद्वीप उनसे छीन लिया गया।

- पश्चिम ने इस जगत पर दो बडी-बडी युद्धों की मुसीबत डाली है। इन दोनों युद्धों को विश्व युद्ध का नाम दिया गया। जबकि वास्तविक रूप से यह दोनों युद्धों का कारण (और विशेष रूप से पहला युद्ध) पश्चिमी था। प्रथम युद्ध में लगभग 2 करोड़ लोग मारे गये, और इतने ही संख्या में लोग घायल और अपाहिज हुए। दूसरे युद्ध में साढ़े पाँच करोड़ की संख्या में लोग मारे गये। पाँच करोड़ तीस लाख लोग घायल हुए, और तीस लाख लोग लापता हैं। इन पीडित लोगों में अधिकतर संख्या नागरिकों की थी। इसका कारण यह था कि आक्रमण करने वालों कि नीती नागरिकों को निशाना बनाना था, ताकि विरोधी को कमज़ोर किया जा सके।

इसी प्रकार (अगर हम मासूम लोगों के साथ अत्याचार करने की नीती पर सहमत भी हो जायें) तुमने जिन घटनाओं की चर्चा की है, इन घटनाओं के कारकों को प्रेरित करने वाले कारणों को भी हमे जानना चाहिए। इन लोगों ने इन घटनाओं का कारण यह बताया कि मुसलमानों के साथ अन्याय, और अत्याचार से पश्चिम और अमेरिका को रोकना है, विशेष रूप से इराक़ पर प्रतिबंध लगाने से रोकना है, और फिलस्तीन में यहूदी अपराध की सहायता करने से दूर रखना है।

राजीवः तुम्हारी बात-चीत का सारांश हम यह कह सकते हैं कि आतंकवाद का न कोई धर्म होता है और न कोई संस्कृति।

राषिदः मै तुम्हारी इस बात से तो सहमत हूँ कि आतंकवाद का कोई धर्म नही है। लेकिन मेरे विचार से पश्चिमी सभ्यता के उन प्रमुख विषयों के प्रति विचार की आवश्यकता है, जो संघर्ष व बलवान के पवित्रीकरण पर आधारित है, और इसी प्रकार इस सभ्यता का आक्रामिक व्यवहार से संबंधित होने के प्रति विचार करना ज़रूरी है। आधुनिक पश्चिमी सभ्यता विशेष रूप से यूनानी और रूमानी सभ्यता से अपने विचार प्राप्त किए हैं। इन दोनों सभ्यताओं में कई विचार सामान्य थे, जैसे महत्वता की समस्या, बलवान का पवित्रीकरण, और संघर्ष की अनिवार्यता...

आधुनिक पश्चिमी सभ्यता इन विचारों का वारिस बन गयी, और ईसाई धर्म की शिक्षायें दुर्व्यवहार, आतंकवादी हमले और आक्रमण करने के बीच, और इस सभ्यता के बीच आड़ न बन सकें। यह वह आतंकवादी हमले हैं, जो स्वयं यूरोप में, और सारे जगत में सामान्य हो गये।

माइकलः अगली बैठक तक धन्यवाद।

इस्लाम धर्म का भविष्य



इस्लाम धर्म का भविष्य

असमान्य रूप से राजीव अपने दोनों मित्रों से मिलने के लिए निर्धारित समय से देर पहुँचा। जैसे ही वह कंप्यूटर स्क्रीन पर दिखने लगा, तो उसका मित्र माइकल ने तुरंत यह कहाः

प्रणाम प्रिय राजीव। तुम तो सदा समय की पाबंदी करते हो, हमने तुम से यही देखा। आशा है कि आज तुम ने किसी घटना के कारण देर न किया हो।

राजीवः मेरे मित्र क्षमा चाहता हूँ। दुविधा की कोई बात नही है। मै तो एक अध्ययन पूरा करने में निमग्न था। इस अध्ययन को मै तुम्हारे सामने प्रस्तुत करना चाह रहा हूँ।

माइकलः अद्भुत। तो फिर आज की हमारी बात-चीत अधिक ज्ञात से जुडी हुई होगी। किस चीज़ के प्रति तुमने यह अध्ययन किया है ?

राजीवः वास्तविक रूप से इस्लाम के प्रति जो जानकारी हमारे इस वाद-विवाद से मिली है, इससे मैं प्रेरित हुवा। किन्तु मैं ने हमारे इस जगत में इस धर्म के फैलने या मिटने के प्रति अध्ययन करना चाहा।

माइकलः इस जानकारी ने मुझे भी अध्ययन करने की ओर प्रोत्साहित तो किया, लेकिन किसी अन्य क्षेत्रों में, जो बारीकी के साथ प्रमुख स्त्रोतों के द्वारा उन क्षेत्रों के प्रति खोज को अधिक विशाल बनाते हैं, जिनके प्रति हम चर्चा कर रहे हैं... लेकिन तुमने अध्ययन से क्या परिणाम निकाला ?..... प्रिय राषिद।। क्या तुम हमारे साथ बैठे हो ?।

राषिदः हाँ, हाँ। ... मै तुम दोनों की बात सुन रहा हूँ।

राजीवः मैं ने यह परिणाम निकाला कि सारे स्त्रोत और जानकारियाँ जगत में इस्लाम धर्म के फैलाव की अधिकता का संकेत देते हैं। किन्तु अध्ययन के द्वारा यह खोज हुई कि इस जगत में 4200 जाति और धर्म हैं, और आंकडे यह बताते हैं जगत के सारे सिद्धांतों में इस्लाम धर्म तुरंत फैलने वाला धर्म है। वर्तमान काल में इस संसार के सारे महाद्वीपों में बडी तेज़ी के साथ इस्लाम फैल रहा है। जब हम मुसलमानों की संख्या बडने के दर की ओर देखें, और ईसाई धर्म के अनुयायियों के दर के साथ इसकी तुलना करें, तो हम यह देखते हैं कि संयुक्त राष्ट्र की आंकडे बताते हैः इस जगत में मुसलमानों की संख्या बढने का वार्षिक दर 6.4% है, जब कि ईसाइयों के पास यह दर 1% से अधिक नही है।

मेरे अध्ययन में विशेष रूप से यूरोप पर नज़र डाली गयी। मैं ने यह पाया कि इस्लाम धर्म स्पेन, फ्रांस और ब्रिटेन में दूसरा प्रभावी धर्म हो गया है।

जर्मन में मुसलमानों की संख्या बढ़ रही है। जर्मन की दैनिक पत्रिका दा फेल्ट के अनुसार इस्लाम धर्म जर्मन में अच्छी संख्या में फैल रहा है।

फ्रांस के गृह मंत्रालय द्वारा किये गये अध्ययन ने इस बात की पुष्टी की है, प्रति वर्ष 3600 सदस्य इस्लाम धर्म स्वीकार करते हैं। इसी प्रकार इस अध्ययन में यह संकेत भी दिया गया कि फ्रांस में 2300 मस्जिद, और 70 लाख मुसलमान है। बल्कि इस बात की भी आशा की जा रही है कि वर्ष 2025 के आने तक मुसलमान फ्रांस की आबादी का एक चौथाई हो जायेंगे। जब कि वर्ष 2050 तक मुसलमानों की दर पश्चिम की आबादी में 20% होगी। अन्य कुछ आंकडों से यह भी मालूम होता है कि वर्ष 2040 तक मुसलमान पश्चिम की बहुमत रखने वाली जाति हो जायेगी।

आंकडे बताते हैं कि दस साल बाद हालैण्ड की प्रजा का एक तिहायी इस्लाम स्वीकार कर लेगा। एक अध्ययन इस बात की पुष्टी करता है कि स्वीडन की प्रजा में आश्चर्य रूप से इस्लाम फैल रहा है। किन्तु सरकारी आंकडे इस बात का संकेत देते हैं कि मुसलमानों की संख्या लगातार बढ़ रही है, और आज कल स्वीडन में मुसलमानों की संख्या 1,20,000 से अधिक है।

मस्जिदों के निर्माण की अधिक संख्या भी मुसलमानों के फैलने का संकेत देती है, विशेष रूप से उन मुसलमानों के बढने की जो अपने धर्म का संपूर्ण रूप से पालन करते हैं। किन्तु आंकडे यह बताते हैं कि यूरोप में 25000 से अधिक मस्जिदें हैं, जिससे मुसलमानों का लगाव अधिक है।

इसके विपरीत अध्ययन गिरजा घरों की ओर लगाव में कमी की पुष्टी करते हैं। ड्रेस्डेन बैंक की ओर से किये गये अध्ययन के अनुसार अगले कुछ वर्षो के बीच जर्मन गिरजा घरों की संख्या में गिरावट की आशा है। किन्तु 350 चर्चो में से 96 चर्चो में केवल इसन नामक संघटन की निगरानी में चलने वाले धार्मिक जब समूह का आयोजन न किये जाने की संभावना है, और गिरजा घर के भवन को अन्य चीज़ों में उपयोग किया जाने वाला है। इसका कारण यह है कि चर्चो में आनेवालों की संख्या कम हो गयी है और उनकी आय में भी गिरावट आयी है।

चर्चो में ईसाइयों द्वारा लगाव कि कमी का स्पष्ट इस बात से होता है कि यूरोप के एक देश ने लोगों को चर्चो में आने की ओर प्रेरित करने के लिए प्रतियोगिता रखी, जिस में कार इनाम में दी गयी। क्योंकि चर्चो में आनेवालों की संख्या बहुत कम हो गयी थी।।

माइकलः पश्चिम में कुछ गठबंधन पार्टियों और कट्टर पंथियों की ओर से इस्लाम को सीमित करने, उसका मज़ाक उडाने, उसके सिद्धांतों का परिहास करने, मुसलमानों पर और इस्लाम के चिह्न के साथ ज़्यादती करने, बल्कि पूरे पश्चिम से मुसलमानों का बहिष्कार करने की जो अप्पील की जा रही है, इससे हमारी पिछली बात की पुष्टी होती है। लेकिन तुम्हारे विचार से इस्लाम फैलने के कारण क्या-क्या हैं.... प्रिय राषिद। हम तुम से तुम्हारे स्वभाव के अतिरिक्त कुछ और नही सुनेंगे ?।

राषिदः निश्चित रूप से मैं तुम्हारी बातों से संतुष्ट हूँ। इसीलिए अधिक बातें सुनने के लिए मै मौन धारण कर लिया हूँ..... मेरे विचार से इस समस्या के इस्लाम धर्म में कुछ विशिष्ट कारण है, और पश्चिमी सभ्यता में भी कुछ विशिष्ट कारण है। इसके साथ-साथ इसके कुछ वास्तविक कारण भी है... यह सब कारण एक साथ मिलकर इस्लाम के फैलने का कारण बन रहे हैं.... लेकिन मैं इस बात की ओर संकेत करना चाहूँगा कि वह प्राचीन धर्म, जिसकी जड़ें नबी आदम की सृष्टि से (यानी ब्रहमाण्ड में किसी भी जीव कि सृष्टि से) ऐतिहासिक गहराई तक पहुँच हुई हो, और आज तक यह सिलसिला न टूटा हो, ऐसे धर्म के लिए यह बात कोई आश्चर्यजनक नही है।

माइकलः प्रिय राषिद। हम यह जानते हैं कि इस्लाम धर्म अभी 1400 वर्ष पहले अवतरित हुवा। इस्लाम के अलावा कुछ अन्य देवत्व धर्म भी हैं, जैसे ईसाई और यहूदी धर्म। क्या तुम इसका तिरस्कार करते हो ?।

राषिदः इस समस्या के प्रति एक परिभाषा है, जिस में सुधार अवश्य है। वह यह कि अल्लाह का धर्म एक है, अनेक नही। एक इसलिए है कि उसका स्त्रोत एक है, वह स्त्रोत अल्लाह है जिस ने ब्रहमाण्ड की सृष्टि की। लेकिन कुछ परिस्थितियाँ ऐसी होती है, जिसका ध्यान रखते हुए एक ही धर्म इन परिस्थितियों या जातियों के अनुसार विशेष नियम कि उपलब्धी का अनिवार्य होता है। इसी प्रकार कभी ईश देवत्व के स्त्रोत से दूरी होने का कारण, इस धर्म से लोग फिर जाते हैं, और इस बात की आवश्यकता होती है, किसी नये रसूल को भेजने के द्वारा इस धर्म का पुनर्निर्माण हो। वह रसूल इस धर्म के स्थिर नियमों और क़ानून की पुष्टी करें। इसी कि ओर इस्लाम धर्म के रसूल मुहम्मद की वाणी संकेत देती हैः सारे नबी और रसूल आपस में पैतृक भाई हैं। उनका धर्म एक है, और उनकी माताएँ अनेक हैं। यानी इनका समय और उनके नियम विभिन्न और अलग-अलग है.... इस्लाम धर्म के रसूल मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में मानवता मार्गदर्शनी प्राप्त करली है। क्योंकि इस रसूल का संदेश कुछ ऐसे व्यक्तिपरक कारक अपने अंदर रखता है, जो इस धर्म को नष्ट होने से सुरक्षित रखते हैं, और आवश्यकता के समय इस धर्म का पुनर्निर्माण करते हैं। इसीलिए इस धर्म का सिलसिला कभी नही टूटेगा, और मानवता के अंत तक यह ऐतिहासिक धर्म स्थिर रहेगा। क्यों कि यह वह अंतिम धर्म है, जिससे मानव का प्रजापति संतुष्ट है। वास्तविक रूप से प्रजापति मानव के लिए वही धर्म पसंद करेगा, जो उनके लिए उचित हो, और उनकी वृत्ति के समान हो। और यह बात भी अवश्य है कि जब सारे मामलात को वृत्ति के अनुसार स्वचलित रूप में छोड़ दिया जाये, तो ज़रूर हम इस्लाम धर्म का यह फैलाव देखेंगें।

राजीवः मेरे लिए यह एक अद्भुत और नई परिभाषा है। प्रिय राषिद तुम जो इस्लाम धर्म के फैलाव के कारणों का विस्तार कर रहे थे, उसी को हम जारी रखेंगे।

राषिदः हाँ। इस्लाम धर्म के व्यक्तिपरक कारण, उसी उन विशेषताओं में प्रकट होते हैं, जो इस्लाम धर्म को फैलने का योग्य बनाते हैं। वह विशेषताएँ निम्न लिखे जा रहे हैः

इस्लाम धर्म के स्तंभ साधारण है। उसका अर्थ बडा गहरा है। उसकी परिभाषा स्पष्ट है। उसकी विधि व्यापक है, और उसकी शिक्षायें सरल है। उसको समझने के लिए अधिक मानसिक क्षमता और निपुण होने की आवश्यकता नही है। इस में न कोई रहस्य है, न कोई अस्पष्टता है, और न जटिलता इस में उपलब्ध है।

यह एक मानवीय धर्म है, जो मानव के स्वभाव का ध्यान रखता है। उसकी समस्याओं के अनुसार व्यवहार करता है। इच्छाओं को पूरा करता है। समस्याओं का समाधान देता है। प्रश्नों का उत्तर देता है। वास्तविक जीवन और तत्वों के बीच सद्भाव के रूप में संबंध पैदा करता है। इसी प्रकार सामाजिक अन्याय के हर रूप को अवैध ठहराता है, और मानवता के बीच, अलग-अलग वंशज, भाषा, जाति, और विभिन्न सामाजिक स्थिति के होते हुए भी संपूर्ण रूप से समानता पैदा करता है।

वास्तविक धर्म है, जो मानव की वास्तविकता पर निर्भर होता है, और वास्तविक जीवन में घुल-मिल नही जाता है, और न रूप बदलता है। इसी वास्तविकता के कारण इस्लाम वह धर्म है, जो संसार और परलोक को इकट्ठा करता है। इन दोनों के बीच कोई टकराऊ नही रखता।

यह वह धर्म है, जो मानवीय बुद्धि को सम्मान देता है। विचारों को मान देता है, और आपसी समझौता व लाभदायक वाद-विवाद के लिए मानसिक प्रमाण और तार्किक तरीक़े उपलब्ध बनाता है।

यह धर्म ज्ञान और उन्नति का विरोधी नही है, बल्कि उसकी ओर प्रेरित करता है। आधुनिक काल में ज्ञान के द्वारा जिन वैज्ञानिक तत्वों की खोज की गयी, यह सारे तत्व 1400 वर्ष पहले पवित्र ख़ुरआन में वर्णन किये हुए बातों के साथ समान है।

यह धर्म प्रगति के आंदोलन के साथ-साथ चलता है। निश्चित रूप से समय और स्थान में परिवर्तन के कारण जीवन पर प्रभावी होने वाले सामाजिक परिवर्तन, और विकास के साथ व्यवहार करने की अपनी क्षमता को इस्लाम धर्म ने साबित किया।

यह धर्म वास्तविक रूप से मानवीय स्वतंत्रता प्रधान करता है, जो कि उसी समय उपलब्ध हो सकती है, जब कि मानव अपने ईशवर की सच्ची प्रार्थना में एकाग्रचित हो जाये। क्योंकि इसी से वह किसी मानव का, या संसार के किसी अन्य जीव का भक्त नही रहेगा।

सदा विभिन्न संस्कृतियों को स्वीकार करने वाला धर्म

माइकलः पश्चिमी सभ्यता में पाये जानेवाले व्यक्तिपरक कारक में तुम्हे

बताऊँगाः

हमारी पश्चिमी सभ्यता पिछली शताब्दी और उस से पहले से एक विशेष रूप से वास्तविक बौद्धिक संकट में जीवन-यापन कर रही है। और हमारी पश्चिमी सभ्यता में गिरजा घर और ज्ञान के बीच, फिर अलग-अलग दर्शन विचारों के बीच और समाज के विभिन्न जातियों के बीच संघर्ष के कारण यह संकट और गहरा हो गया। इसका परिणाम यह हुवा कि नैतिक गिरावट पैदा हुई। भ्रम सामान्य हो गया, और पहचान खो गयी।

फिर पश्चिमी मानव के व्यक्तित्व में पाये जानेवाली आध्यात्मिक शून्यता भी है.... यह वह शून्यता है जिस में मानवीय आत्मा घुटती है। मानवीय सम्मान का अपमान होता है, और मानव की विशेषताएँ मिट जाती है... जब कि सांसारिक विषयों की भरमार होती है, उनका मूल्य बढता है, और मानव का मूल्य घटता है, यहाँ तक कि मानव इस संसार का एक मामूली भाग, या एक साधारण सामाग्री के समान हो जाता है।

एक दूसरा मुख्य कारण वह भ्रम है, जिस में अधिकतर पश्चिमी लोग अपने धर्म के प्रति जीवन बिता रहे हैं। वे अपने सिद्धांतों में कमी और आपसी टकराऊ देख रहे हैं। हालांकि उनमें से अधिकतर लोग अपने धर्मो के प्रति केवल बनावटी लगाव रखते हैं। इस के साथ-साथ गिरजा घर की जो शिक्षायें पवित्रता के नाम पर मठवासी के रूप में प्रकट होती है, इसको भी हम में से अधिकतर लोग मानवीय वृत्ति के खिलाफ, और जीवन की अधिकतर समस्याओं से टकराने वाले मानते हैं।

हम नैतिक गिरावट, पारिवारिक विघटन, और सामाजिक दूरियाँ, जो पश्चिमी समाज में सामान्य बात हो गयी है, इस को भी हम भूल नही सकते।

राषिदः जब हम वास्तविक कारकों के प्रति बात करना चाहें, तो हम यह देखेंगे कि इस्लाम की छवि खराब करने का प्रयास, और मुसलमानों को परेशान करने का भी उलटा असर हो रहा है, जिससे इस धर्म के प्रति ज्ञान प्राप्त करने कि ओर लोग इच्छुक हो रहे हैं।

इसी प्रकार इस्लाम धर्म फैलने में अल्लाह की ओर बुलाने वाले समूह का भी प्रयास एक कारण है। इन प्रयासों में से एक यह कि इस्लाम धर्म के वैज्ञानिकों के बीच होने वाली बहस है..... जिस से पश्चिम और अन्य धर्मो के अधिकतर लोगों को वास्तविक रूप में इस्लाम का ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिल रहा है।

हम पश्चिम में इस्लामी अल्प संख्यकों की उपस्थिति के प्रभाव को भूल नही सकते। क्यों कि यह भी पश्चिम के लोगों के लिए इस्लाम को नज़दीक से जानने का अवसर है। इस से इस्लामी परिभाषा का ज्ञान प्राप्त करने, और प्रायोगिक जीवन में मुसलमानों की जीवन शैली देखने का मौक़ा मिलता है।

यह सब चीज़े मुझे आशावादी उज्वल भविष्य का संकेत देती है, जो इस बात की पुष्टी करती है कि भविष्य इसी धर्म का होगा।

प्रमुख सन्दर्भ



पवित्र ख़ुरआन

हदीस की पुस्तक (मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम की वाणी)

डाक्टर इब्राहीम खलीलः

मेरे मित्र ने इस्लाम क्यों स्वीकार किया ? पवित्र ख़ुरआन की चुनौतियों के प्रति वाटिकान के विचार

डाक्टर इब्राहीम मुहम्मद इब्राहीमः

सांसारिक धर्म उसके पवित्र स्त्रोतों में, इनके प्रति इस्लाम धर्म की स्थिति

अबुल आला मौदूदीः

इस्लाम और वर्तमान काल की चुनौतियाँ आमने-सामने

इस्लाम और आधुनिक सभ्यता

परदा

वर्तमान काल में इस्लामी क़ानून का अनुसरण

इस्लाम धर्म के सिद्धांत

हम और पश्चिमी सभ्यता

इस्लाम में जीवन-यापन प्रणाली

अबु अब्दुल मलिक वलीद बिन फहद अल-वद्आनः

नबी ईसा पर विश्वास रखने प्रत्येक सदस्य के नाम संदेश।

अहमद दीदात

सारे धर्मो में शीघ्र बढने वाला धर्म

इस्लाम और ईसाई धर्म के बीच विकल्प

जातिवादि समस्या का इस्लामी समाधान

मुसलमान और ईसाइयों के बीच वास्तविक विवाद

यहूदी, ईसाई और इस्लाम धर्म में अल्लाह का स्थान

बाईबल और पवित्र ख़ुरआन के बीच पाया जाने वाला अंतर

तलवार का आरोप

क्यों मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम सब से महान है ?

पवित्र पुस्तक मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रति क्या कहती है ?

मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम संसार के सब महानों में महान है।

मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम ईसा-मसीह के असली उत्तरधिकारी है।

इस्लाम धर्म में प्रार्थना की परिभाषा

क्या ईसा मसीह ही अल्लाह है ? इस प्रश्न का बाईबल द्वारा उत्तर

डाक्टर अहमद अब्दुल रहीम सायिहः

इस्लामी सभ्यता का दर्शन ।

डाक्टर इस्माइल राजी फारूख़ी, डाक्टर लोस लुम्या फारूख़ीः

इस्लामी सभ्यता का एटलस

डाक्टर इक्राम लमईः

ईसाई धर्म में तलाक़ का स्थान (बाईबल का दृष्टिकोण)

आन्ड्रे नैटून व अन्य लोग। अनुवादः समीरा अज़मी ज़ेनः

ईसाई धर्म में मूर्ति पूजा के नियम

अनवर महमूद जन्नातीः

पश्चिम की ओर से इस्लाम पर लगाये गये आरोप

बर्नार्ड लोएसः

इस्तंबुल और इस्लामी खिलाफत की सभ्यता

जाद करीम जुबाईः

आधुनिक अरबी सोंच में मानवीय अधिकार का स्थान

जमील बिन सुबैहः

पृथ्वी पर मानव के उत्तरधिकार होने की स्थापना

डाक्टर गोड फ्राइड कोन्ज़लन, परिचय व टिप्पणीः डाक्टर मुहम्मद इमारा

पश्चिम में लौकिकता और ईसाई धर्म की दुविधा (जर्मन की गवाही)

डाक्टर हुसेन मूनिसः

सभ्यता - उसकी स्थापना के कारक और नियमों के प्रति एक अध्ययन

इस्लाम राष्ट्र के संविधान का सारांश

ख़ालिद अबुल फुतूहः

इस्लाम और लिबेरालिज़्म - अमेरिकी विचारों की वास्तविकता और बौद्धिक संघटन की संभावना (लेख)

समय प्रबंधन और स्व प्रबंधन (लेख)

सभ्यता - शब्दावली (लेख)

इसीलिए हम अमेरिका से नफरत करते हैं। (लेख)

चुनौती के संकट पर कुछ नोट्स (लेख)

डाक्टर दाऊद दुर्वेश हलिसः

इस्लामी क़ानून और अंतर्राष्ट्रीय नियमों में मानव के सांस्कृति अधिकार

रोजे जारूदीः

कब्रों को खोदने वाले - मानव के कब्र खोदने वाली सभ्यता

ज़िग्रेट होकह - अनुवादः फारूख़ बेज़ोन, कमाल दुसूखीः

पश्चिम पर अरबी सूर्योदय हो रहा है... पश्चिम पर अरबी सभ्यता का प्रभाव

सामी आमिरीः

क्या पवित्र ख़ुरआन ने यहूद और ईसाइयों की पुस्तकों से कुछ लिया है ?

सऊद बिन अब्दुल अज़ीज बिन मुहम्मद अल-खुरैफीः

सिद्धांत के नियमों पर मानसिक व सैद्धांतिक सबूत

सय्यद ख़ुतुबः

इस्लाम और सभ्यता की समस्याएँ

भविष्य इसी धर्म के लिए है

इस्लामी विचार की विशेषताएँ और उसके संघटक

यही धर्म है

डाक्टर सैय्यद मुहम्मद बदवीः

समाज शास्त्र और दर्शन में नैतिकता का स्थान

डाक्टर आदिल सादिख़ः

तलाख़ समाधान नही है

डाक्टर आदिल बिन अली शदी, डाक्टर अब्दुल रज़्ज़ाख माशः

नबी मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम के संदेश में मानव की आवश्यकताएँ

अब्बास अख़्ख़ादः

पश्चिमी सभ्यता पर अरब का प्रभाव

अब्दुद दाइम कोहैलः

पवित्र ख़ुरआन और रसूल की वाणी में चिकित्सा के अद्भुत चमत्कार

पवित्र ख़ुरआन में अंकों के चमत्कार का विश्व कोष

डाक्टर अब्दुर रहमान हसन हबंकह्

ज्ञान के नियम और वाद-विवाद के तरीक़े

अब्दुर रहमान जज़ेरीः

ईसाई मिश्नरियों की आलोचना का जवाब में दृढ़ सबूत

डाक्टर अब्दुल अज़ीज़ सख़र

पश्चिमी जीवन में धर्म और राज्य.... राष्ट्र राज्य में धर्म कि भूमिका व स्थान के प्रति एक अध्ययन

डाक्टर अब्दुल अज़ीज़ बिन उसमान तुवैजरीः

इस्लामी शिक्षाओं में मानवीय अधिकार

डाक्टर अब्दुल्ला बिन अब्दुल मुहसिन तुर्किः

इस्लाम में मानवीय अधिकार

अब्दुल्ला नासिह अल्वानः

इस्लाम में सभ्यता की विशेषताएँ और पश्चिमी प्रगति पर इसका प्रभाव

डाक्टर अब्दुल मुहसिन बिन ज़बन मुतैरीः

मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे नबी होने के सबूत

अलि इज़्ज़त बेजोफीत्च

पूर्व और पश्चिम के बीच इस्लाम धर्म

डाक्टर अली मोहियुद्दीन ख़ुर्रा दाग़ीः

हम और अन्य लोग - सैद्धांतिक अध्ययन

अलि बिन नइफ शुहूदः

पश्चिमी सभ्यता के विरोध स्पष्ट उत्तर

डाक्टर इमादुद्दीन ख़लीलः

लोगों ने इस्लाम के प्रति यह कहा।

डाक्टर फहद बिन अब्दुर रहमान बिन सुलैमान रूमीः

पवित्र ख़ुरआन की विशेषताएँ

डाक्टर माज़िन, नमीर अब्बास मुज़फ्फर, काइद हाशिम (रिपोर्ट)

इस्लाम, पश्चिम और मानवीय अधिकार

माइकल हार्ट-अनुवाद अनीस मंसूरः

शाश्वत लोग सौ है, उनमें सब से प्रमुख मुहम्मद सल्लेल्लाहु अलौहि व सल्लम है

मुजाहित महमूद अहमद नासिरः

तार्क और प्रमाणित करने में पवित्र ख़ुरआन की विधि

मुहम्मद बिन इब्राहीम अल हम्दः

इस्लाम ... शाश्वत प्रसन्नता का मार्ग

मुहम्मद अबु ज़हराः

मानव का समाज इस्लाम धर्म की छाया तले

मुहम्मद अबु खासिम हाज हम्दः

मानव व अदृश्य और इस्लाम धर्म की विश्व व्याप्त स्वभाव की द्वन्द्वत्मकता

डाक्टर मुहम्मद बिशारीः

इस्लामीय नियम में धार्मिक स्वतंत्रता - उसके नियम और क़ानून

मुहम्मद तख़ियुद्दीन हिलाली मग़रिबीः

ईसा मसीह (अलौहिस्सलाम) के भक्त होने, और प्रभु न होने पर बाइबल से मिलने वाले सबूत

मुहम्मद राषिद उवैदः

वे बलात्कार का तमाशा देख रहे हैं

डाक्टर मुहम्मद ज़ुहैलीः

मानवीय अधिकार - इस्लाम धर्म के लक्ष्य का केन्द्र

डाक्टर मुहम्मद ज़िया उर रहमान आज़मीः

यहूदी, ईसाई और भारतीय धर्मो के प्रति अध्ययन

मुहम्मद बिन ताहेर तनेर बैरोतिः

ईसाई धर्म में मूर्ति पूजा के सिद्धांत

मुहम्मद ताहेर बिन आशूरः

इस्लाम धर्म में सामाजिक प्रणाली के नियमों का सारांश

डाक्टर मुहम्मद बिन अब्दुल्ला बिन सालेह सहीमः

इस्लाम - उसके नियम और सिद्धांत

डाक्टर मुहम्मद इमाराः

इस्लाम और मानवीय अधिकार .... आवश्यकताएँ न कि अधिकार

अचूकता और अवमानना .... पवित्र ख़ुरआन और पवित्र पुस्तक में नबी का स्थान (लेख)

मुहम्मद ग़ज़ालीः

मानवीय अधिकार

मुहम्मद ख़ुतुबः

इस्लाम के प्रति संदेह

मुहम्मद मुतवल्लि शारावीः

अल्लाह की उपस्थिति के भौतिक सबूत

मुहम्मद यासीनः

नास्तिक और प्राच्य विद्या विशारदों के संदेह का मुस्लिम वैज्ञानिकों की ओर से उत्तर

सांस्कृतिक मूल्य आदान केन्द्र, (यूनेस्को के साथ सहयोग में)

पश्चिमी प्रगति में इस्लाम और अरब का प्रभाव

डाक्टर मरवान इब्राहीम ख़ैसीः

इस्लाम में मानवीय अधिकारों का विश्व कोष

नासिर बिन दख़िलुल्लाह बिन फालेह सईदिः

मानसिक प्रमाण और अद्भुत भाषा

हारून यह्याः

उन्नति का धोखा

ईमान (विश्वास) का सारांश कुछ शब्दों में

पवित्र ख़ुरआन चमत्कारों का चमत्कार है

पवित्र ख़ुरआन के चमत्कार

हैंडस हेनर श शब्दर, अनुवाद अब्दुर रहमान बदवीः

अरबी सभ्यता की आत्मा

डाक्टर हिबा रऊफ इज़्ज़तः

मानव के अधिकार कि परिभाषा की समस्याएँ (लेख)

वहीदुद्दीन खान

इस्लाम चुनौती दे रहा है

बडा मुद्दा

डाक्टर यहया बिन मुहम्मद हसन ज़मज़मीः

मानव के अधिकार - पवित्र ख़ुरआन में उसकी परिभाषा और उसका अनुसरण

युस्र मुहम्मद सईद मुबय्यिज़ः

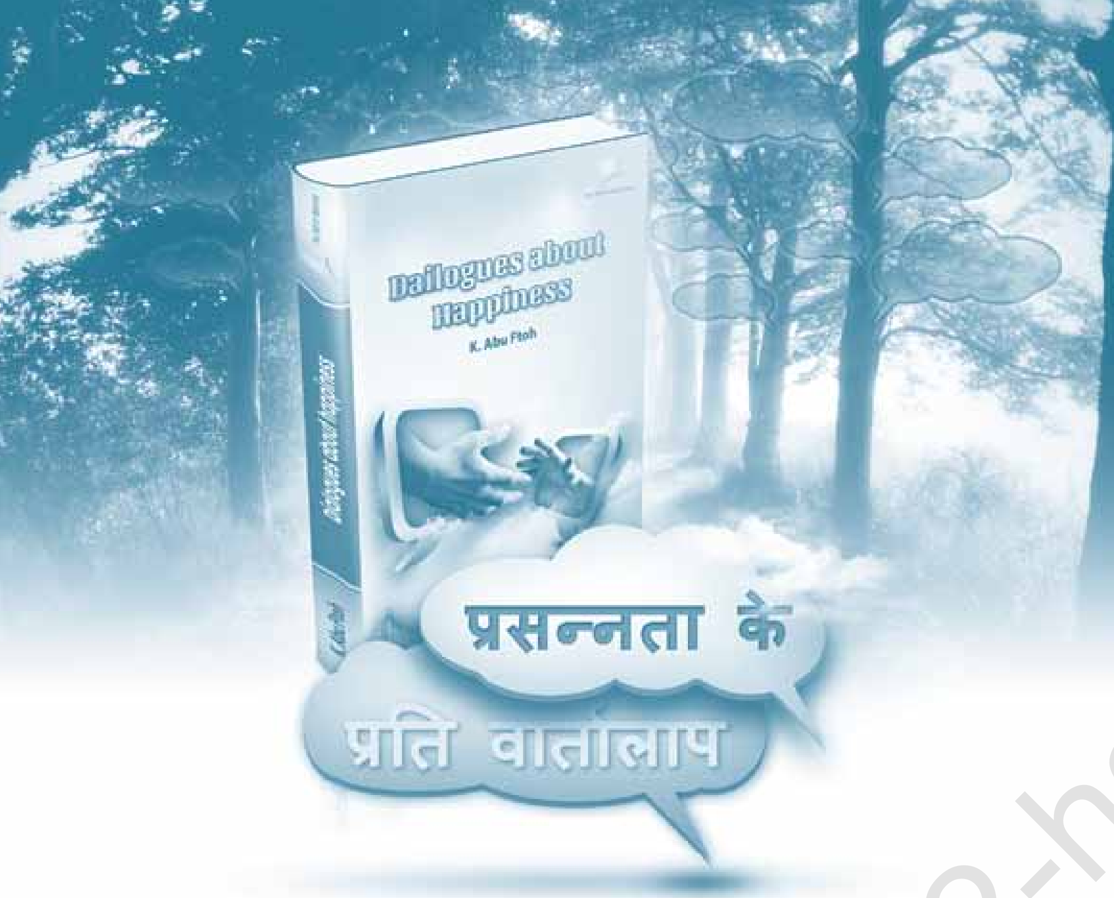
देवत्व धर्म और प्राचीन धर्मो में परलोक का स्थान

डाक्टर याक़ूब बिन अब्दुल वहहाब बा हिसीनः

तार्किक और विधिकारों के पास प्रमाणित करने का तरीक़ा और उसका परिचय

सूची

सूची



हम में से कौन है, जो प्रसन्नता की इच्छा न रखता हो, निस्संदेह प्रत्येक मानव प्रसन्नता की खोज में लगातार प्रयास करता है.. लेकिन हम में से कितने लोग प्रसन्नता को प्राप्त करने में सफल होते हैं, बल्कि हम में से कितने लोग प्रसन्नता की ओर ले जानेवाले मार्ग को पहचान सकते हैं। निस्संदेह प्रसन्नता के कई कारण है। परन्तु मेरी दृष्टि से इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण यह है कि मानव अपने व्यक्तित्व का ज्ञान प्राप्त करले, और कदापि मानव अपने व्यक्तित्व पर ज्ञान प्राप्त नही कर सकता है, मगर सबसे पहले वह अपनी मानवता का ज्ञान प्राप्त करले... वह मानवता जिस के द्वारा मानव पशु-पक्षी और ब्रह्माण्ड के सारे जीव से अलग है। निश्चय ब्रह्माण्ड, मानव, जीवन के प्रति पैदा होने वाले बडे बडे प्रश्नों के बारे में सोंच-विचार करना, और इन प्रश्नों के सही आनंदित उत्तर को प्राप्त करलेने की उपलब्धी मानव को सुख, आनंदस बल्कि प्रसन्नता और खुशी की ओर ले जाती है। यह वार्तालाप हमारे द्वारा अधिकतर लोगों के मन में पैदा होनेवाले प्रश्नों के प्रति सही उत्तर तक पहुँचते हुए, सत्य को प्रकट करते हुए और भ्रम को अंत करते हुए, प्रसन्नता के मार्ग कि पहली सीढी पर कदम रखने में भाग लेना है। इस प्रकार कि मानवता के विभिन्न भागों से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों को इस वार्तालाप में प्रस्तुत किया गया, साधारण रूप में मन भावित सुलेख, और ऐसी शैली में इसको लिखा गया है, जो अधिकतर पाठकों के लिए उपयुक्त है।



हम आप से नियमों के आधार पर बात करें। आपको मान्सिक तर्क की गहरायी में ले जायें। दार्शिनिक व विचारकों कि बातों से आपकी मार्गदर्शनी करें, और प्रसन्नता व उसके मार्ग के खोज कि इस यात्रा मे हम आपको प्रसिद्ध बुद्धिमान और नायकों के अनुभवों की दृष्टि में लेकर चलें। प्रसन्नता, उसके मार्ग और उसकी ओर पहुँचने के लिए यह एक भौतिक व सभ्यतागत यात्रा है, जो आंतरिक रूप से मन की गहरायियों तक जाती है। इसी प्रकार इतिहास और पूर्वकाल के पन्ने बारीकि के साथ पलटती है, और भविष्य काल की आकांक्षा रखती है, जब कि विभिन्न और अनेक दृष्टिकोण की भरमार है, जिनमें से प्रत्येक का यह दावा है कि वही प्रसन्नता के मार्ग का मालिक है.. हम प्रसन्नता के मार्ग का परिचय करने के लिए मन की विभिन्न भावनाओं को इकट्ठा करने, व्यक्तिगत रूप से प्रत्येक मानव का ध्यान रखने, और विभिन्न समुदायों, समूहों और लोगों कि आकांक्षाओं के अनुसार विवरण करने का प्रयास कर रहे हैं। आप हमारे साथ चलिए, ताकि सीधे मार्ग का चयन करने उसको जानने, बल्कि जाँचने और उसका मूल्यांकन करने के उपयुक्त मानक का आपको ज्ञान प्राप्त हो.. प्रसन्नता के मार्ग, नैतिकता, ज्ञान, सभ्यता, दयालुता और आदरणीयता के मार्ग कि खोज की यात्रा...



उपन्यास



उपन्यासः प्रसन्नता

भ्रम में रखनेवाले प्रश्न, जीवन की दर्शनिकता, इच्छाएँ और आशाएँ, आकांक्षाएँ और रुचियाँ, संदेह और शंका, विरोधाभासी और व्याकुलता, यह सब चीज़े जार्ज की यात्रा में थी, जो जीवन कि दार्शिनिकता और स्वयं के स्थिरता की परिभाषा के आस-पास सौन्दर्य शहर लंदन, चमत्कारों का देश भारत, नील नहर और पिरामिड के नगर कयरो, पवित्रता और विभिन्न धर्मो के देश जेरूसलम, और गिरजा घरों के मुल्क इटली(रोम) में घूम रही थी... यह उपन्यास ऐसी घटनाओं से भरी हुई है, जिसमे धर्म के प्रति दर्शनिकता लोगों के जीवन और उनके भीतर स्थिर विरोधाभासी के घुलमिल जाती है। इसमें कठिनाइयाँ प्रसन्नता से, संदेह विश्वास से, आनंद अप्रसन्नता से, वफादारी विश्वासघात से, शारीरिक आनंद आत्मिक आनंद से, आत्मिक भावनाएँ जिह्वा के विचार से घुन मिलती हैं, और सत्यता व सच्चाई का असत्य व झूठ से टकराऊ होता है... जीवन और उसकी परिभाषा के दृष्टि के प्रति, धर्म व उपस्थिती की दार्शनिकता के प्रति विभिन्न विचारों, अनेक घटनाओं और लगातार मिलनेवाली सूचनाओं के द्वारा यह एक पठन है, जिसमें इतिहास व वास्तविकता का हमारे जीवन पर प्रभाव के प्रति विचार किया गया है, और वैज्ञानिक दार्शिनिकता की दृष्टि द्वारा आधुनिक ज्ञान को प्रदान किया गया है... क्या जीवन के विरोधाभीसी विचार छिप जायेंगे ? क्या जार्ज अपने प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करलेगा ? क्या शरीर के साथ साथ आत्मा का प्रसन्न ...? होना संभव है ? और क्या जार्ज को प्रसन्नता का मार्ग मिल सकता है

अनुकूल वेबसाइटें